॥ आचारप्रदीपनुं गुजराती भाषान्तर. ॥

[illegible]

गल कहींशुं एवुं श्रुत ज्ञानज ग्रहण करवुं; केमके—काल विनय आदि आठ प्रकार ज्ञानाचारनाछे ते श्रुतज्ञानमांज संभवे छे माटे. अने श्रुत ज्ञाने करीनेज बाकीना ज्ञाननो प्रकाश थाय छे. श्रुत ज्ञाननी प्राप्तिपूर्वकज घणुंखरुं बीजां ज्ञान पमाय छे माटे केवलज्ञानथी पण श्रुत ज्ञाननुं अतिशयपणुं देखाय छे. ॥ ते कहुंछे के—ओघ ज्ञाने करीने श्रुतमां उपयोगी एवो श्रुतज्ञानी; एटले पिंडनिर्युक्ति आदि आगममां उपयुक्त एवो सतो, केतां आगमने अनुसारे आ कल्पे छे, आ नथी कल्पतुं एवुं जांणीने, जो पण श्रुतज्ञानी अशुद्ध ग्रहण करी लावे छे तोपण, केवलज्ञानी पण, ते आहारने भोगवे छे. अने जो न भोगवे तो, श्रुतज्ञान अप्रमाणिक थाय. ॥ तेमज विशेषावश्यकमां पण कह्युंछे के—सर्व ज्ञानथी श्रुतज्ञान मोटुं छे ने, केवलज्ञान तेथी अनंतर छे; जे माटे ते श्रुतज्ञान, बाकीना समग्र ज्ञानने अने पोताने जुदां जुदां करी समझावनारुं छे. ॥ ॥ २ ॥ ते मोटा पुरुषोए श्रुतज्ञानने प्रधान करी आगममां पण आ, ज्ञानाचार छे एवो विशेष कह्यो छे, ते माटे द्वादशांगीरूप जे ज्ञान तेने विषे तथा दर्शन केतां समकित दर्शन जांणवुं, पण चक्षु दर्शन आदि न जाणवुं केमके—आ जगाए ते चक्षु दर्शनादिकनो अधिकार नथी माटे. अने सर्व विरतिरूप चारित्र जाणवुं तेने विषे; श्रावक आश्रिनेतो देशविरतिरूप जांणवुं तेने विषे, तथा उपवासादिक तप जांणवुं तेने विषे; तथा धर्मकृत्य आश्रि उद्यमरूप वीर्य फोरववुं तेने विषे, एडे प्रकारे आचरणा करवी ते आचार कहीअे. एम ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तप आचार, वीर्याचार, रूप पांच आचार होय. । ते आचारना भेद, अनुक्रमे आठ, आठ, आठ, बार अने छत्रीश, जांणवा. । ते भेद निशीथ सूत्रना भाष्यमां कह्या छे, जेमके—ज्ञानने विषे दर्शनने विषे वली तपने विषे तथा वीर्यने विषे जे भाव ते आचार कहीए. अने

ते ज्ञानादिकना अनुक्रमे भेद, आ प्रकारे छे. ज्ञानाचारना आठ भेद, दर्शनाचारना आठ भेद, चारित्राचारना आठ भेद, तप आचारना बार भेद, अने जे ते चारेनी शक्ति न छता देखी ने वीर्याचार कहीए. ॥ आ जगाए पूर्वाचार्य विशेष कहे छे के—ज्ञानाचार आठ प्रकारनो त्यागी धारेलिये ने वीर्याचार कहीए महात्मा भेदवालो कहेवाय छे, ते छत्रीस भेद आ प्रकारना जाणवा. या कथा मेल ज्ञानाचारादिकना भेद, ते सर्वने भेळा करीए त्यारे छत्रीस थाय, ते सर्वे ज्ञानाचारादिकनी शक्ति न छता देखी, पुरुषे जे सेवा ... (नेह पाणी) करी ते वीर्याचार होय छे, माटे वीर्याचारना छत्रीस भेद जाणवा. ॥ वळी आ भव अने अन्य भव पण जे अपने हिते पण, हितकारक ज्ञान छे; अने बहुधा ते ज्ञानथीज वांछित कार्यनी सिद्धि थाय छे. एम न कहीए तो तेनी निर्विघ्नतानी प्राप्ति थाय ए हेतु माटे, अने ए वात सर्वने अनुभव सिद्ध छे. जेमके—जो भोजन, गमन, आच्छादन, सूवुं, बेसवुं, बोलवुं, परदेशी वात करवी, स्नान, पान, पाननुं खावुं, देवुं, लेवुं, रहेवुं, प्रीति, वैर, रत्नपरखवुं, आदियारणुं, सेवा, युद्ध, औषध, वेचवुं करवुं, मंत्र साधन करवुं, देवतानुं आराधन करवुं, पारण कोई जगाए मुकवी इत्यादि विश्वास करवो, राज्य व्यापारनुं ग्रहण करवुं, इत्यादि सर्व अनाथ, आगम सर्व अथवा प्रवर्तमान जो जाणतो होय नहीं तो, तेवा केम बनवे. अने जो, अनर्थनी शंकावाळो तेज भोजनादिक, आगम सर्व पण पोताना कार्यनी सिद्धिने जो जाणतो होय त्यारे जो तेवा केम न बनवे, अर्थात् बनवेज. ॥ ते वात दर्शावे छे—इत्यादि सर्व दोषथी पण, अज्ञान छे ते निश्चे सर्वथी कष्टकारक छे. जेमके—जे माटे अज्ञाने आचरण करेलो जीव, पोताने हित थयुं अने अहित थयुं ते कशुं जाणतो. ॥ १ ॥ आ जगतो ज्ञान सूर्य, सघळा विनाश निर्मल प्रकाश करे छे, माटे ज्ञान ए श्रेष्ठ नेत्र छे, अने जेनी चोरी न थई शके एवुं ज्ञान धन पण छे. ॥ २ ॥ वळी ज्ञा-

जोपण ज्ञान, मति श्रुत अवधि मनःपर्याय अने केवलज्ञान एवा भेदथी पांचप्रकारनुं छे, तोपण आ जगाए, आगळ कहीशुं एवुं श्रुत ज्ञानज ग्रहण करवुं; केमके—काल विनय आदि आठ प्रकार ज्ञानाचारनाछे ते श्रुतज्ञानमांज संभवे छे माटे; अने श्रुत ज्ञाने करीनेज बाकीना ज्ञाननो प्रकाश थाय छे. 'श्रुत ज्ञाननी प्राप्तिपूर्वकज घणुंधा बीजां ज्ञान प्रमाय छे माटे केवलज्ञानथी पण श्रुत ज्ञाननुं अतिशयपणुं देखाय छे. ॥ ते कह्युंछे के—ओघ हाने करीने श्रुतमां उपयोगी एवो श्रुतज्ञानी; एटले पिंडनिर्युक्ति आदि आगममां उपयुक्त एवो सतो, केतां आगमने अनुसारे आ कल्पे छे, आ नथी कल्पतुं एवुं जाणीने, जो पण श्रुतज्ञानी अशुद्ध ग्रहण करी लावे छे तोपण, केवलज्ञानी पण, ते आहारने भोगवे छे. अने जो न भोगवे तो, श्रुतज्ञान अप्रमाणिक थाय. ॥ तेमज विशेषावश्यकमां पण कह्युंछे के—सर्व ज्ञानथी श्रुतज्ञान मोटुं छे ने, केवलज्ञान तेथी अनंतर छे; जे माटे ते श्रुतज्ञान, बाकीना समग्र ज्ञानने अने पोताने जुदो जुदो करी समजावनारुं छे. ॥ ॥ २ ॥ ते मोटा पुरुषोए श्रुतज्ञानने प्रधान करी आगममां पण आ, ज्ञानाचार छे एवो विशेष कह्यो छे, ते माटे द्वादशांगीरूप जे ज्ञान तेने विषे तथा दर्शन केतां समकित दर्शन जाणवुं, पण चक्षु दर्शन आदि न जाणवुं केमके—आ जगाए ते चक्षु दर्शनादिकनो अधिकार नथी माटे. अने सर्व विरतिरूप चारित्र जाणवुं तेने विषे; श्रावक आश्रिनेनो देशविरतिरूप जाणवुं तेने विषे, तथा उपवासादिक तप जाणवुं तेने विषे; तथा धर्मकृत्य आश्रि उद्यमरूप वीर्य फोरववुं तेने विषे, रुडे प्रकारे आचरणा करवी ते आचार कहीअे. एम ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तप आचार, वीर्याचार, रूप पांच आचार होय. । ते आचारना भेद, अनुक्रमे आठ, आठ, आठ, बार अने छत्रीश, जाणवा. । ते भेद निशीथ सूत्रना भाष्यमां कह्या छे, जेमके—ज्ञानने विषे दर्शनने विषे चरित्रे तपने विषे तथा वीर्यने विषे जे भाव ते आचार कहीए. अने

ते ज्ञानादिकना अनुक्रमे भेद, आ प्रकारे छे. ज्ञानाचारना आठ भेद, दर्शनाचारना आठ भेद, चारित्राचारना आठ भेद, तप आचारना बार भेद, अने ते ते चारेनी हानि न थवा देवी ते वीर्याचार कहीए. ॥ आ जगाए चूर्णिकार विशेष कहेछे के—ज्ञानाचार आठ प्रकारनो स्यांथी आरंभिने ते वीर्याचार छत्रीश प्रकारना भेदवाळो कहेवाय छे, ते छत्रीश भेद आ प्रकारना जाणवा. आ कह्या तेज ज्ञानाचारादिकना भेद, ते सर्वेने भेकठा करीए त्यारे छत्रीश थाय, ते सर्व ज्ञानाचारादिकनी हानि न थवा देवी, एटले जे तेथी गोझावुं (खेद पामवुं) नही ते वीर्याचार होय छे, माटे वीर्याचारना छत्रीश भेद जाणवा. ॥ वळी आ भव अने अन्य भव एम बे भवने विषे पण, हितकारक ज्ञान छे; अने मनुष्य ते ज्ञानथीज वांछित कार्यनी सिद्धि थाय छे. एम न करीए तो तेथी विपरीतपणानी प्राप्ति थाय ए हेतु माटे, अने ए वात सर्वने अनुभव सिद्ध छे. जेमके—जो भोजन, गमन, आछादन, सुवुं, बेसवुं, बोलवुं, घणेठी वात कहेवी, स्नान, पान, गानवुं जाणवुं, देवुं, लेवुं, वहेवुं, प्रीति, वैर, स्वजनपणुं, वाहियापणुं, सेवा, युद्ध, औषध, सेवनुं करवुं, मंत्र साधन करवुं, देवतानुं आराधन करवुं, धारण कोइ जगाए मुकवी इत्यादि विश्वास करवो, राज्य व्यापारनुं ग्रहण करवुं, इत्यादि सर्व जगाए, आगळ थशे एवो अनर्थ प्रथमथीज जो जाणतो होय तो ते, तेमां केम प्रवर्ते. अने जो, अनर्थनी शंकावाळो तेज भोजनादिक, आगळ थशे एवी पोतानां कार्यनी सिद्धिने जो जाणेछे त्यारे तो तेमां केम न प्रवर्ते, अर्थात् प्रवर्तेज. ॥ ते वात कहीछे के—दुःखादि सर्व दोषथी पण, अज्ञान छे ते निश्चे घणुं कष्टकारक छे. जेमके—जे माटे अज्ञाने आवरण करेलो जीव, पोतानो हित अर्थ अने अहित अर्थने नथी जाणतो. ॥ १ ॥ आ जगतो ज्ञान सूर्य, प्रयत्न विनाज निरंतर प्रकाश करेछे, माटे ज्ञान ए त्रीजुं नेत्र छे, अने जेनी चोरी न थइ शके एवुं ज्ञान एज धन छे. ॥ २ ॥ वळी ज्ञा-

गमां कह्युं छे के—पापथी विशेषपणे निवृत्ति, तथा कुशळपक्षमां प्रवृत्ति, तथा विनयनी प्राप्ति, ए त्रणनो पण ज्ञानने विषे समावेश थाय छे, एटले ज्ञान होय तो, ए त्रण सहज प्राप्त थाय छे. ॥ २ ॥ तत्त्वनुं श्रद्धानरूप दर्शनादिक ते पण, ज्ञान सतेज प्राप्त थाय छे. वळी ज्यां सुधी हितकारी पुरुषना, उपदेशादिके करीने तत्त्वज्ञान नथी थयुं त्यां सुधी श्रद्धा करवा केम समर्थ थवाय. ॥ जे माटे परम ऋषिनुं आ प्रकारनुं वाक्य छे के—ज्ञाने करिने पदार्थने जाणे छे, अने दर्शने करिने तेनी श्रद्धा करे छे, अने चारित्रे करिने कर्मनुं ग्रहण नथी करतो, तपे करिने कर्मनो नाश करी अतिशे शुद्ध थाय छे. ॥ १ ॥ ए हेतु माटे प्रथम ज्ञानाचार आ ग्रंथमां थाप्यो छे, पछी दर्शनाचार थाप्यो. केमके—बहुधा प्रथम दर्शन प्राप्त थया पछी चारित्रनी प्राप्ति थाय छे माटे दर्शनाचार कह्या पछी चारित्राचार कहीशुं. अने चारित्र पामिने कर्मनी निर्जराने अर्थे तप करवुं जोइए माटे चारित्राचार कह्या पछी तप आचार कहीशुं ज्ञानादिचारने विषे पण सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवुं. पण कोइ जगाए पण वीर्य डाकवुं नहि, सर्वत्र वीर्य फोरववुं ए हेतु माटे पांचमो वीर्याचार कहीशुं. । वळी ए प्रकारे ज्ञाननुं परमउपकारिपणुं छे, ते ज्ञानमां पण श्रुतज्ञाननुं मुख्यपणुं छे माटे, श्रुतज्ञाननुं आराधनने अर्थे सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवो. ॥ ते शास्त्रमां कह्युं छे के—जो पण समग्र दिवसे करिने निश्चे एक पद धारि शके अथवा एक पक्षे करिने धारि शके, एटले पंनर दिवसे एक श्लोकनुं अर्द्ध पण भणि शके तोपण, ज्ञान शिखवानी इच्छा होय तो भणवानो उद्योग न मुकवो. अर्थात् मंद बुद्धिवाळाए पण ज्ञाननो उद्यम निरंतर कर्याज करवो. ॥ १ ॥

समकित दृष्टिये ग्रहण करेलुं सर्व पण शास्त्र, श्रुतज्ञानज छे. ॥ ते कह्युंछे के—व्याकरण छंद अलंकार नाटक काव्य तर्क गणित इत्यादि शास्त्र, समकित दृष्टिना परिग्रहवडे पवित्र थयुं माटे ते श्रुतज्ञान छे ते जयवंतुं वर्तो. ॥ १ ॥ वळी

[illegible] एम थोडा गुणने अर्थे थाय छे. ॥ ते माटे कहे छे के—आ
ते शालनी पाक तो [illegible] एम, एक औदासिक मात्र [illegible] मारा मार्गे चलावे छे. ते [illegible] चाकनार पोतानो,
[illegible], [illegible] निरंतरी [illegible] पोताने [illegible] भावनाने [illegible], [illegible], इत्यादि
[illegible], [illegible] छे. [illegible] एम, पोताने [illegible] छे ॥ १ ॥ [illegible] श्रुतज्ञानना [illegible], [illegible]
[illegible] पुरुषोने [illegible] पोतानी [illegible] छे ॥ [illegible] राजानी कथा. जेमके—[illegible]
[illegible] एम, [illegible] थाय छे ॥ ते [illegible] ते [illegible] एवा गुणनी [illegible]
[illegible] राजा हतो, ते [illegible] थाय. अने [illegible] इत्यादि, [illegible]
[illegible] हतो. ॥ १ ॥ [illegible] थाय. अने [illegible] ॥ २ ॥ कारण के—[illegible]
[illegible], ते राजाने [illegible] हतो. अने [illegible] पुरुषो
[illegible] एम, [illegible] अने [illegible] देखतो हतो. एक दिवस [illegible] राजा, [illegible] रात्रिने
[illegible] देखतो हतो. [illegible] आवतो. [illegible]
[illegible] करतो [illegible] आवतो [illegible], [illegible] छे [illegible]
[illegible] आ [illegible] एक [illegible] छे, [illegible] पुरुषोने [illegible]
[illegible] एवा होय छे, [illegible] जेमनी एवा होय छे, [illegible] राजा, ते [illegible] जोवा [illegible]
होय छे, [illegible] राजा, ते [illegible] पोतानी [illegible]
[illegible] पोताना [illegible] पोतानी [illegible]

वळी कह्युंछे के—पापथी विशेषपणे निवृत्ति, तथा कुशळपक्षमां प्रवृत्ति, तथा विनयनी प्राप्ति, ए त्रणनो पण ज्ञानने विषे समावेश थाय छे, एटले ज्ञान होय तो, ए त्रण सहज प्राप्त थाय छे. ॥ २ ॥ तत्त्वनुं श्रद्धानरूप दर्शनादिक ते पण, ज्ञान सतेज प्राप्त थाय छे. वळी ज्यां सुधी हितकारी पुरुषना, उपदेशादिके करीने तत्त्वज्ञान नथी थयुं त्यां सुधी श्रद्धा करवा केम समर्थ थवाय. ए जे माटे परम ऋषिनुं आ प्रकारनुं वाक्य छे के—ज्ञाने करिने पदार्थने जाणे छे, अने दर्शने करिने तेनी श्रद्धा करे छे, अने चारित्रे करिने कर्मनुं ग्रहण नथी करतो, तपे करिने कर्मनो नाश करी अतिशे शुद्ध थाय छे. ॥ १ ॥ ए हेतु माटे प्रथम ज्ञानाचार आ ग्रंथमां थाप्यो छे, पछी दर्शनाचार थाप्यो. केमके—बहुधा प्रथम दर्शन प्राप्त थया पछी चारित्रनी प्राप्ति थाय छे माटे दर्शनाचार कह्या पछी चारित्राचार कहीशुं. अने चारित्र पामिने कर्मनी निर्जराने अर्थे तप करवुं जोइए माटे चारित्राचार कह्या पछी तप आचार कहीशुं ज्ञानादिचारने विषे पण सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवुं. पण कोइ जगाए पण वीर्य ढांकवुं नहि, सर्वत्र वीर्य फोरववुं ए हेतु माटे पांचमो वीर्याचार कहिशुं. । वळी ए प्रकारे ज्ञाननुं परमउपकारिपणुं छे, ने ज्ञानमां पण श्रुतज्ञाननुं मुख्यपणुं छे माटे, श्रुतज्ञाननु आराधनने अर्थे सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवो. ॥ ते शास्त्रमां कह्युं छे के—जो पण समग्र दिवसे करिने निश्चे एक पद धारि शके अथवा एक पक्षे करिने धारि शके, एटले पंनर दिवसे एक श्लोकनुं अर्द्ध पण भणि शके तोपण, ज्ञान शिखवानी इच्छा होय तो भणवानो उद्योग न मुकवो. अर्थात मंद बुद्धिवाळाए पण ज्ञाननो उद्यम निरंतर कर्यांज करवो. ॥ १ ॥

समकित दृष्टिये ग्रहण करेलुं सर्व पण शास्त्र श्रुतज्ञानज छे. ॥ ते कह्युंछे के—व्याकरण छंद अलंकार नाटक काव्य तर्क गणित इत्यादि शास्त्र, समकित दृष्टिना परिग्रहवडे पवित्र थयुं माटे ते श्रुतज्ञान छे ते जयवंतु वर्तो. ॥ १ ॥ वळी

भा० ११३१

ते [illegible] वात तो [illegible] पण, एक औपचारिक मात्र पण पोताना गुणने अर्थे थाय छे. ॥ ते माटे कह्युं छे के—भा
[illegible] तेम, कुमारनी पालनार [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] छे. जो कुमारनी पालनार [illegible],
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] छे. तेम [illegible] पण, भावनाने [illegible] अथवा भावनाने प्रमाण, [illegible], [illegible], इत्यादि
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे ॥ १ ॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] केवलज्ञान पण, [illegible] [illegible] पण [illegible] थाय छे ॥ ते [illegible] [illegible] करता. [illegible]—[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] साथे राजा हतो, ते [illegible] [illegible] छे [illegible] [illegible] गुणनी [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हतो. ॥ १ ॥ [illegible] [illegible], अने [illegible] [illegible] [illegible] इत्यादि, [illegible]-
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], ते राजाने [illegible] [illegible] [illegible] न हतुं. ॥ २ ॥ कारण के—[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] पण, [illegible] [illegible] अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देखतो हतो अने [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देखतो हतो ॥ एक दिवस [illegible] [illegible] ते राजा, [illegible] करी [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आव्यो. [illegible] [illegible] [illegible]-
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आव्यो [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] छे [illegible]
[illegible] [illegible] होय छे, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] छे [illegible] [illegible] [illegible] होय छे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होय ते ५. [illegible] ए राजा, ते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पोतानी [illegible]

भा० ॥७॥

वळी कह्युं छे के—पापथी विशेषपणे निवृत्ति, तथा कुशळपक्षमां प्रवृत्ति, तथा विनयनी प्राप्ति, ए त्रणनो पण ज्ञानने विषे समावेश थाय छे, एटले ज्ञान होय तो, ए त्रण सहज प्राप्त थाय छे. ॥ २ ॥ तत्त्वनुं श्रद्धानरूप दर्शनादिक ते पण, ज्ञान सतेज प्राप्त थाय छे. वळी ज्यां सुधी हितकारी पुरुषना, उपदेशादिके करीने तत्त्वज्ञान नथी थयुं त्यां सुधी श्रद्धा करवा केम समर्थ थवाय. ॥ जे माटे परम ऋषिनुं आ प्रकारनुं वाक्य छे के—ज्ञाने करिने पदार्थने जाणे छे, अने दर्शने करिने तेनी श्रद्धा करे छे, अने चारित्रे करिने कर्मनुं ग्रहण नथी करतो, तपे करिने कर्मनो नाश करी अतिशे शुद्ध थाय छे. ॥ १ ॥ ए हेतु माटे प्रथम ज्ञानाचार आ ग्रंथमां थाप्यो छे, पछी दर्शनाचार थाप्यो. केमके—बहुधा प्रथम दर्शन प्राप्त थया पछी चारित्रनी प्राप्ति थाय छे माटे दर्शनाचार कह्या पछी चारित्राचार कहीशुं. अने चारित्र पामिने कर्मनी निर्जराने अर्थे तप करवुं जोइए माटे चारित्राचार कह्या पछी तप आचार कहीशुं ज्ञानादिचारने विषे पण सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवुं. पण कोइ जगाए पण वीर्य ढांकवुं नहि, सर्वत्र वीर्य फोरववुं ए हेतु माटे पांचमो वीर्याचार कहिशुं. । वळी ए प्रकारे ज्ञाननुं परमउपकारिपणुं छे, ते ज्ञानमां पण श्रुतज्ञाननुं मुख्यपणुं छे माटे, श्रुतज्ञाननुं आराधनने अर्थे सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवो. ॥ ते शास्त्रमां कह्युं छे के—जो पण समग्र दिवसे करिने निश्चे एक पद धारि शके अथवा एक पक्षे करिने धारि शके, एटले पंनर दिवसे एक श्लोकनुं अर्द्ध पण भणि शके तोपण, ज्ञान शिखवानी इच्छा होय तो भणवानो उद्योग न मुकवो. अर्थात् मंद बुद्धिवाळाए पण ज्ञाननो उद्यम निरंतर कर्याज करवो. ॥ १ ॥

समकित दृष्टिये ग्रहण करेलुं सर्व पण शास्त्र, श्रुतज्ञानज छे. ॥ ते कह्युं छे के—व्याकरण छंद अलंकार नाटक काव्य तर्क गणित इत्यादि शास्त्र, समकित दृष्टिना परिग्रहवडे पवित्र थयुं माटे ते श्रुतज्ञान छे ते जयवंतु वर्तो. ॥ १ ॥ वळी

ते शास्त्रनी वात तो छेटी रही पण, 'एक श्लोकादिक मात्र' पण पोता गुणने अर्थे थाय छे. ॥ ते माटे कहुं छे के—आ
ते शास्त्रनी वात तो छेटी रही पण, 'एक श्लोकादिक मात्र' पण पोताना गुणने अर्थे थाय छे. अने कुमार्गमां चालनार पोताने,
जगतमां जेम, कुमार्गमां चालनार वंकचूल, सुवर्ण सिंदूरनी राजो, सारा मार्गे चलावे छे. अने कुमार्गमां चालनार पोताने,
लगाम, सारा मार्गे लोक चलावे छे. तेम श्लोके पण, भीमनामे राजा अथवा आपनामे प्रांगण, मुंजराज, गर्दभि, इत्यादि
कुमार्गे चालेला पुरुषोने सारे मार्गे चलाववां एम संभवाय छे ॥ १ ॥ वळी श्रुतज्ञानना आराधनथी, पृथ्वीपालराजानी
पेठे केवळज्ञान पण, तेनाथी मळवां पण सुलभ थाय छे. ॥ ते पृथ्वीपाल राजानी कथा. जेमके—पूर्वे पृथ्वीपुरनामा
नगरमां पृथ्वीनो पालन करनार पृथ्वीपाल नामे राजा हतो, ते महान् उदार मती के बुद्धि जेनी एवो गुणथी समस्त
परार्थनी परीक्षा करवामां अतिशे विचक्षण हतो. ॥ १ ॥ पंडीनी इष्ट थाय, अने अपंडीथी अनिष्ट थाय इत्यादि, शास्त्र-
पारपंडोना भेदादी यथा दर्शनथी सांभळीने, ते राजाने शास्त्रोने विषे बहुमान न हतुं. ॥ २ ॥ कारण के—केटलाक पु-
ण्यशाली पुरुषो पण, निरंतर दारिद्र अने व्याधि व्याधिथी दुःखित थयेला देखतो हतो. अने केटलाक पापि पुरुषो
हता तेमने मोटा मोटा राज्यसुखने भोगवता देखतो हतो. १ एक दिवस दुःखित एवो ते राजा, वेशांतर करी रात्रिने
समे, लोकोनी गुप्त एवी वार्ता जाणवाने नीकळेलो फरतो फरतो कोइक देवालय पासे आव्यो. त्यां भणावनारे उच्चा-
रण करेलो कोइकनो जेवो उगलो आ प्रकारनो एक श्लोक सांभळवामां आव्यो "४ सत्पुरुषो, सर्व जगाए साक छे निय
तेमने एवा होय छे, अधम पुरुषो, सर्व जगाए निर्धन छे बुद्धि जेमनी एवा होय छे, दुःखि पुरुषोने सर्व जगाए दुःसह
होयछे, अने सुखि पुरुषोने सर्व जगाए सुखज होय छे ५. पछी ए राजा, ते सुभाषित श्लोकनी परीक्षा जोवा यथा गुणे
निश्चय एवो एक सत्पुरुषने पोताना विश्वासी पुरुषो पासे अति कठोरपणे धनावती रीत सहित घरने पोतानी कर्युं

मवा कह्युंछे के—पापथी विशेषपणे निवृत्ति, तथा कुशळपक्षमां प्रवृत्ति, तथा विनयनी प्राप्ति, ए त्रणनो पण ज्ञानने विषे समावेश थाय छे, एटले ज्ञान होय तो, ए त्रण सहज प्राप्त थाय छे. ॥ २ ॥ तत्त्वनुं श्रद्धानरूप दर्शनादिक ते पण, ज्ञान सतेज प्राप्त थाय छे. वळी ज्यां सुधी हितकारी पुरुषना, उपदेशादिके करीने तत्त्वज्ञान नथी थयुं त्यां सुधी श्रद्धा करवा केम समर्थ थवाय. ॥ जे माटे परम ऋषिनुं आ प्रकारनुं वाक्य छे के—ज्ञाने करिने पदार्थने जाणे छे, अने दर्शने करिने तेनी श्रद्धा करे छे, अने चारित्रे करिने कर्मनुं ग्रहण नथी करतो, तपे करिने कर्मनो नाश करी अतिशे शुद्ध थाय छे. ॥ १ ॥ ए हेतु माटे प्रथम ज्ञानाचार आ ग्रंथमां थाप्यो छे, पछी दर्शनाचार थाप्यो. केमके—बहुधा प्रथम दर्शन प्राप्त थया पछी चारित्रनी प्राप्ति थाय छे माटे दर्शनाचार कह्या पछी चारित्राचार कहीशुं. अने चारित्र पामिने कर्मनी निर्जराने अर्थे तप करवुं जोइए माटे चारित्राचार कह्या पछी तप आचार कहीशुं ज्ञानादिचारने विषे पण सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवुं. पण कोइ जगाए पण वीर्य ढांकवुं नहि, सर्वत्र वीर्य फोरववुं ए हेतु माटे पांचमो वीर्याचार कहिशुं. । वळी ए प्रकारे ज्ञाननुं परमउपकारिपणुं छे, ते ज्ञानमां पण श्रुतज्ञाननुं मुख्यपणुं छे माटे, श्रुतज्ञाननुं आराधनने अर्थे सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवो. ॥ ते शास्त्रमां कह्युं छे के—जो पण समग्र दिवसे करिने निश्चे एक पद धारि शके अथवा एक पखे करिने धारि शके, एटले पंनर दिवसे एक श्लोकनुं अर्द्ध पण भणि शके तोपण, ज्ञान शिखवानी इच्छा होय तो भणवानो उद्योग न मुकवो. अर्थात मंद बुद्धिवाळाए पण ज्ञाननो उद्यम निरंतर कर्यांज करवो. ॥ १ ॥

समकित दृष्टिये ग्रहण करेलुं सर्व पण शास्त्र श्रुतज्ञानज छे. ॥ ते कह्युंछे के—व्याकरण छंद अलंकार नाटक काव्य तर्क गणित इत्यादि शास्त्र, समकित दृष्टिना परिग्रहवडे पवित्र थयुं माटे ते श्रुतज्ञान छे ते जयवंतु वर्तो. ॥ १ ॥ वळी

ते राजपुत्र नाम तो [illegible] रहे रव, एक औत्पातिक [illegible] एम थोडा गुणने भवे थाय छे. ॥ ते माटे कयुं छे के—भा
[illegible] तेज, [illegible] [illegible] [illegible], एवा [illegible] शक्ति, मारा माटे [illegible] छे. नो [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible], मारा माटे [illegible] थवाते छे. तेम [illegible] रव, [illegible] [illegible] [illegible] आसनादि आसन, पुंनाग, [illegible], इत्यादि
[illegible] [illegible] पूर्वेने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे ॥ १ ॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] रव, [illegible] [illegible] रव [illegible] थाय छे ॥ ते [illegible] [illegible] कर्या. जेवके—हुं [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राजा हतो, ते [illegible] [illegible] ते [illegible] तेनी [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हतो. ॥ २ ॥ [illegible] [illegible] थाय. भने [illegible] [illegible] [illegible] इत्यादि, [illegible]-
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], ते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible]. ॥ ३ ॥ कारण के—[illegible] [illegible]-
[illegible] [illegible] रव, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हतां भने [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हतो ॥ एक [illegible] [illegible] [illegible] ते राजा, [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible]-
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] छे [illegible]
[illegible] [illegible] होय छे, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] छे [illegible] [illegible] [illegible] होय छे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible], भने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होय छे ॥ [illegible] न राजा, ते [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] एक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मां कह्युं के—शास्त्री विशेषथी निर्णय, तथा कुशलपक्षनो मार्ग, तथा विस्तर्न रुचि, ए सघलो पण ज्ञानने विषे समावेश थाय छे, एटले ज्ञान होय तो, ए सघलां साधन साध्य थाय छे ॥ २ ॥ सघलुं श्रद्धारूप दर्शनादिक ते पण, ज्ञान सहित साध्य थाय छे. ज्यां सुधी जिनवाणी पुरुषना, उपदेशादिके करीने सम्यग्ज्ञान नथी थयुं त्यां सुधी श्रद्धा करता केम बनवुं बनाय. ए अर्थ माटे परम कृपालु आ प्रकारनुं वाक्य छे के—ज्ञाने करीने पदार्थने जाणे छे, अने दर्शने करीने तेनी श्रद्धा करे छे, अने चारित्रे करीने कर्मनुं ग्रहण नथी करतो, तपे करीने कर्मनो नाश करी अतिशे शुद्ध थाय छे. ॥ ३ ॥ ए हेतु माटे प्रथम ज्ञानाचार आ प्रथमो धार्यो छे, पछी दर्शनाचार धार्यो. केमके—बहुधा प्रथम दर्शन प्राप्त थया पछी चारित्रनी प्राप्ति थाय छे माटे दर्शनाचार कह्या पछी चारित्राचार कहीनुं. अने चारित्र पामीने कर्मनी निर्जरा अर्थे तप करवुं जोइए माटे चारित्राचार कह्या पछी तप आचार कहीनुं ज्ञानादिकाचारने विषे पण सर्व शक्तिवडे प्रवर्तन करवुं. पण कोइ प्रकारे पण वीर्य छोडवुं नहि, सर्वथा वीर्य फोरववुं ए हेतु माटे पांचमो वीर्याचार कहीनुं. । वळी ए प्रकारे ज्ञाननुं परमउपकारिपणुं छे, ते ज्ञानमां पण श्रुतज्ञाननुं मुख्यपणुं छे माटे, श्रुतज्ञाननुं आराधनने अर्थे सर्व शक्तिवडे प्रवर्तन करवो. ॥ ते शास्त्रमां कह्युं छे के—जो पण सघळा दिवसे करीने निश्चे एक पद धारी शके अथवा एक पखे करीने धारी शके, एटले पंदर दिवसे एक श्लोकनुं अर्ध पण भणी शके तोपण, ज्ञान शिखवानी इच्छा होय तो भणवानो उद्योग न मुकवो. अर्थात् मंद बुद्धिवाळाए पण ज्ञाननो उद्यम निरंतर कर्तव्य करवो. ॥ २ ॥

सम्यक्त्व दृष्टिए ग्रहण करेलुं सर्व पण शास्त्र श्रुतज्ञानज छे. ॥ ते कहुं छे के—व्याकरण छंद अलंकार नाटक काव्य तर्क गणित इत्यादि शास्त्र, सम्यक्त्व दृष्टिना परिग्रहवडे पवित्र थयुं माटे ते श्रुतज्ञान छे ते जयवंतु वर्तो. ॥ १ ॥ वळी

ભા॰
॥ ૭॥

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ૧ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ૨ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ૩ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ભા॰

सूत्रां कह्युंछे के—पापथी विशेषपणे निवृत्ति, तथा कुशळपक्षमां प्रवृत्ति, तथा विनयनी प्राप्ति, ए त्रणनो पण ज्ञानने विषे समावेश थाय छे, एटले ज्ञान होय तो, ए त्रण सहज प्राप्त थाय छे. ॥ २ ॥ तत्त्वनुं श्रद्धानरूप दर्शनादिक ते पण, ज्ञान सतेज प्राप्त थाय छे. वळी ज्यां सुधी हितकारी पुरुषना, उपदेशादिके करीने तत्त्वज्ञान नथी थयुं त्यां सुधी श्रद्धा करवा केम समर्थ थवाय. ॥ जे माटे परम ऋषिनुं आ प्रकारनुं वाक्य छे के—ज्ञाने करिने पदार्थने जाणे छे, अने दर्शने करिने तेनी श्रद्धा करे छे, अने चारित्रे करिने कर्मनुं ग्रहण नथी करतो, तपे करिने कर्मनो नाश करी अतिशे शुद्ध थाय छे. ॥ १ ॥ ए हेतु माटे प्रथम ज्ञानाचार आ ग्रंथमां थाप्यो छे, पछी दर्शनाचार थाप्यो. केमके—बहुधा प्रथम दर्शन प्राप्त थया पछी चारित्रनी प्राप्ति थाय छे माटे दर्शनाचार कह्या पछी चारित्राचार कहीशुं. अने चारित्र पामिने कर्मनी निर्जराने अर्थे तप करवुं जोइए माटे चारित्राचार कह्या पछी तप आचार कहीशुं ज्ञानादिचारने विषे पण सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवुं. पण कोइ जगाए पण वीर्य ढांकवुं नहि, सर्वत्र वीर्य फोरववुं ए हेतु माटे पांचमो वीर्याचार कहिशुं. । वळी ए प्रकारे ज्ञाननुं परमउपकारिपणुं छे, ते ज्ञानमां पण श्रुतज्ञाननुं मुख्यपणुं छे माटे, श्रुतज्ञाननुं आराधनने अर्थे सर्व शक्तिवडे प्रयत्न करवो. ॥ ते शास्त्रमां कह्युं छे के—जो पण समग्र दिवसे करिने निश्चे एक पद धारि शके अथवा एक पक्षे करिने धारि शके, एटले पंनर दिवसे एक श्लोकनुं अर्द्ध पण भणि शके तोपण, ज्ञान शिखवानी इच्छा होय तो भणवानो उद्योग न मुकवो. अर्थात् मंद बुद्धिवाळाए पण ज्ञाननो उद्यम निरंतर कर्याज करवो. ॥ १ ॥

समकित दृष्टिए ग्रहण करेलुं सर्व पण शास्त्र श्रुतज्ञानज छे. ॥ ते कह्युंछे के—व्याकरण छंद अलंकार नाटक काव्य तर्क गणित इत्यादि शास्त्र, समकित दृष्टिना परिग्रहवडे पवित्र थयुं माटे ते श्रुतज्ञान छे ते जयवंतु वर्त्तो. ॥ १ ॥ वळी

ते दामुडी थाय तो ढगी रहे तम, एक औपपातिक नाम तम दोस गुनने अर्थे थाय छे. ॥ ते माटे कहे छे के—था
मनमां छेव, कुमति मारनार वडडे, पुरर विरोधी रह्यो, गाय मार्गे चडावे छे. पो कुमार्गी नाखनार पोहरो,
[illegible], गाय काहे दंत पडावे छे तेव डाले तम, भावताने रोता भरता भावनाने मायम, पुंनराज, नाति, इत्यादि
कुमति मारवा कुरंगे गाये काहे गमावना एक पंडगाय छे ॥ ६ ॥ एवो कुग्रानना भागनाथी, कुमतिरूपआवी
[illegible] तम, [illegible] दडी तम पुरव थाय छे ॥ ते कुतोर्थ [illegible] कथा. तेवडे—हुं कुतीर्थरूपमा
नगरनी कुमतिनो नाश करवा कुतीर्थ नावे रत्ना हतो. ते [illegible] पछी ते जुद्द तेने एवा गुनी [illegible]
नाखवी वतीना करवाने अधिक विचारण हतो ॥ ७ ॥ [illegible] थाय. अने थवंनी मोटा थाय इत्यादि, नाव
वायरांना मंतरो नना इवतवां नावनोने, ते रात्रे जागीने रीते रहुंराय न हुं ॥ ८ ॥ कारण के—केदवाक कु-
मनारी कुवी तम, [illegible] अने भावे दर्शनो कुविता मनेता देवतो हतो अने केवल गावे कुनो
॥ तेवो चोरी वांसी [illegible] योनवना देवतो हतो ॥ एक दिवस कुविनार कुवो ते राजा, वेतोर करी रात्रे
नवे, [illegible] पण चडी पाछो नगराने नीकळेलो जाणो जावां [illegible] विचारतो गाने [illegible] भमाडाडे उरता
रूप वांको दीनिना जेवो रत्नो आ वाटनो तर [illegible] नाकवाना भावतो ९ [illegible]. तर्क नगार माथ छे विव
तेवडे पुत्र रोग छे, भवन पड़ो, तर्क जाणु [illegible] छे चोटे जेवनो तथा रोग छे, [illegible] तर्क नगार [illegible]
रोगने, वो कुवित कुदीन वई भगाव गुनन होग छे ८ नहीं ए राजा, ते कुग्रांतिर मांदनी पतीता तोरा गगा गणे
विनाग वधी एक [illegible] पांगला विवंत कुवो जाते अनि [illegible] [illegible] दिन गोरव पाने भावानी कथ

के—६ रावीजी पेठे नद्रवडे अधधेध घयेला, एवला तारा पुत्रेज मारी आज्ञाक्षम आदेरी माटेल, पारा करतां पुत्रोनी मरण, बक्षात्कारथी देव मोटी नाखी छे. ७ ए मकारना दोषने उंचे स्वरे उच्चारण करी करेला कोपने अतिशे मकाश करता राजाए, पुत्र मतिने ते मात्रवने घोरनी पेठे बंधीखाने नंखाव्यो ८ पछी पोताना अतिशे विश्वासु एवा चार पुरुषो छानुं छानुं पिता पुत्र मूंजु बोल्ले छे ते सर्व वृत्तांत जाणवा वास्ते मुकीने कपटथी पोताना शरीरमां अतिशेज ओ पिनो देखाव थयो, एम मकट कर्युं ९ पिता पुत्र सांभळे तेम बंधीखानां आगळ मुकेला चार पुरुषो बोल्या के—आज तो राजाना शरीरे ओचिंतो एवो मंदवाड थइ गयो छे के, जेथी आयुषनो अंत समे थाय तेवो. अथवा आ ओचिंतो थयेला महा व्याधिथी हवे तो जीववानी आशाज क्यां छे. १० इत्यादि, समीप रहेला पुरुषोना मुखथी वातो सांभळता प्रकृति स्वभावेज सारुं हित करनार एवा ते पिता पुत्रने तो ए वात सांभळतांज अतिशे शोकथी जेम पाणिनां निर्झरण वहे तेम आंखोमांथी आंसुनी धाराओ पडवा मांडी ११ पछी पोताना हृदयमां रहेला अभिप्रायनी कथाओ ते वेजण परस्पर करवा लाग्या. अहो आतो घणीज खेदकारक वात थइ जे राजाना शरीरे, हाय हाय, आ ओचिंतुं शुं थयुं. हे परमेश्वर, राजा तो मजा पामनुं कोइ कारण छे माटे राजाना शरीरे महा भयकारक कांइ पण थशो नहि. १२ जो पण ए राजाए आपण बे जणने, मद विचारथी विध्या आ मकारनुं दुःख दीधुं छे तोपण ए राजा जो कथाशेष थाय तो (मरण पामे तो) आपण बे, मुखेथी आ बंधिखानाना दुःखथी शटपट छुटिए. १३ केमके—ज्यारे नवो राजा राज-गादीए बेसे त्यारे, निश्चे सघळा एज बंधिवानने मुक्त करे, मथम बंधिवान छोडया पछीज नवा राजानो राज्योत्सव थाय एवी रीत छे १४ ते विना तो आपण बे जण छुटिए एवी वातनी पण आशा जणाती नथी; केमके ए राजा आपणा

उपर अत्यंत कोप्यो छे माटे राजानी आज्ञा भंग रूप अपराधने पुकतो ए राजा, कोण जाणे केवी भारती कदर्थना (पुंडा हाल) करशे. १५ शास्त्रमां कह्युंछे के—राजानी आज्ञानो भंग करवो ते, तथा मोटा पुरुषना माननुं खंडन करवुं ते, तथा ब्राह्मण सर्वे वेश्य तेमनी आजीविकानो नाश करवो ते, तेमनो वध कर्यो कहेवाय; माटे १६ आपडो नष्ट थाय तो भलाथो, परंतु ए राजा जीवो. केमके राजा तो जगतनुं जीवन छे माटे, अन्यनुं थोडुं न इच्छवुं तो राजानुं केम इच्छाय. १७ आपडा पाप कर्मनुं करेलुं आ दुःख छे, एमां ए राजानो कोइरीत दोष नथी, निश्चे. एम न होय तो, आवो हाथो परिसामां कुशल पहले पगर परीक्षाए आ प्रकारनी आपदी शिक्षा केम करे, नम करे माटे आपडा कर्मनोज ए दोष छे. १८ ने पाद शास्त्रमां पण कहीछे के—सर्व जीव पूर्वे करेला कर्मनुं फळ पामे छे, माटे अपराधमां तथा गुणमां अन्य तो निमित्त मात्र होय छे. १९ पश्चात् कर्मनो उदय थये सते, कोण जाणे थयाथी पण ओनितो, सर्व इच्छमां थाय छे ते पवन कांइ माणसनुं रक्षण पण थतुं नथी तथा कोइ प्रकारनो आधार, तथा कोइ विचार, एमांनुं कांइ थतुं नथी. २० माटे आपडुं तो, आपडा कर्मना पथावी जे माथी निपजवानुं होय ते निपजो, परंतु ए राजाने सारुं थाय, एटलाज सर्व सारुं संपूर्ण छे. २१ ए प्रकारनी ते पिता पुत्रनी वातोने, जेवी हती तेवीज, छाना सांभळता उभा रहेला चार पुरुषोए, राजाने नमस्कार करी निवेदन करी, अतिशे हर्ष पमाड्यो. २२ पछी अतिशे प्रसन्न थयेलो महा बुद्धिवान् ते राजाए तत्कालपर्यंत पोताना शरीरनुं नीरोगीपणुं देखाडी, घणा घणा माननुं, प्रकट कर्या पूर्वक, पोतानी आगळ २३ ते पिता पुत्रने बेसाडी, पोतानी पणा कार्यमां पवेळी, व्यग्रताने लीधे, थयेलो अपराध निवेदन करी घणो सत्कार करी अतिशे प्रसन्न करी ते बेने विदाय कर्या. ए सर्वे शुभ प्रकृतिनुं निश्चे फळ छे. २४ हवे, ए राजाए, ए म-

न थाय, जेम पाणकरती गरोवरना मळनुं पान करे, ते तेवा गळामां छिद्र छे तेणे करीने मर्व अन्न नीकळी जाय, तेम निर्धारपणे पुष्ट, टकी शके नहीं. ४३ पछी राजाए, तांबूल आदि उपचारे मलिन मायंकाळे जपाडयो, त्यारे पेटमां शुळ अतिसारनो व्याधि थयो. पछी राजाये तेना उपचार करावी ते रोग मटाडयो तेमांथी तेने मृत्युनी सूचना करे एवी विशुचिका (वाति) उत्पन्न थई ४५ ए प्रकारे अति निर्भाग्य भिखारीना, श्रेष्ठ राजाए जेम जेम उपाय कर्या तेम तेम, श्वासना दुःकर उपावडे जरतुंड जीवन पीडन करे तेम राजाए ए भिखारीने निरोगी कर्यो, ए वात घटे छे केमके उप कारीने (पुण्यवन्तोने) शुं न थाय सर्व थाय ४७ पछी राजा प्रसन्न थयेमने, ते भिखारी जाणे दुष्ट अदृष्टनी अनेक रितनी पाजराथी आदर थयेलुं ए प्रकारनुं मरा विष, बुद्धि रहित एवा ए भिखारीनी दृष्टिये दीठामां आव्युं. ४८ सां भळेलुं तेणे ते राज छीप्रपणे मुर्छा जायु, जे विष सुंघवा मात्रथीज आश्चर्यकारी परवशपणुं करी शके छे. ४९ सुंघनी एकदम ते रितंमे, हा हा नहि नाहं एम निषेध करते सतेज, तेण ते विष सुंघ्युं, तेथीज ते, छातामां पडने पडयो. विष वेग बोल्यो के अहो आतो मरा परस्कारक ज्ञान बनी, आ मृत्युथी आने शुं कर्युं, हवे तो ए मरशे त्यांसुधी एना दुःखनो अंत नहि आवे. जे माटे विचार्या विनानुं जे करवुं ते, आ प्रकारनुं निश्चे दुःखनुं कारण थाय छे. ५० उपचारथी साजो थयेल थयो एवो आजिवानुं छे चित्त जेनुं एवो भिखारी बोल्यो के, ए तो सुगंधिवाळी चीज जाणी सुंघी जोई ने सुंघनीम

[illegible] करीजे, तेम आ वस्तु मूंजवी, वा, पछे जीव निरंतर करतो हतो, एम भग-
[illegible] बोध्यं जे–जेम [illegible] [illegible] करतो निरंतर करीजे. [illegible] आवो भाव [illegible] जेनुं एवुं [illegible] मा-
[illegible] मनो मुनीवानुं ७१ [illegible] [illegible] दुर्ग, आवो भाव [illegible] मुनपणानो संन्यास (त्याग) [illegible].
[illegible] नहीं मुद एवुं. आ मारुं [illegible] छे, आवो जे आ नरपणे जीवता मुनी नाद गुनपानो [illegible] निश्चे नाके
७२ [illegible] [illegible] [illegible] एक वस्तु [illegible] [illegible]. गुरुने भगो [illegible] तो, ते [illegible] [illegible] निश्चे नाके
[illegible] ७३ [illegible] [illegible] [illegible] आहार पामी, एवं [illegible] रम पछी [illegible] पामनो त्याग [illegible] करी एक
[illegible] [illegible] [illegible] न पामी ७४ [illegible] प्राचीन मंत्र निरंतर नीसीत, अन्य प्रकारे निश्चे [illegible] आशा
[illegible] [illegible] [illegible]. ७५ [illegible], [illegible], [illegible]. ॥७३॥
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]. ७७ [illegible] मणपन
[illegible], [illegible]—[illegible] ७८ [illegible] - [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]. [illegible] ७९ [illegible], ए
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], आ
[illegible], [illegible]. [illegible] [illegible]. ८० आमकारे
[illegible]—[illegible] [illegible], [illegible]. आमकारे [illegible]-
[illegible]. [illegible] [illegible] [illegible].

नवनकर्यो ६१. हवेग्रंथकारकथापूरीथतासुधी गाथाछंदवडे (मागधीमां) कहेछे. ॥ अन्यएवासुखीपुरुषने, परीक्षानेअर्थे, मिथ्यादुःखशुंकरवादेवुंजोइए, माटेहुंजपोतेपरदेशजइपरीक्षाकरीश. ६२ एमकारनोविचारकर्यो, एकदिवसराजाएमोटामोटा प्रधानोसाथेविचारकरी, तेमनेविषेसर्वराज्यभार आरोपणकरी, रात्रिनेविषेएकलोनगरमांथीनीकल्यो. ६३ पोतानादेशमांतो, समस्तलोक पोतानासेवकनीपेठे, मनेओळखी, विशेषपणेमारीनानाप्रकारनी भक्तिनेनिश्चेकरशे. ६४ माटेदूरदेशांतरमल्ये, परीक्षानेअर्थे, शीघ्रपणेकियेप्रकारेजवाशे. एवीचिंताथीउद्वेगपामेल्यो, मारगमांचालतोराजा एकवडनीनळेथाकीनेबेठो. ६५ तारपछी, तेवडमांरहेनारएकजक्षमल्ये, एनीस्त्रीजक्षणीवोली. आपडाबृक्षनळेबेठेलो आकोइमहानपुरुषअभ्यागतजणायछे, ते नमारेमानवापूजवायोग्यछे. ६६ शास्त्रमांकह्युंछेके—पोतानेघेरचालीआवेला सत्पुरुषनुंउचितसन्मानकरवुं. तथादुःखितपुरुषउपरदयाकरवी, एधर्म, सर्वेनेसंमतछे. (सर्वेमांनेलोछे.) ६७ तारपछीतेजक्ष प्रत्यक्षथइराजाप्रत्येवोल्यो, हेसुजन, बोल्य, शुंतारेइष्टछे (वांछितछे) जेतुंमागुंतेसमग्रने, कल्पवृक्षनीपेठेहुंआपवासमर्थछुं ६८ तारपछी विस्मयपामेल्योराजाबोल्यो, तुंकोणछे, नेकियेप्रकारेइष्टवस्तुने आपीशकेछे. जेमाटेमनुष्योनांमनोवांछित अनंताछेते वानप्रसिद्धछे ६९ पछीतेजक्षबोल्योके—हुंमोटोदेवछुंमाटे मनोवांछितपदार्थनुं साधनकरवामांसमर्थछुं अमारेतोसर्वसिद्धियो, अनेसमृद्धियो, मनवडेजनिश्चेसिद्धथायछे ७० राजाबोल्यो, हेदेवतुंतुंशुंकरवाबोल्योछो, केमजेदेवोनुंपणमनोवांछित सिद्ध नथीथतुंनिश्चे. देवोपणघणादुःखियाहोयछे. ७१ तेउपरप्रमाणछेके—इर्ष्याविषादमदक्रोधमानलोभइत्यादिकेकरीने, देवोपण घणादुःखियाछे. देवोपणबराबरीआ बीजादेवोथीपराभवपांमेछे माटेतेमनेपणक्यांसुखहोय. एवातनिश्चेछे. ७२ तेमाटेजो पोतानुंमनोवांछित, तेमनाथीसिद्धनथीथतुंतो, तेबीजानुंकियेप्रकारेसिद्धकरशे. माटेदेवनाथीनिश्चेमनोवांछितसिद्धकरायजनहीं

शुंरतुकपगागमभाविनकं! नजभगाम. ७३ पाटेनपोदायागह-गर्भी मेजछानाकेमणुवकहांछो. मत्यवक्राश्रेष्ठमनुष्यपण एम भमल्यनशीयोल्या नोनमांदेवपडनेकेमणगवांल्योछो. ७४ एमकारेराजाएनरवशुंकिगहिन वचनकयुंतेनेगाभक्ती।विनमांचणरकार पालनोंतनसदेवबोल्यो आनंमकयुंनेसर्वेगरयछे. ७५ देवमानेवणपूर्वकरेल्याप्रपाथोनवोनानांपुण्य, मेनेअनुसारेम, जेमवीजनेअ नुसारेनशाद्धिरंगेव. मनोवांछितसिद्धियायछे ७६ तोपणदेवनानीशक्तिअगिानिनछेपाट, जिनंवलुकार्यकरेछे जेगुणमनुष्योथी गाथीनकायुंनथी. मेवुंगुणशीघ्रपणेकाइकाइमाधिनकेछे. ७७ पाटेनुंकाइकपणपारीयानेवाग, जेपागोननेमाराथीअवश्यनिद्ध थशे. तनपरहुंभावीशकीश, देवनुंदर्शननिश्चे विष्फलहोयजनथी. ७८ नेमकारेतेदेवनुंवचनगागीवडे हढकरयाने राजानेल्योकं. जोएमछेतोमने उपाटेहुंगंगाकंसारे नपोगाकंवाछितकार्यकरीश. ७९ नारपछीतेदेवेपण, तेराजानुंवचनसंपूर्ण अंगीकारकयुं. तेनुंगुणवहोयछेतेनुं निधेकार्यथायछे, नेमनेजवांछितफलतोअधिकएवीपण, सिद्धियाएमकारेअवश्यहोयछे. ८० तारपछीहवे पाविलोगजाविचारेछेके, हवेपणहुंअधिकगुणीथयो, तोपणपरीक्षानेअर्थ परदेशगमनादिकनेकरीश. ८१ नारपछीजशमत्ये राजाचाल्यो, हवेतेपानेकपटपरदेशपासेइमा. पत्तीदेवशक्तिपणेवायुनपिडेतेराजा, परदेशमांपोच्यो ८२ त्यांकुशस्थलनामनुं नगरहतुं, जेपानीनिनोपमअपावेछे, एवातेनगरनासमीपरहेलाउपवनमां मार्गेजनारलोकनीपेठे, तेराजा, गंभानाकोठिवाड़ रूपनेछुं, कुक्षपारिनेरहोछे. ८३ तेनगरमांचंद्रमानीपेठे लोकनेआनंदकरतो चंद्रनामेराजारहेतोहतो, परंतुआश्चर्यएछेके, एराजासूर्यनीपेठे, परना (शत्रुना) तेजनेनाशकरतोहतो. ८४ तेराजानीस्त्रियो, चंद्रसमानछेमुखजेमनुंएवी, मियवचनाअने चीजीमियवदनानामेहती, भगमनीगोगुणवडेअधिकहती अनेबीजीचंद्रवदनाहती. एटलेचंद्रमानीपेठेआनंदकारीछेमुखमात्रजेनुं एवीगुणवान्तीहती. ८५ पुत्रहितएवीएवेस्त्रियोने, अतिशयप्रीतिनेरहेनानुंपात्ररूप एकएकपुत्रीहती. पहेलीपुत्रीनुंनामसुलोचना

निश्चनीचोउंचोथयाम
वेदेकापनरोपणत्रणवेदेन निरंतरकामनमावनाणे, माला (पंक्ति) नुंधारणकरेणगणालीनकहेवानो, के—एनो
करनो, एवोनेहोणछे. १३ (प्रणश्लोकनोएकठोसंबंधछे) मेधीजीकन्यायेपण प्रथमकन्यानीपेठे प्रश्नउत्तरआप्यो, जेमके—विनेयकेताशिष्य, विनय
वाणिकाइयानोरहेछे. ॥ वळीवेबुद्धिवानपुरुषे, वेगणीयोने, मुदांमुदांश्लोकार्थपुछयो. जेमके—विनेयकेताशिष्य, विनयरहितछेतोपण अतिसुंदरपणानेपामेछे एनो
गुणेकरीने सर्वजगाएअतिसयपणुंनिश्चेपामेछे. इहांतो, विनेयकेताशिष्य, विनयरहितछेतोपण अतिसुंदरपणानेपामेछे एनो
आश्चर्यकारीविचित्रपणुंछे एश्लोकनोपाधनआवेएवोअर्थ बीजीरीतेकरवोएमश्च १७ सर्वजगायेनथीवळनातांमनीनीतिजेपनी
एवापुत्रीएनरमश्रेष्ठपणुं पमाय, मे वातनो प्रसिद्धछे; अने इहांतो, गलितनयाभिः केता नीति रहित एवी पुत्रीयोये
पण, श्रेष्ठपणुं पामेछेएआश्चर्य करनारुंछे. १८ एश्लोकनो निर्बाधअर्थ करो, एमश्ने त्यारेश्रणश्लोकनो उत्तरआ
प्योके—भगःकेताशुभकर्म, अनेबीजाश्लोकनोउत्तरआप्योके—ताभिःकेतालक्ष्मीवडे. ॥ भावार्थआमकारनोछेके—विनेयो,
एपदमांथी, वि, न, य, एटलाअक्षररहितकरीएतारे ए, श्रो, रहे, तेनासंधिकरीएतारे भगो, थाय, तेनोअर्थशुभकर्मएटलो
थायछे, पाछेजेनेंशुभकर्मछे तेविनयपनानोहोयतोपणश्रेष्ठगणायछे. बीजाश्लोकमां, नतयाभिः, एपदने, न, य, एवेअक्षरेरहितक
रीएतारे, त, आभिः, एटलाअक्षररहेतेनोसंधिकरियेतारे, ताभिःकेतालक्ष्मीवडेश्रेष्ठकहेवाय, एटलोउत्तरथयो ॥ वळीएसम
येपंडितेत्रिजीगोनेआउप्रश्नपुछया. जेमके—आकृतिविनानोविभुएवो, साधु, वंचितथयो, तेथापंडितयुक्तथयुं, वळीजेद
पनुंनरथनुंतेमथने, तुंनित्यपाम्य, एमश्नपुछयुंतेपाछुंवळतेकहो. १९ प्रथमकन्याएतेनाउत्तरकर्योके—साधुएवोएकशब्दछे,
तेनेआकृतिकेताआकारविनानोकर्यो, अनेविभुकेताभुअक्षरविनानोकर्यो, त्यारे सू एकलोवाकीरह्यो, तेवंचितकेताउकारेअं
चितकेतासहितकर्यो, त्यारे सु एटलोअक्षरथयो, अनेअमंदशब्दना मध्यअक्षरजे, मं अक्षर, तेणेयुक्तकर्यो, तारे सुमं एवो

के. गाग, इ, केवांकांदिनवा कोरवरेषवोणपातानोअसरके. पक्ष, के. पारणतनुं. भः के. शिर, चंद्रदेवांडे गंगोत्तर, के. रत्न, इ, केवांकांदिनवा कोरवरेषवोणपातानोअसरके. पक्ष, के. पारणतनुं. भः के. शिर, चंद्रदेवांडे गंगोत्तर,
विमज्ञ केवानिर्पठंड. ४ वि, के. विशेष. पक्ष, के. पाप. पृथ्वापवी मगरंपण, विमलः, मधुं. उ, इ, पत्रु. अगू, पृथार
कर्मादिगातुडे नेवांमंविरचीपनारे विमलः, परंपाप. पगाच, पृथ्व्दनेविमलवीण पृठे प, अने च, पंभमशेरादिकारिण
मारं, गाः पृठोअगरंदे नेवांभर्थगुणपंचायठे. पृषाापवीसपने, विमलः पृषपड्डं. विगवनोानामकार पृवोअर्थड, अने
दलिर, पठ्दर्पगृपभाटवीयपने, विमलः पृषपड्डं. नेमानीर्थकर विमल, पृथापनाळे. पृथ्वगदभाष्यो. ॥ कोइअन्यपदेशे
धिकीकन्यानेपण पृथवाडिनवअनुभवोके—भार्गतंदर्मानुशिया गागमश्रोनोउत्तर, जनदगमदलादि अवकारनीगानिरदं
तुराज्ञुदाउनरपणेलागण, नेपृकादवहेनस्तुणरभागो, मांगेकन्यापांत्रीके नेत्रणविवारीनेआवीश. ॥ आत्मगणगुणेनी योग
नगवापाई मश्रमनेउत्तर्यपांदेपाडायडे. नेपदं-कोणवगस्पनेयने, मेरह. पानानुंगाठिरपांवंडे. उ. मधां. हागि, रामी
गापनोमिरक मनोगाठिरपांधे. मश्र, त्यादिमापण, कहेवाहोय उ अकृ पृठेभादिनीभागप अकन्देयागिनपणुंडे पाठे
कनूरत्यनआवे. मश्र अन्यादिअर्थनेकहेनाराकोणडे. उ. भगः, कहेवामरआदिनरपणो कालनुंअलगणुं कहेनाराडे. मश्र
मरपनलेगामनारादडंवादोय. उ मभावकराः, मभावकतुणांमञ्येश्रेतुकदेवाय. ॥ भावकांदवन्नगमदनापेतानिपर. १
ग. मन्दनुंगोपनकरो उ. हेगा, हे शुद्द ॥ म. अल्पांद मर्थनो क्रियांनयनआवेडे उ क! ॥ म. कांतिरहितनुंगोपन
कां. उ. अप, के. हे कांतिरहित म ते उत्तमरहेठ मजनाकां. उ आ. म. मश्र. पांतकहेनारा होय. उ. मधार
कराः ॥ मधापकमपंचेष पृरकांभंमयकनमपननांवपः ॥ २ ॥ मश्र. मपपउरपर्णोकपांडे. उ. म. पृष्टेडोउतपगी
के. । म. पूर्वनेपितेकहठं उ. मधा, के कांनिडं । म मांडपानवांपनाकहो उ. हेमभाव । म पूर्वनीपिडेनश्रीजिनशासननुं

शाश्वपणो, तेतवनेकेतांपुत्तनेतुंपांस्य, ॥ कमलाकेवीछेकेविमला, अनयाश्रिता, निश्रेगांमत्यं अतिसमपनेशांमेमने अमितायद, आयकारनुं अतिशेगुप्तकिपुंनाम, जैनलोकअंगीकारकरेछेनेकहो. एमअनोउत्तरवीजीकन्याएकर्योके–कमलाएशब्दछे, विमला केतां, पद्माएबेअक्षरविनानोकर्योतारे, क, एकलोरह्यो, तेनेअनयाश्रिताकेतां, अने. आश्रितकर्यो, एटलेअनेकएवोशब्दथयो, ते सांभत्यं, शब्दने गू, मू, यं, एत्रणअक्षरविनानोकर्योतारे आंतएटलुंरह्युं, तेनेअनेक, जोडेमेळवतांअनेकांत, थयुं. अमिताकेतां, अम, शहितकर्युंतारे अनेकांतएवुंनाम, जैनोअंगीकारकरेछे, एमउत्तरवीजीकन्याएआप्यो. ॥१००॥ वळीएक पतुरपुरुषे अतिविषमप्रश्नपुछ्योके–त्रेवीशप्रश्नपुछुं तेनोत्रणअक्षरमांउत्तरकरो. ईश, केतांशिव १ श्रीज, के. काम २ इंदु के. चंद्र ३ बाल, के. बालक ४ अंडज, के. पक्षी ५ विधि, के. ब्रह्मा ६ मघवा, के इंद्र ७ कंठवर्ण, के. विसर्ग ८ अघन, के. रक्षण ९ क्रुधभाषा, के क्रोधचंडएवो एकअक्षरबोल्यांने १० धर्मी, के. धारणकरनारी ११ शिव, एटलाअर्थने कहेनारशब्दोकियाछे १२ तेकहो. ॥ नथाचंद्रकेवोहोय. १३ विशेषकहेनारशब्दकोणछे १४ त्यागकरवायोग्यशुंछे १५ भूआदिधातुक्रियाकियाछे १९ मराल, एशब्दनेकेवोकरीएतारे, सुवर्णवाचकशब्दथाय. २० अनेकअर्थनेकहेनारशब्दकियो छे. २१ शरीरमांशुंफुरेछे. २२ गमनेएकर्तार्थकरनुंनामकहो. २३ एत्रेवीशप्रश्नोनोउत्तरत्रणअक्षरमांकहो, त्यारेतेकन्यानरकालबोलीके–विमलः, ॥ तेरमाजिनाकेया, एमपणकोइजगाएपाठछे, पणतेपाठहोयत्यारेतो सुल्भउत्तरछे. हवे. विमलः, एवात्रण अक्षरबोलवाथी त्रेवीशप्रश्ननोउत्तरथयो तेरीरीतेकहेछे. ईशकेतांशिवनेकहेनार. उ छेअनेकामनेकहेनारशब्द ई छेतेनेएक ठाकारेपेतारे, वि, थाय. प, केतांचंद्र. लम्केतांक्रीडा करनारबालक, त्यारे, विमलः १ एरीतरीते, फरीथी. वि, एवुं पक्षीनुंनामछे, म, केतांब्रह्मा, व केतांइंद्र, कंठवर्णकेतां विसर्ग, एटले–विमलः, एवुंबीजोथयतेमज एमनवनवनेकरवुं. क्र

अ: के. शिर, चंद्रकेशोके तेनोउत्तर, के. रसाण, इ, केनांकोइंदगमां कोयचदेपचोपभाषानोअक्षरछे. मज्, के. धारणकरवुं, अः के. शिर, चंद्रकेशोके तेनोउत्तर, मज्, अप्, एजार विमलः केनानिर्मळछे. ४ मि, के. विशेष. मज, के. पाप. एमगानवी वनतेपण, विमलः, थयुं. उ, इ, मज्, अप्, एजार एपंअक्षरेराहितकरिए ज्यादिधातुछे तेनोसंधिकरीएतारे विमलः, एतुंथाय. मराळ, एशब्दनेविगळकरीए एटले म, अने ल, एपंअक्षरेराहितकरिए तारे, राः एटलोअक्षररहे तेनोअर्थसुवर्णथायछे. एमगानवीवरने, विमलः एमथयुं. विशळनोनानाप्रकार एवोअर्थछे, अने शरीर, मळदपछेएमआडवीवरने, विमलः एमथयुं. तेरमानीर्थंकर विमल, एनामनाछे. एमउत्तरआप्यो. ॥ कोइअन्यपंडिते धीरीकन्यानेपण एमजकठिनप्रश्नपुछ्योके—आर्याछंदमांपुछेला मागप्रश्नोनोउत्तर, ज्यहमगणस्थादि छप्रकारनीजातिवंड जुदाजुदाउत्तरमळेत्यापण, तेएकपदवडेमत्युत्तरआपो, तारेतेकन्यायोंतीके तेपणविचारीनेआपीश. ॥ आजगणमुवेथी बोध गयामाटे प्रश्नअनेउत्तरगंथाथेदेखाडायछे. जेमके–कोणप्रमप्रगयेगने, मेवक. पोतानुंगांछितपामेछे. उ. प्रभो. स्वामि, राजी धायनोसेवक मनोवांछितपामे. प्रश्न, स्यादिप्रत्यय, कहेवोहोय उ अकः एटलेस्यादिनीआगळ अक्षरंद्यासिवपणुंछे माटे कप्रत्ययनआवे. प्रश्न अल्पादिअर्थनेकहेनाराकोणछे. उ. अरा:, कहेतांअरआदिप्रत्ययनो काळनुंअल्पपणुंकहेनाराछे. प्रश्न प्रवचननेजाणनाराकहेवाहोय. उ. प्रभावकवराः, प्रभावकपुरुषोमध्येश्रेष्ठकहेवाय. ॥ आप्रकारेव्यस्तसमस्तनामेजातिथइ. १ प्र. शब्दनुंसंबोधनकरो. उ. हेरात, हे शब्द ॥ प्र. अल्पादिअर्थमां कियोप्रत्ययआवेछे उ. कः ॥ प्र. कांतिराहितनुंसंबोधन कहो. उ. अभ, के. हे कांतिरहित प्र. ये उपसर्गएकैकअक्षरनाकहो. उ. आ. प्र. प्रश्न. धर्मनेकहेनाराकेवाहोय. उ. प्रभाव करा: ॥ प्रभावकमध्येश्रेष्ठ. एपकारेअंतव्यस्तसमस्तजातिथइ ॥ २ ॥ प्रश्न. प्रथमउपसर्गकियोछे. उ. प्र. एपहेलोउपसर्ग छे. । प्र. सूर्यनेविषेकेहछे. उ. प्रभा, के. कांतिछे. । प्र. महिमानुंसंबोधनकहो. उ. हेप्रभाव । प्र पूर्वनीपेठेजश्रीजिनशासननुं

शाश्वपणो, तेमत्वनेकेतांगुरुतनेतुंपात्य, ॥ कमलाकेवीछेकेविमला, अनयाश्रिता, निश्चेमांमत्यं अनिस्मपनेतांमेगने अभिनाशइ, आमकारनुंभभिधेगुणकियुंनाम, जैनलोकअंगीकारकरेछेनेकहो. एमअनोउत्तरवीजीकन्याएकर्योंके–कमलाएशब्दछे, विमला केतां, मलाएवेअक्षरविनानोकर्योनारे, क, एकलोरह्यो, तेनेअनयाश्रिताकेतां, अने, आश्रितकर्यो, एटलेअनेकएवोशब्दथ-यो, ते तात्पर्य, शब्दने मू , मू , यं, एत्रणअक्षरविनानोकर्योनारे आंतएटलुंरयुं, नेनेअनेक,-जोडेमेलवनांअनेकांत, थयुं. अभिधाकेतां, अप, महिमकर्युंतारे अनेकांतएवुंनाम, जैनोअंगीकारकरेछे, एमउत्तरवीजीकन्याएआप्यो. ॥१००॥ वलीएक पुरुषपुरुषेप्रश्नविषयक्षअपुछ्यांके–आ वेवीशप्रश्नपुछुं तेनोत्रणअक्षरमांउत्तरकरो. ईश, केतांशिव १ श्रीज, के. काम २ इंदु के. चंद्र ३ बाल, के. बालक ४ अरज, क पक्षी ५ विधि, के. ब्रह्मा ६ मघवा, के इंद्र ७ कंठवर्ण, के. विसर्ग ८ अ यन, के. लक्षण ९ कुधभाषा. के क्रोधचडएनो एकअक्षरबोलवांने १० धर्षी, के धारणकरनारी ११ शिव, एटलाअर्थने कहेनारशब्दांकियाछे १२ तेकहो ॥ तथाचंद्रकेवोहोय १३ विशेषकहेनारशब्दकोणछे १४ त्यागकरवायोग्यशुंछे १५ भू आदिधातुंक्रियाकियाछे १९ मराल, एशब्दनेकेवोकरीएनारे, सुवर्णवाचकशब्दथाय २० अनेकअर्थनेकहेनारशब्दकियो छे. २१ शरीरमांशुंफुरेछे. २२ गमेतेएकनांथंकरनुंनामकहो २३ एवेवीशप्रश्नोनोउत्तरत्रणअक्षरमांकहो, त्यारेतेकन्यानत्काल बोलीके–विमलः, ॥ तेरमाजिनाकिया, एमरणकोइप्रगाएपाठछे, पणतेपाठहोयत्यारेतो सुलभउत्तरछे हवे. विमलः, एमात्रण अक्षरबोलवाथी त्रेवीशप्रश्ननोउत्तरथयो तेरीतिनेकहेछे ईशकेतांशिवनेकहेनार. उ छेअनेकामनेकहेनारशब्द इ छेतेनेएक ठाकारेपेतारे, वि, थाय म, केतांचंद्र. लप्केतांक्रीडा करनारबालक, त्यारे, विमलः १ एवीजरीते, फरीथी. वि, एवुं पक्षीनुंनामछे, म, केतांब्रह्मा, ल केतांइंद्र, कंठवर्णकेतां विसर्ग, एटले–विमलः, एवुंबीजोवचनेशतुं एमनरत्रयनेकरवुं. ऊ

. मऊ, के. भाणकार्ड, भः के. शिर, चंद्रकेवांछे गनोजनर,
के. रतन, इ, केनां कांइंदतवां कोणपदेश्योपभाणानोभसाके. मऊ, के. पाप. एवाणनी मनवंवग, शिवजः, मधु. उ, इ, मऊ, भनू, एनार
शिवजः केनानिर्वकाळे, ४ पि, के. विरोप. मऊ, के. पाप. एवानुनेविणजकरीए एऊने प, अने ज, एवंभसीरहितकांए,
ज्यांरिमाकूळे मेनांपंविकारीएनारे शिवजः, एतुंभाव. मराज, एनाय्नेविनजकरीए एऊने प, अने ज, एवंभवीरहितकरीए, अने
नारे, राः एऊओअसरदे मेनांअर्पगुवर्णभाणके. एपानामीवतने, शिवजः एपपवृं. शिवजनोनानाभकार एपोभगिळ, अने
जरीर, मऊपणोइएपभाऊभीवाने, शिवजः एपथवृं. मेगानीर्थकर शिवज, एनापनाळे. एपाऊपरभाण्यो. ॥ कोइभन्यांरिने
धर्मीतन्मानेपण एपनवऊिनमभपुछयोके—मार्गांजंदमापुछेथा पागमभेनोऊपर, करवानाकमाढे छमकारनीशानिवडे
तुराणुसाऊपारमयेभाषण, मेपकाइवडेमस्तुनरभाणो, तारेतेकन्यायोंऩीके मेवणविवागीनेभावांश. ॥ भानगाणगुनेभी योध
भवामाटे मश्रमनेउनरपंपाणिदेवादायाके. मेमके-कोणनमश्रगेमनं, मेरा. पानानुंवांछियाणके. उ. मर्भा, दयाथि, रजी
भागनोसिवक पनोपाळिनवांवि. मश्र, स्वादिमएणग, कोबेवोहोप उ भवर एऊक्ष्मादिनीमागज अकवदेयांछिनगुंझे माटे
कएभमणनभावे. मश्र अन्यादिभर्गनिकवेनाराकोणके. उ. भराः, कहेताभरआदिमएणगो काळनुंभलपणं करनाराळे. मश्र
मपवनेनोणनाराकवेनारोन. उ. मभापकवराः, मभावकानुकणापध्येश्रेष्ठकवेवाप. ॥ भानकांचदवेगानदनानामेजानिषद. १
म. शब्दनुंयंबोधनकरो. उ. देवाप, हे शब्द ॥ म. भवाांदभपंभा कियोंभव्यपभाचेळे उ. का ॥ म. कांतिरहितनुंसंबोधन
करो. उ. भम, के. हे कांतिरहित म. ने उभनर्णइकमवनाकरो. उ. भा. म. मश्र. भनंतकहेनाराकेवाहोय. उ. मवाप
करोः ॥ मभावकानुयोग्य. एवकारमंतरवहननमनाविषद ॥ २ ॥ मश्र. मगवउपनर्गांकयोछे. उ. म. एपदेवोउपनर्ग
छे. । म. शुर्वनेशिपंकाइवे. उ. मभा, के. कांतिने. । म पोदवानुंसंबोधनकरो. उ. देवभाव । म पूर्वनीवंदेनश्रीजिनशासननुं

शब्दथयो, तेतत्त्वनेकेतांसुखनेतुंपाम्य, ॥ कमलाकेवीछेकेविमला, अनयाश्रिता, निश्चेतांमत्यं अतिसमयनेपामेमते अमिताथइ, आमकारनुंअतिशेगुप्ताकिपुंनाम, जैनलोकअंगीकारकरेछेनेकहो. एमश्नोउत्तरवीजीकन्याएकर्योके–कमलाएशब्दछे, विमला केतां, मल्लाएबेअक्षरविनानोकर्योतारे, क, एकलोरह्यो, तेनेअनयाश्रिताकेतां, अने, आश्रितकर्यो, एटलेअनेकएवोशब्दथयो, ते सामत्यं, शब्दने म्, मू, यं, एत्रणअक्षरविनानोकर्योतारे आंतएटलुंरह्युं, तेनेअनेक,-जोडेमेलवतांअनेकांत, थयुं. अमिताकेतां, अम, सहितकर्युंतारे अनेकांतएवुंनाम, जैनोअंगीकारकरेछे, एमउत्तरवीजीकन्याएआप्यो. ॥१००॥ वलीएक चतुरपुरुषेअतिविषमप्रश्नपुछ्योके–आत्रेवीशप्रश्नपुछुं तेनोत्रणअक्षरमांउत्तरकरो. ईश, केतांशिव १ श्रीज, के. काम २ इंदु के. चंद्र ३ बाल, के. बालक ४ अंडज, के. पक्षी ५ विधि, के. ब्रह्मा ६ मघवा, के इंद्र ७ कंठयवर्ण, के. विसर्ग ८ अपन, के. रक्षण ९ कुधभाषा, के. क्रोधचडएवो एकअक्षरबोलवोते १० धर्त्री, के. धारणकरनारी ११ शिव, एटलाअर्थने कहेनारशब्दोकियाछे १२ तेकहो. ॥ तथाचंद्रकेवोहोय. १३ विशेषकहेनारशब्दकोणछे १४ त्यागकरवायोग्यशुंछे १५ भू आदिधातुक्रियाकियाछे.१९ मराल, एशब्दनेकेवोकरीएतारे, सुवर्णवाचकशब्दथाय. २० अनेकअर्थनेकहेनारशब्दकियो छे. २१ शरीरमांशुंफुरेछे. २२ गमेतेएकतीर्थंकरनुंनामकहो. २३ एत्रेवीशप्रश्नोनोउत्तरत्रणअक्षरमांकहो, त्यारेतेकन्यातत्काल बोलीके–विमलः, ॥ तेरमाजिनाकिया, एमपणकोइजगाएपाठछे, पणतेपाठहोयत्यारेतो सुल्भउत्तरछे. हवे. विमलः, एनात्रण अक्षरबोलवाथी त्रेवीशप्रश्नोनोउत्तरथयो तेरीतिनेकहेछे. ईशकेतांशिवनेकहेनार, उं छेअनेकामनेकहेनारशब्द इ छेतेबेनेएक ठाकरियेत्यारे, वि, थाय. म, केतांचंद्र. लम्केतांक्रीडा करनारबालक, त्यारे, विमलः १ एप्रीगरीते, करीथी. वि, एवुं पक्षीनुंनामछे, म, केतांब्रह्मा, ल केतांइंद्र, कंठयवर्णकेतां विसर्ग, एटले–विमलः, एवुंवीजीवस्तेथयुं एमनरायवनेकरवुं. ऊ

कि. रत्न, ह, [illegible] [illegible]. मठ, कं. [illegible], भः कं [illegible], [illegible]
[illegible], ४ ति, कं. [illegible]. मठ, कं. पाप. [illegible], [illegible], [illegible] ३, ह, मठ. [illegible]
[illegible], [illegible]. [illegible] [illegible]
[illegible], [illegible]. [illegible], [illegible]. [illegible]
[illegible], [illegible]. [illegible], [illegible]
[illegible]—[illegible]. ॥ [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible]. ॥ [illegible]
[illegible]. ३. [illegible], [illegible]
[illegible]. ३. [illegible], [illegible]
[illegible]. ३. [illegible], [illegible]
म. [illegible]. ३. [illegible]. ॥ म. [illegible]. ॥ [illegible]. ?
[illegible]. ३. [illegible], कं. [illegible]. ३. [illegible] ॥ म. [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]. ३. भा. म. [illegible]. [illegible]. ३. [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
ते. । म. [illegible]. ३. [illegible]. कं. [illegible]

भारतनथवुंतेमांछेलालमामेनी एवापुरुषनुंसंबोधनकहो. उ. हेप्रभावक प्र. पोतानाभावथी जेकविताकरेछे एनामभावनुं संबोधनकहो. उ. हेप्रभावकव, हेप्रकर्षभावथीकविताकरनार. । प्र. हवेजैनी, अनेसुरवरनरवर तेमनाथीनजितायएवा, वादि पुरुषोकेवाहोय. उ. प्रभावकवराः, प्रभावकपुरुषोमध्येश्रेष्ठएवा. । एप्रकारेआदि वर्द्धमानाक्षरजातिथइ ॥ ३ ॥ प्रश्न मेरु पर्वतनेविषेशुंरह्युंछे. उ. राः, सुवर्ण. । प्र. कन्याओनेप्रार्थनाकरवायोग्यकोणछे. उ. वराः, वरक्यारेमळशे एवीइच्छा कन्याओनेहोय. प्र. मित्रकोणछेतेकहो. उ. कवराः, केतां मार्जनकरेलाकेश. । प्र. सरोवरमांकोणछे उ. चक्रवराः, श्रेष्ठवग ला । प्र. पुण्यशाळिप्रमंथनेविषे सारांकामकरनाराकोणहोयछे उ. भावकवराः, श्रेष्ठभाववाळापुरुषो । प्र. निमित्तकहेवामां वाचा, केवाहोयछे उ प्रभावकवराः, प्रभावकपुरुषोमांश्रेष्ठगणायछे. । एअंतवर्द्धमानाक्षरजातिथइ ॥ ४ ॥ प्रश्न प्रभातकालमांनाराकेवीहोयछे. उ. प्रभाः, गइछेकांतिजेमनीएवीहोयछे. । प्र. नाटकमांविद्वाननुंआमंत्रणकेमथायछे उ. हेभाव, भाव कहीनेविद्वाननेबोलावायछे. । प्र भीमसेनेजराक्षसनेमार्यो, तेनुंसंबोधनकेवुंथायछे. उ. हे वक, । प्र. कयातधातुनेअचूप्रत्यय लगाडीतेनुंसंबोधनकहो. उ. हेकव, । प्र. जिनमतमांतपवडेश्रेष्ठ एवापुरुषोनुंसंबोधनकहो. उ. हेवराः, । प्र. विद्यावडे, सिद्ध पणेपण, प्रसिद्धथतापुरुषोकेवाहोय. उ प्रभावकवराः, प्रभावकपुरुषोमांश्रेष्ठहोय. । एप्रकारेशृंखलाबंधजातिथइ ॥५॥ प्र. आनगरनालोककेवाछे. उ. भराः, केतांधणाधनवंतछे. । प्र. दुःखवहनथायएवाकोणछे. उ. भाराः, भार, दुखवडेवहनथाय छे. । प्र. वरनारोनुंसंबोधनकहो. उ. हेवराः, प्र. सूर्यनेविषेकोणछे. उ. कराः, किरणोछे. । प्र. प्रसन्नथयेलादेवोएशुंअपाय छे. उ. वराः, वरदानअपायछे. । प्र. कविओकेवाहोयछे. उ. प्रभावकवराः, ख्यातिवाळापुरुषोमां श्रेष्ठगणायछे. । एप्रकारेसमरीमनागजातिथइ. ॥६॥ एप्रकारेनेकप्रश्नोनाउत्तरो एपदवडेछप्रकारनी जातिमांआप्या. ॥ नळीमगस्या

एतमस्यानेमुंदरमतारंपूरो. । कन्यानरताळवोलीके—कीडि-
जाणनारपंपुरुपोए पेकन्याओनेपुछयुं के—कीडिकापंडंतमन्युं, नेमयदेवाभळेछे, कानवंदूसेछे, अंगवदेसूंघेछे, नकाणछे. ॥
कानामनीउंदरीपडंतमन्युं. ॥ ११ ॥ बीजीकन्यानेपुछयुंके—नेमयदेवाभळेछे, कानवंदूसेछे, अंगवदेसूंघेछे, नकाणछे. ॥ १२ ॥ वळीअनिजणिनशास्त्रमां निपुण
कन्या, नरताळवोलीके—एणोअभिप्रशंतोनामनी, लक्षिनेतमिकोसाधूजाणजो. ॥ १२ ॥ वळीअनिजणिनशास्त्रमां निपुण कन्या, नेमांथीत्रीजाभागनाज्योंदुंकेवागमां अनेचोथो
एवावेसोनीपे पेकन्याओनेगुदासूदाबक्षपुछयुं. जेमके—एकबेपारीनुंदोलुंहतुं. नेमांथीत्रीजाभागनाज्योदुंकेवागमां अनेचोथो
भाग, शिमुंकेवागयो. छठोभाग, धातुकेवागयो. नवमोभाग, कपुंकेवागयो. बारमोभाग, सोनुंकेवागयो बाकीनाछपुरुषोम-
णिरत्नकेवागया. त्यारेएनवेंपुरुषोकेटलाढजोनेकहो. । नेकन्यावोलीके—एनवेंएकसोआटपुरुषहना नेमांत्रीजोभागनेछत्रीस,
अनेचोथोभागनेसत्तावीस. छठोभागनेअढार, नवमोभागनेबार, बारमोभागनेनव, बाकीनाछहता ॥ वळीबीजोप्रश्नुछयो
के—कोइयात्राळुपुरुष पोनानाधनमांनेथाडथी तेमांथीत्रीजाभागमां तेत्रीजाभागनाछठाअंशने (भागने) मेळवीरेवनानळनीया-
त्रानोखरच्या. १ अनेचोथाभागमां तेचोथाभागनात्रीजोअंशमेळवीशत्रुंजयनीयात्राकरी. ३ अनेनवमाभागमां तेनवमाभागना
बीजाअंशनेमेळवी अर्बुदयात्राकरी. ३ हवेबारमाभागमां तेबारमाभागना बीजाअंशनेमेळवी नेमीश्वरयात्राकरी. ४ एम
गोनेयात्राअरंजयादिनीधर्मागथयुं. बाकीनापांतानीपासे धणसोनैयारह्या, त्यारेतेमसंसानैया केटलाधयातेकहो. ॥ कन्यावोली
के—एकसोनेआठसोनैयाहता तेमांत्रीजोभागनेछत्रीस तेमांतेनोपठोअंशनेछ, तेमेळवनांबेतालीसथया. १ अनेचोथोभागने
सत्तावीसतेमांतेनोत्रीजोअंशनेनव तेमेळवतांछत्रीसथया. २ हवेनवमोभागनेबार, तेमांतेनोचोथोअंशतेत्रण तेमेळवतांपन्नरथया
३ अनेबारमोभागनेनव, तेमांतेनोत्रीजोअंशनेत्रण तेमेळवतांबारथया ४ बाकीनात्रणसोनैयातेनीपासेरह्या ॥ वळीप्रश्नु-
छयोके—यात्राएगयेला पांचपुरुषोए, यात्रामां आवेलो एकनाधपिकनोसमूहहतो तेमांथीचोथोभाग, छठोभाग, आठमोभाग,

घा० ११ बारमोभाग, पांचीसमोभाग, नवमीतापनमांडमानरहा, तेमनेपोतपोतानोजचोथोभाग तेणेमहितकरीनेगावालुनेमपाक्षा दांपीनामांसउपवासीहना, तोमर्वेमळीने साधिकवेरचाधवा, तेकरा ॥१४॥ न्यारेबीजीकन्यानोलीके—अनुगावालुभो अनकाविल्पवा अयके—अनुनोबाधाभागवरिए न्यारेचोवीसथाय. तेमांनेचारवीशनोचोथोभागजेछ तेणेमहितकरीयेत्यारे त्रीशथाय ॥१॥ अनबटोभागजेमोला तेमानमोलनोचोथोभागजेचार, तेणेयुक्तकरीयेत्यारेवीशथाय ॥२॥ आठमोभागजेचार, तेमांचारनोचोथोभागजेएक तेणेमहितकारएत्यारेपांचथाय. ॥ ३ ॥ बारमोभागजेआठ. तेमांनेनोचोथोभागजबे, तेणेमहित करिएत्यारेदशथाय ॥४॥ चोविशमोभागजेचार तेमांनेचारनोचोथोभागजेएक तेणेमहितकरिएत्यारेपांचथाय एटलामाम-खिकेनेपीवाना अनुक्रमेमाससराववा बाकीनामासजणे उपवासकर्याहता ॥ त्यांतकन्यानेवलीएमपूछयोके—एकक्रोडा करवानीवाव तेनेमम आरवाना आठवहनारहता, तेणकरिनेअनुक्रमे, बीजोभाग, त्रीजोभाग, चोथोभाग, पांचमोभाग, छठोभाग, सातमोभाग, आठमोभाग, नवमकरिने, रात्रिदिवसना इसांशकरिनेचालता [illegible] एकेकालेतेवा-[illegible] केटलोकालेभराय, तेपछिते तेनोउत्तरआपो ॥१५॥ बीजीकन्यानबोली के अहोरात्रनात्रीसमतालीस [illegible] [illegible], जलवडेभरायछे ॥ जेमके—आवाव्यनुसरण, पोतानीरुचि [illegible] नेराख्यआठहाथप्रमाणनीकरवाइच्छेलीछे तेमदि, गणितशास्त्रनाभागजातिनीरीतिये करणकर्यामते [illegible] पेहेलानालवाबडे पीसतालीसभागकरेला इस्तनामोल्अंशभरायछे. ॥ एमजबीजानालवेक-[illegible] चोवीसअंशभरायछे. एमजत्रीजापडनाल्यनानालवेकरिनेत्रणअंशपुरायछे. चोथानालना [illegible] अंशभरायछे. पांचमानालवावडे एकहाथअनेत्रणअंशभरायछे. छठावडेएकहाथअनेअगीयारअंशभरायछे सातमा

भा०

११

षटेघटीआगळथी आगळीअंशमदायछे. भाठमावेडेनोभेकहाथ अनेनावडीनअंशमरायछे, भेषभाठहायनमाथनीपूतापलमपूर्ण नक्षत्रपूर्णथायछे. नेनीम्यापना जेमके— ॥ हवेनेगतागतजन पेदुशीभोनेपुछेछेके-पारापथनोउत्तरनो मेशइनेकहेछेकारे करोपरतोकर्ण, (पूर्वकोकुडर्ण) अनेबीजोउपक्रम (उ-पाय) अेवेछे. नेनां प्रमान. कोणछे, अथवानेनुलपछे. १६ मेरयत्र मणकन्यायोलीके—उपक्रम, पराक्रमनीपेठे गर्व नगावे फलपामनुंकारणछेनिश्चे. अनेउपक्रम विनानुकर्म निष्फळछे. १७ भोजन, वस्त्र, धनपेदाकरवुं, पत्नोभार्जन करवो, शत्रुनो नाशकरवो. विद्या ग्रहणकरवी, राज्यपेदा करवुं, इत्यादिसर्वकार्यपण, उपायथीज निश्चेथायछे, ने कर्मफक—उपायदेज सर्वकार्यसिद्धथायछे एमपनोरथवडे नथीसिद्धथतुं, जेमके—सूतेलासिंहना मुखमांभेनीमेळेमा-

नाडक.	१	२	३	४	५	६	७	८
हस्त	०	०	०	०	१	१	१	१
हस्तांश.	१६	२४	३२	४०	८	१६	१९	३५
	४८	४८	४५	४५	४५	४०	४५	४०

तीने, मृगपेसताकदीनथी. १९ पाटेयुआडानाटडुंतेउपायनकरवो नथाटोनजमथी आरंभेनथायनथीपण, उपायनिरंतर करवापीसिद्धथायीछे. २० हवेबीजोकन्यायोलीके—कर्मानो उपायनुंफळथायछे कोडकळनथीपनुं. नयरोजबिनासेनी करवानोपरंइशानिर्धमकांड नपकर्मफळपोजाविना सिद्धउपमांनर्थकनछे २१ नत्पूछेके-पाटांउपायकर्मपतपण, भाग्याव नाहळनथीपडुं, नपराष्ट्र अमृतपीवानेडोपण, भाग्यविनाउज्जो अपराधकरीचेडो. २२ उपायोदुरनरंतउपमकरवापणीपण, कर्म

भा० ११

विनाकरीपूननथीथतुं जेमकेकर्मनेअनुसरीनेसबुद्धि प्रवर्तेछेएवशानीपुरुषोएकहुंछे. २३ मारेकर्मजप्रधानछेके, जेथीउत्तमपुं पणमाणसनिर्धनथायछे. देखोने, आजगाएअक मुंदरहतोनकहुंतुं. तेनेतुंमाभरय. कोइवेपुरुषपणविवादकरता, राजानीआगळ गया. तेवारपछीअंतरयायथी, अंतकउत्तमनेमळायछे २५ राजाअेतोनेवेने हुडापाडवानाहेतुथी. चोरनीपेठेज, कोइअेवापण ठेकाणानाअेवापरका. अरहनकुकपककरीनेवेने. घांटदीधा, पणतेरगमांगुप्तपणेसर्वभक्ष्यवस्तुखवारीने, तेघरनुंद्वारबंधकराव्युं. २६ अेतावीरानाअनाचुके-हेवमंथेले, उत्तमनुफळहेरलो, अथवाकर्मनुंफळहेलो, केमके-तपारीइच्छाथीभोजनकरो, अथवा नमारीइच्छाप अवारनानामाथी नीकळशो. २७ कोइमंथ करेकळछे. तेकोइमंथउत्तमपण फळनुंकारणथायछे, अेमगर्व वहनीवण. पोतानानामनेविषे मिंडराहिछे २८ अेमउत्तमवादीविचारकरीने कांइकानिर्णयकरीने, वीजाशब्दे बो- ल्योके-हो.१६अाजगाअेआपडेगुंकरवाथायछे २९ त्यारकर्मवादीबोल्योके-निश्चेतानानीपेठेपण अवश्य नोमारांवानांथशे गुणेवीशीरवो अथवागुरुउत्साहनकरो, पणमारेतोनिश्चेकर्मअज, प्रमाणकरवायोग्यछे ३० पछीउत्तमवादीनो, तेनावचननी अवगणनाकरीने. उत्तोधरविचारकरवानाग्यांके-भारवांकाइाग. मह्यवरहुंहायनोल्योचीनेउ, अेमधारीगयेली (गोवाये- थी, वहुंतेव. पत्नीचोरपामनोमांनेमत्वालयाथी.३१ तेवरने, ओरडामांउपराउपरीगोठवेल्यां, हांडांनीहारथती,अेटले उंदरनो, वपराशअथाथी वमनाउंडानेनेवतां, तेपांवीहनाचार, घनाघोवाया. हर्षकारक, लाडवा, प्राप्त थया. ३२ हुं ठाणादपोगतुंकळआयुश्यनेद्रगाहुं, अेवधारीनेये. तनपानेतापुरभाळतेवलाडवाथये, तेमतेबारीपेठा,कर्मवादीपुरुपनीआगळ मुकीनेबोल्यो. ३३ अहियोके-हाथपगेशांपनारापुरुपजेनुं निश्चेकर्मछेकेनहि. जेणकरीपोतानुंकांइकिंचित्कामपणसिद्धथतुंनथी; आपरवश, उत्तमनुंसमोहुंरुळ देखायछे. ३४ त्यारेवीजोकर्मवादी हसीनेबोल्यो, जेनमोअेमोटाकष्टथी फळप्राप्तकर्युं ने, ते

भा०

१२

मारी आगळ आवीनेपुरयुं, अेजमारा कर्मनुंनिश्चे फळछे. ३५ जेमममअथवेआमाराकर्मेज तनेपण आउद्योगकरवानी बुद्धिआपी एमजोनहोयतो मारीपासेतुंपणवेचीनरखोहोत. अनेतनेनिरांतेवेशीनरेवादीधो, एजमारा कर्मनुंपराक्रमजाणो. ३६ माटेहमारेतो कर्मजप्रधानछेपण उद्योगआदि कांइपणप्रधाननथी. कर्मप्रतितनेपण मोटुंसुखदेछे, अनेदुःखपणकर्मजआपेछे. ३७ एमवो लापछी कर्मवादिपणपण अेमजअंगीकारकर्युं, केमके—मकटदीठुंछदृष्टांतजेनुं एवो कोणपुरुष, सिद्धांतवातनेनमाने, सर्वेपण मनि, ३८ पछीतोतेवे, नाविनगामादहोयनेनुं, अेमतेचाल्याहताने वहेतीजमवारेठा; तेमांपणकर्मवादिना एकछोकरामांथी एक अमूल्यरत्नतेनेनामथयुं. ३९ जोएकमनराछोयहने जेजेनुंबहुमानकरेछेतो, तेतेनेअवश्य फळनासिकरेछे. अने देव, गुरु, धर्म, मंत्र, राजा, शेठअपुत्रनीपेठे मगमथायछे. ४० एमकारे प्रसन्नथयेलाकर्म, तेरत्नआपेमने, भव्यपुरुषपण जेमसमकित दर्शनप्रामगयेमने, तेपउद्योगवादीपण, कर्मपरतेविशेदृढबुद्धिवाळोथयो ४१ हवेजेमकारेतेस्थानमां तेरत्नवाळोमोदकलोगोन वन्यां, तेवानकहुंछुं, केमके—तेवानमम्यप्रकारे जांगवापानआवेतोतेवात शल्यनीपेठेअंतरमां खटकनीरयाकरेछे. ४२ ते घरमांसमृद्धिवाळो. एकराजानोमेवक, रहेतोहतो. तेनीस्त्रीएघणानाघणीथी छानुंजमाइनेआपवामाटे ४३ एकश्रेष्ठरत्न, एक मोदकमांवाळीने चाल्याकर्याहता. तेएकवखतेकडकेफारे, जीवितनीपेठे गुप्तरक्षणकरी, उत्तरपछेतेरनव्यापारमां मुकेलाहता ४४ एवाअवसरमांकोइमकारे कोपेलाराजाअे, कुटुंबसहित, अेटलेघरनांनमाणमाणमोमहित. अेतरकने अेवरमांथी, पेनी काढीमुक्यो. केमके, राजानुंमानितापणुंतो, निश्चेरत्नसमानछे. ४५ तेसमनराजाथीबीधेलोनेमेवक पोतानुंपवित्र लागकरी कुटुंबसहितघरमांथी नीकळीगयो. हवेतेमकारना मोदकनोयोग, कर्मसंजोगे, तेजघरमांथी, कर्मवादीपुरुषने प्राप्तथयो. ४६ राजापपण तेसर्ववातजाणी, चमत्कारपामी, तेवेनेछोडीमुक्या. एमकारे उद्योगवादी, अनेकर्मवादी, एवेविवादरहित थइ,

महासुखीथया. ४७ माटेसमग्रकार्यने साधनारुकर्मजछे, अेमहेवहेन, तुंपणबोल्य, समग्रअणजगतनोजन, जेनेवशछेएवुं कर्मज प्रधानछे. ४८ पछीमत्युत्तरदेवाअसमर्थ, छलकपटथीबोलनारी मोहोटीबहेनेकह्युंके—जोसर्वेकर्मनाजप्रसादछेतो ४९ तुंबोल्य के—तुंजकोनामसादेकरिनेसुखीछे, अथवा मानपांमेछे. अनेआसमग्रजन, कोनामसादेकरिनेसुखिआछे. ५० त्यारेनानीबहेने कह्युंके—अंतरमांकूडकपटराखिने केवलमुखथीमीठुंमीठुंबोलवुं तेणेकरिनेशुंथवानुंछे, सर्वेनेपोतपोतानाकर्मप्रसादथीजसुखअथवा दुःखप्राप्तथांयजछे. ५१ जीवोनेपुण्यनोउदयथयेसते, राजाप्रसन्नथायछे, नेसर्ववस्तुपणआपेछे; अनेपापनोउदयथयेसते, जम-नीपेठेनेरोषपांमेछे, नेसर्ववस्तुनुंपणहरणकरेछे. ५२ तेकह्युंछेके—सर्वजन, पूर्वेकरेलाकर्मनुं, फलविशेषनेपांमेछे. अपराधनेविषे अनेगुणनेविषेपरतोनिमित्तमात्रहोयछे ५३ तेवातसांभळीनेरोषपांमतुंछेमनजेनुं एवोराजाबोल्योके—हेदुष्ट, हेदुःपंडिते, तुंतारा कर्मनुंफळ, तथातारावोल्यानुंफळ, तत्कालदेख. ५४ एमकहीने, राजा पोतानासेवकोमत्ये एवीआज्ञाआपेछेके—नगरमांशोध करी, कोइमहादरिद्री कोढियोभिखारीरांक एवोअेकपुरुष, वोलावीअवलावो. ५५ तारपछीतेनीशोधकरवा, चारेपासभमता राजानासेवकोए, नगरनाउपवनमांवेठेलो, एककोढिओपुरुषदीठो. एटलेप्रथमवर्णनकरेलो देवतानीसहायताथी, कोढियोद-रिद्रीथइनेवेठेलो पृथ्वीपालराजा. तेनेजदीठो. पछीसेवकोतेकोढियाने, कोइप्रकारेमहाप्रयत्नथीसमजावीने, तेपवंचिताननेलावे तेमराजानीपासेलावीउभोराख्यो. ५६ तारपछीराजाएतेकन्यानेकह्युंके—जोतुंकर्मनेजमानेछे, तोताराकर्मेआपेलो आकोढियो दरिद्रीवरनेवर्य, जेथीतुंहवेकृतार्थथइशनेजोइशुं. ५७ हवेलोकमांनो, मोटोहाहाकारवर्त्योके—हवेआमांथीमानीशुंथशे, अेम कंपताछेमनजेमनांएवो सर्वलोकथयेसते, अनेसुजनरणाथीतेकोढियोगुणागर, परणवानोनिषेधकरतेसते ५८ एककर्मनेज प्र-धानकरीमहाधीरजवाली तेकन्याएसमग्रविवाहनीरीतीएतेजकोढियानोहस्तग्रहणकर्यो. ५९ तेसमतेजसभामांवेठेलोएकजोशी

महाशोकनेकरनारमरणे, तरनोन्मयगपय्यविनाशी गुमरागंथान्योके—भागयवपाणुंनरमन्मयवर्त्तेके—माथुंनोवरिवर्त्तण, म-
हतुंनिश्चेपदादुर्लभछे. ३० पटेराभिकारेभाग्योमुक्तने पोटदेवताजेवुं, पगडरपाएरहितनर्तृत्व मिश्रेकोइनकारेपणभासमशे;
पणहुंभात्मवरेत्कनापत्नीकर्तृपुं. ३१ हवेराजानामनकहुकपणी कोइपीकोइराणवोन्चीनकानुंनहतुं, निवाहगणावछीतुरत, रा-
जापकोइमारने आज्ञा करीके—भाकन्यानेग्रहणकरी भविभीतार, अनेएनीपातं. जेवराणीतामेकामकरारे, तेवनर्वकाम
करावमे. ३२ भनिवोकोरराभिचारराजाए जेपकोइपन्नोरीकरीहोय, नेतेनाउपरशिक्षानोहुकमकरे तेमनेकन्याभस्तेवल्याके—
भरेमीतनाधूपीभाजन्याविनेपाणे, तुंपर्वनारोनिरांहकरीलेजे, नेहवेतुंपरपशुपनेपावजे. ३३ कन्यापणतेपजनोवेनानुंवनमाणे
महावीतमनहुकरीन, एपभंगीकारकरी, महापातकिक एवीनेकन्या, जेवहपरहे देवनोडापशाले, तेपनेकोडियावरनो हाथ
ग्राभी, राजानापरपीजेपम्हपी नीकलीनागनेप, महाअगिनानापमोधी पाहिरनीकली. ३४ राजाएभनिवे निवारणकर-
पाभी, कोइपीकोइपणथोमागुंनहि, नेनेकन्यापाणेकोइदागीपीपण संपाधिजरायुंनहि. राजानामहाकोपयुक्तभामपी, नेक-
न्यानेकोइ, संबंधीस्त्रीपुरुषपीनथानगरनीग्नीगोमीपण, वोन्यावीशकातुंपणनहि, नेजेपकोइअनिष्टवस्तुनेनथोन्याने, आदरण-
न्यानन करे, नेपनेकन्यानेपणथयुं. ३५ नगरनान्नोको, जेपनेनेकारेतेपनयोन्नेछे, नेनावारनो, गामजनां गामजनां तेवरकन्या
येजमण, नगरवपेघडने, उपरनमरणेभेटले ज्यांकोइिभोरजोहनोत्याजापछे. नेन्नोकोकिआमकारनीछे. के—केटन्नाकन्नोकनो
राजानेदोपदेछेके—राजापडुंन्मपडीकोडियानेपरणावी. केटन्नाकनोतेकुंवरीनोदोपपोन्नेछेके—आविमणेलीगणेन्नीहुंनीवारए
कन्यानेभामकारनुंनहुन्मुंके कोडियानेपरणी. केटन्नाकन्नोकयोल्याके भाइकन्यानोशेंपांकछे, गापनेदीकरीतोज्यां देसांतेने
जबुंपडे, एनोराजानो कोपनपणोछेके, कोइनेवृत्युंननाहि. कोइन्नोकयोलेछेके—राजानाकोपनोदोपांकछे, डाहाडाग्रामया

मनुष्यमात्रनेपणीपणतेमबुद्धिसुझीगइ, केकोइथीराजानेनमस्कारपोतानहि, के आवुंअयोग्यकरशोतो पछीपस्तावुंपडशे. वळी कोइलोकरबोलेछेके, एमथानमनुष्यशुंकरे, यथाएपणीनाकहीपण, कन्याएअनेनीभवलीकर्मवादिपणानी हठ्धीधीकेनेछेवटसुधी मुकीमनहिमाटे, नानपणमांथीएनागुरुए एवुजभणाव्युंनेशालीराख्युं, माटेए थयोतोके. एकन्यानागुरुनोमळे. वळीकेटलाक बोलेछेके—गुरुचारोशुंकरे, अनेतेमांशुंथइगइ, एनोनानपणमांथीजएवीजे शोहनीके, ज्यांकोइदेखनारत्यांनायमाटे, एना मुग्धपणानोजएदोषछे. वळीकेटलाककहेछेके—भाइ, नानपणमांतोसर्वेएवांजहोयछे. एकन्यानोएवोजग्रहयोगआवीबन्यो तेएम थयुं. वळीकेटलाकधर्मनाजाणबोलेछेके—एमाग्रहयोगशुंकरे, एवानामनीकन्याओ, शुंजगतमांनहिहोय, ग्रहनडेतो, तेतेनामनी सर्वेकन्यानेनडवोजोइए, माटेएकन्यानुंकर्मजएवुंहशे, तेकोइयानेसरणी. ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ एमलोकोक्तिनां नवांनवांवचन साभळतो तेस्त्रीपुरुष, नगरनीबाहिरउद्यानमांपोंच्यां. त्यांगयापछीनेकन्या, जाणेअपरआस्वादवाळीहोयनेशुं एमखेदरहितने कोडिपापुरुषगाथेरही. ६८ तेकोढियोतेबागंधानो दरिद्रीकुरूपवाळोछेतोपण, जाणेकोइमोटोदेवनेठोहोयने तेनीजजेमसेवाकरे तेमपरमप्रीतिथीसेवाकरतीसुखेरहेछे. शास्त्रकारकहेछेके—सतीस्त्रीनांचरित्र, आश्चर्यकारीजहोय. ६९ हवेते अघटित, असमान, एस्त्रीपुरुषनोसंयोगथयो तेनेदेखवाअसमर्थथयोहोयनेशुं, एमसूर्यदेवपण अपरद्वीपमांनाशीगयो, ने तेनीरागीव्यामनीहतीनेपण, तेनीपछवाडेदुरनदोडी. ७० त्यांअंधकारनोसमूह, जेममिथ्यात्वनोसमूह विस्तारपामेतेम, लोक-लाकमांविस्तारपामवाआवेछे, तेटलाकमांतो, तेकन्याएपोताना स्वामिनेशयनकरवामाटे, सुंदरसंथारोपाथरीआप्यो. एटले आशपासथीशाहनीतळेपडेल्यां पांनोवीगीन्यावी, तेनाउपरलुगडानाकडकापांथीपाथरीने, पोतानास्वामिनागने पोढवानीया-रणा, अतिप्रीतिथकीवनातीआपी. ७१ तेरत्नमसमयमां तेअष्यापासुनेलोकोडियो, एस्त्रीनीपरीक्षानेअर्थे आमकारेबोल्योके—

हेमदे, हाहा, तेनीसारनमीएरा महादुःखनापडवानुंथईछे. ७२ भोगीएवीनें, आशुंअनुकर्यु, मनुंजअपरनुंकर्यु, माटेवणा नोनागेदोष, पछीमारोपनरोपछेके—हुंपापीनेपापीआव्यो नोपनंपकारकारेरणान्यां. नठीनारपछीतानोपण दोषछेके नोनागेदोष, पछीमारोपनरोपछेके—हुंपापीनेपापीआव्यो. ७३ तेनीनिनाश्वनोनकर्युछेके—भवस्यकेतोयुग्रअने आवरानुंनिश्चित महाअनुकर्यु. केमके—विनाशनेआउंअनुकरतोनथी. ७३ तेनीनिनाश्वनोनकर्युछेके—भवस्यकेतोयुग्रअने आवरानुंनिश्चित महाअनुकर्यु. केमके—विनाशनेआउंअनुकरतोनथी. ७३ तेनीनिनाशनोनकर्युंछेके—भवस्यकेतोयुग्रअने

२५

मी, बोल्योके-हेभद्रे, आमकारेआसाजन्मनोनिर्वाह, किपेमकारेकरीशकाशे. ८२ पाटेजोहुंपणकोइनकारे नवीछेयौवनअवस्थाजेनीएवोदिव्यशरीरवालो थउंतोभयुक्तछे, केमके-असदृशएदेवेविषममागममांपोरगउं कांइगनथी. ८३ एमकहीने देवतानावरदाननीशक्तिथी तत्काळपोतानुंभयभनुंरूप, देवताजेवुंदिव्यरूपमकटकरी. अतिआश्चर्यथीदर्शावनी पोतानीमिने करी. ८४ हेस्वामिन् आसुंमोटुंआश्चर्यथयुं इत्यादि, जेटलाकमांपुछेछे, तेटलाकमांतेजजगामां एकअतिमोटुं देवभवनजेवुं मणिरत्ननुंमोटुंभवन (मेहेल) तेराजाएनिपजाव्युं; तेनीमध्येएकदिव्यपलंग तेमांबेठेलाभोतानांतेजवाली, तेनेदीठी. तेवळत्र चामर, नाटकनेविविनत्वरएवो देवदेवीनोछेमसूहजेनीपासे एवाइंद्रनीपेठेनेजोइ तेमीमनमांविचारकरवालागी. ८६ के-आन शुंमनेस्वप्नथयुंछेके, कांइंद्रजालविद्याछेके कोइमायाजालछे केमोहजालछे, शुंहशेकांइनिश्चयथतुंनथी माटेहवेशुंकरवुं, इत्यादि विकल्पकरेछे एटलामांतेराजाए अतिआश्चर्यपामेलीतेस्त्रीनेएमबोल्यो. ८७ हेकामदेवनीस्त्रीसमानसुंदरि. तुंआमनमांविकल्पमं कल्पविकल्पनकरीश. प्रसन्नथयोछेदेवजेनेएवोहुंतो, पृथ्वीपालनामनोराजाछुं. तेनाशुभ कर्मउदयथीतार अत्रआव्योछुं. ८८ एटलुंकहीनेपछीपोतानुं आरंभथीतेअंतसुधीनुं सर्वचरित्रविस्तारथी वर्णनकरीमंगळावयुं इत्यादिने, गुरुभागयारहीने तेन प्रमाणकर्युंतेजकर्म, ताराउपरमसन्नथयुंएमतांण.८९ चंद्रराजानपोतुंअज्ञानछे,अनेपोतुंपितापणानछे, नतुहुंतेमज्ञानथीभय- तःकालेजोइश. अनेतारीसमृद्धिजोवा, राजापणआवशे. ९० नारपछी अतिहर्षथी चंद्रावतीपणाछे तेमजेना पणएनी, स्वामिनोमहिमाकरवानेअर्थे, समग्रराविपर्यंत, एवुंनृत्यकर्युंके, जेनेदेखीइंद्रनुंहृदयपण चमत्कारपामे ९१ हवेनगरनो राजा पण, कोटियानेकन्याआप्यापछी, मेंमारोएनुंफळदेखाडवुं. हवेनरकाव्यमारामंतापनुं फळपणदेखाडवुंजोइए, एमधारीने ९२ तेमहाअहंकारीचंद्रराजाअे, एकदेवजेवोमहासुंदर राजकुमारने, पोताउत्तमवर्णादिने, पोतेकन्यापरणावी. ९३ तेभावकारे—

[illegible], [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible]. ९४ [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]. ९५ [illegible], [illegible], [illegible]
[illegible]. [illegible], [illegible], [illegible]
[illegible] ९६ [illegible]. [illegible], [illegible], [illegible]
[illegible]. ९७ [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]. [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]. ९८ [illegible]—[illegible], [illegible]. [illegible]
[illegible], [illegible] ९९ [illegible]
[illegible]. २०० ॥
[illegible]. [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]. [illegible], [illegible]
[illegible]. [illegible]—[illegible]
[illegible] १ [illegible]. [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]. [illegible]
[illegible], [illegible]. २ [illegible], [illegible]. [illegible]

उपपथइ. १९. त्यांथीगविनेमारी मोटोनानीपुत्रीओथइ जेमारेअतिशेमीतिनुंपात्र थइछे, पणतेतपोतानाकर्मनावशथी थे कन्याओनुंआप्रकारनुंनिर्धनपणुंथयुं २० मारपछीराजाएपुछयुंके–हेस्वामिनएकमारोसंदेहछे तेनोउत्तरकहो. जीवोनुंकर्म अनेउद्यम (उद्योग) एबेमांकोणप्रधानछे. २१ ज्ञानीमुनिबोल्याके—हेराजनएबेनुंतुल्यपणुंछे. कोइजगाएकर्मपणबलवानछे, अनेकोइजगाएउद्योगपणबलवानछे.२२ तेवातशास्त्रमांकहीछेके–कोइजगाएजीवपणबलवानथायछे,अनेकोइजगाएकर्मपणबल-वानथायछे, माटेजीवनेअनेकर्मने पूर्वकालथीज, पटलेअनादिकालथीज वंधायेल्यांवैरछे. २३ माटेजीवो, निधेकर्मवशछे, अने कोइवारेजीवनेवशकर्मछे. जेमकोइजगाएधारणकरनारबलवानछे नेकोइजगाएधारणकरवायोग्यवस्तुबलवानछेतेम. २४ जो पणसर्वांमनाजीवोनेकर्म, अतिशेदुःखदेछेतोपण धर्मनेउत्तरूप, तेमर्वकर्मनेपणनाशकरेछे. २५ जोएमनहोयतो, अनंताऽनंत भवथीएकठाकरेलां माटेअनंताएवां कर्मोनेनाशकरी शाश्वतामोक्षनेकेमपामे. २६ जुओनेचुल्णी, कुकर्मनोकरनारएवोपणदृढ प्रहारि, आसंसारमांउग्रतपथीमोक्षगयाछे. अनेचिलातीपुत्र अनेरोहिणिओसरोगगया २७ माटेआनेटुभजणशाक्रूर एवांकर्मने नाशकरवानेअर्थे धर्मोधिगुरुपोबलवान एवाउद्योगनेजनिरंतर निश्चेकर्याकरेछे. २८ तेवातशास्त्रांकहीछेके–धर्मकर्मनेविषेजे तेरज, देवगरिअंतरमादिनकारी एवोउद्यमकरवोजेजश्रेष्ठछे. अनेमोस्थिरहेतो, उद्योगविनामनवांछित एवांफलनेनिश्चेन पामे. २९ अनेजगाएनानाप्रकारनो उद्यमकर्येमनेपण, कार्यसिद्धिनथाय, तोतेजगाएसमर्थअने आकरुंजेतुंकर्मतेअवश्य भोगववायोग्यछेएमजाणवुं ३० कर्मेंतेवनाथश्रीराजिनेश्वरनीचकुलमांअवतर्या. मल्लीतीर्थंकरस्त्रीरूपथया. परीक्षितराजानुंमरण थयुं एतांदिपनअने आर्द्रकुमारोनुंउडुंथयुं. इत्यादिजगाएकर्मनुंबलवानपणुंजाणवुं. ३१. तेकर्मपुंछेके—ब्रह्मदत्तचक्रवर्तीना नेत्रनोनाशथयो. भरतराजानोपराजयथयो. कृष्णवासुदेवनमंनेसर्वनाशथयो. छद्मतीर्थंकरनोनीचगोत्रमांअवतारथयो. मल्लिनाथ

मीथिकरवानीवणुंमागयुं. नारदनेविषेपणपोतापणुंगयुं. विद्यानीपूजनेविषेपणअनन्यनीपरिणतिथइ. एमकारेकर्मअनेपोतानुंजीवित
एवेएकवीजानीहाद्वीरडे नृपकुमारराहकुडर गेरेनानोमनो आजनपणानपरांतारलेंउ. १२ एवकारेकर्मअनेउपक्रमअनेहेतुपृच्छा·
पणुंजाणीने, राजास्थापीउठ्यो. अनेकुकर्मनोनाशकरवाकहेमकारे, धर्मनोउद्यमकरवामांबुद्धिजेनीएहोथयो. १३ नारदजी
चंद्रराजाए पोतानुंमहाराज्य विधिवडेजमाइने पृथ्वीपालराजा तेनेआपीने पोतानीजमोटीदीकरी अनेपोतानीस्त्री तेणेसहित
दीक्षाग्रहणकरीराजायोगसाध्यो. १४ नारदजीपृथ्वीपालराजाए त्यांतुंमंदिरराज्यसंभाळीहरदयकरी, इंद्रनेरीतेटीएमृद्धिवेसाहित
पोतानीस्त्रीनेलेइ, पोतानापुरमांआव्यो. १५ (हवेअहिंथीसंस्कृतश्लोकवांकहेछे.) एमकारेश्लोकनाचोथापदनाअर्थनोपणनं
यादपुरोथयो. ॥ पृथ्वीपालराजाशास्त्रनेविषे पठ्याणराहितपणा बहुमानकरनारोथयो. १६ अज्ञाननेनाशकरनारएवाशास्त्रने
आदरसहितसांभळवानीबुद्धि, धर्मनाआराधननेविषेथइ. केमके—ज्ञानथीशुंनथाय, सर्वथाय १७ सर्वदर्शनवाळानाधर्मने
अगदहतेधर्मजेनोपणा, एकंराहिरणीवर्णकहेवायपण विचारिनेजोतांतेजअवर्णहोय, अयथार्थधर्मजाधर्मपणुंनहोय यस्तुनाएम
धर्मजाधर्मनाजीवो. एमवातांकहेविने, कहेनारानेतर्योनी परीक्षाकरीदेवीतपजीने, अरिहंतकहेलोएवोआर्हतधर्म, एटले
जैनधर्म, तेनोतेणेअंगीकारकर्यो. १८ अनुकंपनेराजानीजयजेय धर्मनोपरिणामथइ. तेमनेमश्रुतज्ञाननेविषे बहुमानकरवानुंबुद्धि
वांच्युं. १९. तथाबहु श्रुतवाळाना तेमनुंबहुमान तथामहायता, पुष्टि, इत्यादिकरवाथी अथवा पगाएवांजे श्रुतसिद्धांत
पुस्तको तेमनुंबहु मानकरवानथवे तेनीपुष्टिकरी तथाशोभनकरवुं इत्यादिकेकरीने नवा लखवुं लखावनुं उजमणुं करवुं
इत्यादिके करीने तेराजाए श्रुतनुं आराधनकर्युं. ॥ ४० ॥ एवकारे मोक्षलक्ष्मीनुं साधनरूपजे श्रुतज्ञाननुं आराधन,
तेणेकरीने, दुःसाध्य एवापण कर्मनो क्षय शीघ्रगं कर्यो. नजी एराजा पर्यंतक एकाग्र चित्तवडे श्रुतज्ञानना

सूर्यआथमतां, अर्द्धरात्रे, प्रभातकाळे, एत्रणरात्रिनी, अनेचोथीसंध्या दिवसनामध्यभागनेविषेजांणवी. एचारसंध्याकाळने विषेस्वाध्यायनकरवो. ॥ आचरणकरवामांतो रात्रिनीकालवेलावे—एकमध्यरात्रे, अनेबीजीरात्रिनेअंते ॥ दिवसनीपणवे, एकदिवसनीमध्ये अनेबीजीदिवसनेअंते. ॥ खरतरगच्छना श्रीजिनदत्तसूरिए संदेहदोलावलीसूत्रमांपण एमजकयुंछेके-चार पोरुपीओजांणवी. दिवसमांवे, एकतोदिवसनामध्यनेविषे, अनेबीजीदिवसनाअंतनेविषे एमरात्रिनेविषेपणबेपोरुपीओजां णवी. एकरात्रिनामध्यमां अनेबीजीरात्रिनेअंते, एमचारपोरुपीओ बेबेघडीनीजांणवी. ॥ आवधो, असज्झायकाळनो विचार लख्योतेनुंआटलुंज कहेवानुंतात्पर्यछेके-आगमनाअभिप्रायेकरिने सायंकालेसूर्यअस्तथयेमने कालवेलाकहिछे, अनेआचरण नेअनुसारेकरिनेतो सूर्यनाआथमतापहेलीपालमांआवेछे. माटेसम्यक्प्रकारनो निर्णयतोसम्यक्ज्ञानिपुरुषोजांणेछे. ॥ यद्वा, कालतेवर्षप्रमुखश्रुत भणवानेयोग्यएवोकालजांणवो. तेपंचवस्तुनामाग्रंथमांकह्योछेके-संवत्सरप्रमुखकालक्रमेकरिनेतो, जेनेविषे जेभणाववानुंसामर्थ्यहोय, तेनेधीरपुरुषजेते, तेजभणावे. तेकालक्रमआप्रकारनोछे. १ त्रणवर्षनापर्यायवालासाधुनेतोआचार प्रकल्पनामाअध्ययननेकेतां निशीथाध्ययननेभणावे अनेचारवर्षनापर्यायवालानेतो, सुकृतांगनामाअध्ययनने रुडेप्रकारेभणा वे. २ आचारप्रकल्पएवुं निशीथाध्ययननुंनामछे. ॥ पांचसंवत्सरनीदीक्षावालासाधुने, दशकल्पव्यवहार, एअध्ययनोभणावे अनेआठवर्षनापर्यायवालाने, ठाणांगअनेसमवायांग, एबेपणभणावे. ३ दशवर्षनीपर्यायवालाने, विवाहकेतांश्रीभगवतीसूत्र भणावे. अगीयारवर्षनीपर्यायवालानेतो आ क्षुल्लकविमानादिपांचअध्ययनभणाववायोग्यजांणवां. ४ बारवर्षनीपर्यायवालाने अनुत्तरोपपातिकप्रमुख पांचअध्ययनभणाववां. तेरवर्षनापर्यायवालाने उत्थानश्रुतादिचारअध्ययनभणाववां. ५ चउदवर्षना पर्यायवालाने, आशीविषभावनानामे अध्ययनभणाववुं. एमजिनपरमात्माएकयुंछे. पन्नरवर्षनापर्यायवालाने दृष्टिविषभावना

नामेभव्यपनमवारा.६ गोल्दर्शआदिप्र अधिकरणीमाल्ने, भनुक्रमेनारणभावना, अनेपदादप्रभातना एनागनी अभ्यगन
करमावणीजणावनोनाम्यछे.७ओगणीमर्शमाल्डानेनो, इहिहादनापेवारमुंभंगमणावनुं. संपूर्णसीअवर्णमाल्ने मर्वश्रुत भणावनी
गोमयंछ. ॥८॥ भावकारनोमर्वमध्यं, दगवहारगूयमांगणछे, जेमके—दगवर्णनारणीयमाला निर्ग्रंथनेआनारमकल्पनावाअभ्यगन
भणावानुंकल्पेछे, इत्यादि.॥ भावकारेभागवतीकहेला काळनेकहिनेमहंकारादिकथी अकाल्मामणेछेगुणेछेइत्यादिकरनारने
भाद्रांभंगरमा मानामारनीविराधना इत्यादिदोषकहिनेमाणथिम दवुंछे, अनेअकालेस्वाध्यायकरवाथी ममत्तपणेदुष्टदेवतानेने
ताछेपइत्यादिरणकर्युंछे ॥ वळीनिशीयवाण्यमां आवकारेकयुंछेके—दिवमना आदिनाअंत नीसंध्यानेविषेनमावध्यायछेतमा
भर्दरात्रे, जेपुक्रमयननारसंध्याकाळनेविषे स्वाध्यायकरेतेने तीर्थंकरमहाराजनी आज्ञाभंगादिदोषमागणायछे. ॥ अकाल्मां
स्वाध्यायकरवाथी लोकमांपणनिंदाथायछे. केमके—संध्याकाळनेविषे गुरुप्रत्यंतरविचरेछेमाटे. वीजुंभणिनेगांकेलाने भावश्य-
कनोउपयोगतथा विराधोपणथायछेमाटे ॥ श्रुतनोउपयोग, (सिद्धांतभणवुंगणवुं) उपधानतप, अतिजेश्रेष्ठकवाछे तथापि
निषेधकरेलाकाळमांकरेतो, तेनिश्चेकर्मबंधनेअर्थथायछे.॥ लोकमांपणकाळवेळानेविषे संध्यावंदनेस्पर्दनर्पण होमइत्यादि
बहुभागीनिकर्म पुनकरवानाकह्यांछे, पणस्वाध्यायकरवानोकह्योनथी. केमके—वेदाध्ययने परमतत्त्वरूपपणुंछेमाटे वृहस्पे-
कालनिनोनिषेधकर्योछे. वेकहुंछेके—संध्याकाळेचारकर्मनोत्यागकरवो. आहार, मैथुन, निद्रा, तथानोत्यागकरवो, नेस्वाध्या-
यनोलोपिनिश्चेकरीनेत्यागकरवो ॥१॥ संध्याकाळेआहारकरवाथी व्याधिथायछे. मैथुनकरवाथीक्रूरदुष्टएवो गर्भउत्पन्नथायछे.
निद्राथीमननोनाशथायछे. स्वाध्यायकरेतेनेमरणथायछेमाटे, वळीसंध्यामांस्वाध्यायकर्येसते, आसर्वज्ञपुत्रपणुंपोतानेविषे अ-
ल्पानकरेछेतोपण एवंगुणमयनानथीके—संध्याकाळेनोमणाव्मणायनहीं, एमकारेलोकमांपणनिंदाथाय. ॥ तथासंध्यासमे

इत्यागममांप्रयथेला साधुनेअवश्यकरवायोग्यएवुं प्रतिक्रमणमुखकार्यतेनेविषे अनेश्रावकनेअवश्यकरवायोग्यएवुंजे. देव पूजनतथाप्रतिक्रमणइत्यादि कार्यनोउपयोगनुंशून्यपणुंथवाथी तेकार्यनथइशके, त्यारेतोतेअवश्यकार्यमां उपयोगराखवोतेश्रेष्ठ छे तथानिरंतरस्वाध्यायकरी थाकेलानेविश्रामपणथाय, माटेश्रुतपाठादि, कइलाकालनेविषेजकरवुंतेयुक्तछे. ॥ विशेषकारण वडेवाल्यनुंउल्लंघनथाय तोपणतेदोषनेअर्थेनथीथतुं, तेनिशीथादिसूत्रनेविषेनेकयुंछेएहेतुमाटे. ॥ आजगाएकोइआशंकारेआ-शंकाकरेछेके—जेमके-शुभध्यान सर्वकालेकरवानुंकयुंछे मोक्षनुंकारणछेमाटे. तेमजश्रुतज्ञानपण मोक्षनुंकारणछेमाटे सर्वकाले तेमनकरवुं, जेजेमोक्षनुंकारणछेतेनोक्रियोकालछे अनेक्रियोअकालछे. ॥ उत्तर. एतमांठीककहोछोपरंतु शुभध्यानतोसर्वक्रि-यायोरहेलुंमछे अनेतेमानसिकछे, तेणेकारणेकोइधर्मक्रियाबाधपामतीनथी. उलटुंतेशुभध्यानतोसर्वधर्मक्रियानुंपोषणछे तेणेक-रीनेतेनुंसर्वकालपणुंघटेजछे. परंतुश्रुतज्ञानजेमणवुंगुणवुंतेतोसाध्यछे माटेतेमध्याकालनाआवश्यकआदिनीपेठे नियमकरेलाका-लमांजतेकरवुंतेयुक्तछे. तेश्रुतज्ञाननुंजोसर्वकालेपाठादिअभ्यासकरेमने अन्यअन्यपुण्यक्रियानेबाधथायमाटेतेतेमकरवुंतेयुक्तनथी तेधर्मक्रियानुंएकएकनेपरस्परनबाधलागेएमकरवानीआज्ञाशास्त्रमांकहीछे. तेवातओघनिर्युक्तिमांकहीछे जिनशासननेविषे,दुःख-नोनाशकरवामोटेला एवोपोतपोतानोयोग्यएवोजे धर्मसाधननीक्रियानोयोग, तेएकबीजानेबाधनकरेतेरीते, असपत्नपणे केतांएकबीजानोअनुनथाय तेमकरवायोग्यछे १. मोक्षहेतुपणाथी, कालविभागकरवोतेअयुक्तछे एमनकहेवुं, केमजेमसाधुनेआ-हारविहारइत्यादिकने मोक्षहेतुपणुंमनेपणकालविभागकरवानुंकयुंछे. ॥ तेउपरआगमनुंवचनछेके–साधुएत्रीजीपोरसीएभक्त-पाननीएटलेआहारपाणिनी गवेषणाकरवी. वली, कोइगुर्वादिकेशिष्यने शिक्षावचनआप्रकारनुंकयुंछेके–हेभिक्षोसमयविनानी गोचरीकरेछेनेकालनेबराबरओलखतोनथी माटेपोतानाआत्मानेकीलामणाआपेछे नेगामनीपणनिंदाकरेछे. वलीऋतुबद्धविहार

करवो, वर्षाकालमांविहारनकरवो. मगवादिकमांविहारकरवोपण रात्रिएविहारनकरवो. अथवादिवसेपणथीजीवोदगीय
विहारनकरवो पाकीनीपोरसीवाकरवो. एमनिशीथचूर्णिमांकह्युंछे. ॥ जोकमांपणकह्युंछेके-एकजगोएजीवंदर धोगमनकरवुं.
जेपवेशत्हांरह्युंनहीपगलइपणकरवुं.एकजगोएजीवंदरकरेतोरणनीउत्तापियाय,तेवरहांरनोत्यागकरीनेपछीतोगमनकरवो,वळी
नाशपाय. १ श्रीवजस्वामीनेपणसुमिगरे आठमासगवांविपुविहारकरे.सर्वजीवनीदयानेअर्थेवर्षाकाळमांपणनगरमांनिवासकरे.२
गळीदानादिकपणकाळेविवेकरवां, विशेषफळदायकथायछे, तेपणकह्युंछेके-पारणपांथाकीजनारो. तथावळीरोगिणमेळोव.
आगमनोग्रहणकरनारो ग. तेमेळोवकयोतिषयानुकपोतेविषे तथाउपरयाएणातेविषेआपेलुंदान, अतिशेफळदायकथायछे.कोइ
एवाकाळमांकियाविशेषमां भुखथीपेलापाथुने माथुंशिरेतेनोगायाइ धनीरेळीदोयतेनुंजेदानकरवुं, तेनुंपुण्यकरवाने, केवलिना
फळनीपारपामवाने समर्थथतानुंनथी. अनेतेनुंजभोजनादिक अवसरविनानुआपवामांदीधुंहोयपण साधुनेग्रहणकरवामांनथी
थवुं. २ कोइपुरुष, स्त्रीभत्येकरेछेके-हेसुंदरि, अनगरउपरआपेलुंहाथेळीनीअंजली समाणबेटलुंपणआपेलुंगत्न, पूर्वोपामेलाने
पणजीवाडेछे. अनेअवसरव्यतीतथयेल्याजोउद्देशादि सोंकडोगदावाधिनकारेला दानआपेतोपणतेणेकरिलेवुं, कोइवखतेनोगरज
नसाय. वळीविवेनयाप्यायार तथागेवातेपणसमयउपरकरेलीहोय तेजपणफळवाळीहोयछेपणअन्ययानथीथती. तेकह्युंछेके-
समयउपरकरेलुंनेगमेतोविगतेकार्य तेसंपणफळवाळुंहोयछे, तेमजआपणजाणवुं. एमकारेसर्वपणीक्रियापण पोतपोतानासमय
पालनकरवायोग्यछे. १ धर्मनिषादिकपणजेवखतेज्योकाळहोय, तेमकाळेकरेतोसफळथाय, पणअन्यथाकरेतोअनर्थनुंकारण
पणथाय. एवसत्याशायपण पोतानाकाळेविवेकजकरवां पणअकालेनकरवो. ॥ आनगावळासमयेचनारीनुंदृष्टांतछे. जेमके-
मगराधा एकाणुमदीपमंवधी कालनुंग्रहणकरीने पोहवीअतिक्रमणथयेमतेपण कालिकसूत्रनेउपयोगराहितपणाथी भणेछे,

तेनेजोइनेशासनदेवताए विचारकर्योंके–आसाधुनेकोइमांतदेवता, छलशे, तेछलनकरो, तेमाटेतेसाधुनामातेबोधनेअर्थे, शासन देवताए आभीरीनुंरूपधारणकरी माथेछाशनोघडोलेइतेसाधुनीआगळ, छाशवेचवानोशब्दउंचेस्वरे बोलतीबोलतीवारमवार जवुंआववुंकरती, तेनेपोतानास्वाध्यायमां विघ्नकरनारीदेखीनेसाधुबोल्या, शुंआतारोछाशवेचवानोसमयछे ? तेसांभलीछाश वेचनारीनेआभीरीबोलीके–नमारोपणआशुं कालिकसूत्रनेपोकरवानो (भणवानो) समयछे. तेवचनसांभलीतत्काल तेसाधु उपयोगसहितथया. अने मिथ्यादुःकडदीधुं ॥ एप्रकारेप्रथमकालाचारकह्यो. ॥ १ ॥ हवेविनयाचारकहेछे. गुरुनोअथवा ज्ञानिनोतथाज्ञाननाअभ्यासिपुरुषोनो त ज्ञाननो त ज्ञाननांउपकरणजेपुस्तकपाठुं पत्रपाटीकवलीस्थापनिकाठवणी, (सांपडो) ओळियुंटिपणुंदफ्तर(जेमांअवश्यपुस्तकथापीयते) इत्यादिनीआशातनावर्जिनेभक्तिप्रमुख जेमजेनुंकरवुंघटेतेमतेनुंकरवुं आशातनानाभेदनोहमारोकरेलोश्राद्धविधिनामनोग्रंथछे तेनीवृत्तिथकीजांणज्यो.॥ तेमांगुरुनोअनेज्ञानिनो प्रगटपणेविनयआप्रकारनो करवोके—गुर्वादिकआवेतारेतेनेदेखी तत्कालउभुंथवुं, आसनआपवुं, शय्याकरिआपवी, तेमनाहाथमांदंडहोय तेग्रहणकरी लेवो, तेमनापगधोवा, विसामोकरावनो (पगचांपवा) वंदनाकरवी, आदेशआपेतेप्रकरवुं, सेवाभक्तिकरवी, इत्यादिरूप विनयजांणवो. तेउपरआर्षवचननुं (ऋषिप्रणीतवचननुं) प्रमाणछेके—गुर्वादिकआवेतारेउठीउभाथवुं, हाथजोडवा, तेमज आसनआपिणआपवुं. गुरुनीभक्तिकरवी, एभावशुश्रूषाविनयकह्योछे. १ वलीनेगुर्वादिकथीनीचीशय्याकरवी. गतिस्थानआसन एपणएमनाथीनीचां पोतानांराखवां, नीचापडीनेतेमनाचरणनुंवंदनकरवुं, पोतानुंनीचुंशरीरनमावीहाथजोडवा. ॥ २ ॥ भाव शुश्रूषा, एपदनोअर्थथीउत्तराध्ययननी मोटीटीकामां आप्रकारेकर्योछेके–भावेकरिनेशुश्रूषासेवाकरनीते अथवानेगुर्वादिकना आदेशप्रत्येसांभळवानी इच्छारूपपर्युपासना, समस्तप्रकारेउपासनाकरवीते. ॥ दशवैकालिकनीवृत्तिमांतो, शुश्रूषाविनयज

दर्शनविनयना आवकारे साहमा आवी देशनापोरीके—सत्कार १. अभ्युत्थान २ सेवनसन्मान ३ आसनाभिग्रह ४ तथा आ-
सनानुप्रदान, ५ तथा कृतिकर्म (वंदन) ६ तथा अंजलिग्रह (हाथजोडवा) ७ तथा तेमनी चेष्टाथी मननो अभिप्रायजाणी ते
प्रमाणे अनुसरवुं ८ तथा बेठेलानी गुर्वादिक सेवनीपर्युपासनाशेवाभक्ति करवानीकहीछे. ९. तथा आवताप्रत्ये तेमगुर्वादिक
तेमनीपछवाडे गमनकरवुं १० एमकारेशुश्रूषाविनय दशप्रकारनोकह्योछे. तेमांसत्कार, तेस्तवनवंदनआदिजाणवुं. सन्मान ते
वस्त्रपात्रआदिदेइनेकरवुंछे. आसनाभिग्रहनेआदरेकरीने आसनआणीआपवुंपूर्वक आ आसनउपरवारो एमनेकहेवुंते.
अनेआसनानुप्रदान ते तो आसननुंएकस्थानकथीवीजेस्थानकेधापी जवरवारेएमकरवुंते. आशुश्रूषाविनयउपचारविनयनेविषे अं-
तर्भूतथाय छे. ॥ अनेउपचारविनय, श्रीदशवैकालिकनीवृत्तिमां साचीनगाथावडे सातप्रकारनोकह्योछे तेमके-गुरुनीसमीपे
आसनरहवानी मार्गनाकरवी १. गुरुनीमरजीप्रमाणे पोतानुं वर्तणूककरवुं एटलेछंदानुवृत्तिकरवी. २. कृतोपकारनो प्रत्युप-
कारकोइसमयेकरवो. ३ वलीआवदीपाने कारकराने पूर्णनिमित्तकारणजोडवुं. ४ दुःखवडेपीडाना साधुने अर्थे कोइकवस्तुनी
गवेषणाकरवी. ५ वलीतेअर्थनेविषे देशकालनुंजाणपणुंकरवुं. ६ तथाअनुमतिकर्ता अनुमोदनाकरवी. आप्रकारेसातमो
उपचारविनयकह्योछे. २. दशवैकालिकसोभोभर्थं ग्रंथकारन आप्रकारेकह्योछे के-अरिहंतादिकना अर्थेविशेषे नित्येगुरुसमीपेरहेवुं १.
गुरुनीछंदानुवृत्तिकरवी २. भक्तपानादिकउपकारकरीनेमनप्रसन्नथाय, सूत्रदानादिवडे प्रत्युपकारकरशे तेमाटे पण निर्जराछे
पूर्वाभिकपानमादिकनुं आपवुंतेकार्यप्रमाणकरवो. ३ तथाभूतपाववानुंनिमित्तकार्यकारणे ।नैपातेभिनयनेविषयकरवुंअने
तेनेअर्थेविपत्करवुं. ४ दुःखवडेपीडानासाधुनेअर्थे औषधादिकनुंगवेषणकरवुं. पीडायानोनेउपकारछबपअर्थजाणवो.५ छतुं
भवसरनुंजाणपणुं६ तथासर्वसनाप्रअनुकूलपणंवर्त्तवुं ७ आप्रमाणे प्रकारनोउपचारविनयछे. मानना अभ्यासादिकनाकरनारनो

विनयने, रहेमकारिगोविद्यापुस्तकादिकनुं अर्पणकरवुं. गुरुभक्तिवना, छउसे, तेउत्तनकरो, तेमाटेतेमाद्युनामानिरोधनेअर्थे, शासन
(पाशिवंदेतेमनीपुष्टिनुंमशनकरवुं तेज्ञाननोजविनयकर्योजाण्धुनीआगळ, छाशेचवानोशब्दउंचेस्वरे बोल्वीबोलवीबारमसार
एकेउपधानआदिविधिवडे सुत्रतथाअर्थनेनाग्रहणनोअभ्यासतेमाघुबोल्या, शुंआनारोजाशेचवानोममपछे ! तेनामलीछाय
गुप्तवारहेगाएवाअर्थनी मध्यमप्रकारेभावनाकरवी. तथातेसूत्रकरवानो (भणवानो) ममयजे. तेवचनमांभक्तीनत्काल तेमाग्रु
एअवद्रापुस्तकलपशा बीजापामेलखावश, तथातेपुस्तकोनुंशालाचारकर्श. ॥ १ ॥ हवेविनयाचारकहेछे. गुरुनोअथवा ज्ञा-
अर्थेपधमीआदिस्तवकरवुं तथातेनुंउजमणुकरवुं. इत्यादिज्ञानःकरणजेपुस्तकपाठुं पत्रपाटीकवलीस्थापनिकाठवणी, (नांपडो,
कांजेकरवुं. मोटेज्ञानीपुरुषनवाकर्मनवांधे, तेथीतेज्ञानविनयवाशशासननाजिनभक्तिरमुख जेमजेनुंकरवुंघटेतेमतेनुंकरवुं आशात-
दिनवालवावश शोभाववालमारवा, पाठुंवाचणुंबांधवानी पाजांणज्यो ॥ तेमांगुरुनांअनेज्ञानिनो अगटपणेविनयआप्रकारनो
अनेजेविनाशपामवा पुस्तकोहोयतेमनुंसमारचनकेवा नवांलखावाआपवुं, शुध्धाकरिआपवी. तेमनाहाथमांदंडहोय तेग्रहणकरी
राखवो. परकूंपकेनांहीरागन्धवसआदिकथीवांधवा. इत्यादिसेवाकरवी, आदेशआपेतेमकरवुं, सेवाभक्तिकरवी, इत्यादिस्त्र
कारणके–सवजगतमांसूर्यसमानएवा सर्वजिनेश्वरोविगरेमहाज्ञानीगणछेके—गुरुआदिकआवेतारेउठीउभाथवुं, हाथजोडवा, तेमज
पोतेतगरेतो घोशीमराधकरापछे. ॥ १ ॥ आलोकनाकार्यमां अछे. १ वळीतेगुरुआदिकथीनीचीशय्याकरवी. गतिस्थानआसन
केवके–सर्वअर्थनीसिद्धिनुंकारणविनयजकह्योछे. तेवानशासनमांकायनकरवुं, पोतानुंनीचुंशरीरनमावीहाथजोडवा. ॥ २ ॥ भाव
बीजितेपांचेछे, पणविनयादिगुरुप, कदापिकालेपोतानाकार्यनी हर्योछेके–भावेकरिनेशुश्रूषासेवाकरवीने अथवातेगुर्वादिकना
परोक्षपाशिष्योतथापुत्रो तथागुरुनीगुणीओनारीरीत्ये जेविनयवाननाकरवीने. ॥ दशवैकालिकनीवृत्तिमांनो, शुश्रूषाविनयस

अविनीतनथीवांदना. अविनीतनोतेथी विपरीतपणाने पामनारो अभ्युत्थान २ तेमज सन्मान ३ आसनाभिग्रह ४ तथा आ-

रहितहोयतेबंधनवादन आदिकेतेनो अनुभवकरेछे एम माराथिन हायतोहता) ७ तथानेमनीचेष्टाथीमनो अभिप्रायजाणी ते

गुणेवानदानपूजादिगुणनेपामेछेतेम. वळीविनयजेतेज, मिथ्याभक्ति नेकरवानीकहीछे. १ तथानाल्तापथा जेतेगुर्वादिक

गुणोनुंमूळरूपछे; यद्यपिविनयमनेजगतनागुणोनो संभवछेमाटे. नोकथोछे. तेमांसत्कार, तेहवनवंदनआदिजाणवुं. सन्मान ते

समाकरवुंछेके–यथा, गुरुनुंमूळछे. अनेक्रोध, दुरनुंमूळछे. आसनआणीआपवुंतेपूर्वक आआगनउपरएवारो एमजेकहेवुंते.

धर्मनुंमूळएणविनयजछे, तेएणशास्त्रमांकह्युंछेके–जिनशासननेविषेअरपारोपणकरवुंते. आशुश्रूषाविनयउपचारविनयनेविषे अं

तवथीरहितनेधर्म, क्यांथीहोय, अनेतपणक्यांथीहोय. ॥ १.॥ प्राचीनगाथावडे गानमकारनोकथोछे जेमके–गुरुनीसमीपे

=गामीनं) गुरुपणांव्याणपुरानुकभट्टारके, चौथपणुं (पार्श्वगुरुकरवुंएटलेछंदानुवृत्तिकरवी. २ कार्लाउपकारनो प्रत्युप-

धिकापुरीनांनिवासी सुदर्शनशेठनाबोधनेअर्थ. श्रीनेमिजिनेश्वरकारणजोइवुं. ४ दुःखवडेपीडाना साधुनेअर्थे कोइवस्तुनी

भावनापुरानार्थ, तेमनुंगवचनआमकारवुंछेके–देसुदर्शनशेठवुं. ६ तथाअनुमतिकेतां अनुमोदनाकरवी. आमकारेसंक्षेपथी

महानिशानेनहोयछे, जेमवर्धमानुगांपण सुवर्णनीमकांतिदीपकारेल्लछेके–आदेशादिकनाअर्थिने नित्येगुरुसमीपेरहेवुं १.

पुर्णभकरवानायछेजोइकरवोनथी एनोएनीस्वाभाविकप्रकृतिमपणेजगुरु, मूत्रदानादिवडे अभ्युपकारकरशेज माटेएनिर्जराछे

गमनकरवुंतेकोणशीप्यवेछे कांइशीखवुंनथी, तेमकुळीनगुरुपांथाश्रुतपांयवानुंनिमित्तकार्यकारिने विशेषपणेविनयनेविषेवर्तवुंअने

नाणिभंजनथीआंग्याछे, कांइएनथीआंग्यातोपण तेनानेभइकतुंगवेषणकरवुं. पीडावाल्यानेतेउपकारछेएवअर्थजाणवो.८ छट्ठुं

कोणचित्रविचित्रकरेछे, कांइनथीकरतुं. ॥२॥ एनोपोतानीआनमकारनोउपचारविनयछे आननाअभ्यासादिकनाकरनारानो

रचनाछेनेनेकोणकरवाजायछे; कोइनथीकरतुं, तेममाराकुलमांउत्पन्नथयेला पुरुषोनोविनयगुणस्वाभाविकजछे. २ माटेश्रुत अर्थिपुरुषोए विशेषेकरिने गुरुमुखनाविनयनेविषेप्रवर्त्तवुं, जेमाटेशास्त्रमांकह्युंछेके-अतिशेशाकरातेथीअग्निमानएवापण गुरुरूपकूवाथी ज्ञानरूपजलनेलेवाएकविनयज, गुरुनेविषेअतिशेकोमलताउपजाववामां. डहापणपणाएयुक्तछे, पणबीजागुणनुं एजगाए डहापणपणुंचालतुंनथी. १ वलीविनयथकीज्ञानआवेछे, नेज्ञानथीदर्शनप्राप्तथायछे, नेदर्शनथीचारित्रपणप्रमायछे, ने चारित्रथीमोक्षपमायछे, नेमोक्षनेविषेकोइप्रकारनीबाधानलागे एवुंअपारसुखछेतेनेविनयवालोपामीशकेछे ॥ १ ॥ विनयपूर्वकजग्रहणकरेलुंश्रुत, तत्कालसम्यकप्रकारेफलने आपनारहोयछेपणअन्यप्रकारेनथी, आजगाएदृष्टांतकहेछेके-राजग्रीनगरीमांश्रेणिकनामेराजारहेतोतो, एकदिवसश्रीमहावीरस्वामिनामुखथी, सतीपणानानिर्णयादिगुण सांभलीतेनोपपामीपोतानी स्त्रीचेल्लणानामनीपट्टराणीप्रत्येबोल्योके-अन्यस्त्रियोथीअतिशेअधिकएवो तारोप्रासादते, कियाप्रकारनोकरावुं. त्यारेतेबोलीके-एकथंभियोमेहेलकरावीआपो. राजाएएवोमेहेलकरावानीआज्ञा, अभयकुमारनामनाप्रधानने आपी. तेअभयकुमारेसुथारलोकोनेबोलावीनेवातकही, तारेसुथारलोकोतेएकथंभिया मेहेलकरवामाटेअतिश्रेष्ठ काष्टनेलेवा अटवीमांगया. त्यांभ्रमण करतांकरतांसारालक्षणवालो घणीछायावालोअतिशेउंचो, फलफुलवालो, मोटावृक्षजेवी जेनीमोटीमोटीशाखाओछे मोटांमोटांथडीयांछेएवोमहामोटोएकवृक्षदीठो. देखीनेविचारकर्योके—आवोमोटोवृक्षछेतोतेनोकोइएवोमोटो अधिष्ठायकदेवपणनिश्चे हशे, तेवातशास्त्रमांपणकहीछेके—जेवुंतेवुंस्थानपण देवताविनानुंनहोयतो, महालक्षणेसहितआवामोटावृक्षो देवाधिष्ठायककेम नहोय होयज. माटेआपडास्वामिने कोइप्रकारनुंविघ्नमांहो, माटेतेनाअधिष्ठायकदेवने रात्रिदिवसआराधनकरी आज्ञामागीये, एमधारीतेदिवसत्यांउपवासकरी गंधदीपपुष्पआदिवडे अधिवासकरीपछीपोतानास्थानगांआव्या. तेपनीभक्तिपूजावडे

तेहसनो अभिप्रायकहेव अगअगईनेराविशेभावीने साक्षात्कारसईनेअभयकुमारनेकह्युं, के-हुंपूर्वकालेउत्पन्नथइशोभनाजेपा
कृशोले पूजावनगंदवडे नंदनवनसरखातेनगरडेशोभना चारेवाणपाकारवडे (कोटवडे) नीटेलोएकथंभियोमेहेल करिआपीश,
पणतागउपरहेलोएस्सु तमारेनकेदारयो. पछी अभयकुमारेतेवात अंगीकारकरी तारपछीतेव्यंतरदेवपोतानी अचित्यशक्ति
वडेतत्कालकलासमयाधेतेएकथंभियोमेहेलकरीआप्यो. ॥ तेपाटेआम्रपाक्ताफलगेवावनकहीले के-पांगिरवंशगेला, देवोनिपादेवो
घाकरकरतांपणविशेषआज्ञापावर्गेले, राजाश्रेणिकराणीने करतीहतीअभयदेवाक्यो तोतेमकाहनालनपंदरवाेगसंपेहेलदेवीने, केरक
दुधपानकरवाआरंभ्यापुरुषने, अकस्मातगाकरनोपांगवने, तेतेवेतेवसमयाघरेषुपानीने, अविशेराजीपयो. तारपछीपवा
देवीजिमपसद्रहगांअतिशेमनीयइनेरहिते तेमनेतेस्रआपणतेएकथंभियामेहेल्या राजानीआज्ञावडे अतिशेराजीपणाथी निरंतर
रहेतीहती. पछीएकदिवसतेनगरनी रहेनारीएकमातंगी (ढेडी) तेनेअकालमांआम्रफलखावानो डोहलोएटलेगर्भवतीनेम-
नोरथउत्पन्नथायतेदोहदसंस्कृतमांकहेवायछे, तेमनोरथउत्पन्नथयो. पोतानांधणीनिगाणिद्छे एटुंजाणीनेतेणीएपोतानाधणीने
मेवातकहीके—मारेतो आम्रफलजोइएछीये तेविनाहालेतेमनथाय अनेतेआम्रफलतेइणरामीनावागमांछे. तेआणीआपोएतो
अतिशेआग्रहकर्यो. तारेतेधणीपणराजाथी अतिशेपीतोपरेपणशुंकरे,परंतुपणकयुंकरीनेस्त्रीनाआग्रहथी तेफललेवागयो,
त्योवनोमांतोपागनाकोटपछवाडेरहिने पोतानीअवनामिनीनामेविद्यानाबलथी उचाआंबानीडालीनमावीनेआंबानीउपरफल
चुटीलीधां, अनेउन्नामिनीविद्यानाबलथीपाछी हतीतेवीनेवीउचीकरीदीधी. तेमचोरनागतेमनोहीआपीनेतेफल पोतानी
स्त्रीनेआप्यां. तेमाटेशास्त्रमांकह्युंछे के—स्त्रीएप्रार्थनाकरेलोपुरुष, शुंनकरेअनेशुंनआपे? आप, नकरवानुंपणकरेअनेनआपी
आपवायोग्यवस्तुनेपणआपीआपे तेपराजापोते,स्त्रीनाकहेवाथी गधेडानीपीठेचारवारचडायाछे पछीतेनाउपरनीनदीयेटीक्या

परमांकेरव्यानेघोडानीपेठेखुरखुराकरवापड्या. अनेकालिदासपंडितेपणस्रीनाकहेवाथी पोतानेघणीभियएवीमुछघोहती तेपण पर्वविनाएटले मोटुंपर्वग्रहणादिआवेतारे तीर्थक्षेत्रमांदाढीमुछघोमुडावी स्नानकरवुंएवीलौकिकशास्रमांआज्ञाछे. आतोतेमका-रनापर्वकालविनापण, मुछघोनुंमुंडनकरावबुंपड्युं. ॥ तेकथानकनोसंक्षेप आमकारनोछेके—धारानगरीनेविषेएकअतिरूपवती वेश्यारहेतीहती तेमांनेनगरीनोराजाभोजतथाकालिदासकवि एवेयगाथासक्तथयाहता. एकसमेतेवेश्या,एवीहठमांआवीकेभोज राजानेकहुंकेआजनोमारकहुंकरवुंपडशे केतमेगधेडानीपेठेचारपगेथइने मनेतमारा उपरचढवुंनेपुंनारेतमारे आंगणामांभ्रमणकरतां जवुंनेघोडानीपेठेखुंखारकरवा नमकरशोतोमाराअंगनोसंगथशे पछीराजाएस्त्रीहठजांणी तेमकबुलथइतेवातकरी. पछीरा-जाएवेश्यानेशिखव्युंके ज्यारेकालिदासकविनारीपासेआवे तारेदाढीमुछघोमुडावीनारोरंगकरे, तेवातकबुलथायनोतोमारेकोइ प्रकारनोशोकनरहे पछीतेवाततेणीएकबुलकरी.पछीज्यारेकालिदासआव्या त्यारेवेश्याएतेवातकबुलकरावी,कालीदासेदाढीमु-छघोमुडावीवेश्यानेप्रसन्नकरी. पछीकालीदासज्यारेसभामांआव्यात्यारेभोजराजाएकविनीमस्करीकरीके—हेकविश्रेष्ठकालिदा सतमेएवीकयापर्वमांमुंडनकराव्युं तारेकालिदासेकह्युंके जेनीर्थक्षेत्रमांजेपर्वमांगधेडा,घोडानीपेठेखुखुरनाहतातेक्षेत्रमांतेजपर्वमांअ-मारुंमुंडनथयुंछे. माटेस्त्रीनीप्रार्थनाथी नकरवानुंपणपुरुषोकरेछे॥ पछी,प्रातःकालेमहासुगंधमान्आंबोफलरहितशोभारहितजोइने शोकथीघेलुंथएल राजानेतेआंबोदेखाडीकह्युं. राजाएपणतत्कालअभयकुमारनेबोलावीकह्युंके—जेनीआमकारनीशक्तिछेतेअंते उरमांपणकोइवखतउपद्रवकरे माटेतेचोरनेसातदिनमांप्रकटकरीदेखाडो. अनेनहिदेखाडोतोजेचोरनीशिक्षाछे तेतुमारेथशे. अभयकुमारेतेवातअंगीकारकरी, पछीचोरनोघणाप्रकारे तपासकरतांकरतां कोइदिवसघणानगरनालोको कोइदेवनीयात्रामां एकठाथएलादेखीनेपोते वैशानरकरीवृद्धकुमारीनुंकथानक उंचेस्वरेकहेवाबेठा. जेमके—वसंतपुरनामएकनगरहतुं तेमांजीर्णशे

ज्नीकुशीलएड्डवारीनायेंभविष्याचीहती. तेकाणदेवनीजिनपानुपूजनकरवामाटे निर्ग्रंथाणथीपुष्पचोरीलावतीहती. एकदि-
वणचोरीकरवावालीएआवी. त्यारेतेमाली, कामणीगंभवनीतिणेंकन्यानेपकडवानीवांछाकरी, त्यारेंकुमारीबोलीके-
हुंरत्नीनथीवाडीकुमारीछुं तेगीरणोकरवायोग्यनथीयइ. तेमाटेमारुंनामपूछोके-आठप्रकारनीकन्यायो, पुरुषनेगमनकरवायोग्य
नहीय. तेनुंविवरण १ यथागोत्रनीबेटीहोयते २ जेमायनगादिवयंकरीनेअधिकहोयते ३ यथातेजीपुत्रीआपीहोयते ४
कुमारीहोयते ५ यथाभितनीपुत्री ६ राजानीपुत्री ७ यथागुरुनीपुत्री ८ एआठजाणवी. ॥ त्यारेतेमालीकिह्युंके-परणुं परंतुपरमपनारी
नागेमारने. पछीतेकन्याकबुलकरनेगइ. पछी अनुक्रमेपरणी. त्यारेगत्रिएपोतानाहराविभागज पोतानीरावीमनिदाकहीगंभवा
भी, पछीतेपोतानीद-कुंवारीनानीआनुमतिकरिभावने. पछीपरणपागोतानानिरत्नना आभूषणमांदेशीनेपोतेपरोकी, त्यारे
तेनीदशोतानुंपवंदशनकरीगंभवाकडुं, त्यारेतन्यनानेआवाजीतोणीने आनवानुंडीनुंएककरीमुकीदीधी, त्यांथीचालीनेमारगमां
परमभतिथीपूरजोहातमवरणनेतेमाली, त्यारेतेणीएपोतानीन्यायविशाकहीगंभवाची, त्यारेतेपणभावनीनगरोएवुंभलगकरीछुं
एम हीमुकीदीधीनेमाउंजायेभारी. त्यारेतेमाछीअतिशेआश्चर्यपामी पोतानीमाताजेवीजाणी नमस्कारकरीमुकीदीधीतेथा
धीवलोगाणेआवी, त्यारेतेणीएपोतानीवरतनिमा, पछेथीवानकहीत्यारेराक्षसेकयुंके हुंतोभन्यभागनोआहारकरीलेइश
पणहुंतोभटकीना. पछीपोतमरवानारेतेणीएपोतानुंउगानकडुं, त्यारेचोरपोताहोगवानतेनामहाकुतुकवांएतेनमुकीदीधीमाटे
भवांतेनेमुकीनथीना. पछीपोतानानागिनेभानीपोतानुंसर्वउगानतेमएवुंतेमकहीगंभवाव्युं, पछीतेणीनेअतिशेमानवायोग्य
गइ. एकवारकरीनेअपराधमार सर्वलोकोनेपुछेछेके-हेलोको. एवारनेविषेदुष्करकामकेणेदुःखेकरीशकाय, एवुंमोटुंकाम
कोणेकर्युं. त्यारेहरमांवाणावोल्याके-पणीएनेकर्युं. तेनुंमोटुंकामकोइथीनथाय. तेलोकोमांमुख्यादमानेबोल्याके राक्षसेकर्युंतेनुं
५

पीजाधीनथाय. व्यभिचारीलोकोबोल्याकेमालिएकयुं तेवुंवीजाधीनथाय.पछीपेलोअंत्यज(ढेढ)बोल्योके-पापभीचोरेकर्युंतेवुंमो-
टुंकामबीजाधीनथाय.रतनसोनानीभरेलीएकछीहाथमां आवेलीमुकीदेवीएधीवीजुं, शुंदुष्करछेपछीतोतत्काल अभयकुमारेउठीने
तेनेहाथेझालीलीधोनेकह्युंके-तुजआंबानोचोरछे, बोलपसाचेसाचुंतो, जीवीशनहींतोराजातनेजरुरमारीनाखशे. पछीचोरेसाचे
साचुंपोतानुंसघळुंवृत्तांतकहीसंभळाव्युं, तथापितेनेराजानीसमक्षलावीउभोराख्यो. तारेअतिरोषपांमतातेराजाएतो, तत्कालते
चोरनोवधकरवानीसिपाइओनेआज्ञाआपी, तारेअभयकुमारबोल्याके-एनीपासेवेविद्याओछेते लइलीधापछीजेमघटेतेमकर
श्यो, जेमाटेशास्त्रमांकह्युंछेके-बालकथकीपणहितकारीवचनग्रहणकरवुं. अनेअपवित्रवस्तुथीपणकांचनग्रहणकरवुं. नीचथीप-
णउत्तमविद्यानुंग्रहणकरवुं, निंदितकुळथीपणस्त्रीरत्नग्रहणकरवुं. १. तारपछीराजासिंहासनउपर बेठोथकोज मातंगने (ढेडने)
सन्मुखबेसाडी, उन्नामिनीअनेअवनामिनीएवेविद्याओभणवामांडी. परंतुघणीवारभणेमनेपण ज्यारेहृदयमांकोइप्रकारेनस्फुरी
त्यारेक्रोधायमानथइनेराजाबोल्यो, तेनीचमारेविषेपणकपटकरेछे. एमकारेतेनीतर्जनाकरी. तारेअभयकुमारबोल्याके-हेदेव
विनयविनाविद्यानस्फुरणायमानथाय, मांटआमातंगनेसिंहासनउपर बेसाडीपोतेहाथजोडीपृथ्वीउपरउभारहोनोविद्याआवे ॥
तेकह्युंछेके-प्रथमतोपोतानोआत्मा विनयमांजोडवोनारपछीविद्याशिखवी. जेमतुमाटेजलथीजेमवेलवधे तेमविद्याविनयथीजव-
द्धिपामेछे. १ एवुंनीतिशास्त्रनुंवचनछे. पछीनीतिशास्त्रनेस्मरणकरतो विद्यानोअर्थीएवोतेणेतेमजकर्युं, तारपछीतेविद्यातत्काल
हृदयमांछवीहोयनेशुंएमस्थिररही. विद्यागुरुपणुंचोरमांआव्युंमाटेराजाएगुन्होमाफकरीतत्कालमुकीदीधो, एटलुंजनहीउलटोते-
नोघणोसत्कारकर्यो. माटेविनयपूर्वकश्रुताध्ययनमुख्यकार्यकरवुं. ॥ एमकारेबीजोविनयाचारकह्यो ॥ २ ॥ तथाश्रुतनाअर्थि
पुरुषेगुर्वादिकनेविषेबहुमानकरवुं. बहुमानतेआभ्यंतरप्रीतिविशेषथी, तेप्रीतिविशेषथीनिश्चेगुर्वादिकनी एकांतिकहोवृत्ति (पर-

भीडभांजवाणुं) तथा देवगुरुधर्मनुं [illegible] अनुदयनुं विनयादिक करीने करावे. तेथी [illegible] भवत्रय दुर्गतिने
[illegible] मरीने दुर्गतिमां जाय. [illegible] विनयनो भक्त [illegible] भवसागरमां जाय. विनयविना [illegible] शास्त्रमां [illegible]
[illegible] वीतरागना [illegible], माटे बहुमानविना एकल्याण [illegible] विनय करे शुं थाय? कोइ न पाय, तेथी [illegible]
[illegible] कल्याण [illegible] दानविना एकल्याण [illegible] शीलविना एकल्याण
[illegible] तपविना एकल्याण [illegible] भावविना एकल्याण [illegible] ज्ञानविना [illegible] मतिविना एकल्याण [illegible] मध्य
[illegible] शुं? [illegible] पाटे विनय आचार्यजी वर्धमानने [illegible]. [illegible] विनय
[illegible] पाटे विनय [illegible] बहुमान [illegible]. [illegible] भावकारणुं [illegible] छे के– निद्रा, विकथा, [illegible], [illegible],
[illegible] ॥ [illegible] १ विनयरहितपणुं, [illegible], [illegible]-
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] अनेकप्रकारनुं [illegible] २. विनयअने बहुमानपूर्वीनतु-
[illegible] तेमश्रीनेमिजिनवरथी वासुदेवनो पुत्र जेपालक [illegible] १. कोइकने
[illegible], [illegible] बहुमाननथी, [illegible] ॥ २ ॥ कोइकने बेदोयछे, जेमगौतमस्वामिने वीरजिनमां ३ कोइकने एकेनथी,
[illegible], [illegible] ४ बहुमानविना [illegible] विनयवंदन करतो [illegible] नहोय, पछु
[illegible]. [illegible] छे. जेमके– जेगुरुप, [illegible]-
[illegible], [illegible] १ जेगुरुवंदन [illegible] शिष्य,
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

रुयाछेके-एकगिरुगुरुनाबेशिष्यहता, तेबेविनयथीसेवाकरेछेपणएकशिष्यने गुरुादिकनेविषेबहुमानहतुं अनेबीजा शिष्यनेनहतुं. तेबेपण भणीगनिमित्तशास्त्रनेशिख्या. अनेतेपणाप्रवीणथया. एकदिवसतेबेतृणनथाकाष्ठलेवामाटेगया. मार्गे-हस्तिपगलांदीठांतेजोईएकशिष्यबोल्योके-आगळहाथीजायछे, तारेबीजोबोल्योकेहाथीनथी पणहाथणीछे. तेनेडाबीआंखेकाणीछे, तेनेउपररहीपुरुषछोनि, नेस्त्रीपणगर्भिणीछे, नेलालवस्त्रपेर्यांछे, अनेतेस्त्रीतत्कालपुत्रनेप्रसवशे. तारेबीजाएकयुंकेतुंआतुंअण-हिंतुंकेमजाणेछे, तारेतेणेकयुंके-ज्ञाननोअनुभवसिद्धछे आगळचालोमलेजणाशे; तारपछीतेबेकटकीकपृथ्वीउल्लंघनकरीपाछा, केटलाकमानेरहेमजमलहीयुं स्त्रीनेमसबथयानोछेम. टेकेडोएकठीकरीथानडांनुघरकरीतेनीमध्येरहेलीस्त्रीप्रसवशे. एमबेवातमळतीभावीतेनजोईदीठी. तेटलाकमांतेपणउभारह्याछे तेवामांजतेस्त्रीपुत्रउत्पन्नकर्यो॥ तारपछी, संघाथेभणना रमाशिष्यनेवाह्लुवधुंज्ञाननेमथपुंधनेमनेकमनथयुएवोविस्मयपामीलरर्थावेमछे. तारपछीतेबेशिष्यनदीनातीरनेविषेगया. त्यारे तेनीरउपरएकवृद्धस्त्रीपाणीभरवाआवी अनेतेडोशीनोपुत्रपरदेशगयोहतो, तेनेघणाकदिनथइगयापणकांइखबरलेशमात्रपण आवीनहोती तेथीतेणेतेमनेजोईसन्मुखजइ राजाणनिपुछयुंके-मारोपुत्रपरदेशगयाछेतेक्यारेआवशे एमपुछनी एवीएडोशी, तेनामाथाउपरथीपाणीभरेलोघडोतत्कालभूमिउपरपड्योअनेभागीगयो, तारेएकपंदबुद्धिवालोशिष्यबोल्योके-निमित्तशास्त्रकहुंछेके-जेमआछे तारेतेवाततेनिपजेतेणेकरीने तेप्रश्ननोउत्तरथयोसमजवो, वळीनेवस्तुनजेप्रकारनुंनिपजेने प्रकारेतेने तेप्रश्नपरिणामथयुंछेएमसमजवुं, तथातेवस्तुनेजेनिपजेतरूपेकरीने तेप्रश्ननाउत्तरनुंरूपकआव्युछेएमसमजवुं, ए प्रकारेतुंराणीतेपणभांगीजवुं कहेवुं माटेभाववानेतारोघडोभागीगयो माटेतारोपुत्रमरणपाम्योछेएमजाण. तेसांभलतमहाशोकमां पडेलीडोशीमरवालागीतारे बीजोबुद्धिवानशिष्यबोल्योके-एवातप्रमाणखोटीछे, माटेएमनबोलवुं. हेडोशीमा, तमारोपुत्रनमारा

पर्यो आवीपुत्रपोते माटेउतावळथीघेरजाय, शिष्यावेरकरशोनहीं. पछीनांतेवानमापळीपेढीदोणी अनिशीप्रनाभीघेरगइ,
त्यांतोनेपुत्रपरदेशथीआवीघरमांबेठोदीठो. स्नेहगर्हितमानापुत्रमळ्याभतिआनंदथयो. तारपछीतेनेशिष्यजेटलाकपागुरुपासे
आवेछेतेटलामांतेदृष्टी पणापूज्यनोएकपोतीजोडीग्रहणकरीआवी जेमदृष्टादीशिष्यहतोतेने आपीसत्कारसन्मानकरवुं.
तारेवीजोशिष्यरोपरायी गुरुप्रत्येबोल्योके–तेनीउपमानथी एवाशाननानिधिअनेसर्वातनाजाण एवातपाराजेवापण, अतिसे
विनयवाळावसरवाशिष्योनीमध्ये ज्यारेभावोअंतरकरतोनारेवान कोनेकवीनेकोनीआगळकेहीने कोनीपासेएवातनोठपको
देवदाववो, ज्यारेअमृतवपराया चंद्रमंडळथीअंगारानीवृष्टिथाय, अनेहजारकिरणवाळासूर्यथीअंधाहउतरथाय, अनेकल्प-
वृक्षनीपेयाथीउल्टीदारिद्रमाप्तिनीकहेवतआवे, अनेमारावेननीमाक्षिथयापछीमंदयाहनीउत्पत्तिथाय, अनेपाणीमकीपणउल
टाअग्निनामहताउठे, तारेतेदोपकोनेदेशो; गुरुयेत्याकेआवकारनुंतुल्यार्थबोलेछे, मेंतोविद्याआपवामांनथा आम्नायाशिरन-
थयाइत्यादिकोइअगापकोइ मकारेकांइपणठगनथी. तारेतेशिष्यबोल्यो–तारेतमाराबोडाशिष्ये मारगमां हाथणीविगरेकह्युं.
तेनगामसाचुंथयुंनेमाराको एकपणसाचुंनथयुंतारेतेनेतमारा भणाववामांसवांकछेकेनहीं. एटलेपहेलाशिष्यनुंमरवुंकहेवुंसत्यथयुंनेथी
तेनुंसन्मानथयुंनेमारुमरवंजुठुंथयुं तेथीमारुअपमानथयुं, माटेंमेंभाटल्यांवर्षसुधीतमारुंभणवातुं वेतरुंकुटीकुटीनेपरीगयोतेनुंफलतो
शेवटआजथयुंमाटेतमारोवांककेमनहीं. इत्यादितेशिष्यनांकठोरवचन सांभळीनेगुरुएविचारकरयोके आतोकलेशकरशे. पछी
गुरुएएनाम्मपरशुद्धिवानाशिष्यने बोलावीपुछ्युंकेनाकहेवानुंकहे. तेहाथणीइत्यादिनांणीइत्यादि, पछीतेबोल्योके–हेगुरुमहाराज,
तमाराप्रसादथीतेतोचहोनो उंडोविचारकरवाथीमेंसर्वजाण्युं. जेमके–हाथणीनीशरीरक्रियाथीकेतां भामूत्रनाळीसहाराथीना
न·लिधातोनिश्चयकाळुकाळक्षणथी हाथणीनुंअनुमानकल्पनाकरी हाथणीजायछेएमकह्युं. डावीआंखेकांणीछेतेकहेवानुंका-

रणहोएछेके–जमणीतरफथीज पचेवपेतुणभक्षणकरवामुकनारोलुंपणडावीतरफउगेलीघासमांपुंदलपुत्रनासेलुंनहीतेथीडाबीआ
ंखकाणीछेएमकल्पनाकरी. आगळजतांस्त्रीपुरुषएवेजणे हाथणीउपरथीउतरीनेलघुशंकाकरेलीदीठी तेचिह्नथीआजगाएस्त्रिपे
करीअनेआजगाएपुरुषेकरी तेलघुशंकानाचिह्नथी, वळीस्त्रीनेउठतीवखतेतेजगाए वेहाथनाटेकादइउभीथयेलीतेचिह्नथीगर्भवंती
अनेगर्भपणनारीएमकल्पनाकरी. नानांकांटानांझाडमांपहेरवाना वस्त्रनावळगेलानांनातांतणा लालजोइलालवस्त्रपेर्युंछेएम
तथाचालतांजमणापगनुंरेतीवाळा मारगमांउंडुंपगलुंपडेलुंतेथीजाण्युं जेजमणीकुखमांगर्भछेमाटेपुत्रजथशे. अनेडोशीनोपुत्रपेर
आव्योएमकहेवानुंकारणतोएछेके–घडानीउत्पत्तिपृथ्वीथकी थयेलीछेनेघडांभागीठीकरांथइपृथ्वीमांमळिगयो. अनेजलनदीनुं
छेमाटेनेमळतोरेयोनदीनांमळिगयो. माटेतमारापणघरमांपुत्रआव्योएमकह्युं. पछीतेनाअनुपमअतिमाननी बुद्धिजोइगुरुपणुं
मानताथया. अनेत्यारीसाथशिष्यनेकयुंके–हेवत्स, तुंमारोगाजामहाटनोविनयकरतोहतो पणमारुमारेविषेबहुमानतेवुंनहतुं. अ
नेआबुद्धिवानाशिष्यनेतो पारेविषेमारीरीतेबहुमानहतुं अनेएनीस्वाभाविकवैनयकीबुद्धिपणछे तेबुद्धिपणसम्यक्श्रुतकारनाबहु
मानगर्भितोरीतथीजथणीकुरेछे तेमाटेआजगाएबरोकांइपणहोयछे! केमानथीएउद्गेनगार तमारोवांकनथीएमकही, अति
शोकोवथीभणसाथुंसुत्रकरजाही. पोतानेगामनासीगयो, स्थांतरतरणेनीस्त्रीनेनुकीयगांनपंभणशामां गाळ्यांपणविद्यासफळन
थइमेथीसीउपरक्रोधकरी गाळ्योदेइशोलयोके–रांडनारेपापे नाहंरमरणथराथीमारीविद्याफोगटथइ एमकहीनेस्त्रीनुंताडनकर्युं.॥
एमकारेविनयपणोहोयनोपन बहुमानअनेअबहुमानेउपरदृष्टांतकह्युं ॥ हवेअल्पविनयमनेगण, बहुमानदेखाडनीनासिथवामां
दृष्टांनकहेछे॥कोइएकपर्वतनुंनिर्झरणभावंमिद्दसणाकरछेश्रारत्यदर्शनीरमार्गनुंअतिशेचमत्कारीरदेलीहती,तेनेकोइकब्राह्मणपाने·
त्रपणेचंदनपुष्पादिकथीभक्तिकहेतूकेछे, भनेअन्दकोइएकभिल्लगानेनोपुरुषतो, एकहाथमांधनुषअनेबीजाहाथमांबाणराखीने

मुगनाभि करावे छे कोटीप्रिय प्रमुख जिनने पूजे छे. जिनप्रतिमा पूजनाधिकारनो
प्रथम करे श्रीपूजा निपजावे छे इत्यादि उपचारादिक, प्रमुख सर्वे भिन्न भिन्न प्रकारे कह्या छे इत्यादि आचार्यनी आज्ञा-
विनय करवाने जाणवो, एम एना हृदयमां हेतु समजानो तेथी समस्त सर्वे भिन्न भिन्न जिनवर उपर लीधा छे, तेवांज्यां के–नवपदनी नामे आचार्यो
लोक रचाव्या. एक दिवसे एना आगमनादि जिनागम ग्रन्थे श्री जिनवर उपर लीधा, विरुद्ध के–पतो मारे विषे अविरोध अनुरागथी कुंथु कालमान काले दर्शन,
तेमाटे तीर्थ छोड्या, इत्यादि विधि पर्वे टपकावी दीधा. जिनवर बोल्या के–एकपोताने नवपुरुषे इविधा. आम्रप्रसाद्यों तेणे, तेम-
नेमाणीवा. आगमनां विधिनी अवगणना करीने गयो; मानःकाले जिन, एक पोताने नवपुरुषे दीक्षिता. आम्र आव्यो तेणे, तेमना आदेशे पोता-
ना रचनाविधि बेउ आदेशे जे काइक भेद करे विशेष छे एकला माणिक्य भिन्न पूजा करवा आव्यो, तेमनो अविरोध भेद करवो, तेमना आदेशे पोता-
कारना विधि एवा आदेशे के अक्रमे दृढ करवा विशेष छे. एकला पोते भिन्न भिन्न तेनुं अने गुरु भाव्युं अने चतुर्देशनुं राज्य आप्युं एमकारे अंतरना रूपाने
गुणवत्तर दिने जिनने आप्युं. जिनवर नमस्कार नवपद ते भिन्न भिन्न नैवेद्यने पूजवा–हंसगमनगयो, तेमने तेनी परीक्षाना, तथी एवीः
कारिने नगुणीदिक गथा देवादिक मगण थायछे. तेमान जिनमूर्ति मारण करे के–हंसगमनगयो, तेथी एवी एक इच्छा रचना नुं परिपालन करवुं तेणे कर्यु, एक
आगममां श्री वडेनथी आराधनथी भगवान, किन्तु, अतिशय भक्तिमय विस्तार गवरं, तथी एक इच्छा रचनानुं परिपालन करवुं, एक
आराधना करी शकाय एवा छे. तेमान आगणे पण भव्यप्राणी ने चित्रणा पण चमत्कार पाम्यो. एमकारे बहुमान अने अवगुणान एवे
फल होय छे, माटे भव्य प्राणियो ए जिनो विचार करी विवेक पूर्वक गुरुदिकनुं सत्कार करवुं ॥ एमकारे
श्रीजो बहुमानना मे आचार कह्यो ॥ ३ ॥ तेमन जश्रीश्रुतना अर्थी प्राणिये उपधान एगम आचार करवं उपधान पण ज्ञानना आराधन
ने अर्थे छे. तेना प्रमाण तथा प्रमाणे तप विशेष एव उपधान छे. तेनी व्युत्पत्ति आम करवी छे के–उपके तां गर्भी विषयाय सूत्रादि ने एवं करे
तप ने उपधान कहीए । ते तो मात्र आवश्यकादि श्रुतना आराधनने अर्थे आगाढ योग अने अनागाढ योग, एमकारनुं तप विशेष एक,
तेमपरिश्रान्तथी अविरोधि अने पोतपोतानी गणणा रिते अनुमती जाणवुं. श्रावकोने तो, श्री महानिशीथ आदि आगममां कहेलुं,

पंचपरमेष्ठीनुंनमस्कार(नोकार)आदिसूत्रनाआराधननेअर्थेउपधाननुंपद्ध, तेतोमसिद्धजछे. अनेजेमसाधुनेयोगवहनकरयाविना सिद्धांतनुंवांचवुंभणवुंआदि, शुद्धथतुंनथीतेमथावकनेपणउपधानतपकरयाविना नमस्कारआदिसूत्रनुंभणवुंगणवुंआदि, शुद्ध नथीथतुं । तेश्रीमहानिशीथसूत्रमांकह्युंछेके–अकाळ,अविनय,अबहुमान,अनुपधान, इत्यादिआठप्रकारनाज्ञानकुशीलकह्याछे तेनीपंक्तिमांअनुपधाननामेज्ञानकुशीलने, मोटादोषपणुंकह्युंछे. जेमके–जेकोइपुरुषपूर्वोक्तआआठनीमध्येअनुपधानेकरिनेसुप्रश-स्तएवुंआवश्यकादिज्ञानभणेछेवाभणावेछे, अनेभणनारानेवाभणावनाराओनेसारुंजाणेछेहेगौतमतेमहापापकर्मवालाछे. अने मोटीएवीतेसुप्रशस्तज्ञाननीआशातनानेकरेछे. गौतमस्वामिकहेछेके–हेभगवन्एमजोतेछेतोतेपंचमंगलनुं उपधानतपकईरीतेक रावबुं. हेगौतम, प्रथमज्ञानअनेपछीदया,दयापेकरिनेसर्वजगतजीवप्राणभूतसत्वोने पोतानासमानदर्शिपणुंजावत्सर्वथीउत्तमए सौख्यछेत्यांपर्यंतनोपाठलेवो. एमर्वज्ञानथीप्रवर्त्तेछे.तेज्ञायतएपाठसुधीजाणवुं हेगौतम,एविधिवडेपंचमंगलनुंविनयोपधानकरा-वबुंतेजेमके—मारुमशस्तएवुंतिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रयोगलग्न तथाचंद्रनुंबलआवेनेगमे, पुरुषोजेजातिआदिमदजेणे, शंकाए रहितथइने, उत्पन्नथतीएवीजेश्रद्धा संवेग, तेनुंअतितीव्रपणुं, तेणेकरीने उल्लासपामतोएवोजेशुभअध्यवसाय तेणेव्या-प्तएवोजेभक्तिअनेबहुमानतेपूर्वक, नियाणाएरहित, द्वादशभक्तवडेरहेलोचैत्यालयमांजंतुरहितअवकाशमांजावतुजईने, नवा नवासंवेगवडेसमुच्छलताअतिशे थयेलाघाटानिरंतरअचिंत्यपरम शुभपरिणामविशेषवडेउल्लासपामतो, जावत्भक्तिवडेअंतः करणवडेजावत्पंचमंगलमहाश्रुतपंचअध्ययनअनेएकचूलावडेसहित श्रेष्ठएवीप्रवचनदेवताएअधिष्ठितपदवडे परिमाणवा ळोएकआलावोसातअक्षरपरिमाणवाळोअनंतएवागमअनेपर्याय अर्थनेनामसाधकसर्वमहामंत्रअनेप्रवरविद्या तेमनुंबीजरूपनमो अरिहंताणं, एमकारनुंप्रथमअध्ययनजाणवुं. तेदिवसआगेळवडेपारवुं.॥ तेमजबीजेदिवसपणजावत्तेपदवडे परिमाणक-

रेलुं अनेएक आलावानुं उणांच अक्षरेपारेमाणकरेलुं, नमोसिद्धाणं, एनवीजाअध्ययनरूप आंबिलकरवेभणवुं. एमजआवत्नांच माध्ययनसुधीपांचमेदिन आंबिलवडेभणवुं. तावतीजोआलापकनेत्रीशअक्षरपरिमाणरूपी एमोअंतनमुक्कारोइत्यादिचूलि-काजाणवी. छट्टेसातमेआठमेदिवस आंबिलवडेभणवां जावत् अठमभक्तवडे सम्यक्अनुज्ञापनकरीने जावत्अवधारणकरवुंइत्या-दिपाडवो. तारपछीईर्यापथिकीभणवी. इणगरनूनेकीपाविधिवडेभणवी. हवेगीनवजेपंचमंगलमहाश्रुतस्कंध, एकचोथ भक्तवेत्रणआचाम्लवडे. चतुर्विंशतिस्तवएकछठवेएकचतुर्थभक्तवडे. पच्चीशआचाम्लवडे. सिद्धांतस्तव, एकचोथभक्तनेपांच आंबिलवडेभणवाइत्यादि.॥ तारपछीतारापनांतिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रयोगलग्नचंद्रबलमने, पोतानीशक्तिप्रमाणेजगद्गुरुथीतीर्थ करवीपूजानेअर्थसंपादनकरवोछे पूजानोउपचारजेणेएवोअनेतानेथंभितकरवोछे साधुसमुदायत्रणेप्रकारनोपनोजावत्गुरुमहाराज-नीमाणे, साधुसाध्वीश्रावकश्राविकाचतुर्विधसंघवीटेआगतोसमय, चैत्योनुवंदनकरे. तारपछीसाधुनागुणवडेगर्भितएवाजेनसाधुनेमनुं वंदनकरे. तथासाधर्मिकएवाजननुं पोतानीशक्तिप्रमाणेमगापादिकनामपूर्वकवडे अथवागृह्यसुवर्णतुल्यराजाकोपलचोक्तांतग्र श्रद्धानादिवडेमहागमनानकरवुंजावत्. गुरुपासेधर्मदेशनाकरावरी. तारपछीपरमश्रद्धाअनेसंवेगनेपामेलोथयेलानेपुरुषनेजीवना सूधीशक्तानोअभिग्रहदेवोजावत्. नमोएआजथीआरंभीनेजीवतासूधी त्रणकालनेविषेचैत्यवंदनकरवांजावत्. पछीअभिमंत्रण करेलीमातनंपुष्टिमो (वासक्षेपनीपुष्टियो। तेपुरुषनामाथाउपरनाखवीनेकहेकुकेतुंसंसारनोनिस्तारकथा. एमकहीनेपचासंशेर नाखतो, जावत्-चारप्रकारनाश्रमणसंघेपणगंधपुष्टियोतेनामाथाउपरसेपवी, तारपछीजगतनागुरुए श्रीजिनेंद्रनीपूजाना एक देशनीछुंगवेशदिन. करमांगलीनहीसकुच्चितपरीधोलापुष्पोनीमालागुरुएपोतानेहाथेग्रहणकरीने तेपुरुषनाबेखभाउपरआंत एवीरीत्येआरोपणकरवानिष्पमणवुं-प्रथमतोतेनाउपबृंहणआदिपणवा. हेमगवन्तंउपबृंहणादिकतेशुं हगोतम, जेमपंचमंगलछेतेम

वा० [illegible] [illegible]–[illegible] मा०
४९ [illegible], [illegible]. [illegible]–[illegible]
[illegible]. [illegible]. [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible] पण [illegible]
[illegible] (आश्रव) [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] -
[illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible]. [illegible]. [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]. [illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible] -
[illegible]. [illegible], [illegible]. [illegible]. [illegible] - २२

पीटवांछुथीतेपुरुषपंचमंगलनेकारणेअयोग्यछे हेगौतम, तेपुरुषोनेपंचमंगलमहाश्रुतस्कंधनोपकरणआपवादेवायोग्य नथी.
मेदेनुपाटेअनादिकालथी अन्यभवोमांउपार्जनकर्यां, अशुभकर्मनासमूहांतनमुंदहनकरवाने अर्थआमकारनुंपूछ्ये (मनुष्यदेहादि
सर्वसामग्रीने) पामीथाकपुरुषोगमकमकार आराधननथीकरीशकतानथाकर्मनुंक्षयपणुंपणनथीकरीशकता, तेमाटेतेवाकुरुषोने
तोहेगौतम, धर्मकथादंभक्तिउपार्जनकरावनी, तारपछीतेपनेप्रियछेधर्मजेनेएवोनेमधोजाणिने तथादृढधर्मजेनेएवोतेभविकयुक्त
पुरुषजाणायतारेजआवनआमल्याख्याननो नियांदकरवानमर्थहोयतारेजआमल्याख्यानकरावनुं. अथवारात्रिभोजननुंप्रेमका-
रनुंतेनेत्रणप्रकारेचारप्रकारेपोतानीशक्तिनेअनुसारे पच्चखाणकरावनुंहेगौतम, पियवाल्हीशनमस्कारेसहितअथवा एकत्वोष
मऊधामछे,तथाचोवीदावोरमीवहेतथाचारपत्रांपुरिमढवड तथादशएचांअवढवडेतथात्रणपदीनिवीवडे तथावारएत्रांएकस्थानके
एकासणवडेतथाबेएत्रांआयंबलवडेतथामुकपतुं मूढपदार्थवान्डं,व्यापाररहितपणेरौद्रध्यान अनेविकथाएरहितपणे अनेमज्झायध्यान-
मांएकाग्रचित्तथाप्रानुंएकरण आपेल, यावत्पणकरतांपणविशेषथायछे.तारपछीजायत्आनउपधाननं विशाकरीकरीनेकरे
तांसूधीतेपाठकरवो. अतेएकासनादिकतपथाणिगणीनेकरे.तेउपारेपथयोग्यपुरुषपायनारेपणजोके आठउपधानवडे
पंचमंगलनेयोग्यथयोत्यारेज तेउपधानथांतावधानथोहायत्सांसंपचमंगलनोपाठभणावे, पणअन्यथानभणावे, इमतव्रूपकरे
तारेतोतेनेत्रणोकालातिगनेएटलेबेषांकालातिक्रमकरतां तेवचंतनुसूत्रुआयतोनमस्कारसहितपवोतेपुरुष, किमेतकारेमुक्तिमा-
र्गनेसाधिशके. हेगौतमजेनपथीआरंभीनेपणेसूत्रनाउपचारांनाचि अहठभावकरीनेपोतानीशक्तिप्रमाणे काईपणतपआरंभ्यु
छेतेजसमयथीआरंभीनेतेणेसूत्रअर्थअनेसूत्रार्थएसर्वेतेणेभण्युंजएममाणवुं; पणजेमाटेनेपंचनमस्कारनुंसूत्रअर्थअनेतेथे, अविधि-
यंदनग्रहणकरवां. तारेशुंकरवुंतो, तेमकारेग्रहणकरवां के, जेमकारेअन्यभवमांपणतेनिनाशपामे एवीरीते, तेपुरुषनातेवा सम्य-

[illegible] ॥ १ ॥
[illegible] इत्यादि
[illegible] नावर-
[illegible] भनेथी.अनेपीर-
[illegible] करवानुं मनेवर-
[illegible] तेगुणोपणमन्यहृत
[illegible] आवार्य [illegible] थी आ [illegible]
[illegible] आ-
[illegible] पोत [illegible] योग
[illegible] अने [illegible] मन [illegible]
[illegible] जे [illegible] करता
[illegible] इर्यापथिकी, प्रतिक्रमणादि, [illegible] । अन्वयमां
[illegible] ज्ञाननुं [illegible] । तेमज्ञाननी आराध-
[illegible] । [illegible] जेमके
[illegible] इत्यादिकार्यकरवाथि-

पोतपणविमासोनपामताहता अनेपोतानीमापदीक्षालेनार अनेभोतसे अनपश्रुतभणेला, तेषांतानीव्याख्यानिरहेनिद्रादि सुपनें
भोगमादेखीने ज्ञाननो अनादरथावायगा. रितामानेमांहेस्वाध्यायादिकनोपाण अस्वाध्यायनादिवसछे (अणज्झायनोदिवस)
पंमकरेताहता. पछीतेआचार्यतेमानाविचारनी आलोचना कराविनातमरणपांमी सौधर्मदेवलोकमांदेवथइनेआभीरकुल्मां
अवतर्या, पणतेभोगादिकदेखुणीहता. । एकदिवसपोतानी अतिशेरूपवाली कन्यानेगाडानीआगळबेसाडीने, तेओगीडनेचरा
कोइनगरमलेतनाहता, तेआभीरनीसंघाथेपणाएवापोतानीतरुणमतानुरूपपण तेनरूपवास्पैजनाहता, तेपुरुषोतेकन्या-
नुंअतिशेरूपजोइने परवशथयागतापोतपोतानागाडाने तेकन्यानुंरूपजोवाउन्मार्गेचलाववामंड्या, तेथीतेगाडांभांगीगयां
अथवाकपमांभागतथतापुरुषोनेपडनुं तुकसानगीणतीमांलेताइपणनथी. तेउपरथीमाचार्यनेआवकारनुंरमनकेकि—तेपुरुष
रूपनोवापोभनिसेवाखचवाल्मोथायछेतेपुरुष, अकालमृत्युनेपांमे, जेमके विषयनारागथीआकुलव्याकुलथयेला अकालमृ-
त्युनेपामेछेतेम, कुयोने, जेमआलोकतेतादीवामपुर देदीप्यमानवस्तुनेदेखी अतिषयाकुलथयेलापतंगीओ जेमअकालमृत्युनेपामि
छेतेमतेपुरुषपण अकालमृत्युनेपांमेछे. ॥ १ ॥ तारपछीतेकन्यानुंरूपजोतां पडतानास्वनारहुगीआपुरुषोए तेकन्यानुंनामअ-
शकटापदुंस्थापनकर्युं. अनेतेकन्यानापितानुंनामअशकटापिता एमकारनुंनिदितनामदीधुं तेथितेनेमकारनुंवैराग्यीविचारकर-
तांवैराग्यथायी तेपुत्रीकोइकनेआपीपोतेदीक्षालीधी. पछीतेणाधुउत्तराध्ययननांत्रण अध्ययनपूरांभण्या अने चोथुअसंखयनामा
अध्ययनभणतेसतेपूर्वेजन्मनुंज्ञानांतरायकर्मउदयथयां आव्युंतेथीतेआवेळकरीतेदिवसथी ते अध्ययनभणवानीअत्यंतमेहेनतकरी
पणएकपदमात्रपणहृदयमांनरह्युं. गुरुएतेअध्ययनपोळवानुंपुछ्युंत्यारेकांइपणनआवड्युं. त्यारेतेणेगुरुनेपुछ्युंके आअध्ययनहृद-
यमांनथीरहेतुंतेनोउपाय, मुलविधियवाको. गुरुएआज्ञाकरीकेज्यांसुधीएन आवडेत्यांसुधीआंबेलतपकरवुं. पछीतेणेउत्साहग-

एज भतिआश्चर्यकारीथायछे. । ते माटेबेसगाभाइओमां पणअनुक्रमेराइअनेमेरु, टोडानीमोटीगोलकडाइ(कडायुं) अने चंद्रबेरज, रात्रिअनेदिवस, अमासअनेपुनम, अंगारोअनेमोती, धंतुरोअने चंपो, केरडोअनेकल्पवृक्ष, मेशअनेदुध, कागडो अनेशोपक्ष, बगलोअनेहंस, कलियुगअनेसत्ययुग, दुर्जनअनेसज्जन, गर्दभअनेऐरावणहाथी, एवेप्रकारेमोटोफेरपडेछे, इत्यादिउपमाओघटमानथाय. माटेआआश्चर्यकारीछेकेसहोदरपणुंमतेपणझेरअनेअमृत, तेमनीपठेएवेमोटोअंतरपड्यो. । तार पछीद्वारकेकेवसंसारथीविरक्त थइनेअतिउग्रमार्गपामवपणुंउंचितजेजुएजोदेवदत्तनामेमोटोभाइ, अतिशे दुःसहएवाएकदुःखथी अभरपूरथयेलाअंतरनुंरुदनकरतोहतो एकदिवसपितापोतानापुत्रोनो पूर्वजन्मज्ञानी महाराजनेपुछेमनेज्ञानिएयथास्थित (भेदटुबेम) कहेलजेपोतानाअंतरमांअतिशयध्यापपराजयकरतो अनेमुक्तनेविषेछेएकचित्तजेनुएवोदेवदत्तपोतानादुष्कर्मनो क्षयस्थाधीपापएमज्ञानीनेपुछयुंत्यारे ज्ञानीएकह्युंके–उपधानवहनकरनानमस्कारादिसूत्रनेभणतापुरुषोनी अशठभाववडे विनय आदरअनभोजनविश्रामीकरावबो इत्यादिकवैयावच्च (सेवा)इत्यादिकवडेसर्वांगभक्तिअतिशेपुष्टकरवी,तथागंठसीउपवासआंबेल आदिदुस्तपएवुंअतिशेतपवडेपोतानुंमर्व शरीरअतिशेशुष्ककरवुंतथामोटाक्षपनीपेठजोएमतपकरीशतो तेजवखतेआसर्वदुष्कर्म क्षयपामशे.पणअन्यथानहिथाय. जेमाटेपरमर्षिपणुं आमकारनुंवचनछेके–भोइतिशेसंबंधनेहृ जीवपूर्वेकरेलांएवाजे पापरूपमोटां कर्मतेमनुंभोगविणक्षयविनामरणपामनाजीवोने तेकर्मथीथाविनामोक्षनथीथतो. तेकर्मभोगव्याथकीमोक्षथायछेमाटेतेकर्मोनेतप वडेनाशकरवो. तथाअतिघाणपणेविधिवडेतपस्यानपनाटेस्पांबत्राणकरीए, जेणेकरीनेनिकाचितएवांपणकर्मनोनाशथायछे. । मेमाटे, भेजमनेटाटोडनामोशुभेनोतपननाथीपोतेमुक्तीहतोतोपणतेजेएवुं आकरुंतपघणांवर्षपर्यंतउरसाहथी करयुंके–जेणेकरीने विशेषेसाहसने हर्षवृत्तमांपीजनाउपयुं. जेवकडणरवुंणकाष्ठहोयतेपणाएवाएणवडे (काष्टमांपडनाजीवोवडे) हलनेहल्लवेनवाइ

तारपछीवहानिशीथमांकहेलाछेत्यविधिवदेज गारभागवाळाधनवडेपहलंउपधानवहनक-
त्रापेनमनेआकरकर्मगणनाशणाम्युं. एमकर्यंतनेपूर्वेकरेलांदुष्कर्मनर्थगालीणयोगमनेगमप्रज्ञानुनापारगाधीगना
रवापूर्वंतनमरकारमपुरागूथेनेभतिभेमणवाणाल्या. तेदेरीनेधरछेश्रद्धातेणनेएवामाग:सर्वश्रावकोणउपधानविधिने आराधनकरवाथनिते
ग्रंदेवदणगणगुरुदणनीटपणानेपाम्यो. तेवदेवेनातेजमवणादृलयदीक्षाअंगीकारकरवाविनाएणकेवल
तत्वयथा.तारपछीनेवेएपरमश्रावकपणावदे ज्ञाननुआराधनकर्युं. तेवदेनेनातेजमवणाद्रुव्यमोऽमवाद्नी भगगनाकरीनेतेना
ज्ञानेपाणीसिद्धिगोपनेपाम्या. । एमकारेउपधाननवनुंआराधनभने अनाराधनतेणनुंफलमोऽवणादनी अरगगनाकरीनेतेना. ॥
आराधनविधिमांगमनकुमकारेउपकरयां. ॥ एमकारेश्रावकनाउपधानविषेदृष्टांतकर्युं.॥ एमकारेनाशेउपधानआचारकरो. ॥
नथाग्रहणकरुँछेश्रुतनेगएयापुरुणं, गुरुश्रुतनमुपनोनिहृव (ओळववुं) नकरवो, तेनीपासेजेटलुंभण्याहोइएतेजगाएतेजपुरुषनुं
नाम, अप्रसिद्धहोगतोपणतथा जातिश्रुतमपुरूरदेहीनहीयनांपणतेनेगुरुपणेनेनुंनामकहेवुं, पणपोतानुंगौरवपणुंदेखाडवाने अर्थे
प्रसिद्धएवोयुगप्रधानमुनिअन्यगुरूपनुंनामनकहेवुं जेटलुंश्रुतजेनीपासेभण्याहोयएतेटलुंतेकहेवुंपणअधिकओछुंनकहेवुं, केमके-प्र-
पापापा, चित्तनुंकलुषपणुं, ज्ञानातिचार, इत्यादिकदोषनीमर्यादाथायमाटे गुरुआदिकनोअपलाप (ओळववुं) करवो, ते महा
पापमुछे. ॥ लोकमांपणकयुंछे-एकअक्षरनोआपनारनेपणजेगुरुपणेनथीमाननो, तेशतकोश्वानयोनिमांजाइनेचंडालकुळमां
पणउत्पन्नथायछे. १ ॥ दृष्टांतकहेछेके-एकनापित (वाळंद) हतोतेपोतानीकांखमांविद्यावडेथी आकाशमांअवरराखीने-
मांथीअस्त्रोलेइदेनामवहतोहतो. तेदेखनी, एकसंन्यासिएपरीतसेवाकरी गमभक्तरी, तेनीपासेथीतेविद्याशिखीलीधी. पछी
दंभवदेएकलोभ्रमणकरतोते संन्यासीआकाशमांअधरराखेला त्रिदंडवडेस्थानस्थानमांलोकोएमहानपरकाशी जोगीनेपूजता
मांडया. एमकरतांएकदिवसएवाराजानेकानेआवी, पछीराजाएतेनेबोलावीपूछ्युंके-तमारीआविद्यानोगुरुकोणछे, त्यारेते

फल अतिआश्चर्यकारीथायछे. । ते माटेवेसगाभाइओमां पणअनुक्रमेराहुअनेसूर्य, लोढानीमोटीगोलकटाह(कडायुं) अने चंद्रमंडल, रात्रिअनेदिवस, अमासअनेपुनम, अंगारोअनेसोनुं, धंतुरोअने चंपो, केइडोअनेकल्पवृक्ष, मेशअनेदुध, कागडो अनेकोपल, बगलोअनेहंस, कलियुगअनेसत्ययुग, दुर्जनअनेसज्जन, गर्दभअनेऐरावणहाथी, ऐवेयांजेमपरस्पर भेदछे, इत्यादिउपमानलोकमांपामना. माटेआश्चर्यकारीछेकेसहोदरपणुंमतंपणझेरअनेअमृत, तेमनीपठेएवेमांमोटोअंतरपड्यो. । तारपछीदुष्टेवेकरेलोपंचितभेदतेणेकरीनेअतिशेउद्वेगपांमत्रथयुंछेचित्तजेनुंएवोदेवदत्तनामेमोटोभाइ, अतिशे दुःसहएवाएकदुःखथी जभरपूरथयेलाअंतरनुंवहनकरतोहतो. एकदिवसपिताएपोतानाबेपुत्रोनो पूर्वजन्मज्ञानी महाराजनेपुछसतेज्ञानिएयथास्थित (जेमहतुंतेम) कह्युंसतेपोतानाअंतरमांअतिशेपश्चात्तापमकाशकरतो अनेसुकृतनेविषेछेएकचित्तजेनुंएवोदेवदत्तपोतानादुष्कर्मनो क्षयकेमथायएमज्ञानीनेपुछ्युंत्यारे ज्ञानीएकह्युंके–उपधानवहनकरतानमस्कारादिमूत्रनेभणतापुरुषोनीअशठभाववडे विनय आवर्जनभोजनविश्रामोकरावबो इत्यादिकवैयावृत्य (सेवा)इत्यादिकवडेसर्वांगभक्तिअतिशेपुष्टकरवी,तथासंलग्नउपवासआंबिल आदिदुस्तपएवुंअतिशेतपवडेपोतानुंमने शरीरअतिशेशुष्ककरवुंतथामोटाऋषिनीपेठजोएमतपकरीशतो तेजभवतेआसर्वदुष्कर्म क्षयपांमशे,पणअन्यथानहिपांमे. जेमाटेपरमऋषिनुंआमकारनुंवचनछेके–भोइतिसंबोधनेहे जीवपूर्वेकरेलांएवांजे पापरूपमाठां कर्मतेमनुंप्रायश्चित्तकर्याविनामरणपामनाजीवोने तेकर्मवेद्याविनामोक्षनथीथतो. तेकर्मभोगव्यापछीमोक्षथायछेमाटेतेकर्मोनेतप वडेनाशकरवां. तथाअनियाणापणेविधिवडेतपेलातपनांतोश्यांबसाणकरीए, जेणेकरीनेनिकाचितएवांपणकर्मनोनाशथायछे. । तेमाटे, तेजमोटाशेठनामोटापुत्रेनानपणमांथीपोतेसुखीहतोतोपणतेणेएवुं आकरुंतपघणांवर्षपर्यंतउत्साहथी कर्युंके–जेणेकरीने विशेषेमहित्तकर्ममूलमांथीजनाशपयुं. जेमकठणएवुंपणकाष्ठहोयतेपणापवाघुणवडे (काष्ठमांपडनाजीवोवडे) हलवेहलवेखवाइ

नापतेपनेश्राद्धकर्मणनानपामयुं. नारपदीपदानिशीथवाक्येनापुण्यविधिवादेन गाथामनालापनवेदपहनें उपधानवहनक-
स्याधूंकनमस्कारप्रमुखसूत्रेनेभातिनेभणवापाव्या. एमकर्येणनेसूत्रेंकरेताडुष्कर्मसर्वपापक्षीणथयेमनेनमप्रवाग्रनागारगाणिना
गंडेवदणणगुरुदत्तनीउपधानेपाम्यो. तेदेणीनेथइछेश्रद्धानेपनेएवामागःगर्वश्रावकपणउपधानविधिने आराधनकरवाथकीते
तत्त्वयया.नारपदीनेवेपपरमश्रावकपणानदे ज्ञानुआराधनकर्युं. तेवडेतानेनमनमाद्वत्यदीक्षा अंगीकारकरवाविनापणकेवल
ज्ञानेपामीसिद्धिगतिनेपाम्या. । एमकारेउपधानतपनुंआराधन अने अनाराधनंतेपनुंफलमोक्षपादनी आगमनाकरीनेतेना
आराधनविधिमांयत्नकरवाकारेउद्यमकरवो. ॥ एमकारेश्रावकनाउपधानविधिदर्शानकर्युं.॥ एमकारेचोथो उपधान आचारकह्यो. ॥
तथाग्रहणकर्युछेश्रुतजेणेएवागुरुने, गृहश्रुतनपूर्णनोनिह्नव (ओलववुं) नकरवो, जेनीपासेजेटलुंभण्याहोइएतेनगुरुनुं
नाम, अप्रसिद्धहोयतोपणतथाजातिश्रुतअपुत्रदेहीनहोयतोपणतेनेगुरुपणेकेनुंनामकहेवुं, पणपांतानुंगौरवमगुंछेमाटयाने अर्थे
प्रसिद्धएवोयुगप्रधानप्रमुखअन्यगुरुपानुंनामनकहेवुं तेटलुंश्रुतजेनीपासेभण्याहोइएतेटलुंजकहेवुंपणअधिकओछुंनकहेवुं, केमके-पू-
वाचना, चित्तनुंकलुषपणुं, ज्ञानातिचार, इत्यादिकदोषनीप्राप्तिथायपाछे गुरुआदिकनोअपलाप (ओलववुं) करवो, ते मदा
पापरूपछे. ॥ लोकमांपणकयुंछे–एकअक्षरनोआपनारनेपणजेगुरुपणेनथीमानतो, तेसोवखतश्वाननीयोनिमांजन्मीनेचंडालकुलमां
पणउत्पन्नथायछे. २ ॥ इहांएकदृष्टांतछेके–एकनापित (वाळंद) हतोतेपोतानीकांपलीनेविद्याथकी आकाशमांअधरराखीने-
पोतेपणआकाशमारगेइच्छामांआवेत्यांवेहवासिद्धोहतो. तेहतापसनी, एकसंन्यासिएपणीनसेवाकरी प्रसन्नकरी, तेनीपासेथीतेविद्याशिमीलीधी. पछी
ते संन्यासीआकाशमांअधरराखेला त्रिदंडवडेस्थानस्थानमांलोकोएमहाचमत्कारी जाणीनेबहुतथा
दंभपदेएकलोअपणकरतोनेते, पछीराजाएतेनेबोलावीपुछयुंके–तमारीआविद्यानोगुरुकोणछे, त्यारेते
मांडयो. एकवखतएकदिवसएवानराजानेकानेआवी,

पण मांहमांहे घणो अंतर होय छे. । ते कहे छे जेमके माहरो भाइ ओनो पण अनुक्रमे राहु अने सूर्य, होडानी मोटी गोल्ह कडाइ (कडायुं) अने चंद्र देश, रात्रि अने दिवस, अमास अने पुनम, अंगारो अने मोतुं, धतुरो अने चंपो, केरडो अने कल्पवृक्ष, मेघ अने दूध, कागडो अने कोयल, बगलो अने हंस, कलियुग अने सत्ययुग, दुर्जन अने सज्जन, गर्दभ अने ऐरावण हाथी, एवे प्रकारे परस्पर भेद छे, इत्यादि दृष्टांत अनेक जाणवा. माटे आ आश्चर्यकारी छे के सहोदरपणुं मात्र सरखुं अने मनुष्य, तेमनी वच्चे एवो मोटो अंतर पड्यो. । नारकनी पेठे दुःखने भोगवतो एवो ते चक्रनी वच्चे उभेलो भाइ, अतिशे दुःखे करीने पोताना दुःखथी अत्यंत मुंझाइ पोतानुं मरण करनारो एक दिवस पिताए पोताना पुत्रनो पूर्वजन्मज्ञानी महाराजने पुछ्युं ज्ञानीए कथा सहित (जेम हतुं तेम) वर्णन करतां पोताना अंतरमां अतिशे पश्चात्ताप करीने अने मुक्तिने विषे केवळ चित्त छे जेनुं एवो देवदत्त पोताना दुष्कर्मनो सघळो वृत्तांत ज्ञानीने पुछे छे त्यारे ज्ञानीए कह्युं के— उपधान वहन करवा नमस्कारादि सूत्रने भणनारा पुरुषोनी अशुद्ध भाव वडे विनय भाव अने बहु आशातना करावी इत्यादिकवडे पाप बांध्युं. जेथी इत्यादिक वडे सर्वांग भक्ति अतिशे उत्कृष्ट करवी, तथा गंठसहित आंबिल आदि दुष्कर तप एवुं भाव सहित करवुं तेमज शरीर अतिशे शुष्क करवुं तथा मोटा ज्ञानीनी पेठे जे एम तप करीश तो ते जन्मने आश्रये दुष्कर्म सघळां नाश पामशे. एम कहीने ज्ञानी अदृश्य थया. ए प्रकारनुं वचन छे के— मोहनीय कर्म बांधीने जीव पूर्वे करेलां एवां जे पापरूप कर्म तेनुं भोगववुं विनापर मनुष्य जीवने ते कर्मथी छुटकारो थतो नथी. ते कर्म भोगवीने पछी मोक्ष थाय छे माटे ते कर्मोनो निरंतर क्षय करवो. तथा अनियाणापणे तपादि करीने पापनो नाश करीए, जेणे करीने निकाचित एवां पण कर्मनो नाश थाय छे. । तेथी, ते देवदत्त ज्ञानीना मुखथी दुःखनुं कारण सांभळीने पोतानो अपराध क्षमावीने आठ वर्ष पर्यंत उत्साहथी कहुं के— जेणे करीने विशेषे करी शरीर शुष्क थाय एवुं तप करवुं. (काउसग्ग करीने ज्ञानीनी आज्ञा वडे) इत्यादिक वडे

सगरपेल्याराजापोतानाबेकाणनै वोल्नारपुरुषनेनेदानआप्युं. आवकारोछेके-पादुदेशनाराजाएपोतानादंडपाजेमआप्युं, हसुनेपरतेनेआप्युं. तेपाआतहरोदगोनापोहरो, पांगुरामोतिनीतुलाओ, (एकसाजनामापुरुषनेवेमाटीवीजामाजवामांपोतिभरे, तेपोतिनुहननमाणथायत्यारेएकनुल्याथटलाणनी.) अनेमदगंधवटेल्रोमाडनेपापाानकरताएवाअमरवेडकोपपानवपेला पोटापेटापणानटापी. अनेमारण्यगुण (अनिडगकृष्णपुण) तेमनीपुष्टिवदेसंरंचवाळीछेहष्टिमांतेमनीश्रेवी, मोतारांगनाओ (वेश्याओ) एणेआपीदीधुं. इत्यादितेविक्रमराजानादानकृत्यप्रसिद्धछे. । तेनाराजमांपांपितेतेकात्यायनगोत्रनाब्राह्मणो मध्येश्रेष्ठगुणवानदेवर्षिनामेब्राह्मणहतातेनेश्रीदेवश्रीनामेहनी, तेनेनोपुत्रसिद्धसेननामेहतो, अतिवबुद्धिनाविद्यानवडेगर्वेजगतना पंडितोजेतेतृणसमानगणतोहतो. मिथ्यादृष्टिपणेतेनेगर्वेतेनेमनीस्वाभाविकप्रकृतिवडेप्रसिद्धछे. (तेमांप्रतोमानेउचाकुलनोब्राह्मणतेमांवळीपहाविद्वानअनेराजानोमानितोअनेवणोपनाढ्यतेपछीपछीहोय. तेकहुंछेके-मर्कटोमदिरापानोवृश्चिकेणापिदंशितः ॥ तन्मध्येभूतसंचारःकांकाविडंबनकुर्वते ॥ १ ॥अर्थः-वानरकदअनेतेवळीमदिरापीनेपहोम्मतथयांतेनेवळीवीछीकरड्यो तेपाछोवळीतेनामनेवणपोवळीनेजीजीविडंबनकरे. सौकरे. । वीछीअल्पविषमात्रवडेगर्वथी पोतानोकांटोउचांनेउचोजनिरंतरराखेछे, पणशायुकिनाग, कमारभारतिम, धारणकांडेपरतुजेनपाअगर्वनथीपामतो १ वळीतेसिद्धसेनेगर्वथीएवीप्रतिज्ञाकरीथीके-जे पुरुष, मनेवादविवादमांजीतेतेनोशिष्यथउं ॥ (एकदिवसविक्रमराजानीसभामांदोतरफथीश्रीवृद्धवादिसूरिनीकीर्तिसांभळी) तेवृद्धवादिसूरिनीकीर्तिनेसहनकरतोभृगुकच्छमांपीनीसूरिनेजीतवानीइच्छाकरयो. (अनुक्रमेतपाम करतानर्मदानदीनेकांठेरहेला भृगुकच्छनगरमांतेसूरिविहारकरीनेपरवर्याछेत्यांगयो पणीउताबळथीरातदिनप्रयाणकर्युं पणभाविभावने लीधे. जेदिवसएसूरिगुरुपोताशिष्योनेदिवसवृद्धसूरिनो मानकलपूर्णकरवाथीविहारकरवानो हतोमाटेतेसूरिनेविहारकरीआवतालोको, तेसि-

वनमां आवी मेराकरतो मळ्या. तेणे वृद्धवादी सूरिनी खबर पुछी त्यारे तेमणे कह्युं के तेओ हालमांज विहार करी आगळ गया. तेणेप-
ण विचार्युं के निश्चे आ वखतो मांथी पण तिनाथी गयो एम धारी तेमनी पछवाडे शीघ्रगतिए करी) वृद्धवादी सूरिने मारगमां मळ्या. परस्पर
बोलबुं थयुं. (वळी आ नानादमाथी भोळवाणथए ट्लेसिद्ध सेनपंडितशोतत्काल सुखपालथी उतरीपडी मारगमां पडेलापाम-
पुंबारुंराधवा ओर अभिनवधी बोल्यो के-वादी क्यां जाय छो ना मने होयतो आतणुं दानिग्रहण करोनहीतो) मारी साथे वादविवाद क-
रो त्यारे सूरि बोल्याके-वादी विवाद करवाने पार छिये, परंतु अत्र भाग्यजोगे कोइपण मध्यपूरुषोनथी माटेतेविना वादमां जयपराजय
शाण थव धीरीस्थरताकोण करीशकशे. पछी वादकरवा अभिरउत्कंठावाळो सिद्धसेन बोल्यो के-(गमेनेवा आनगरमांथी पाहनो
गोवाळीयाने बोलावी सभासदो करी.) पछी सूरिबोल्याके तमारी मरजी होयतेम करो. मपर्वपदाविद्वाननी शीखातकहेरी.
तेमने भली आशी आनंद पामेलो सिद्धसेन गोवाळी आने बोलावी सभासदो तेकाणे वेसाडी पोतानावेदीचणपृथ्वीउपरउंघारथा-
रकरी वेदाधरपानो बाडभार करतो आंख्योमफुलिगकरी भृकुटी चढावीन्यायशास्त्र अनेपीमांसाशास्त्रनां सीणांकठिनशब्दोसंस्कृ
तभाषामांउंचेस्वरेउच्चारणकरी, उपन्यासउपराउपरिकरवामंड्यो. तेनेजोइसूरिएविचार्युंके आनिश्चेपहाविद्वानछेपणपुर्ननीपेठे
रवबोलतो तेनपीपाटेमीनबोकडिणनथी पछीसूरिएमवेंगोवाळीआओनेपुछ्युंके आपंडितजीबोल्याते तमे समज्या?
धर्युं ! त्यारेतेगोवाळीआबोल्याके-आवामणपनो मत्यारबुशीलांबालांबला...
अवाजोकानकोरीनाख्या, अमेतोपशा...
छो) ...

मकारनोग-
सिद्धांतनायोग, अनेरीओगपयंकेनाआतोगांवाळीथानीलभाळेमांदेगुजीगायपदुंवोळ्युंते आसनगमोयदिनते एमरे
सिद्धांतनायोग, अनेरीओगपयंकेनाआतोगांवाळी (अोपो) बांधी, तेनेकडकतोराणी, केडसंघाथे
पगनागनापृथीकडाळबभाधसोलाना ओढवानावस्त्रदंशोनानोरमोहरण (ओपो) बांधी, तेनेकडकतोराणी, केडसंघाथे
तेरयेनानीवाती, तंदननागोवाळी भानीमाणानां नवांणकगस्वोगुंदरयनावी, शगेनादीहाथनानांवाटावगाडी, फुदडी फरी,
मगोवाळीभाभीतेमयंनंदनमादरमाडी, हाथनाकडकाधीतेगांवाळीअनिगमग्रण पडेनेमनेगरवोगाडसंभळाव्यो. तेनेकुमारमात्र
गामकनात्र मनिशेषदीमंरवाकृदतागांवाळीभायोनाकेनापुत्रीत्यानीत्यानेवावणोहायोंहायों.) नगरयानीवेदुको (वेगाभा-
मो) नोअगंभाम कारवांछे.–कोडनीरनेवारीएनही कांइनीचोरी करीएनहीपरदारगमन (पारकीस्त्रीनोसंभोग) करीएनही
भोहावाधीरनगधोर्दुमारीमांननकरीएनांहलोहलो भगवानश्रीमर्णनां मुखपाप. १. काळोकांयलोअनेकगकिओनीरावदी
सांगमहित, एकत्राकडानांवाटवांघरिनेगणकोडमदापूर्नेनभावणी अपागतांनोपररगानायनीवरघोडेचड्योनेसर्वपापछांडीसर्व
नेवयांकनुळ्यादस्त्रानीनुगुसं. एटलेगवंडेवलोकभीउपरहलोपाककन्यानेवरे. एभीवीजुंकांइश्रेष्ठनथी. २। तेलंदनडेनागना
नेमनिमगमवदयोकळागांवाळीबापदपुकेआसाधुमीत्या आत्मामाशातनीर्थकरछे. तारपछी अनिशेषंगवाणोपदीवागोवनीगंयेलो
(अनिभापणंगायेलो) मन्यमानिमात्राळोसिद्धांगनतांनकाळगर्वअभिमानमात्रनोत्यागकरीहाथजोडीनम्रवाणीबोल्योके–हेभग-
वनमनेतमारीदीक्षाआपो हुंतमारोशिष्यछुं. वाद्मां, मारा करेल्यागन्यपुरुषोनीसमक्ष हुंजीनाएलोछुंमाटे हवेनिर्ग्रंथनकरो. ।
पछीगुरुमहाराज, तेणंद्रिमनवद्दुमान आदरपूर्वकबोल्याके–आवोशोवादृगयो; नेजीताथुं. माटेचालोनगरमांमहाप्रामाणिक
अनेपीढनोनीगधामीराजानीगमतआवडोवादविवादथयेथीयाय.तेमकरवाअमोयुजीडिए. सिद्धसेनबोल्याके–हुंसमयज्ञनथी
नेगयोगमयणशो माटेजगमयञ्चरोयनेजगत्रकरहेवाय, तयोएमनेनिश्चेगिल्यो, हवेतोमनेजीमयणेतमारीदीक्षाआपो. अनेमस-

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सिद्धांतनाजाण, अनेबीजोगमपरकेनाआनोगांवाळीयानीगपाछेपांटेतेमुशीयारणवुंबोल्युंने आसमगमोचदिनछेएमवे मकारनोम-
मगजाणनागूरीनकाळजमाधइपोताना ओढवानावस्त्रपंडपोतानारजोहरण (ओघो) वांधी, तेनेकटकतोरानी, केडगंपाथे
तेरमेतांणीयाधी, नेढननागोवाळीआनीमापानां नवांपकाग्यांसुंदरवनाथी, गगेपाडीहाथनानांबाटावगाडी, फुदडी फरी,
तेगोवाळीआमळेतेपनंपन उत्साहपमाडी, हाथनालेककाथीतेगांवाळीअनिममग्रण पढेनेपनेगरवोगाढसंभळाव्यो. तेनेळगारमात्र
सांभळताज अतिसेपुडीथयेलाकुदतागोवाळीआथोल्याकेगापुजील्याजील्यानेथावणोहायोंहायों.) तेगरवानीवेदको (वेगाया-
ओ) नोअर्थआमकारनोछे.-कोइजीवनेपारीएनहीं कोइनीचोरीकरीएनहीपरदारगमन (पारकीस्त्रीनोसंभोग) करीएनही
थोडामांथीपणथोडुंआपीभोजनकरीएनोहळवेहळवे भथयाजल्दीस्वर्गनां सुखपमाय. १. कालोकांबळोअनेकणकिओनीरावडी
छासेसहित, एकळाकदानोनाटवोभरिनेपणकोइमहामूर्खननभावथी अपायतांतोपत्ररराजापनीवरपोढेचढ्योनेसर्वपापउडीमर्वे
देवलोकनुंस्लाटफपथीसुंनृंछे, एटलेसर्वदेवलोकथी उपरहल्लीमुक्तिकन्यानेवरे. एथीबीजुंकांइश्रेष्ठनथी. २ । तेछंदवडेनानवना
नेअतिमगसथइयोल्तगांवाळीयापकडुकेआसाधुनील्या. आतोमाक्षात्नीर्थंकरछे. तारपछीअनिशेखंगाणोपडीवांघोचनीगयेलो
(अतिआधर्यपामेलो) गल्यमतिसावाळोसिद्धसेनतोतत्काळसर्वअभिमानमायनोत्यागकरीहाथजोडीनम्रताथीबोल्याके-हेभग-
वन्मनेनमारीदीक्षाआपो हुंनमारोशिष्यछुं. वादमां, माराकरेलासभ्यपुरुषोनीसमक्ष हुंजीतापल्योछुंमाटे हवेविलंबनकरो. ।
पछीगुरुमहाराज, तेपंडितनबहुमान आपवापूर्वकबोल्याके-आपांबोवादथयो; नेजीतायुं. माटेचालोनगरमांमहाप्रामाणिक
अनेपंडितोनीसभामांराजानीसमक्ष आपडोवादविवादसुतेभीथाय.तेमकरवाअमोखुशीछिए सिद्धसेनबोल्याके-हुंसमयज्ञनथी
तेनमेत्समयज्ञछो माटेजेसमयज्ञहोयतेजसर्वज्ञकहेवाय, तपोएमनेनिश्चेजित्यो, हवेतोमनेशीघ्रपणेतमारीदीक्षाआपो. अनेवदा-

भवनेकवादिवृंदरंजनमस्या. मेनेहद्धवादीसुरिनोमवपुछोत्यारेमेनेकद्युंके मेंगाहडवांजविवादकरीआपागेगया. मेनेप-
मनोविचार्युंकेविप्रेमवेआवतोकोणीएवनिवादीगयो एमधारीमेंमनीगडवारेदाखनोनकरी) वृद्धवादीसुरिमारगवांपरया. परस्पर
वार्त्तुथइ. (मेंदीमानामानमधीभोजवाणपाटरवेमिद्ध मेनदोनवान्कान्मुनवानपीडम्रोपरी मारगमांदेन्नायाम-
प्रेक्षुादनमे भनिनदेपीवोन्दोके—नादीयामावजोनाभधु होववोभानरणुदानेहानकरनेनहीवो। मारीमाथवादविवादक-
रो त्योसुरिवोल्याके—वादविवादकरवासेवाछिये. परनुभवनारमंनेकोइवणभन्यपूरणाजरीमाटेतेविना वाद मांजयपराके
रवानवबदोषदीवन्द्रवानोणकरीशकडो. पछीवादकरवाअतिशेउत्कंठावालोमिद्धसेनवोल्योके—गमेतेवाअनागम्यांगीपोहनो
वोआरीसभामद्राकरोपणमारेतोनेमवेआगायाचेशोवारनाराणोवार्जोपाउनेवापारीआगळजे माटेनेमपामकरवोगेडवादरनेआ
टोवालीएानेवडोलागीनभामदाकरवा पछीसुरिवोल्याकेनवोरीपरमीटोपरेनकरो ममर्थमहाविद्वाननीशीवातकहेवी.
नेशवभीआिवआवश्यदिको मिद्धसेनगोवालीआनेवोल्यांसभामद्रोनेउनाणेसाटी पोतानाविदोरणपूर्ण्वोडपरजंघास्या-
रवकरीनेवावरवालीवारपावनो आरुवांमलुत्तिनकरांभृकुटीचदावीन्याययात्रअनेमीमामावाखनां शीगांकठिनश्लोकठ
पयारंकाबडेवरेवरोबारणकरी. उन्यामडपंडपारिकाजानदपो नेनजोहन्रुगिणविचार्युकें आतिश्रममहाविद्वानछे।गमपूर्वनीपेठे
मदमोहमशावदीप्ठरश्रीवेवाकाटेमनदी पछीसुरिएमनेणायालो आमासमाइवाल्याके आपोहनोनुंबोलेडुंमेंवमारीपेठेनपोए
मावजुं! रवोरसवेगालाटीआवीनशाके–भावांपगाएने। अन्यारसुरीन्ाावाळावावरादापनुयानेऊचोनीचोपडनेपोकारकर्यो
वेमहारानेकानकोरीनारुया. अदोमेएनाडारावाधोकारणमपशानहीमाटेआनोकाइमर्पजानथी माटेहद्धवाचजीनघोकाइ
वोओ.) भरपणोविषारत्नामनमेभागनारामुरी धीरणोकेंरवेनुन्द्विजिमिनडचातालदेवानूरकेवोल्या. एहेंएकतोममयकेना

सिद्धसेननाजाण, अनेतीजेसमयकेतेओगोवाळीयानीसमाजेपोतेनेखुशीथायएवुंजोइएवुंनेआसवसमोवटिनजेएमवेप्रकारनोस-
सिद्धांतनाजाण, अनेतेजोसमयकेतेआगोवाळीयानीसमाजेपोतेनेखुशीथायएवुं (ओपो) गायी, तेनेअटकतोराखी, केडसंगाथे
समजाणनासूरीनकाव्यमाथइपोताना ओटवानाअमवेपोताना जोडरण (ओपो) नवांपकायांसुंदरयनायी, रागोपादीहाथनानातेडावगाडी, फुदडी फरी,
तेरतेताळीयापी, तेदेवनागोवाळीआनीयापामां नवांपकायांसुंदरयनायी, पहेनेमनेगरवोगाइगंभल्याव्यो. तेनेक्रमारमात्र
तेगोवाळीआसलितेमनेपनउन्माहथमाडी, हाथनालेइकायीतेगोवाळीअतिगमग्रण पडेनेमनेगरवोगाइगंभल्याव्यो. तेनेक्रमारमात्र
तेगोवाळीआसलितेमनेपनउन्माहथमाडी, हाथनालेइकाथीतेगोवाळीआयोल्याकेसाधुजीन्याजीयानेयामणोहायोंहायों.) तेगरवानीवेदुको (वेगाथा-
सांभळ्याजअतिशेखुशीथयेल्याकुदतागोवाळीआयोल्याकेसाधुजीन्याजीयानेयामणोहायोंहायों.) तेगरवानीवेदुको (वेगाथा-
ओ) नोअर्थआप्रकारनोछे-कोइनीवनेमारीएनही कोइनीचोरीकरीएनहीपरदारगमन (पारकीस्त्रीनोसंभोग) करीएनही
थोडामांथीपणथोडुंआपीभोजनकरीएनोहल्लेहल्लेअथवाजल्दीस्वर्गनां सुखपमाय. १. काळोकांबळोअनेकणकिओनीरावडी
छोमेपडित, एकलाकडानोचाटयोभरिनेपणकोइमहामुनिनेभावथी आपायतोतोपणराजायनीवरपोहेचत्योतेसर्वेपापछांडीसर्व
देवलोकनुंल्याटकापीजुंजुंछे, एटलेसर्वदेवलोकथीउपरहल्लीमुक्तिकन्यानेवरे. एथीवीजुंकांइश्रेयनथी. २ । तेछंदवडेनाचता
नेअतिमगमथइयोल्तागोवाळीयाएकथुंकेआसाधुजीत्या. आतोमाराबनीर्थकरछे. तारपछीअतिशेसंगाणोपडीथायोयनीगयेल्यो
(अतिआश्चर्यपामेलो) गत्यमतिसावाळीसिद्धसेनतोनत्कात्मनेअभिमानमाथनोत्यागकरीहाथजोडीनम्रताथीबोल्योके-हेभग-
वान्मेतमारीदीक्षाआपो हुंतमारोशिष्यछुं. वादमां, माराकरेलासभ्यपुरुषोनीसमक्ष हुंजीताएल्योछुंमाटे हवेनिर्ग्रंथनकरो. ।
पछीगुरुमहाराज, तेपंडितनेबहुमान आपवापूर्वकबोल्याके-आमांजोवादथयो; नेजीतायुं. माटेचालोनगरमांमहाप्रामाणिक
अनेपंडितोनीसभामांराजानीसमक्ष आपडोवादविवादथुयेशीथाव.तेमकरवाअमोखुशीछीए. सिद्धसेनबोल्याके-हुंसमयज्ञनथी
नेनमोल्ममयज्ञजो माटेजेसमयज्ञहोयतेजसर्वज्ञकहेवाय, तमोएमनेनिर्थेजित्यो, हवेतोमनेशीघ्रपणेतमारीदीक्षाआपो. अनेमहा-

[illegible] करी आपतो गया. तेनेप- [illegible] शृद्धवादी सूरि [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समर्थ [illegible] विद्वाननी [illegible] [illegible] पोताना [illegible] पृथ्वी [illegible]- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ! [illegible] — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सिद्धांतनाजाण, अनेथीजोममयकेताआनोगांवाळीयानीपमाछेमाटेतमुशीथायएवुंजोळ्युंनेआमवममांवटितछेएमवे मकारनोग-
सिद्धांतनाजाण, अनेथीजोमयकेता आनोगांवाळीयानीपमाछेमाटे तमुशीथायएवुं (ओघो) बांधी, तेनेलटकतोराखी, केडमंथाथे
ममआणनागृहीनरकाळवाथइपोतानाओढवानावस्त्रवडेपोतानोरजोहरण (ओघो) बांधी, तेनेलटकतोराखी, केडमंथाथे
मगजाणनागृहीनरकाळवाथइपोतानाओढवानावस्त्रवडेपोतानोरजोहरण, रागेथादीहाथनानाचोटावगाडी, फुदडी फरी,
तेरमेताणीथाथी, मेडमनागोवाळीआनीभाषामां नवांएकगरयोगुंदरचनाथी, रागेथादीहाथनानाचोटावगाडी, फुदडी फरी,
तेरमेताणीथाथी, मेडमनागोवाळीआनीभाषामां नवांएकगरयोगुंदरचनाथी पढेनेमनेगरचोगाडगंभळाव्यो. तेनेऊगारमाव
तेगोवाळीआमीळेतमनमनउत्साहमाटी, हाथनाळंकाथीनेगोवाळीअनिपवग्रण पढेनेमनेगरचोगाडगंभळाव्यो. तेनेऊगारमाव
तेगोवाळीआमीळेतमनमनउत्साहमाडी, हाथनाळंकाथीनेगोवाळीअनिपवग्रण) नेगरथानीवेदुको (वेगाथा-
सांभळताजअतिशेपुशीथयेलाकुदनागोवाळीआयेल्याकेसाधुजीत्याजीत्यानेथाणोहाथहार्या.) नेगरथानीवेदुको (वेगाथा-
सांभळताजअतिशेपुशीथयेलाकुदनागोवाळीआयेल्याकेसाधुजीत्याजीत्यानेथाणोहार्याहार्या.) करीएनही
ओ) नोअर्थआमकारनोछेके-कोइनीवनेपारीएनही कोइनीचोरीकरीएनहीपरदारगमन (पारकीस्त्रीनोसंभोग) करीएनही
ओ) नोअर्थआमकारनोछेके-कोइनीवनेमारीएनही कोइनीचोरीकरीएनहीपरदारगमन (पारकीस्त्रीनोसंभोग) करीएनही
थोडामांथीपणथोडुंआपीभोजनकरीएतोहळवेहळवेभगवानजेवुंस्वर्गनां सुखपमाय. १. काळोकांबळोअनेकणकिओनीरावडी
थोडामांथीपणथोडुंआपीभोजनकरीएतोहळवेहळवेभगवानजेवुंस्वर्गनां सुखपमाय. १. काळोकांबळोअनेकणकिओनीरावडी
छाभेमहित, एकळाकडानोचाटवोभरिनेपणकोइमहापुनिनंभावथी अपायतोतोपवरराजावनीवरघोडेचढ्योनेसर्वेपापछांडीमर्ग
छाभेमहित, एकळाकडानोचाटवोभरिनेपणकोइमहापुनिनेभावथी अपायतोतोपवरराजावनीवरघोडेचढ्योनेसर्वपापछांडीमर्ग
देवलोकनुंळलाटहपथीजुंगुंछे, एटलेसर्वदेवलोकथीउपररहेलीमुक्तिकन्यानेवरे. एथीबीजुंकांइश्रेष्ठनथी. २। तेछंदवडेनाचना
देवलोकनुंळलाटपथीजुंगुंछे, एटलेसर्वदेवलोकथीउपररहेलीमुक्तिकन्यानेवरे. एथीबीजुंकांइश्रेष्ठनथी. २। तेछंदवडेनाचना
नेअतिमगमथइचोल्यागोवाळीयाएकहुंकेआसाधुजीत्या. आतोमाक्षातनीर्थंकरछे. नारपछीअनिशेसंन्याणोपडीवाथोवनीगंयेलो
नेअतिमगनथइचोल्यागोवाळीयाएकहुंकेआसाधुजीत्या. आतोसाक्षात्तीर्थंकरछे. तारपछीअनिशेसंन्याणोपडीवाथोवनीगंयेलो
(अनेआधर्यपामेलो) मत्यमतिज्ञावाळोसिद्धसेनतोतत्काळसर्वअभिमानमायनोत्यागकरीहाथजोडीनम्रताथीबोल्योके-हेभग-
(अनेआश्चर्यपामेलो) सत्यप्रतिज्ञावाळोसिद्धसेनतोतत्काळसर्वअभिमानमायनोत्यागकरीहाथजोडीनम्रताथीबोल्योके-हेभग-
वन्मनेतमारीदीक्षाआपो हुंतमारोशिष्यछुं. वादमां, माराकरेलासत्यपुरुषोनीसमक्ष हुंजीनाएलोछुंमाटे हवेविलंबनकरो. ।
वन्मनेतमारीदीक्षाआपो हुंतमारोशिष्यछुं. वादमां, माराकरेलासत्यपुरुषोनीसमक्ष हुंजीताएलोछुंमाटे हवेविलंबनकरो. ।
पछीगुरुमहाराज, तेपंडितनेबहुमान आपयापूर्वकबोल्याके-आमांतोवादथयो; नेजीतायुं. माटेचालोनगरमांमहाप्रामाणिक
पछीगुरुमहाराज, तेपंडितनेबहुमान आपवापूर्वकबोल्याके-आमांतोवादथयो; नेजीतायुं. माटेचालोनगरमांमहाप्रामाणिक
अनेपंडितोनीसभामांराजानीसमक्ष आपणोवादविवादसुखेथीथाय.तेपकरवाअमोखुशीछीए. सिद्धसेनबोल्याके-हुंसमयज्ञनथी
अनेपंडितोनीसभामांराजानीसमक्ष आपणोवादविवादसुखेथीथाय.तेपकरवाअमोखुशीछीए. सिद्धसेनबोल्याके-हुंसमयज्ञनथी
अनेपंडितोनीसभामांराजानीसमक्षआपणोवादविवादसुखेथीथाय. तमोज्ञ मनेशीघ्रपणेतमारीदीक्षाआपो. अनेमन-
नेतमोसमयज्ञछो माटेजेसमयज्ञहोयतेजसर्वज्ञकहेवाय, तमोएमनेनिश्चेजित्यो, हवेतोमनेशीघ्रपणेतमारीदीक्षाआपो. अनेमन-

[illegible] करता. ते वृद्धवादी सूरिनी [illegible] पुछ्युं के [illegible] वाद करवा आव्यो [illegible] तेथी [illegible]
[illegible] वृद्धवादी सूरि पासे गया [illegible] परस्पर
[illegible] सिद्धसेन [illegible] सारगर्भित न्याय-
[illegible] — [illegible] करी नहीं । मारी साथे वाद विवाद क-
[illegible] - [illegible] जीते. परंतु [illegible] विना वादमां जय पराजय
[illegible] करे. पछी [illegible] सिद्धसेन बोल्या के — गमे तेवा [illegible]
[illegible] आगळे [illegible]
[illegible] पछी सूरि बोल्या के [illegible] समर्थ महाविद्वाननी [illegible] करी.
[illegible] सिद्धसेन [illegible] सभामां [illegible] पोताना [illegible] उपास्या-
[illegible] अने [illegible]
[illegible] करी, [illegible]
[illegible] आ निश्चय महाविद्वान [illegible]
[illegible] पछी सूरि [illegible]
[illegible] ! [illegible] — [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सिद्धांतनात्राण, अनेवीजेगमयकेनाआनोगांवाल्डीगनीनमाळेपाटेनगुरीगायपुंयोग्युंनेआमपगमांयहितळेपवे मकारनोस-
मयजाणतापूरीनकाव्ळमाथडपोतानाओडवानावस्त्रपंडपोनानोरगोहरण (ओघो) वांधी, तेनेन्टकनोरावी, केडसंयाथे
तेरगेनांणिगांधी, तेडशनागोवाल्डीआनीमापाणां नवोपकाव्यांसुंदरचनारी, गगेपाडीहाथनानावटावगाडी, फुदडी फरी,
तेगोवाल्डीआश्चीलेसमंतपंनउग्माडपाडी, हाथनाल्डेकाथीनेगोवाल्डीअनिमयप्रण पडेनेमनेगरचोगाडगंयन्ताल्यो. तेनेक्रमारमात्र
गामल्लांजअतिलेमुशीथयेल्याकुदनागांवाल्डीआवेलपांकेतायुनीत्याजीत्यानेवायणोहागोंहायों.) नेगरवानीवेदुको (वेगाया-
ओ) नोअर्थआमकार्त्नोंछेके-कोइजीवनेमारीएनडी कोइनीचोरीकरीएनडीपरदारगमन (पारकीस्त्रीनोसंभोग) करीएनडी
थोडामांथीपणथोडुंआपीभोजनकरीएनोंहल्केहल्केअथवाजल्डीस्वर्गनां सुखपमाय. १. काल्योकांवल्लोअनेकणकिओनीरावडी
हाथेसाहित, एकल्याकडानोचाटवोमारिनेपणकोइमहामुनिनेभावथी अपायतांनोएवरराजायनीवरपोडेचड्योनेसर्वपापछांडीनर्म
देवलोकनुंक्याटकपमीगुंनुंछे, एटलेसर्वदेवलोकमीउपररहेलीमुक्तिकन्यानेवरे. एथीवीजुंकांइश्रेयुनथी. २। तेछंदवडेनायना
नेअनिमगमथयश्चोन्दतागांवाल्डीयापकजुकेआसाधुनीत्या. आतोमाशालनीर्थंकरछे. तारपछीअनिशेक्षंवाणोपडीवायांवनीगयेल्यो
(अनिआग्रंपायेल्यो) मल्पमनिवायाल्डोसिद्धमेनतोतत्काल्मर्वअभिमानमात्रनोत्यागकरीहाथजोडीनम्रतायीयोल्योके-हेभग-
वनूमनेनमारीदीसाआपो हुंतमारोशिष्यछुं. वादमां, मारांकरेल्यागम्यपुरुपोनीसमक्ष हुंजीनाएल्योछुंमाटे हवेविल्वनकरो. ।
पछीगुरुमहाराज, तेपंडितनेवहुमान आपवापूर्वकयोल्याके-आपांशोवादथयो; नेजीतायुं. माटेनाल्योनगरमांमहाप्रमाणिक
अनेपंडितोनीसमामांराजानीसमक्षआपडोवादविवादथशेभीथाय.तेपकरवाअमोम्युशीछिए. सिद्धसेनबोल्याके-हुंसमयज्ञनथी
नेतमेसमयज्ञछो माटेजेसमयज्ञहोयतेजसर्वज्ञकहेवाय, तमोएमनेनिश्चेजित्यो, हवेतोमनेजीम्रपणेतमारीदीक्षाआपो. अनेमहा-

मरतमपएवुंममारंमिद्वांतशिखवो. इत्यादिप्रार्थनाकरता तेवादीनेवृद्धवादिसूरिए त्यांनेत्यांजतेवखतदीक्षाआपी. तेसंघ-पाल, भृगुपुरमांराजाएजाणी, पछीमसमयपैलाराजाए तेजगाएतालारसनामे एकमोटुनगरवसाव्युं, अनेपुण्यशालिगुरुओना मिलनेआनंदकारीएवुंमोटुं श्रीऋषभदेवनुं मासादकराव्युं. त्यांश्रीवृद्धवादीसूरिएजप्रतिष्ठाकरी. श्रीजिनशासननी अतिशे मोटीउन्नतिथइ. । सिद्धसेननुंदीक्षाकालेकुमुदचंद्रएवुंनामहतुं. सूरिपदनेविषेसिद्धसेनदिवाकरएमकारनुं नामनिख्यानथयु अपरभपएवापूर्वधरोथी पूर्वगतश्रुतनाभणवापणाथी आमकारनांनामकह्यांछे के-वादीअनेक्षमाश्रमण, दिवाकर, वाचक, ए सर्वेनामएकजअर्थवालांछे. पूर्वगतसूत्रनेविषे, एमवेशब्दोमवर्त्तेछे. ॥ १ ॥ दिवाकरएमकारनीसूरिनी संज्ञाछे. स्वामिवाचका-दिशब्दनीपेठेतेसंज्ञाजाणवी.॥हवेश्रीसिद्धसेनदिवाकर, श्रीजिनमतनोउद्योतकरतो तेणेकरीनेपोतानानामनेसार्थककरतासतापृथ्वीमांविचरताहता. एकसमेअनुक्रमे उज्जेणीनगरीमांपधार्या. तेमसेमन्मुखआवनाश्रीसंघे, नगरमनेदानो मोटोउत्सवकर्यो तेमसेसर्वज्ञपुत्र, इत्यादिबिरुदावलीनेबोलता बंदिजनकेनांभाटचारणविगेरे पुरुषोनुंशोल्लुंसांभलतो मार्गनीवचे सन्मुखआवतो विक्रमादित्यराजाएहाथीनास्कंधउपरबेठांबेठांज, सर्वज्ञपुत्रपणानीपरीक्षाकरवामाटेमनवडेनमस्कारकर्यो, पगपांथुनमानयुंभ-थवावचनथीलवुंतेणेकरीनेनमस्कारनकर्यो. सूरिएतोतत्कालतेवातजाणीलेइसमीपआवेलातेराजानेउंचेस्वरेधर्मलाभ, एमकारनी आशिषआपी. तेवखतविक्रमराजाबोल्योके-अहोसूरीन्द्र,मेंतोहाथजोडीतमनेनमस्कारकर्योनथी,तेमनेतमेधर्मलाभ केमदीधो एमबोलीमनमांविचारेछेकेआकोइनिश्चेसमर्थपुरुषछे. एटलामांतोसूरिबोल्याके-तमोएमारीपरीक्षाकरवामाटेमनवडेजनमस्कार कर्योंतेथीमें, कोटिचिंतामणिथीपणदुर्लभएवोआधर्मलाभतमनेदीधो. । तारपछीअतिशयसमयपैलातेराजाएतत्कालहाथीस्कंध उपरथीउतरीनेतेसूरिनीवंदनाकरी. अनेएककरोडसोनामोहरोमंगावी सूरिनीसमीपेभेटमुकी. त्यारेसूरिमहाराजनोअतिशोनिःसं

गछेमाटेकयुंकेआअमारेजेनाजुंनकले राजाएकयुंके–हुंपणआचरणकरीनुकपोतेपाछुदेवानेमरिणनकले पछीतेोगंयंबुरूपोए
तेपनग्रहणकरीजीर्णोद्धारआदिधर्मकृत्यमांवापर्यु ॥ दानशासकापाएटन्केदानन्दारानाचेोपडामांभाषकारनोश्लोकत्रणागो तेनों
अर्थ । घोडेछेडेथीउत्तेजाथकरीधर्मन्याय. एमकहेकेनागार्जुनेनसूरिनेअक्रमराजाएककोटिसोनागोरोआपी. १ तारपछी
सिद्धसेनसूरिस्याथीविहारकरी विविधवंशोभारजेनाएनारेनरकूट (चितोडगढ) मध्येगया त्यांभउक्रपेक्षणकरतांएकमानील
चैत्यमांएकमोटोस्तंभदीठोकोरनेपुछयुं, आशुंछेनेआमंयशानो छ. त्यारेतेगुरुएकह्युंके–आस्तंभमांपूर्वाचार्योएरहस्यविद्यानां
पुस्तकथाप्याछे. तेनेतेप्रकारनाऔषधद्रव्यथकीमोटाबनावेलछेके होयनेजुंएमजळअग्निशस्त्रादिथीपणकोइप्रकारे भेदाइशकेएवो
नथी. एवीवातसांभळीअतिशेनिपुणएवाजेसिद्धसेनसूरितेमणेसूंघीसुंघीनेजेऔषधीओनागुणनेइळाणीदेरनीतेनीसामेनीऔ-
षधीओघसीनेकाढीतेनोरसछांटीछांटीतेथंभनोएकभागखोलीनाख्यो. तेमांथीपुस्तककाढीपेहेलुंपत्रवांचतांप्रथमपंक्तिमांथी एकपुस्तक
छोडीयांवांच्या. तेपुस्तकनाप्रथमपानामांबेविद्याओवांचीताबीतेपुस्तकनीप्रथमपंक्तिमांथी बेविद्याओमळीगइ. तेमांएकसर्षपविद्या अने
बीजीचूर्णयोगयथेतनेडेमजेथी. । तेमांसर्षपविद्याएप्रकारनीछेके–ज्यारेकोइनेकारजंकांइउत्पन्नथयेथकेतेविद्यानदेयंजेटलासर्ष-
पनादाणाजळमांनाखीएतोतेटलाजतेदाणानीसंख्याप्रमाणेघोडाउपरपेठेलाअस्वारअनेकशस्त्रादिधरनारीसंग्रामनाउपक
रणसहितनीकळीनेशत्रुनेपुंगावीपुं(अथवाशस्त्रधारीयोद्धाओरहेवानेकानीशकेतेवाउपकरण, तेनोनाशकेत्रणपाधीजोणजो)
लश्करआव्युंहोयतेनेपाछुहठावीदेइ, जीतमेळवी,तेपछीअदृश्यथइजाय–अनेबीजीविद्याएप्रकारनीछे केजेथीतेपातुमांनाखेतोतेना
चूर्णनोयोगथयेथकेतेसघळाबहेनतेसाथेसुवर्णकोटीसिद्धथाय. एवीविद्यानुंस्वरूपजाणीतेपछीग्रहणकरी पुस्तकनेंजेवामांआगळ
वांचवानोआरंभकरेछे तेवामां[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] करवुं ने. [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] आदर
[illegible] [illegible], [illegible] न करवानुं
[illegible] [illegible] [illegible] ? [illegible] [illegible] गुरुना
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible].
[illegible]. २ ॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] करवा माटे [illegible]-
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible].[illegible]-
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible],[illegible]-
[illegible] [illegible]—[illegible] [illegible] ? [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] करी गुरु [illegible].[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]. [illegible] [illegible] मारा गुरु [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पदगुरुनाचरणकमळमां पडवुंनांख्युं. गुरुएपणमतिबोधकरवानेअर्थेएकगाथाबोलीकयुंके–हेवत्सआगाथानुंव्याख्यानकरो. प-
छी,गुरुनीअवज्ञानापापथीबुद्धिमांमूढपणुं मासथवाथीमम्यक्प्रकारे एगाथानोअर्थमाराथीनहीथइ शकेमाटेसमर्थएवातमोजए
गाथानुंव्याख्यानकरो एमसिद्धसेनकह्युंत्यारेवृद्धवादीए एगाथानुंव्याख्यानकर्युं. जेमके(अणपुप्फिकापुप्फाणि) आनुपरूपभ-
पुमात्रकेतांअल्पपुष्पजेनेथयुंछे तेअणुपुष्पिकाकेतांमनुष्यतनु, तेनांपुष्पकेतांआवरदानाखंडतेनेअंकुडीकेतां आंकडीवाळीलाक-
डीवडेमांतोड, एटलेननाशकर्य मनरूपआरामनेकेतांपोतासंबंधीसंतापने हरनारमाटेआरामएटलेयमनियमरूप बगीचाने न म-
रोडननाश कर. जेमाटे,मनःकुसुमै केतांक्षमादिक आर्जवमंतोषइत्यादिपुष्पवडेनिरंजनकेतां अहंकारस्थानजातिलोभइत्या
दिथीमनरहित, माटे निरंजनएवादेवतेसिद्धिवाचेआदेवनेपूज्य, एटलेतेनुंध्यानकर. वनेकेतांमोहादिवृक्षवडेगहनएवासंसार
रूपवनमांकेमहिंडेछे एमएकअर्थथयो १॥ अणुकेतांअल्पआन्यजेपांपाकेछेएवोरोप (छोड) तेनुंपुष्परूपमनुष्यनीतनु(शरीर)
तेनांपुष्परूपजेमहाव्रतशीलांग, तेमनेनतनाशकरय. मनआरामनेकेतांचित्तनाविकल्पसमूहने संहारकरयनथानिरंजनदेवनेनीतरा-
गदेवनेमुक्तिपदपामेलादेवने पुष्पवडेकेतांगृहस्थपणानीदेवपूजामां घटतांएवानेपुष्पछेरणगगुरुणामांनघटनां केमकेछजीवाने
कायनीविराधनाथायछेमाटेते पुष्पवडेपूजाकरवानाउद्यम,न करयमांकरय एमवेवस्तुनिषेधकर्यो. वनेकेतांकीर्तिनाकारणरू-
पशब्दवडेवनकेतांचेतनाशून्यपणाथी अनेभूतिनाकारणपणाथीअरण्यजेवुं मिथ्यात्वशास्त्रनामुहअर्थेकमभ्रमणकरेछे. माटेमि
थ्यावादनोत्यागकरीमत्य एवातीर्थंकरेकहेलामार्गमांआदरकर. एमवीजोअर्थथयो. ॥२॥ अथवाअणधातुनो अणुशब्दथायछे
माटेतेशब्दरूपमनुंछे तेअणुपुष्पाकेतांकीर्तिनेनां पुष्पकेतांमाराबोधनांवचन तेमनेनतोडीश.नथामननीआराजेवाएटलेआरानी
पेठेमननेविंधनाराएवाजे अध्यात्मउपदेशतेमनेनिंदित व्याख्यावडेविनाशनकर मनमांरहेलानिरंजनकेतांरागादिलेपरहितए-

माटे तेनुं जाणे आशीर्वचनादि पूर्वक तेनुं गुणनां वर्णन करीने तेमने आशीर्वाद दीधा ते कहे छे तथा वनने तोडनार गीरनारनो
इन्द्र आज्ञा पामीने पृथ्वीनी शोभा जोवाने आव्यो त्यां ते नगरनी सीमा देखीने तेनो विचार करवा लाग्यो, एम शास्त्रमां पण
माटे तेना चरित्रनो विस्तार जाणवो. आशीर्वचन पूर्वक तेनो वर्णन गुणनो. ॥ २ ॥ भगवानना ज्ञानथी तेनो भव वधे. प्रकारनां पापने
पाछे तेने आशीर्वाद आपनारा पुण्यनां वर्णनथी संघने ए प्रमाणे आशीर्वाद कहे छे—जैनशासननी प्रभावना करे तेनुं पुण्य, पापनिवारक छे,
भवनी समुद्रनी पार उतारवाने माटे जाणवा वखाण करीने पापनो नाश करवानुं कारण छे तथा मारण मोहन स्तंभन उच्चाटन वशीकर-
णादिक पाप करवाथी पण कांइ लाभ छे. माटे तेने आशीर्वादनो जे प्रकार ते जाणवो माटे तेनी पासे आशीर्वाद मागीने अनुक्रमे
तेनो उपकार, माटे तेने ते आशीर्वाद आपवाथी कल्याण थाय छे तेनी आज्ञाथी आ पुस्तकमां जे गुणनुं वर्णन कर्युं छे ते आगळ जाणवुं अने
तेनो आशय तेना ग्रन्थनो विस्तारथी जाणवो आ ग्रन्थनी रचना करनार. (मा शेता पोहह) पछी ते राजानी आज्ञाथी तेणे तेने प्रमाणपत्र आप्युं छे.
माटे आ पुस्तकने देखीने तेने वखाण करे भावनाथी स्तवन आदिथी स्तुति करे छे. राजा ते आदि पुरुषनी स्तुति करीने फरीथी नमस्कार करे
छे ते प्रकारे आ ग्रन्थ ॥ ४ ॥ मानतुंगाचार्ये भक्तामर स्तोत्रनी रचना करीने प्रभावना करी. तेमां पंदरसो वर्ष पहेलां आ ग्रन्थ छे
प्रसिद्ध आचार्य श्री पार्श्वनाथ भगवाननुं स्तवन कर्युं एमां श्री सिद्धसेनसूरिजीए कल्याणमंदिर स्तोत्रनी रचना करी ते जाणे पृथ्वी
पर प्रसिद्ध छे. श्री वृद्धवादीसूरिना शिष्य श्री सिद्धसेन सूरिजी अहींयां विहार करीने आव्या. ॥ वृद्धवादीसूरि, सिद्धसेनसूरिने पोतानी पाटे स्थापीने स्वर्ग गया पछी विहार-
करीने उज्जयिनी नगरीमां आव्या त्यां राजा विक्रमादित्यना समयमां तेमणे श्री जैन शासननी प्रभावना करी संस्कृत भाषामां ग्रन्थ
रच्या. जेमणे वादमां जीत्या हता. अने विक्रम राजाए तेमनी स्तुति करी. तेना गुणनी प्रशंसा करी. नवकारादि
सूत्रोने प्राकृत—मागधी भाषाथी सिद्धान्तोने संस्कृत भाषामां करवा. तेथी तेमने पारांचित प्रायश्चित्त आप्युं. एवुं सिद्धसेनसू-

डवांनेसर्वेकोरडानामहाराजानाअंतेउरमांराजानीराणीओनाशरीरउपरपडवालाग्यातेथीतेसर्वेराणीओनुंपाडनी पोकारकरतीरा-
नागीभारी.राजापणअतिआश्चर्यपामीकोरडानारनाराअनेएकदमबंधकर्यां तेजवखतेराणीओनेपडतोमारपणबंधपड्यो अनिते
कोणकेपाठेगर्भश्रेणानांअतिउत्ताप्योजिनमंदिरमांआवी हाथजोडीबोल्योके–तमोकोणछो त्यारेतेजोगीबोल्योकेहुंतोधार्मिक
पुरानाबोल्योके–थांवकछोतोअंगीनथतानमर्थपणमहादेवनेकेमवंदनकरतानथी. तेजोगीपणजिनमतनीउन्नतिनेअर्थेअतिशेउ
स्नानपामीपाताकाठकाचेतावीनेबोल्या. हेराजन आतमारादेव मारुं कर्लुवंदनसहनआदिकने, जेमतावेथीडेल्योपुरुषमोदक
नाआहारादिनेनथीसहनकरतोतेमनथीसहनकरे. राजाबोल्योकेशुंआमकारनुंअसंबद्धपदवक्तुतुंबोलेछो. तेजोगीबोल्याकेअमोतुरुं
नथीबोल्याकदापिआमानिमानेउपद्रवथायतोतमाराउपरअमोनिवारणपाडे एवीशंकाथीएमनुंवंदनस्तवनादिनथीक-
रता. राजाएफरीनेबोल्योके–एवीशंकाकरशोनहीपुनेयी श्रीप्रभुनेवंदनकरो त्यारपछीतेयोगीपणकालउभायइनेस्वयंभुइत्यादि
बत्रीशबत्रीशीओश्रीवर्द्धमानजिनेंद्रनागुणगर्भितएवी गारांगंभीरताजीमोटाअर्थवाळीविस्तारपामी. पछीअभिप्रायकदेवनुंम-
श्रीनवधीनीओश्रीवर्द्धमानजिनेंद्रनागुणगर्भितएवी बारांगंभीरतावाळीमोटाअर्थवाळीविस्तारपामी इत्यादिचुम्माळीसका-
व्यरूपथयापछी दुःखनागमनमांपण अनुपममहिमावाळीश्रीपार्श्वनाथजिनेश्वरनीस्तुतिजेकल्याणमंदिर इत्यादिचुम्माळीसका-
व्योनी. तेस्तुतिनाअगीयारमाश्लोकनाविधाननेअवसरे, ग्रंथांतरमांतेनोप्रथमद्वात्रिंशिकानाप्रथमकाव्यउच्चारणसमयेज मान-
बोल्या. तेस्तुतिनाअगीयारमाश्लोकनाविधाननेअवसरे, ग्रंथांतरमांतेनोप्रथमद्वात्रिंशिकानाप्रथमकाव्यउच्चारणसमयेज आश्चर्य
पामनारआंख्याश्रीधरणेंद्रेमनाराणीत्य (नवीन) पणाशीमंदममांनिज्ज्वाळाओनीशुंवाडोउमस्वपथयोपछीअग्नीज्वालाओमोटी
मोटीउमसर. तेवखतेलोकोनोपरस्परएकबीजानेहाथताळीआदेरीते तेगाढमांटोकोलाहलशब्दउत्पन्नथयोके–अपारजनेकोण
देवअन्यकाळनोमांपितेएवापहाभगवानदेखाडयामिरुद्रदेव, पोतानाचीजानेयनाअमिरदेखा,लोकहातेनरफमस्पकरीनारामे.तेवा
मांतोरुद्रपरुपानन्दकरनुंमिरलिंगफाटयुं. फाटेलाशिवलिंगनापध्यथी जिनजीनाशत्रकारानीपेठेप्रथमतोज्योतिकतातेजनेमना

[illegible] अने [illegible] कुंडे छे–देवता
भाग, [illegible] कोडिदनदीदाननी
[illegible] श्रीवर्धमान [illegible] पृथ्वी
[illegible] मदन करे छे ॥ इत्यूपनी भवनं [illegible]
[illegible] अवसीनामेन [illegible]
[illegible] आस्वादन [illegible]
[illegible] अल्पनाम [illegible] नेनीपाताज
[illegible] आर्य सुहस्ति आचार्य, जेणे मुनिराजाने बोध दइने पोतानागच्छ
[illegible] भगुनि [illegible]. । एकदिवस [illegible]
[illegible] अनिशेकानि [illegible], आहारथी [illegible]
[illegible] जातिस्मरणज्ञान [illegible]
[illegible] नवीनी [illegible] जन्मवांत्र-
[illegible] जातिस्मरणज्ञान [illegible] मुखथी उदासपदने [illegible]
[illegible] आप्या छो ! [illegible]
[illegible] सिद्धांतवचनोथी [illegible]–दयाउदाय-

वंदनाकरनेविमाननीमागिणाग. आचार्यबोल्याके–पाल्यवदंनविमाननीमातिगायछे परंतुतपंगुकुमारछेमाटेमारीयपाल्युंनो
दुष्कर्छे. जेवारेकर्युंछे–जेहानाजनापुछेनावीशके तवाभदिरगगुरेस्पर्शकरीनेके पगीनतपरमात्मानुंहदेछ,शानिनारगहिन
सहुकरणाल्यिाल्युंतगृहस्थछे. जेगरिपागव्यतननीअनुमानवंदनभणागछे.तारपछी स्वननतानितंयरीहिनहीपणी
पंडुगपकराणालियाल्युंतगृह्मनतं. तेगरिपाराव्यतननीअनुमानवंदनभणागछे. नारपछी संगपनेनाभतिरगुरुकहगोसतो, पन
गृगंहगणनावहेसानलिनीगुन्मातिमानवरगेतवानेअर्थअतिरकंठावाल्योतेअवंतीसुकुमाल, संगपनेनाभतिरगिणुरुकहगोसतो, पन
वांग्रिकपुतेल्योपकरिने, पंनेतयोतानीयेसंगीकारकर्योतिवेगनेपे, आचार्यवराजेदीसिनकरेल्यो, गणावर्पनारिवनपनुंकष्ट
गहननहिशमके, एमविचारीआचार्यनेपुछी, शरीरनेहलानेनगणतो, सीनादगनामग्रनेनेकरिनेविमानाएवानेचेपगतेथीनीक
ल्योनेकथिराराभोनेनामगारवदेकादवनेयोपवतोछेवार्गनेनाएलोमतो,कंथेरिकोकदंगएनामनाडमजानगामहने,पादोपगमपना
गनुमननतवपणकरीरह्यो. तेनाडीरवनागवगरिनेनाहमानीढुरपर्वीनरीगृनावदचाल्पीएकसीआल्यी. मापेणनीपंडविकराल्मुग
कणीनेगासनीनोहठेमृगीपवीने, तेअवंतीसुकुमाल्नुं भक्षणकरवामंडी, तेनाछोकरापणतेमनकरवामंड्यांराविनाःपहेल्यापहोरमां
तेनाचरणभक्षणकर्यां. बीजापहोरमांतेनोपेगाथलभक्षणकर्यां त्रीजापहोरमांतेनुंमपस्तउदरभक्षणकर्युं तोपणते.मनवदेशण
गनापातपानवंरुयो. जेमकाल्नोमहागुरुणाल्हतोतेपणतेणेदुःमहएनीपहाल्पणानोविस्तारगहनकर्योएमांदुआश्चर्यछे महासा
हसिकतूलतोवाणनुंभविश्रेष्ठगणुंभरो आश्चर्यकारीछे एमगांथेपहोरमहाधेर्यवंतश्रीअवंतीसुकुमाल मरणपामीनलिनीगुल्मविमा-
नमांदेवपणेउत्पन्नथयो. प्रातःकाले, भुतना
पानेविपनोहाअणर्यथालोदेवनागमो. । तेनामाहत्मकीजमणमपेन्यादवनाएनकाल्तेनादेहनोमहिमाकर्यो. मातःकाले, श्रुतना
उपयोगथीतापंछे अवंतीसुकुमालतुंतस्वरूपजाणीनेप्रवर्तक्श्रीगुरुमहाराजनीरांणिरहेनेनीमानाभद्रामाहितनेनीमवंग्रथोते मवंतू-
पालनाणीनेजेउमहानपामेलमयांअनेतेविल्लापकरीकरीनेनिपमानदीनेविनंनेनीदेस्पुरवापछीनीसर्वेक्रियाओंकरी. । तेनावेराग्य

रमणीभद्राए, गर्भवंतीएकतुअनीसीने, घरमांमुकी, वाकीनीएकवीस, पुत्रनीस्त्रियोसाथेपोतेदीक्षालीधी. गर्भवंतीस्त्रियेपुत्रउत्पन्न कर्योतेणेअवंतीसुकुमालनामृत्युस्थानमांआप्रासादेदेविक्रमराजनकराव्यो. तेपुत्रेएमजाण्युंकेमारापितानोआजगाएमहाकालय-थोछेमाटेआप्रासादनुंनाममहाकालथारणधारीने आप्रासादनुनाममहाकालस्थापनकर्युं, अनेप्रासादनीमध्येश्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमानुंस्थापनपणअतिशेमहोत्सववडेकराव्युं. अनेकेटलाककालपर्यंननेप्रतिमानुं पोतेपूजनकर्युंकराव्युं. पछीअनुक्रमेकेटलोक कालथइगयापछीशिवभक्तोएब्राह्मणोनुंजोरवध्युंत्यारेनेवाकोइअवसरपामीने नकरवानांकाममांतत्परथयेलाउन्मत्तब्राह्मणलो-कोएतेश्रीपार्श्वनाथनीप्रतिमाने पृथिवीमांगुप्तभंडारीदेइएजगाए एकमोटुंशिवलिंगलावीस्थापनकर्युं. । हालपांपारीकरेलीस्तु-तिथी सावधानथइआवेलाअधिष्ठायकदेवनामांनिष्पन्नथी शिवलिंगनेभेदिनेश्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमाप्रकटथइ. । पछीतो सत्यअसत्यनोभेद राजानिरूपणकरो. । एप्रकारनीअतिसुंदरवाणीते योगीनीसांभलीनेविक्रमराजा बोल्योकेतमेकह्युंएमज निश्चेजणायछेएमकहीनेशुभछे उत्तरकालजेनोएवाराजाए दर्शनथीथयुंछेश्रीजिनमतनुंअवधिरहित बहुमानजेनेएवोथयोसतोश्री पार्श्वनाथजिननीप्रतिमानी पूजानेअर्थेप्रसन्नथइसोगामआप्यां अनेप्रतिमानांअतिशेवखांणकर्यां. पछीराजाबोल्योकेहेयोगींद्र तमारासमानमोटोकृपिकोणछे कोइनथी.केमके–नीतिशास्त्रमां कह्युंछेके–देडकांनुंभक्षण करवामांतत्परएवासर्पो घणाछे,पण गलनुंरक्षांणिए,केमके–जेसूर्यनोउदयथये मनेअंधकारजणातुंनथी, तेमअन्यनांतेजपणजणातांनथी. २ अहोअनुपमतमारीक-विताकल्पछेके–परिपक्वथयेलारमणीभरपूरमाकरनाकडकानीपेठेउपराउपरि शीघ्रपणेचालवाआवतांपदकोणमहाकविनीकवि-तामांनथीजणातां ? अनेसुगंधिमान्पाकेलांआम्रफलनेनारसमरस्योमीठोयोलता नोवैभवपणकियामहाकविनोनथी, अर्थात्सर्व

(एनीपेठेउदाममणइधाराथीपदनांजळनामनाह)
अतिसरणसमान नोछे, परंतुपूर्वोक्तबेगुणेनाहिनअपूर्वकोइमकारनाअद्भुतरसनाउत्पादकगुणवाळी कवितोकोइजगाए एकजहोयछे. १ छंदनां अतिपीडाअभावथी वक्रतारगनासंगयहेउल्लासकरनीकवितानो नीपदणेकरनारकवितोकोइजगाए एकजहोयछे. शब्दनीमाधुर्यानुप्रासथीपणनथी,वळाउ तेनो, जुदाजुदा अर्थनाळोएकजातनोदृष्टांतवाथीनथी. तथायणपरिनयथीपणनथी. उदयवदेजवाणिमांश्नीमधुरताउदात्त दनाउपदेशथीपणनथी, एनोजगतमांसारकविओनीपोतानामिश्रजपूर्वनामोटापुण्यना उदयथीज कविनाआवकारेजिनशासननीप्रभाव थायछे. २ एरीतेसिद्धसेनसूरिनीकविनानांयणावखाणकरीविक्रमराजापोतानानिवासमांगयो. आनकारेजिनशासननीमाद थायछे. तेमुनिनांचरणे, ममाद- नावदेविशिष्टनथयेला अतिआनंदपामेलागमस्तसंघपल्ली, पारांचिकप्रायश्चित्तमां थाकीनारहेला, तेमुनिनांचरण, प्रसाद- थायछे. नारचल्लीपृथ्वीनेपवित्र द्माथापनकर्या, एटलेपांचवर्षपाककर्यां. पछीआविजेपोटाउत्सवथदेगच्छमध्येसूरीदपदमांस्थापनकर्या. नारचल्लीपृथ्वीनेपवित्र करवामांमवीणएवासूरी, अनुक्रमेओंकारनामानगरमांपधार्या. एकदिवसत्यांनासंघेतेमसूरिनीविज्ञापनाकरी, जेपके-हेभगवन् अतिसंवेदर्शा- आनगरनीसमीपेरहेल्यागामभां सुंदरनामेमोटोराजपुत्रछेतेनीवेस्त्रियोछे. तेमांमोटीस्त्रिएमनमांकनुष्योउत्पन्नकरी, अतिसंवेदथी- करवामांमवीणएवासूरी, विचारकर्योके-जोआमारीनानीशोकपुत्रउत्पन्नकरशे तेमानीनीशोकपणसमीपेछेमतदकाळेतेनोपतीहनीमाटेतेणीए विचारकर्योके-जोआमारीनानीशोकपुत्रउत्पन्नकरशे मनीहनी. तेयामांतेनीशोकपणसमीपेछेमतवकालमेनोपतीहनीमाटेतेणीए विचारकर्योके-जोआमारीनानीशोकपुत्रउत्पन्नकरशे मनीहनी. नेयामांतेनीशोकपणसमीपेछेमनवकाल्मेनोपतीहनीमाटेतेणीए विचारकर्योके-जोआमारीनानीशोकपुत्रउत्पन्नकरशे तोएपाराकरनांवणीनेघणीवहाल्नीथशे;माटेमनथयुंगाडएणमविचारीस्त्रीपणानेगोग्यएवीतुच्छबुद्धिवडेनथापांतेदुष्ट आचरणवा- तोएपाराकरनांथणीनेघणीवहाल्नीथशे;माटेमनथयुंगाडएणमविचारीस्त्रीपणानेयोग्यएवीतुच्छबुद्धिवडेनथापांतेदुष्टआचरणवा- ळीहतीतेणीएकदहयणने (प्रसवकरावनारीस्त्रीने) घणुंद्रव्यआपीप्रसन्नकरीनेकह्युंके,ज्यारेतने, मारीनानीशोकप्रसवकाले (छो- करुंजणतीवखते) बोलावेत्यारेतारेअन्यस्थानमांथीपणमसंग्रहकरीराखेलुंमरेलुंनानुंछोकरुतेजगाएमंचारवुं एटलेआपरेलुंछोकरुं ळीहनीतेणीएकदहयणने (प्रसवकरावनारीस्त्रीने) घणुंद्रव्यआपीप्रसन्नकरीनेकह्युंके,ज्यारेतने, मारीनानीशोकप्रसवकाले (छो- अवतर्युएमप्रकटपणेबतावबुं. अनेजेतेणीएपुत्रजन्मो होयतेनेतोतारेपोतेग्रहणकरीलेइअनुक्रमे कोइदूरजगाएउछेरीदेवो एम- अवतर्युएमप्रकटपणेबताववुं. अनेजेतेणीएपुत्रजन्म्यो होयतेनेतोतारेपोतेग्रहणकरीलेइअनुक्रमे कोइदूरजगाएउछेरीदेवो एम- कारनीगोठवण, घणुंद्रव्यपरचीकरी, एवोप्रपंचकर्योकेकोइनाजाणवामांनआव्यो.पछी दैवयोगेतेनानीशोकेपुत्रजन्म्योतेनेतेदह-

८

[illegible] तेनो अर्थः [illegible]

[illegible] निरागनपणाथी, [illegible]

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

[illegible] पूर्वोक्त के—[illegible] अर्थः—[illegible] अने [illegible] गुणवंतना [illegible] भावे, तेनागुणवंतना [illegible] अनेगुणवंता [illegible] इत्यादिगुणोगंभीर अर्थछे. २ अनेवारे [illegible] के—[illegible] ते कीर्ति, [illegible]

भा०
४४

भानागुण्कानिवासभापिरार्थाछे. अनेनदीनाधनाथीनो, एवीमिवकरीछेके–तेनेनरनरशर्वचीमागमोछो, एटलेउपारजो-
इत्यादिकदारारावदोवदीशास्त्रीफहोय, वेनाशानआपनाहोय अनेकोनिदपर्ना, शुं गीमाएर्नाछेके, तेज्यारेजोइएन्यारेदे-
एदेवानदोवयरनीग्रमणकरनीभद्दोयछे इत्यादिएश्लोकमाहणोगभीरअर्थछे. २ अनेवांडनजोको.मदेवम्नुनेआपनागारिकम
रामाछे, एमवपारीदिव्यारनुनिकरोछे केमके–शत्रुनेरणमग्रामभाकोइवाल्पांउ (पाछल्योभाग) आप्योनथी, एटलेदेखाड्यो
पणनथी. अनेवामभोनेकोइवालेनपारवसःस्थल (छाति) आपीनथी. परमीआत्रपुरुषछेतोपण, नथीनेनपोनानीछातिआ-
पवानथीदाई. इत्यादिएश्लोकमापणघणोगभीरार्थछे ३ अनेसंग्रामनाआरंभकालमांनमारीचडाइनोनिशाणडंकोवागेमते, शु-
भ्राइदवकपभरा, पुरीआपछे. तेनीस्त्रियोनानेत्रमाथीआंसुनाजलनोप्रवाहछुटेछे एनोदेगजनमोटुंआश्चर्यछे. केमके–निशाण
दंकोवागवाथीवाग्यो, तेशत्रुनांहृदयफाट्यां, मारमारएहवोअन्नरजागृता, अनेकुटोगई, अन्यवस्तु,अनेतेहृदयफाटवाफुटे,
तेवाधीवांपिबीकलेएवानवोघूकछे, पणआतो. तेशत्रुनीस्त्रियोनानेत्रथीआंसुजलनीफलवां. अर्थात्शत्रुमांपीनपारीचडाइथइ
साभलीने, उभवारखवाछे, तेथीतेनाविधवापणवतीस्त्रियोरडछे, इत्यादिपणोगभीरार्थआश्लोकमांछे ४ एमहारनाचारश्लो-
कनीअर्थनांभाखावरीनेविक्रमराजाअनेकममस्तपो पछीविक्रमराजाएविचारकर्योके आकविनानेयोग्यशांइनथी.एकुंपारी
मुंदरभारिफूलवालो पगभरेलोएकमोटोहाथीसगाप्यो, अनेबीजोएकबीजमोटोहाथीसुंदर सुगंधिवाळीवस्तुवडे संपूर्णभरेलो
एदाण्यो अनेबीजोहाथीसोनैयाथीसंपूर्ण भरेलोसंगाव्यो. अनेचोथोहाथीहारअनेअर्द्धहार इत्यादिमोटांमोतिनाआभरणवडेसं-
पूर्णभरेलोदेवाण्यो. एमहारनाचारहाथीदेवावीने गुरुमहाराजनेकह्युंके–आचारहाथी ग्रहणकरो गुरुबोल्याके–एहाथीओनुंअ-
मारेकशोखपनथी. त्यारा राजाबोल्योके–मागणस्पमांरहेलामोटामोटाद्मोमांथीगमेतेचार देशोमागीलयो. गुरुबोल्याके–एपण

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्रर्यवडेमपुत्रिनथतांछे सर्वअंगनोरोपसमूहजेनोएवाहेतुथी, अतिशेमोटापुरुषोएएमकारनुंकर्युंतेपण वखाणवायोग्यछे.परंतुपितानोजएममादछे. मूर्तिमान्खेदछेके- जे,अपारमसन्नताने रहेवानुंपात्ररूपएवापुत्रादिकनेविषे सम्यक्मकारेविचार्याविनानो जेलेपमोकल्वोतेअथवा नवांनवांअनेकमकारनांकाम, तेमांव्यग्रथयेलाराजानोशोदोषछे, पणतेनीदुष्टबुद्धिवाली, अनेपुरुषरत्नेनेनाशकरनारी, अनेतेमकारनाकूटमपंचनेरचनारीएवीते पुत्रनीअपरमातानोजएदोषछे. अथवास्वाभाविकतुच्छमकृतिथी, साहसपणेपापमांआसक्तथवाथी, अनेअपरमातानोनित्यअतिशेद्वेषपणाथी, हृदयनुंदुष्टपणाथी,पोतानापुत्रनेराज्यगादीमलवाना महालोभसमुद्रनोउछालोनरोकीशकवाथीस्त्रीजातिएवुंकामकरेनेमांशीनवाइ. नारेएदोषकोनेदेवो. तोतेनोउत्तरएछेके--पूर्वेकरेलां दुष्टकर्मतेनो एवोदुष्टविलासछेके-जेथीएमकारनाअणधारेलाअणविचारेलामोटाअनर्थ एनीमेलेजआवीपडेछे, एमनहोयतो पितानेप्राणथीपणएपुत्रघणोमियहतो, तेनेअतिचतुरभणेलोकरवामाटेपिताएउपक्रमकर्योपण, एपुत्रनुंजएवुंकर्मआवीनडयुंके, एवासाराउपक्रमनोपरिणामएवोथयोके–जन्मारामुधीवेआंखेअंधपणेराज्यरहितपणेरहेवुंपडयुं. १ तेशास्त्रमांकयुंछेके–कल्लोलावडेभेदनकर्यांछेकुलपर्वतजेणे, एवोचंचलसमुद्रपण, कोइधारणकरीशके, परंतुअन्यजन्ममांकरेलांकर्मनोशुभअथवाअशुभ, एवो दिव्यपरिणामकोइथीबंधकरीशकातोनथी. १ पूर्वभवमांजेणेजेकर्मकर्युंछेने, आभवमांरहेनारनेभोगववुंपडेछेज. अनेतेमांअन्यतो निमित्तमात्रजहोयछे. २ ॥ राजाएपुत्रनुंसर्वमूलांत जांणीअतिशेपश्चात्तापथीपोतानेघणोधिक्कारकर्यो. ममादेकरीनेमाराथीअकारउपरबिंदुमुकायोमाटेतेष्फलेमथयोनेथीफोगटमहाअनर्थथयोनेअभिनी पेठेमेंमारेहाथेवधार्यो. अथवाममाद, उन्मादनीपेठे जीवनेशोशोअनर्थपुष्टनथीकरतोसर्वेअनर्थनेकरेछेअथवासर्वेमनोरथनेनाशकरेछे तेकह्युंछेके–ममादपरमद्वेषीछेममादएमपरमविष छे. ममादएजमुक्तिपुरजनारनेलुंटनारछे. ममादएनरकस्थानछे. १ पुत्रएवामनेधिक्कारथावकेजेराज्ययोग्यएवापुत्रनाआमका-

पाछुंतेणहुंपोरभर्येराज्यनधीमागतो. तेनाभक्तीअतिशेआनंदपांमतोराजा, अतिस्नेहसहितपुत्रनेपुछवामंडयो, केअतिशेस्नेहने
रहेवानुंस्थानएवोपौत्र, क्यारेप्रगटथयो ? त्यारेपुत्रबोल्योके–संप्रतिकेतांहमणांज, तारपछीअतिशेप्रीतिनेपरवशथयेलोराजागां-
डनीपेठेरांवारनिर्भयसंप्रतिनामउच्चारणकरवाथीतेपुत्रनुंनामपणसंप्रतिएवुंप्रसिद्धथयुं. पछीदशदिवसगयोतेपुत्रथयापछीअतिशे
मोटाउत्सवथीतेपुत्रनेमंगावीअतिशेहर्षे सहितसंप्रतिएवीजनामस्थापनानो महोत्सवकरीराज्यगादीएतेपुत्रनेबेसाड्यो. तेसंप्रति
राजात्रणखंडनोभोक्ताअनेपरमश्रावकएवोश्रीसुहस्तिआचार्यनाउपदेशथीथयो अनेतेआचार्यनीआज्ञावडेश्रीजिनमतनुंशासनजग
(एकछत्रतिपणुं) थयुं ॥ एमकारेव्यंजननुंअधिकपणानेविषेआख्यानकह्युं. ॥ अर्थनुंअन्यथाकरवामपुत्रमांपूर्वेकहेलादोषवि-
शेषपणेजछे. ॥ आजगाएआमकारनुंदृष्टांतछेके–शुक्तिमतीनामनीनगरीनेविषे, श्रीमुनिसुव्रतस्वामिनावंशनेविषेअभिचंद्रनामा-
राजानोपुत्र अनेसत्यवादिपणाथीलोकमांप्रसिद्धएवोवसुनामेराजपुत्रने अनेपर्वतनामेउपाध्यायनोपुत्र तेनेतथानारदनेपरमश्राव-
कथयेलोकदंबकनामेउपाध्यायभणावतोहतो. एकदिवसभणीनेथाकेलाएवात्रणरात्रियेहर्म्यनेविषे (हवेलीनीअगासीमां) सुते
हते, त्यारेश्रमणएवासाधुआकाशमार्गेजताहतातेपरस्परएमबोल्याके- आत्रणमांथीएक, स्वर्गगामीछे, अनेबीजाबेनोनरकगा
मीछे. तेसांभळीने, उपाध्यायखेदथीविचारकरवालाग्योकेधिक्कारछेहुंउपाध्यायछतांमाराशिष्योनरकमांजशे, माटेमारेतेनोनि
र्णयकरवोजोइएकेक्याबेशिष्यनरकेजशे, अनेकयोशिष्यस्वर्गेजशे. तेनोनिर्णयकरवानेअर्थेउपाध्याए, लोटनात्रणकुकडाक-
रीनेप्रत्येकशिष्योनेएकएकआपीकह्युंके-आकुकडानेकोइनदेखेएवाएकांतस्थलमांलेइजइनेमारो, एमतेमनीपरीक्षानेअर्थेअर्पणक-
र्या. तारपछीवसुअनेपर्वत, एबेतोशून्यएवाप्रदेशमांजइनेकुकडानेमारीआव्या, अनेनारदतोदूरदूरशून्यस्थानमांगयोपणसारी
बुद्धिवालोतेमनमांविचारकरवालाग्योके-आजगाएपणहुंदेखुंछुं देवतादेखेछे. सिद्धदेखेछे. ज्ञानीदेखेछे. माटेजगतमांएवुंकोइपण

इत्यादितेनेघणुंसमझाव्योतोपण अभिमानथीतेवाततेणेनमुकी. पछीतातेनारदअनेपर्वतकएबेनेघणो विवादथयोतेमांबेजणेमति-
शाकरीकेजेनोअर्थनू ठोपडेतेनीजीभनुंछेदनकरवुं एवीपरस्परमतिज्ञाथइ. पछीवसुराजासत्यवादीछे माटेतेजेकहेतेसाचुंएमनि-
श्चयकरीतेवसुराजानेमाक्षी कर्यो तेवातपर्वतकनी माताएजांणीएकांतेपर्वतकने कह्युंकेमेंपणतारापिताथी सांभल्युंछेकेअजके-
तात्रणवर्षनुंजुनुंधान्यएवो अर्थछेतोमिथ्यामहाअनर्थनी करनारीमतिज्ञाशीदकरी पछीपर्वतकमातामत्येबोल्यो केहवेतोजेमति-
ज्ञाथवानीहतीतेथइगइ. तारेतांजेमघटेतेमउपायकरवो पछीतेपणपुत्रनास्नेहमोहथीपुत्रनुंहितकरवा वसुराजापासेजइसर्ववृत्तांतगु-
प्तपणेकहीमार्थनाकरी. राजाएगुरुस्त्रीनादाक्षिण्यपणाथीतेवातअंगीकारकरी.पछीमातःकाले सभामांतेथेलोविवादचाल्यो, अ-
तिशेमोटाएवापापनोपण आदरकरीवसुराजाजुठुंबोल्यो, तेजवखततत्कालदेवताएचपेटानो महारकर्योतेथीहेठलपड्यो, तेज
वखतमरणपामीनरकेगयो. एमअनुक्रमेतेवसुराजाना पदमांबेसाडेलाआठ पुत्रपणदेवताएमार्या देवतासंबंधीकोपदुःसहछे.
वेपुत्रतोनाशिगया. तारपछीनगरनालोकोएधिकार करीपर्वतकनेकाढीमुक्यो, महाकालनामाअसुरेतेनोसंग्रह कर्योतेनोसंबंध
आप्रकारनोछेके—अयोधननामा राजाएपोतानीपुत्रीनो स्वयंवरआरंभ्योपुत्रीनीमाताए पुत्रीनेछानुकह्युंके—माराभाइनोदीकरो
मधुपिंगनामाछे, तेनेजवरजेतेजसर्वराजामांमुख्यछे. सगरराजाएएकांतमांरहेलीतारी दूतीनामुखथीतेवातजांणी पोतानापुरोहि-
तनेकन्यावरवानोउपायपूछ्यो. तेपुरोहितपणशीघ्रकविहतोअनेकपद करवामांचतुरहतोमाटेनवीएवी राजलक्षणसंहितानेकरीस-
भामांतेसंहितानुंव्याख्यानकर्युं. तेजेमेंकलक्षणवडेसगरराजामारो कहेवाय,अनेमधुपिंगतोछेकअपकृष्ट (नीच)कहेवाय.तारपछी
तेमधुपिंगेसर्वराजादिकेउपहास करेलोलज्जावडेसभामांथीनीकलीगयो. सगरराजानेतोतेकन्यावरी. तारपछीमधुपिंगेक्रोधवडे
तपकर्युतेणेकरीनेमहाकालनामेअसुरथयो. तेवेमांत्रीजोपिप्पलादपणआवीमल्यो. तेनुंवृत्तांततोआमकारनुंछेके—सुलसाअनेसु-

भद्राएवनामनीसंन्यासणीओलोकमांघणीविख्यातहती. तेमांसुलसाअतिशेवडामोटीपंडिताहती, तेजेकोइमंत्रवादविवादकरी जीतेतेनीशिष्याथउएप्रकारनोपडहोवगडावी (मोटीउद्घोषणाकरावी) याज्ञवल्क्यनामेसंन्यासितेनेवादमांजीतीतेणीएपोतानो शिष्यकरीराख्यो अनुक्रमेतेमनोअतिशेपरिचयथवाथीनकरवानाकामभोगमांनिगडतेणीसुलसाने गर्भस्थितिथइ, तेवातसु- भद्रानाजाणवामांआवी, तेथीतेणीए अतिशेढांकपिछोडीनेछानीराखी, पुत्रप्रसवथयोत्यारेतेस्त्रीपुरुषेसुभद्राथीछानुंपिप्पलानेनीचे जन्मथयाबादबाळकनोत्यागकरीतेस्त्रीपुरुषनासीगयां, प्रातःकालेसुभद्राएपगलांपरथीतेने अनुसारे खोळतांखोळतां बाळकपीपळानी नीचेपडेलोतेपुत्रलेवाथीपीपळानापीलुपुत्रउपरपडेलांत्यांनाफळनेचाटतोमाटे पिप्पलादएवुंनामपाडीनेस्थानमांलावीवृद्धिपमा- ड्यो अनेवर्णभणवाथीअतिवाचाळपणोमहापंडितनेथयो. पोतानोजन्मसंबंधसांभळीमातापिताउपर अतिद्वेषपणुंधारणकरतो, पोतेअनार्यवेदमांमातापितानोवधकरवामाटेतेणेअनार्यवेदरचाकर्या. तेमांआप्रकारनुं वर्णनकर्युंके–राजालोकोएअश्वमेधनी शांतिनेअर्थअनेस्वर्गनीप्राप्तिनेअर्थेपशुघोडाहाथीमनुष्य इत्यादिवडेयज्ञकरवो. । महाकाळअसुरेविचार्युंकेजोआपर्वतकअने पिप्पलादएबेनाकहेवाथीराजादिकोहिंसामययज्ञमांप्रवर्त्तनेहिंसाकरेतोपछीनरकमांपडे तोजसगरादिराजाओएमारीसाथेवैर कर्युंछेतेनोबदलोवळे, एमधारी, तेणेमायेपणकर्युंकेतमोहिंसाप्रवर्तावो, हुंसर्वजगाएतमारीसहायताकरीश, तारपछीमहाकाळे, नगरगामप्रमुखस्थानोमां रोगोविकुर्व्या. ज्यांज्यांपर्वतकअनेपिप्पलाद एबेजणहिंसामययज्ञकरावेत्यांत्यां तेदेव, रोगनीशांति करे, अनेयज्ञमांहणेलापशुप्रमुखोने, विमानमांदिव्यरूपधरीबेठेलाएवा साक्षात्देखाडे. । तारपछीसर्वलोकपणअतिशेआदरवाळाथइ सगरराजाप्रमुखोएतेवाज हिंसामययज्ञोकरवामांड्या. । एममनुष्यहिंसापण, निर्दयपणेतेणेहळवेहळवे प्रवर्तावी. तारपछी मायावडेमोहपमाडीमहाकाळे स्त्रीसहितसगरराजानेयज्ञमांहोमकर्यो. अनेपिप्पलादेपणपोतानांमातापिता खोटीकाढीयज्ञकरी

तेनेनोसमघोरोमकर्यो. तेनेनाइपक्रमनुंतेमप्रयोजनहतुं तेपूर्णथयुं. एमकारेमहाअनर्थनाहेतुरूपएवा अनार्षवेदोनवरया. आर्यएवा वेदोतोमाणकनिधिथीउमरेला, प्रतिदिनलमाहेलाएवाश्रावकोने पठननिमित्ते, श्रीतीर्थंकरनीस्तुतिरूप, श्रावकधर्मनामतिशा-दक, एवावेदोभरतचक्रवर्त्तीएकर्या. एमअर्थनुंअन्यथाकरवामां पर्वतकनुंदृष्टांतकह्युं. । व्यंजननेअर्थएवेनुमोहे अन्यथाकरवा-रेलिरवो,जोओवरणपक्षवैराशिक रोह गुप्तमुनदृष्टांतो जांणीलेवा.एमकारेछठो भानयोआठमोव्यंजन,अर्थ, व्यंजनार्थ,एत्रेण ज्ञानाचार,व्याख्यानकर्यो. ८ ॥ एमकारेआठप्रकारनोज्ञानाचार सम्यक्प्रकारेआराधनकरवो. ॥ एमकारेथीतपागच्छमांश्री सोमसुंदरसूरिनाशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिएरचेला श्रीआचारप्रदीपनामाग्रंथनेविषे ज्ञानाचारप्रकाशरूपनामनो प्रथमप्रकाश तेपूर्णथयो. ॥ १ ॥

श्रीतपागच्छे श्रीमद्राजसूरगच्छाधिपतिश्रीसुमतिरत्नसूरीश्वरजीनी आज्ञारूप उपदेशथीश्रीम्बेदानगरनी श्रीजैनोदयसभा तरफथीउपावी प्रसिद्धथयेलाश्रीतपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिनाशिष्य श्रीरत्नशेखरसूरिएरचेलाश्रीआचार प्रदीपनामनाग्रं-थनुंशाहीरालचंद दीनानाथकृतभाषांतरमांथे आप्रथमप्रकाशनुंभाषांतरसंपूर्णथयुं. ॥ १ ॥



भाग. बीजो.

आचारप्रदीप नामना ग्रंथनुं बीजा प्रकाशथी केवल भाषांतर मात्र.

सर्व मागधी शब्दो उपर संस्कृत करनार तथा सर्वनुं गुजराती भाषान्तर करनार तथा ते सर्वने शोधनारा.

शास्त्री. रामचन्द्र दीनानाथ.

श्रीमत्तपागच्छे श्रीमद्राजसूर गच्छाधिपति आचार्य श्री सुमतिरत्नसूरीश्वरजीए स्थापना करेली

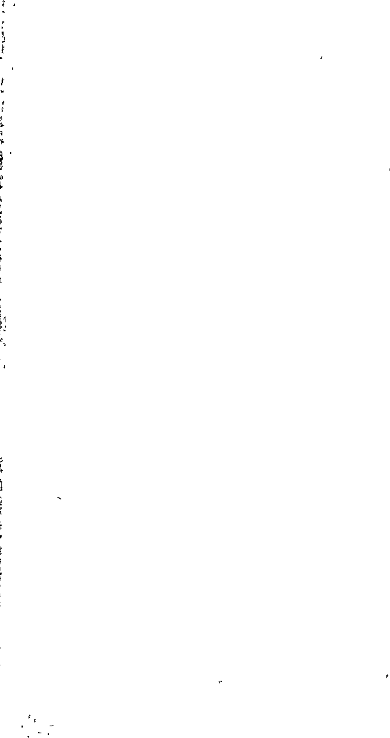
वेडानी जैनोदय सभा तरफथी छपावी प्रसिद्ध करनार.

शेठ. सोमचंद पानाचंद.

अमदावाद–"विजय प्रवर्धक प्रेस"मां छपाव्युं छे.

मूल्य रू. १–४–० टपाल खर्च जुदो.

संवत १९६२ श्रावण सुद ८.



॥ प्रस्तावना ॥

॥ श्रीवडगच्छीयश्रीरत्नपुरगच्छाधिपति आचार्य श्रीसुमति रत्नसूरीश्वरजीए, स्थापन करेली जेहनी जैनोदय सभातरफथी छपावीनेप्रसिद्धकरवामां आवता अनेक, अप्रसिद्ध, कठिणग्रंथोछे, जेवनीटीका टिप्पणद्याविगेरे अमाणिकोइने उपकार कर्पूरनी. अने तेग्रंथो जैनीपण मनस्वंयंतंत्रथा जाणवालायकछे. अने तेनापाणिकमहामोटापुरुषोगे पणामगरनेगर्वनो, ते ग्रंथोपणाभाची करवानुं, केवळ्यानीयावाया नगावावरी अनेकफ्रनसेत्यमेळजेमाछे, एगीमरत्नेकडणवावावारमिळाछे. पंडितोपासे तेमनुंशो अभिनवतीनपंडाशेयाणीनोडीशहीने वनावयानथी तेवनीअनेक प्रतिगोएकठीकरी द्रव्यनोव्ययकरी भजवाल्यामळायवानो आ समानो पनकरानी जेमेवाड पंडितोने नारोडाने तेमेराटनुं पुस्तकपुंरताविने तेग्रंथोनेअंगारेथी अल्पद्रव्यनी लालर अथवानिरसर जे हरफोटेन- पुस्तकरारो छे, पण जेवतेव, जेंतेतुं, ज्यांत्यां, ज्यारेत्यारे, जेतुंदीठुंतेवुं, अल्पद्रव्यनी लालर अथवानिरसर ... अजाण्यो कशीवानुकाम एकआनेकरतो एवोआमणछोळिका हलोतेमो, भाणवानीपणेप्रोकेवाशोहोयतेमो, जनवर्षीभानेथे अजाण्यो कशीवानुकाम पोतानोधाधि आडंबरदेखाडि करीयाएकठाकरवा एपो हि, तेनीपाछे दशे अथवा भाषाढूणनी थमनी योगनीतिमनरानी पोतानोथाथि आडंबरदेखाडि ... तेजग्रंथनीपूर्तिमाटेतेम हशे, आ समानो नथी, पत्री श्राद्धविधिनावनोग्रंथ घणोप्रसिद्धछे, जेश्रीरत्नशेखरसूरिये करेलोछे. तेजग्रंथनीपूर्तिमाटेतेम ... वांचीशक- श्रीरत्नशेखरसूरिये आचारप्रदीपनामनोग्रंथ रच्योछे. पणतेग्रंथघणुंमागधी होवाथीकठिणहोवाथीने हालनापंडितो वांचीशक- मानी, तेथीतेग्रंथमोटी समोतिहिनीपीतिमा. आविदयोछे, पणश्राद्धविधिने वांचनार पुरुषे अवश्यजाणवोजोइये, तेग्रंथमां ज्ञानादिक पांचप्रकारना आचारनोपांचप्रकाशछे. ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपआचार ४ वीर्याचार ५

ते प्रकाशोनां नामछे. प्रसंगमाप्तघणीकथायो तथाप्रभाविक पुरुषोनांचरित्रो तथाप्रमाणरूपघणांसूत्रना आलापकोतेथा पाओथीभरपूरछे, तथावांचनारने रसउपजावी प्रतिबोधआपवामां आग्रंथनी चतुराइघणी देखाडवामांआवीछे, माटेआग्रंथ प्रथम प्रसिद्धकरवानो विचारथयो, पछीसंस्कृतभाषाना कठिनशब्दोनोअर्थ अनेमागधीभाषानुं तपाम संस्कृतकरवुं. माटे एवे भाषानेसंपूर्णजाणनार अनेपाछो जैनधर्मनांमूलसिद्धांतोनो घणोपरिचयकरनार प्रसिद्धविद्वान्नोतपासकरतांप्रथंपाचिंतामणी धर्मबिंदु, वैराग्यशतक, अने रंभामंजरी नाटिकानुं तपामसंस्कृत भाषान्तरकरी प्रसिद्धिपामेला. एटलुंजनाहि, परंतु डा. बूलर किलहोण, पीटर्सनसाहेबोये, दक्षिण, द्राविड, कर्णाटक, गूजरात काशीदेशविगेरेमां तपासकरीखोळीपरीक्षालेइ प्रमाणकरी मासएकना पंचोतेर रूपैयाआपी आसरेपचीशवर्षसुधी जेनेराख्या, जेणेशरकारीसंस्कृततथामागधीभाषानुं कामकरीघणांसर्टी फीकेटइंग्लांडगांधीमेलव्यांछे. ते हालमां अमदावादसांकडीशेरी जतीनीपोलमांरहेछे. अने जैनीयशास्त्री रामचंद्रदीनानाथजी एवानामथीउंलखायछे. तेमनेआसर्वेकाम श्रीपूर्वोक्तआचार्यजीनीआज्ञाथी सोंपवामांआव्युंछे.अने तेनुंगुजराती भाषांतरकरवुं तथा सर्वेनुंशोधवुं तेपणतेमनेजसांप्युछे. तेमांथीनमुनामाफक आ थोडोभाग छपावी समस्तश्रीसंघनी सेवामांदाखलकर्यो छे. आग्रंथसंपूर्ण गुजरातीभाषान्तरसहित प्रसिद्धकर्यापछी प्राचीनहरिभद्रसूरीनुं करेलुंउपदेशपदग्रंथ टीकासहिततथा भाषान्तर सहित तैयार थएलुं छे ते छपाववामां आवशे माटे आवो सारो अवसर जाणी ग्रंथ ग्रहण करवामां कोइ सुज्ञ पुरुष चूकशे नही एवी आशा छे. ॥

॥ लि. खेडा गामनी जैनोदय सभा. ॥ श्री ॥

॥ त्रीजा प्रकाशनुं भाषान्तर. ॥

[illegible]

मरुधरो भांमिउनामे रथकार रहेतोहतो. तेना सुंदरगुणनी निर्मलतावडे चंद्रनेजितनारी एवी सोमानामनी स्त्रीहती, तेवेनो पुत्र देविलनामेहतो. अने तेजरथकारनी दासीनोपुत्र ब्राह्मणथकीथयेलो कोकाशनामे हतो.तेमोमिल्ररथकार पोतानापुत्रने निर्लेपाशापरथी पोतानीकलाओ ग्रहणकरावेछे. । तेकहुंछेके-पिताए ताडनकरेलोपुत्र,अनेगुरुए शिक्षाकरेलोशिष्य ते घं, तपावेली पहेला सोनानीपेठे घोरुडुं आभूषणरूपथायछे. १ परंतु तेपुत्रनी तेवीबुद्धिनहती अनेतेवीहृदयनी शुद्धिपणनहती, अनेतेवोकोइपण विद्याग्रहणकरवानो उद्योगपणनहतो. अनेतेवोकोइ भाग्ययोगपण तेपुत्रनेनहतो माटे तेनापिताएघणीमेहेनत करी पण किंचितमात्र कलामांकुशलपणुं तेनुं नथयुं जेम, कोइश्रेष्ठशिल्पशास्त्रनो जाणपुरुष, घणीमहेनतकरे तोपण तेआंधलापत्थरने निर्मलकरी नशके तेमते रथकारपण निष्फलथयो. ॥ तेकहुंछेके-उद्योगरहित, नवामकरनो, अतिशोभानी, अतिआलसु, अन्यनाए मनवालो, भणावनारनो द्वेषी, वांकीभ्रकुटीना विलाससहित हास्यवाली सुंदरस्त्रीनुं चिंतवनकरनो, एवोजे पुरुषहोय तेणे लोकमां ख्यातिकरनार अने मनुष्यने मानवायोग्य एवो विद्यागुण, नथीपांमीशकातो. १ बुद्धिवडे बृहस्पतिसमान एवो कोकाशनो दासपणे रथकारना पुत्रपासे मौनपणे बेसीरहेतो, हतो, तोपण हेलामात्रमांज तमामकलाओने पूर्वेलखेली भणेली होयने शुं एमतेणेपोतानी नवानवानर्कनेकरनारी, शांतिभानामनीबुद्धिना घणाबलथीयुक्तिवडे कल्पना करीकरी धारीलीधी. अनेगोपिलकरतां पण अनुक्रमे अतिशे अधिक रथकारनी कलाओमां कुशलपणुं मेलव्युं. । तेकहुंछे के-योग्यस्थानमां वावेलुंबीज, जीवमां स्थानिनक्षत्रनुंजल, पात्रनेविषे आपेलुंदान, सज्जनमांआपेलो चमत्कार, मतिज्ञानवालामां आपेलीविद्या, बलापुरुषमां आपेलोभर्थ, एसर्वेवस्तु उत्तरोत्तर वृद्धिपामेछे. १ रथकारनो पुत्रनो शून्यहृदयवालोहतो माटे कलाथीशून्यपणे थयो. कल्पाहनोपेठे, मोनी मोनानुंभक्षणकरनेनी पेठे कलानुंभक्षणकरनार थयो. । कालना

अनुक्रमथी सोविकरथकार मरणपामेगते, पुत्रनो मूर्वके माटे, राजानी आज्ञाथी कोकादानेन तेरथकारनी पदवी आपी. विद्यानो कामदुधागायनीपेठे दुं वांछित न आपे मर्वमापे. ते कल्पवृक्ष-नरनुंअधिकरूपपण विद्यानछे. छानुं हांकिरालेन्टुं परदेशमयामा विद्या बंधुनछे. परमदेवन पनपण विद्यानछे. विद्या, भोगने यशनेगुणने करनारीछे माटे गुरुनोपण गुरुछे. परदेशजयामा विद्या बंधुनछे. परमदेवन पण विद्याछे. राजालोकमा पणविद्यावडेपूजायछे पण तेवो धनवडे पूजातोनथीमाटे विद्यारहितछे तेतो पशुतुल्यछे. १. जेमनी पातेविद्यारूप गुप्तधनछे, तेमत्ये, हेलोको, मानमुको. केमके-तेमनीसाथे स्पर्धाकरवा कोइसमर्थ नथी. केमके-विद्यारूप धन तो चोरथीपण देखाइशके तेवुंनथी, अने कोइप्रकारनुं सुखनिरंतर पुष्टकरेछे. अने अर्थिपुरुषोने निरंतर आप्याकरे तोपण ते विद्यारूपधनतो मोटीवृद्धिने पामतुं रहेछे. कल्पांतकालमा पण विद्यारूपधन नाशपामतुंनथी. ॥ २ ॥ अथवा-दासीपुत्र एवो कोकाशपण, घरधणीनीपेठे मोटामनोरथने पाम्यो. जे घरधणी हतो तेनोपुत्र पण तेनी आगलदासजेवो थइनेरह्यो, माटे पूर्वजन्मनुं शुभअशुभ एवुंकर्म आश्चर्यकारीछे. । एकदिवस, तेकोकाशे विचारकर्योंकि-रूपतोतेनुंनाम, केजेरूपमते सारागुण होय. अनेमित्रपण ते जाणवो केजे कष्टआवेसते तेवीजमित्रतानिरंतर राखे. अने धनपण तेछेकेजे, पोताना हाथमा स्वाधीन छेजे. अनेविज्ञान (शिल्पचतुराइ) पण तेछेके जेणापर्य होयते. १ ॥ श्रीधर्म, दयावडे एकप्रकारनोछे. अने ज्ञानतथाक्रिया, तेवडे बेप्रकारनोछे. ज्ञानादिवडे त्रणप्रकारनोछे. दानादिवडे चारप्रकारनोछे. व्रतवडेपांचप्रकारनोछे. पृथ्वीजलआदिछजी-वनिकायनुंरक्षणकरवाथी छप्रकारनोछे. सातनयवडे सातप्रकारनोछे. आठप्रवचनमातावडे आठप्रकारनोछे. नवतत्ववडे नवप्रकारनोछे. अने क्षांतिप्रमुख सारागुणवडे दशप्रकारनोछे. ॥ २ ॥ अवधिरहित एवोसुखरूप फलनो आपनार, श्रीधर्म-रूपकल्पवृक्ष, तो, समकितरूपमूलनी दृढतापमेसतेअनेकप्रकारे होयछे. ३ आजगाए समकितनो, देवादितत्वनी श्रद्धाछे ल-

सणजेनुंएवुंछे. ते समकितनो चतुरपुरुषो, सडसटगुणरूपभेदेविस्तारकरेछे. ॥ तेउपर आर्षवचननुं प्रमाणछे तेनोअर्थः—चार प्रकारनीसद्दहणा, त्रणलिंग, दशप्रकारनोविनय, त्रणप्रकारनीशुद्धि, पांचप्रकारेगयाछे दोषजेथीएवुं, आठछे प्रभावकजेना एवुं, पांचछेभूषणजेनांएवुं, लक्षणनुं जेपांचप्रकारपणुं तेणे संयुक्तएवुं, छछेयतनानाआगारजेनाएवुं, छभावनावडेभावनाकरेलुं, छछेस्थानजेनांएवुं समकितछे, एप्रकारे सडसटदर्शननाभेद तेणेविशुद्धएवुंजांणवुं ॥ १ ॥ २ ॥ आवेगाथानुंविशेषव्याख्यान दर्शनसप्ततिकाप्रकरणथीजांणवुं. ॥ (समकितना सडसटबोलनी चोपडी वांचीजुवो) इत्यादिसाधुनीकहेली अमृतमयदेशनाथी प्रतिबोधपाम्युंछे मनजेनुंएवो, अनेअंगीकारकर्योछे दृढसमकित प्रमुखश्रावकगुणजेणेएवो, अनेसद्गुरुनीसेवाथीथयुंछे जिनमतमांनिपुणपणुं जेनेएवोमतो राजानीमहानमन्त्रनामुं पात्रथवाथी सुखेकाल निर्गमनकरेछे. एवातएटलेथीरही. ॥ नारपछी—धर्मअर्थ अनेकामएत्रणपुरुषार्थरूप त्रिवेणीसंगम तेणेकरीनेपवित्रएवुं पाटलीपुत्रनामे नगरहतुं तेकयुंछेके—लक्ष्मीवंतपुरुषोनोदुःखेदमायएवो दुष्टपदरूपअग्निवडे विवेकीपणारूप शीतलना नाशपांमेछे. (एटलेजेमअग्निवडे शीतपणुं नाशपांमेछेतेम.) एवातसाचीछे तोपणजेपाटलीपुत्रनगरमां लक्ष्मीअने विवेकतेबेवडेशोभनालोकोएवातखोटीकरी. एटलेसद्गुणादिचिह्नवडेओलखातामहाधनाढ्य पुरुषो, एनगरमांवसेछेनेलक्ष्मीवालाने, विवेकनहोय, अनेविवेकवालाने लक्ष्मीनहोय पणआनगरना लोकोमांतो बेसंघाथे रहेलादेखायछे एभावछे तेनगरमांआश्चर्यकारी, पोतानाप्रचंड प्रतापमात्रवडे त्रासपमाड्याछे सर्वशत्रु जेणेएवो जितशत्रुनामे राजा राज्यकरतोहतो. तेनुंवर्णनए प्रकारनुंछेके—दिग्विजयकरनार एराजानीसेनामांथी उडीचारेपास सर्वजगाएप्रसरतीरज, शत्रुनाजेरीवक्रगति (वांकांकटाक्ष) करतीएवीशत्रुस्त्रीओनी दृष्टिमांपडी अनेतेनां मलिनआंसुमांथी गलिपडती तेरज,मलिनपणानुं धारणकरेछे, एटलेआराजानो पराक्रममात्रमांमली मरणपामनाशत्रुनी स्त्रीओरहेछेएवोपराक्रम-

क्रमी भिनशत्रुराजाहतो ॥१॥ तेराजानी अतिसौभाग्यादि गुणवडेसाक्षात् देवीहोयने एवीयशोदेवी नामेपट्टदेवी, राजानीअ-
विशेषानीती विरुयात मोटीस्त्रीहती.वीजीस्त्री, अनुवाली धीजातिथनीपेठे राजानोदिनदिन मत्येअभ्युदय थवानाकारणरूप,
रूपादिगुणवडे जगतनीस्त्रियो मात्रनेजीतनारी विजयानामनीहती. । तेसमयेजाणे धीजोस्वर्ग लोकहोयएवा माळवदेशमां,
पोतानीअपार समृद्धिवडे कुबेरभंडारीनी अलकापुरीने पणपराभव करतीशोभायमान अवंतीनामनीपुरीमां परमश्रावकपणे
समकितविचारथी उजळो,विचारधवल नामेराजाराज्य करतोहतो तेराजानीपासे त्रणजगतना चित्तनेचमत्कार करनारा
पारगुणरत्नहतां. एकतोसूपकार (रसोइओ) बीजोअश्वपालक, त्रीजोअंगमर्दक, चोथोभांडागारिक, एचाररत्नमां सूपका-
रत्नएवो गुणहतोके-तेरसोयानो गमेतेरसोइ करेलीहोयने तेरसोइमयनी वस्तुतेजेनीमेरी मनमांइच्छाकरी होयके-मारेरसोइ
पहोरपछी पहोरमां त्रणपहोरना चारपहोरमां नाद्वरूएकादिनमां बे
पछीपाछुंभोजन करवुंछेतोते तत्कालनाजेवुं भुक्तलागे,अनेएकपहोरपछी इत्यादिजेवुंजेवुं धारीनेतेरसोइ जमेल्यारेत्यारेज सुधालागेपण
दिनमां त्रणदिनमां चोथादिनमां पंदरमादिनमां एकमासपछी अनेदग्गपाऊकमांएवोगुण
नपडे.तेजाणेभुक्तलागे पणतेमांफारफेर
तारपछीकेतारपछीसुख नजागे जेवखत चितवेलीहोय तेजागनेभुवन्लागे पणतेमांफारफेर नपडे.अनेअश्वपालकमांएवोगुण
हतोके-गमेतेवीनिर्णे शय्यापापरीहोयनेमांसूतेलो पुरुषपरमसुखनोअनुभवकरतो, सुनीवखते तेपुरुषेजागवानो जेजेकाळ मनमां
धार्योहोय, के घडीबेघडी, पोहोरदिन, रात्रि, मास, पक्ष. इत्यादिचितवन करेलाकाळमांज जागेपणते प्रथमकेपछीनजागे
अने. २ अनेअंगमर्दकमां एवोगुणहतोके-शेर, बसेर, त्रणसेर, चारसेर, पांचसेर, छसेर, सातसेर, आठसेर, आ-
दिममाणवालुं. तेथीपण अधिक मण, बेमणइत्यादि गमेतेटलुंतेल आपोतेसर्व अंगमांशमावीदे, तेपाछुं तेटलुंज शरीरमांथी
भाकर्षणकरी काढीआपे, पण जगारमात्र दुःखनथाय पण उलटुंअत्यंतसुखथाय. ३ अने भांडागारिकमां एवोगुण हतोके-

ते भंडारनी एवीरचना करेले तेमांजवानुं द्वारतेनाविना कोइने कोइमकारे पण मालुमथायज नही, अने तेमांसातर पाडवाने पण कोइ समर्थथायज नही. अने तेभंडारमां गयेलो पणतेना देखाड्याविना धनकनक इत्यादि कोइ सूक्ष्मवस्तुपण देखीशके नही, एम तेभंडारनी अतिशे रक्षाकरे ४ एप्रकारनां चारपुरुष रत्नवडे, जांणे चारदिशमांथी मलेलां चारचिंतामणि रत्न होयने शुं एम, तेमणे पण रातदिवस एराजानुं मनोवांछित संपूर्ण करवाथी महासुखवडे एराजाए घणोकाळ अतिक्रमण कर्यो. धर्मविधिने विषेअतिशे उल्लाससहितछे बुद्धिजेनी एवा एराजाने कोइमकारना पूर्वजन्मना दुष्टदैवना वशथी, घणाघणा पटला उपाय कर्ये मनेपण एकराणीने पणपुत्र उत्पन्नथयो. तेकशुंछेके–मत्सरपणाथीज जांणेशुं,एम, घणुधा सर्वलोकने दैव तो, कोइ कोइ मकारनुं न्यूनपणुं राखेजछे, एम नहोयतो, समुद्रखारो अने चंद्रमाकलंकी एवात, केमसंभवे. १ ॥ तारपछी वैराग्यवालुंछे चित्तजेनुं एवो तेराजा, दीक्षा लेवामाटे कोइगोत्रि पुरुषने राज्य आपवानी इच्छा करेछे, एटलाकमां, प्रथम वर्णन करेलो पाटलीपुत्र नगरनो जितशत्रु राजा प्रथमथीज चारपुरुष रत्नादि अपूर्वसमृद्धि लेवानालोभमां हतो, ने वली तेनीदीक्षालेवानीवातजांणी, विचारकर्यो के पृथ्वीतो वीरपुरुषोने भोगववायोग्यछे. एमधारी गंगानदीना पूरनीपेठे चारे पासप्रसरता महासैन्ये सहितत्काळ आवीने उज्जयणीनगरी घेरीलीधी. जेटलामांनगरीना मध्यमांरहेता सुभटोयुद्धमाटे तैयारथायछे एटलामांदुष्ट दैवनावशथी विचारधवल राजानापेटमां अनर्थनुंमूलरूप एवोशूलरोग उत्पन्नथयो. तेथीतेराजा दाहपाउपर हांसनाफोल्ला उत्पन्नथाय तेवानेरोगथी अतिशेपीडायो. अहोमोटा पुरुषोनेपण कहीनशकाय एवीकोइ मकारनी दुष्टअवस्था आवीपडेछे. अथवादुष्टदैवनो एवोजस्वभावछे, तेकशुंछेके–दैवकेवुंदुष्टछेके, जेसीतानापतिने विषेपण दुष्टमनवालुं थयुं, अर्जुननेपण अनर्थनुंआपनार थयुं, जीमूतनामेराजा, अथवामेघ, तेमांपण दुष्टबुद्धिवालुं थयुं मेघ, जोइएतारे नआवे, ने

नजोइए नारेभावे. यथाकर्ण राजानेपण चाहीआपणानी वृद्धिआपनारथयुं. दमयंतीसतीनो पति, नळराजाने दुष्टबुद्धि आप
नार थयुं हरिश्चंद्रराजाने आपत्तआपनारथयुं, इंद्रनेपण लक्ष्मीनोविरहकर्यो. एवोदुष्टदैवते तेनेपीजातोथी गणवीमांहोय, तत्र
होय. १ ॥ तेभवसरपांराजा, सम्यकप्रकारे धर्मतत्त्वनाविचारमां चतुरथयो. केमके–धर्मनेविषेतत्पर एवापुरुषोने जीवयुंअने
मरयुंपण कल्याणकारीछे. हवेजीवताने विवेकछेते मरणपामताने सारीगतिनी प्राप्तिथायछे. ॥१॥ धीरपुरुषने पणमरयानुंछे
तेकायरपुरुषने पणअवश्य मरयुंछेतो मरयानोनिश्चय एवोतत्त्वोछ सोशीरपणुराखी मरवुंएमश्रेष्ठछे २ इत्यादिमारो विचार
अनुसरी धीरमनवाळो तेराजाए आराधनाभनशन इत्यादिविधिवडे स्वर्गलोकना सुखनोआस्वाद कर्यो. । यहानूआदिरो-
गनीवलाजिते तेमृत्युरूप नाटकनुं पगलापरगले. तेकयुंछे–शूलरोग, विषपान, सर्पदंश, मूर्छा, पाणि, शस्त्र, आग्निएमना
संघमधी (श्रावकी) आमीतत्रयदीवा अन्यदेशमांसंक्रमण (गति) करेछे. ॥ १ ॥ मारपछी यथानोपविचारकर्योके–पणी
विनानुं यशुंकारकरछे सोपण आपणेशत्रुने जीतीशकीशुंनही पाटेउत्तरापराजगहढुंनेकरनारापुनेयश्रीजंपुपउत्तमछे एमधारीद-
रवाजाउघाडीनगरनाळोकोने भग्रेसरकरी भनिते आदरथी भेटनीपेठे तिनगप्रराजानेउत्सणनगरीमपर्णकरी. अतिशेहर्षपा-
मेलातेराजाएपणपोते राजउपरतेनातेजप्रधानोने पोतपोतानो अधिकारआपीरापीसन्मानदानपूर्वक भतिश्रेमसमकर्यो. तेचार
पुरुषपरमळतो तेनीपणराजाए परीक्षाकरी. तेवांअंगमर्दकेराजानुंअंग भनिशेनेजवडे मर्दनकर्युं. तेवांएटलुंवधुंकर्युंकेएकतेथायां
पोतानाहाथनीकळावडे. पाणकर्यु (सोलापनोकर्ष?) तेजनोसपावेशकर्योनारपछीसमग्रशरीरथीआकर्षणकळावडेसर्वतेळपाछुं
लेचीलीधुं, परंतुराजानीआगळवडे जांघनुंतेलन संचीलीधुं. कारणके कोइकळावाळो मानीपुरुष जोहोयतोते आजंघानातेलने
खेचीलगो एमराजानीसमापां तेणेउपरवरेकयुं, तेवचनकानिशाभनतांत कानतांशूळरोगहोयतेनुं एमअन्यपणअंगमर्दकपुरुषो

मांपंडितहतातेमनेमहापीडाकारथयुं. पछीअभिमानछे धनजेमनेएवाकेटलाक अंगमर्दकपणानाअभिमानीउठया, नेतेमणेअनेक प्रकारनीकलायापरीपणकोइथीपणतेजंघामांथीतैलनुआकर्षणकरीशकायुंनही. जेमशरीरनोअसाध्यरोगदूरकरीशकेनहीतेमतैल, जंघाथीबाहिरकाढीशक्यानहीअंगमर्दकपारलप्रमाणएवाएपुरुषेपण नेजदिवसेतेतैलनुंआकर्षणकरीशकाय, पणबीजेदिवसनक रीशकायएपहतुं माटेतैल, नेराजानीजंघामांजरयुं, जेमकूवानीछाया कूवामांजरहेतेमथयुं. तेविकारथीराजानीजांघ, कांइक स्थूलथइ अनेअतिशे काष्टीथइ, तेदिवसथीआरांभिनेतेराजानुंनाम काकजंघ एवुं यथार्थ विस्तारपाम्युं कोणएवो मोटोपुरुष पण, निश्चेलोकोक्तिने समुद्रनीवेलानीपेठे रोकीशके, कोइरोकवासमर्थनथाय, लोकरूप, पाणिकाढवानीशोखनुं सुखथंथहो-यमनही एवासमर्थनेविदितछे, केमके-लोकमांसारुनामहोयने, भुंडानामनीपेठे विख्यातथतुंनथी. जेम, मायतुप, कुरगडु, सात्र धाचार्य, रावण, इत्यादिकनामप्रसिद्धथाय तेमसारांनामप्रसिद्धनथीयतां एवोलोकनोस्वाभाविकधर्मछे. एमकारेएराजाएकसो-टीएपचवावेलापणतेनोनिर्वाहकरवामां समर्थएवामहाकलावान्मां श्रेष्ठगणातातेचारेपुरुषोपणसन्मानदानकरवामां चतुरछेमाटेते-मनुंअतिसन्मानतेणेकर्युं. पछीतेचारेपुरुषरत्नतो पोतानाप्रथमस्वामीनुं तेमकारनुंमरणविचारीदेखीअतिशेवैराग्यवालाथया. । कर्युंजेके-जोअतिगहनएवासंसाररूपबंधिखानानास्थानथी, आत्मानीमुक्तिनकरीतोराज्यवडेशुं. धनवडेशुं. धान्यनासमूहवडेशुं. देहनासाराआभूषणवडेशुं. नथावाढित्यवडे, न. मोटुभुजाबलवडे, न. वाणिनुंचतुराइपणुं, न. उत्तमजातिवडे, न.पवित्रकुलवडे न. उज्वलएवागुणनासमूहवडेशुं. काइनथी. एटलेएसर्वे मिथ्याछे. १ सारीएवी एककलापणश्रेष्ठछे, जेणेकरिने संसारसमुद्रत-रायछे, घणीएवी पणकलावडेशुं. जेमांकलंकथयेछे माटे. २ ॥
तारपछीतेमने प्रतिबंधकरवानो राजाएघणोघणो आग्रहकर्यो तोपणकोइ प्रकारेराजानीअनुज्ञालेइनेचारे अतिशेआकरां तप-

पहेलीद्विरूपस्त्रीनुं अर्थांतरगुन अनुभवकर्युं. ॥ तारपणोकुकग देशवानिर्दनजननो संहारकरवाना महाराजसमान एवो,
दुकाळआव्यो, जेदुकाळमां धनवंतपण निर्धनजेवाथया. राजापणरंक जेवोथयो. साहसिक (मस्तवंत) पुरुषोपणगरीब
जेवाथया. साधुपुरुषोमां अग्रेसरहता तेपणगमारजेवाथया. मोटीइच्छावाळा पणतुच्छजेवाथया. दानदेवामां शूरवीरपुरुषोहता
तेपणअतिकृपण जेवाथया. धर्मवाळाहता तेपणधर्म रहितथया लज्जावाळा हतातेपण निर्लज्जथया विवेकीहता तेपणअविवे
विवेकरहितथया दाक्षिण्यवाळा हतातेपणअतिशे दाक्षिण्यरहित जेवाथया दयावे सहितहतातेपण निर्दयथया स्नेहसहितहता
तेपणनिःस्नेहीथया. जव,कोद्रादि धान्यनासंग्रहवाळा हतातेपण खालीथया अकठोरहता तेपणकठोरथया सारासंतोषवाळा
हतातेपण असंतोषीथया. सारीमतिप्रभावाळा हतातेपण मतिप्रभारहितथया सारीबुद्धिवाळाहता तेपणदुष्ट बुद्धिवाळाथया.वधारे
शुंकहीए, जेकाळमां पुण्यरूप महाराजसमीप परवशकरवाठे चित्तजेमनां एवाआदिकारणमात्रथी पणअतिदोषरूप एवाए
स्त्रीआदिकनेपण त्यागकरवायोग्यसेवकनीपेठे विक्रयकरेछे, केटलाकनिर्दयपणे मरेलानीपेठेतेनो परित्यागकरेछे. केटलाक नेम
नुंपानपरणादिअयोग्यकर्मकरेछे. । केटलाकक्षुधाथी पीडितथयेलोप्राणी, मानमूकेछे. गौरवपणानोपरिहारकरेछे गरीबप-
णानेपामेछे. लज्जानोत्याग करेछे. निर्दयपणानो आश्रयकरेछे. नीचपणानुंअवलंबनकरेछे. स्त्री, बंधु, मित्र, पुत्र, एमनेविषे
नानाप्रकारना अपकार (तिरस्कार) करेछे. तेनुंसुनिंदितपणुंनथीकरतो सर्वनिंदितकरेछे. ॥ १ ॥ वळीसर्वएवाउपद्रवथीअतिने
भयानकएवोदुकाळरूपउपद्रवछे. ॥ साधुनुंस्वाकरभावे, तथाअग्निप्रमुखउपद्रवथायतोपण कोइजगाएकोइपणरहिजायछे. आतो
सगळनाउत्पातकरनारो दुकाळरूपउपद्रवतोसमस्तवस्तुनोसंहारकरनारछे. एप्रकारनोमहादुःकाळवर्त्ततेसतेमोटाकुटुंबनो निर्वाहक-
रवाअसमर्थपणाथीकांतनोपमणीनासु कुटुंबसंघाथेरामी, दुकाळमयुक्तउपद्रवतेमां मंत्रगनथीकर्याएवामाळवदेशमां पोतानो

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सर्वीजितवचनकरेलुंरामानुंदर्शन भावमारेथशे, पाटीकल्लानुकुशलपणुंमकरकरवाथीवाकबहुमानपणथशे, एणपहुतेउत्कृष्टीजन्मा-
ननीभाशाभेनेएथीकोकाशयुवेरानागमीपेमहउपोरमो. राजापार्श्वेशुएवाते रामाएपुछ्युंतारेमयणे पोतानुंवर्वहृत्तांत. ज्ञान
कणनुंहरणकरवापर्यंतनुं कहेमकारेकहीगमलावुं. । तेनीतिशास्त्रपाकर्युंछेके-पित्रनी भागल्पमन्यकहेवुं. स्त्री भोनेभिगवेच । कं-
हवुं, गुरुंमनेपीतूएवुंवचनवधुनीआगल्कहेवुं. सत्यमनेअनुकूलएवुंवचनस्वामीनागवोलवुं. ॥ १ ॥ तारपछीमव्यएवकारेमहा
स्वरूपनुंकहेवुंतथातेनुंकाष्टमयुतरनुं निपजाववुंएकल्यानो अतिशयदेखवाथी तेराजाअतिशेमसत्थयो. वलीराजाएवीतुंजरकुके
हेअनुपमकलाविलास, हकोकाय, शुंशुंचमत्कारीअतिशयनुं एयानएवुंविज्ञान, तुंजाणेछे. तारेकोकाशवोल्योंके-हेदेवतमारा
चरणप्रसादथी, अन्यसर्वशिल्पिनागर्वनेतिरस्कारकरेएवुंमयं, रथकारनुं (सुथारनुं) विज्ञानजाणुंछुं. घडुंछुं. देखाविनवाछि-
तस्थाणेगतिकरनारएवांयन्त्रोहारीएयोकाष्टमय, मयूर, गरुड, पोपट, हंस, इत्यादि, अन्यपण, तेवामशीश्रोतयाश्रेष्ठरथ, एवो
के-जेपाछीपृथ्वीपरनिम, तेमआकाशमांपणकुशीआदिकमयोगवडे चलाव्यांपोतेमनुंछके ताराशुभेषीजवाय, अथाय.
मथामागाद, परममुख, अथवाजेनेवांछितहोयतेसर्वने विश्वकर्मानीपेठेकरुंछुं । तेवाअमानीअतिकौतुकछे मिपजेनेएवोराजा
कोकाशमत्पयोल्योके-एमछेतोएक, आकाशगमनकरनारो चतुरएवोगरुडनिपजाबो, जेथीगपप्रपक्तुंपणपृथ्वीमंडल, पोताना
वांछितप्रमाणेदेखीए. । तारपछी, विज्ञानीमांश्रेष्ठएवातेकोकाशे, अर्द्धचक्रीनागरुडजेवो, अतिसुंदरकाष्टमयअतिमोटो, गरुड
शीघ्रपणेपाडीदेखाड्यो. तेनादर्शनमात्रथीज तेराजाअतिशेमसत्थयो, नेअतिविस्मयकरनारएवुंधणुंधन पूर्वपरंपरामुख, तथा
निवासस्थानआदिशीघ्रपणेआप्यां. बहुमानसहितजेलाएवातेराजाए सर्ववस्तुपात्रआपी. । तारपछीपोतानाविज्ञाननीकला-
पहेमःकालनिपजावेलीछे सकलनिवासादि श्रेष्ठमायशीजेणेएवो, राजानुमान्यपात्रपणेविख्यातथयोछे मणिदिनोमकाशजेनो

एवोकोराय, कटंकेमहित केवलीमाने पुरवावनेप्रमाणेत्यांनिवासकरीरह्यो, विज्ञाननेवांछितअर्थनुं जेगाधकरणुंछे तेभाश्चर्यकारीछे. तेकहुंछेके–स्वगममानरत्नथी. विज्ञानसमान वांधवनथी. धर्मममाननिधिनथी. क्रोधसमानवैरीनथी. ॥ १ ॥ एकदिवसकौतुकसमपीभरेलोराजा, काष्ठमयएवोतेगुंरगरुडउपरचढ्याश्चमहितशोभायुक्तवेहीने साक्षात्लक्ष्मीपतिनीपेठे पृथ्वीदेखवानेअर्थे भाकाशमार्गेचाल्यो. आकाशगमननुं कारणएवीकुंचीदेनार कोकाशनीसाथे अनुक्रमेअनेककौतुकपोतानी नजरेजोतोजोतो शालामकाना अरण्य नदीओनगरगामतीमाढ इत्यादिनेएकेकालेउल्लंघनकरतोजहोयने शुंप्रवोनेराजा, श्रीमुनिसुव्रतस्वामीथी भृगुकच्छ (भरुच) नगरउपरआव्यो त्यारेआश्चर्यमहित पट्टराणीएराजानेपुछयुंके–हेदेव, देवनगरनेपणअतिश्रेष्ठगुणयुक्तवर्तनारएवुंभा, कियानामनुंनगरछे. अनेनिर्मलजलनापूरवडे शोभनीआनदीतुंशुंनामछे. तारपछीपृथ्वीपतिनीतेनुंनामादिसमग्रस्वरूपनेनजाणतोमाटेजेवामां नबोल्योनेवामांराजानीअनुमतीथी तेनुंनामादिकसम्यक्प्रकारेप्रथमथीसर्वतेधोरेविज्ञानपूर्वीएवानामधारीमां धुंधरएवोकोकाशरथकारबोल्योके–हेस्वामिन्, श्रीमुनिसुव्रतस्वामीवीशमातीर्थंकर, तेमनापरणकमलवडेपवित्रथयुंछेअत्यंतरजेनुंएवु भृगुकच्छनामेआनगरछे अनेआतोनगरनालोकोने सर्वप्रकारेसुखआपनारी, जोडाजोडचारेपास क्रीडाकरनाएवांअगणित, समक्ष्थयेला हंसपक्षीचक्रवाकपक्षीइत्यादि अनेकएवांचंचल पक्षीनांजोडवां (स्त्रीपुरुष) तेमनीनानाप्रकारनीक्रीडावडे आश्चर्यपामनांविचराविस्मरइत्यादिकनांमिथुन (स्त्रीपुरुष) तेमनेरणनर्मदेनारी (मशकरीकरनारी) अर्थात्उपहासकरनी नर्मदानामेनदीछे. आनगरीमांपूर्वेसुरअसुरे सेवनकरेला, उत्पन्नथयुंछे दिव्यकेवलज्ञान जेमनेएवाश्रीमुनिसुव्रतस्वामी, दक्षिणदिशारूपस्त्रीनामुखनुं आभूषणसमान प्रतिष्ठानपुरपत्तनथी एकजरात्रिमांसाठयोजनभविक्रमणकरीभावीनेनदले. पश्चातेमताएजेजेसर्वअंगअतिसुंदरएवोघोडो, तेपूर्वेभवमांपोतानोमित्रहतोमाटेतेनुंकृपालुकेतुं–

पाने प्रतिबोध आपी कराव्योछे नवीन चैत्य जेनो उद्धार जेणे एवा स्थिरकगोटि
नादिदेवतथा पूर्वजातिस्मरणज्ञानजेने एवा मेघवाने जेणे कल्पवृक्षनी जेम देवतानी जे कदलीने वचाव्यो. ते श्रीप्रद्युम्ननापुत्रेतर-
पर्वानुरागजेणे करी सीधर्मकल्पनेविषे कल्पवृक्षपणानछे पम्हादिजेनी एवा देवतानी नहीं सेवाव्यो. ते श्रीप्रद्युम्ननापुत्र चैत्यकरीतेमां कर्याछे श्रनजगतना
जनमां भावी प्रधानपणानी आसिनाथमोक्षकल्याणकस्थानपावनमय, अतिशयोक्तिपूर्वक चैत्यकरीतेमां गयानेनी भागवतोदारक पूर्व-
जननेपनो निरावरणे पुरी पोताने अभिमतपदवी ठेपानजेनीपितानीतना श्रीयुगलस्वामिनी मूर्ति गयानेनी आगळमोटाकर पूर्व-
भवनीतेनानी मूर्ति स्थापनकरी. । तेदिवसथी मांडीने एनी मंत्रनाम प्रभावयोगनी धिराज एवी श्रीसिद्धनेवांछ्युं. तेपणदेव,
भवीयोगोद्धारणं शुद्धनिमावरदं निरंतर जिनजानीछे श्रीयुगलनस्वामीना चरणकमळनीसेवाजेणे एवो मनदंडनो यात्रिक-
कोतनकमाछिनपकवणे पगाकाळथकी तेनीभर्तीनी अपावनाकरतोहतो, काळांतरे तेजनगरनां मंडळ राजानी वसाहिका (स-
मही) पूर्वभवनावीरनुं मरकतपुंजपथी नाशकरवानीछे इच्छा जेनीएवो कोईम्लेच्छतेणे मुकेलाबाणथी वींधाइ. पछी, तेवखत,
पूर्वभवमां एकवखत करेलुंछे जिनवंदनजेणे, साध्वीनीसेवाकरनारपुण्यनाप्रभावथी अंतसमयेसाधुएआपेला नवकारमहामंत्रनी अ-
नुमोदनाथी ... सिंहलद्वीपनो स्वामीराजा, तेनेघेरमातानुं उत्पन्नथयो पवित्रपणेजन्म धारण करी पुत्रीपणे तेउत्पन्नथइ. ते
जावंदे, प्रभुपणानेकरी भरतक्षेत्रनी सिंहलद्वीपनो स्वामीराजा, तेनेघेर मातानुं उत्पन्नथयो ... ते बाळिकाबाळीतेमबेलेणे उत्पा-
पुत्री अनुक्रमेयौवनअवस्थापामीत्यारे भृगुपुरथी आवी रानानी सभामां बेठेलोएवो कोइमोटोशेठ तेनेछिंकआवीतेमबेलेणे उच्चा-
रणकर्युंपरंमे नमस्कारादिदेखेनानामस्कारणीयपुंछेजातिस्मरणज्ञान जेनेएवीतेपुत्रीए, मातापिताने कोइमकारे पुछीनेसातसेमोटां
वहाणनीसाथे भृगुकच्छपुरमांआवी तेचैत्यनोउद्धारादि अगणितपुण्यकर्युं. तेदिवसथी वळीतेतीर्थ श्रीसकुनिकाविहारएवी
ख्यातिनेपाम्युं. अनुक्रमे आजतीर्थनेविषे परमआर्हतएवा कुमारपाळराजानो मंत्रीश्वर उदयननोपुत्र, श्रीशत्रुंजयतीर्थनो उद्धार
करनार श्रीरैवतकगिरिनी छुगलपदीपद्या (रस्ता) नोकरनार इत्यादिमोटांमोटां अनेकपुण्यनो प्रगटकरनारएवो मंत्रिमांमुकुट

आ० ५६

समानएवा वाग्भटनोनानोभाइ जेआंवडमंत्रीश्वर, तेपितानापुण्यनिमित्ते आचैत्यनोउद्धारकरावशे. पछीमिथ्यादृष्टिएवी देवीएकरेलाउपद्रवनोनाशकरनारएवाश्रीहेमसूरिनासान्निध्यपणावडे, अनेकएवांलौकिकतीर्थपणइहांथयांछे एमकारेकोकाशना मुखथीसांभल्योछेतीर्थमहिमाजेमणेएवां पट्टराज्ञीतथाराजाअनेकोकाशएत्रणेतेचैत्यमांआवी श्रीमुनिसुव्रतप्रभुनेभावथीनमनकरी पछीतेत्रणेपाछांपूर्वनी पेठेगरुडउपरवेशीने आगळदक्षिणदिशमांचाल्यां, त्यांकोइमहानगरनी उपरजेवामांआवेछे तेवामां राणीए पूर्वनीपेठे राजानेपुछ्युंके, हेस्वामिन्आनगरकियुं अनेआनदीनुंशुंनामछे, त्यारेराजामौनरह्यो, पछीकोकाशबोल्योके हेदेवआलौकिकशोकवडे प्रसिद्धानिरवधिलक्ष्मीना विलासवडेसमृद्धिवालुं महाराष्ट्रदेशनुंअलंकाररूप, पुर्णेपश्चिमनेस्थापनक-रेलुंकुम्भपुरनामेपुरछे. जयवंताएवाश्रीचंद्रप्रभस्वामिनावचनथी सौधर्मेंद्रपासेथीग्रहणकरेली चंद्रकांतरत्नमयश्रीचंद्रप्रभस्वामिनी प्रतिमाआगळआरंभेला महायागनीसिद्धिवडे प्रसन्नथइछेचित्तवृत्तिजेनी एवाप्रजापतिए (प्रजापतिरितिपाठान्तरम्) आपुरमां श्रीचंद्रविहारकराव्यो. अनुक्रमेइहांजपितानावचननी आराधनानेअर्थे वनवासिएवारामथयेसते, रावणनीबेहेनसुर्पणखा, वा-रवर्षपर्यंतवांसनीजालमध्ये नीचामुखथीधूम्रपानकरतोएवो पोतानोजेपुत्रतेने चंद्रहासखड्गविद्यासिद्धिनी संभावनामांआवेली, पणत्यांप्रथमथी आवेलालक्ष्मणनाहाथेनववार्थीतेसमयेप्राप्तथयेलाचंद्रहासथी (तरवारथी) छेदेलुंनेवांसनीजालमध्ये त्रुटि-पडेलुंपोताना पुत्रनुंमस्तकदेखीअतिक्रोधवडे लक्ष्मणजीनांपगलांने अनुसरीनेजपछवाडेगइ, परंतुअतिसुंदररामनेजोइ व्यामो-हनेपामी प्रार्थनाकरवामंडी, रामेतोनिषेधकर्यो तारेलक्ष्मणपासेगइ, तेणेपण, प्रथमरामपासेजवाथी भाइनीस्त्रीनुथइ, एमकही निषेधकर्यो. क्रोधवडेधमपमाटपणुंदेखाडयुं तारेतेनीनासिकाकापीनाखी तेदिवसथीआरंभीने आनगरनुंनाम नासिकपुरएवुं थयुं. रामचंद्रजीरावणनेमारी सीतानेलेइपाछावळतांइहांश्री चंद्रप्रभस्वामिना विहारनोतेणेउद्धारकराव्यो. अनुक्रमेवांहा[illegible]

भा०
T. २

पश्चात्‌नीकुंभनीए श्रीअनरथनी भाणानानो पकमुनमपदिवावडे श्रीमुनिसुव्रतभगवंतने आदीश्वरनोउद्धार कराव्यो, त्यारे
पातालपुरनीपासे यमुनानदीने तीरे गौतमनाथरयात्नानुं प्रमोदउपजावनारीगोदावरीनामनीनदीछे. ।
पनुनाथ हुनीवंशरत्नपुत्र आदीश्वरनाथगावद्वारणाउ । अनेनयप्रभाश्रितजनने प्रमोदउपजावनारीगोदावरीनामनीनदीछे. हवे,
रावी भागवनारनो गर्दभाधुवर्णमयमय नगरनेजोइ पूर्वनीपेठेराणीपुष्पुकपुने गनाणीनरत्नपुत्रारेकोकानचोल्यो. हवे,
दिव्यगर्भउद्यानादिस्थानवडे भयकाननिवास नगरजनावशीर्षकानामनीनगरीछे जेअनिशंपडापोयकालोयाहेदुर्गममहासागर
दगमारत्नादिविशेषवडे गपग्रयाग विद्याधरोकोनेनराजपकरनारी, जयोपनगरीमांयक्रीनवडे महापद्मीपोटीऋद्धिशीला-
शाश्वतराजपाटीजेवो महाबेलारामनाथे पांनपाउदेन, सिद्धकर्मक्रिमणीरगोते, नगमहमणस्यनिमापरेंद्र अनेनवंद्वलेपणे
कर्तिगभावेनी, पुंगवनांदेंगरवकरनांनो अतिभंकारणी पमपपापमानहानेराणे, इंद्रसूर्यचंद्रइत्यादि देवतानोनाम
पानकणवा मंनेविषधरोमाने पोतानीनानाप्रकारनीसेवा करावनीइत्यादिवडे पोतानेइंद्रकरतापण अधिकमानतो, प्रगजगत-
मानरूपवा मंत्रविद्याधरोमाने पोतानीनानाप्रकारनीसेवा करावनीइत्यादिवडे पोतानेइंद्रकरतापण अधिकमानतो, प्रगजगत-
पात्रक्षमा मंत्रविद्याधरोमाने एवागमाराणानुं आचरणकर्युहतुं. तेरावणनीसमृद्धिनुं स्वरूपलोकमांगमसागणे के-इंद्रशीपणदुर्ग्रहएटले दुः
प्रीप्रहणयानपानतायकर गोलोमानाच्छनतायोपेशभ्याहता. तथापण नगरना लोकनेपण भाष्युते अत्यंतिकभयकए जेणपुत्रा
मृत्युनेपणवाधीनाखीनाहमींपीपालेव्योहतो. तेरावणनो, वायुदेवतोघरना आंगणपांसाईकाढनारसेवकहतो. तेनाश्यामांछु
गंधनापुष्पोपिणाटनाराणारवनानाजीयुमदेव (मेघ) हता. शेषनागेंद्र, छत्रधारकसेवकहतो, गंगायमुनाएवेदेवीओचामरढो-
मनारीदासीओहती. ऋतु, पुष्पर्धकरनारामाळीनेठकाणेसेवकोथइरह्याहता. सरस्वतीदेवीवीणानाद संभळावनारीसेविका
नद्रारोहती, रंभाअनेतिलोत्तमाइत्यादिअप्सराओ नृत्यकरनारी वारांगनाओहती. अनेरावणनोगायक, तुंबरुगंधर्वहतो.
नारदजीनाथोराकूदनारसेवकहतो. अग्निश्चोरमोनकरनार रसोइओथइरह्योहतो, चंद्रमानो, पोतानीसंपूर्णकळावडे अमृतनो

सिंचनकरनारहतो. मंगलतोभेंसोदोहनकरनार सेवकथइरह्योहतो. बुधतो, दर्पणदेखाडनार सेवकथइरह्योहतो, बृहस्पति, घ-
टीघंटनोवगाडनारहतो. शुक्रतोप्रधाननुं कामकरतोहतो. शनैश्चर, पृठनोरक्षकहतो, तेत्रीसकोटिदेवतासेवकोहता. इत्यादीद-
आरक्षपियो. पाणिनीपरखदीओनारक्षकहता. नारायणतोसभामां मशालधरणकरनारहतो. इंद्रतोमालाकारहतो, ब्रह्मापुरो-
हितथइरह्योहतो. भृंगिरीटिनामनापुरुषो आचमनकरावनारहता. जीमूतऋषिछोकरां रमाडनारसेवकहतो. कामदेव, छुरिका,
बजारवांधीसमीपमेंशाकारकहतो. अश्वानरवारवांधीसेवाकरवीनथागापोतांथवीछोडवी, एवाकाममांरह्योहतो. वैश्वानर, वस्त्र
धोनारधोबीनुंकामकरतोहतो. स्वामिकार्तिक, कोटवालनुं कामकाजकरतोहतो. गणपतिनो, गधेडांचरावी लावनानाकाममां
दारह्यथइरह्योहतो. चामुंडादेवी, चातुरीचलावनारीदूतीहती. गौरीदेवीराणकाननागीहती लक्ष्मीदेवीवस्तुमात्रनीरक्षाकरनारी
हती पाछितनेतोखोलावनार नारदगंधर्वहतो कुबेर, भांडागारिकहतो. इत्यादि. ॥ आतकालनीमहासमृद्धिथी भरपूरहतो
पणपरस्त्रीउपरपणीलालचराखवाथी उत्पन्नथइछे दुष्टबुद्धिजेनीएवोमनो, सीताजीनुंहरणकरवारूप महापापवडे निष्फलथयुंछे
सर्वप्रकारनुंबलजेनुंएवोरावण मारान्यायमार्गेचालनार, लक्ष्मणमात्रछे सहायजेमनेएवारामचंद्रजीए सकलपरिवारसहितकं-
पतुंछेहृदयजेनुंएवो तेरावण, लीलामात्रमांपरलोकपमाड्यो. इत्यादि. ॥ वली, आलंकापुरीमां खेचरेंद्रेकरावेला, घणा, भव्य
जननामनने मग्नकरनारा श्रीजैनदेरासरोछे. । तारपछीतेत्रणेपण, तेदेवोनुंवंदनकर्युं वलीतेमजआगलचाली अनुक्रमेपाछां
पोतानानगरमांआव्यां. । एकवारेवली कोइदिवसपश्चिमदिशमां गरुडउपरबेसी पूर्वनीपेठेचाल्यां. अनेरथकारे, सांभल्यामा-
त्रथीज आश्चर्यकारी, सकलपापनुंनिवारक, शत्रुंजय, रैवतकतीर्थनुंमहात्म्य, विस्तारसंबंधेमांहिकह्युं. तारपछीसांपणतेनेदे
वनुंतेमनेवंदनकर्युं. वलीविमलपर्वतनसमुद्रनिकटपांछे निषजेमनाएवानेमने उत्तरदिशमांचाल्यांत्यारे, त्यांकैलासछेअपरनामजेनुं

नानाप्रकारना आश्चर्यनो भंडाररूप, अतिसुंदर स्फटिकमणिनी शिलामय, आठयोजन उंचो, भरतचक्रवर्तिए कराबेली सिद्धनि-
षद्याए अनुपम एवा तेमना वर्णप्रमाण आदिके सहित एवी अतिशोभायमान महाप्रभाविक देवदेवीयोए भक्तिथी पूजेली एवी
स्फुरणायमान एवां श्रीनी रत्नमय श्रीऋषभ आदि चोवीश जिननी प्रतिमाने मणे सहित सुवर्णमय दिव्यप्रासादवडे शोभित उत्कृष्ट
शिखरने धारणकरतो अष्टापदपर्वत, तेनी धनाम पर्वतने, तथा शोभायमान अजितादि वीश तीर्थंकरना निर्वाणस्थानने विषे निपजावेला
दिव्य स्तूपरत्नमय प्रासादरूप तेवडे अतिशोभित एवो संमेतशैलनी र्थना प्रबंधने, वली आगलना भवना एवा सिद्धायतन आदि
अनेक आश्चर्यथी भरेला द्वार्ण्वतुंदरिसुंनेनेविषे श्रीऋषभदेवनी सेनाधीमंतृ इन्द्र श्रीभरतेन्द्र करेलुं, अदत्तालीश हजार विद्याप्रदान
दक्षिण अने उत्तर एवी श्रेणिमांना पचास अने साठ महानगरनुं स्थापन राज्यादि नमिविनोप्रबंध तेमज रथकारपंडितरूपा,
चलीए कहिये पूर्वदिशाने विषे पूर्ण निवेशगया. त्यां श्रीयुगादिदेव तीर्थंकरोना, जन्मादि अनुपम कल्याणकना महोत्सवथी
नाम धरावेला पंक्तिमानी समृद्धि जेने एवुं नगरना श्रीमद् एवुं श्री अयोध्यादि, तीर्थंकरनी जन्मादि भूमिनुं अतिशयवर्णनकर्यमने,
तथा ते रथकारे कहेला मांडलुं शांतिनाथ प्रमुख पण तीर्थंकर, सनत्कुमारादि चक्रवर्ति, चरमशरीरी पांचपांडव, इत्यादि उत्तम
पुरुषोनी उत्पत्तिनुं स्थान एवुं, तथा श्रीऋषभ देवाधिदेवनुं वार्षिक तपनुं पारणाने विषे श्रेयांसे आदि आरंभकरनार तेनो एवुं दान,
श्रीशांति, श्रीकुंथु, श्रीअरजिनोनुं मोक्षकल्याणक थाजेने चारकल्याणकनुं थवुं, तथा श्रीशांति, कुंथु, अर, मल्लि, तेमनुं समवसरण,
विष्णुकुमार महर्षिनुं लक्षयोजन रूप विकुर्वणा, साधुदेवीन पुत्रिनुं शिक्षण, सौधर्मेन्द्रनीव कार्तिकश्रेष्ठीए, परिव्राजकनुं परिवेषण
(पीरसवुं) तेने अर्थे, राजाना अभियोगथी (आग्रहथी) उत्पन्नथयेला वैराग्यथी एकहजार आठवणिक सहित परवरी मुनिसुव्रत
स्वामी समीपे जइ दीक्षा लीधी इत्यादि अनेक उतिहास महत्त्वनुं निधानरूप श्रीहस्तिना पुरनामे श्रीमहान तीर्थनी वर्णनाकरेसते

टीवि.ए.व,श्रीभरतजिनएवंजे पणआत्मानवो चक्रवर्तिपदनेश्रीतीर्थंकर पदाइमकारना रथनिकाने विशेषने) नामश्रीविस्मय पुण्यपदुंजेविषनेवुं एवांशरीराश्रयचक्रवर्तिनी समृद्धिकहीछे एमपुष्प,त्यारेमवंमकारे अनिष्टनिपुणदत्तारथद्वारनरजेकोकाय एएहुनवी,नेनेमाधवो. चक्रवर्तिनेउजेवरजनाएहुभरतक्षेत्र, नवनिधान,चउदरत्न, हाथ तेमांनवनिधानतुंस्वरूप आसकारतुंछे. तेनेश्रवणमात्रोद्धारनी गाथावदेस्पष्टछुं तेगाथानोअर्थ आरकारछे नैसर्प१ पांडुक२ पिंगल३ सर्वरत्न४ महापद्म५ काल६ महाकाल७ माणवक८ शंखनिधि९ एनामना, नवनिधिछे, ॥१॥ नैसर्पनवानिधिमां अनेकप्रकारनांस्थान, गाम,आकर(अ-मध्येनर, पट्टन,द्रोणमुख, मंडप, स्कंधावार, गृह,इत्यादिस्थानां स्थानछे ॥ २ ॥ पांडुकनिधिमां, गणितनुं,गीतनुं, मानतुं, उन्मानतुं, प्रमाणछे. तथाधान्यनी. बीजोनी,उत्पत्ति पांडुकनामा बीजानिधिमांरहीछे ॥३॥ जेजेपुरुषोनातथा स्त्रियोना,तथा घोडानातथाहाथीना सर्वअनेकप्रकारना आभूषणवेषना प्रकारोपिंगलनामनोत्रीजानिधिमांकह्याछे ॥४॥ चक्रवर्तिनाश्रेष्ठचउदरत्न इत्यादिसर्वरत्नोत्पन्नथायछे तथाविधानमं. दांत,कांगणि, निधिश्री,एचार. चक्रवर्तिनारत्नमां होयछे ६ सेनापति,गृहपति, पुरोहित,तथावार्धकी नगरनाश्रीरत्न, राजकुलसंबंधि मणिरत्नभूमि,तथाहाथी घोडा७ वस्त्रनीउत्पत्ति तथातेसंबंधी सर्वप्र-कारनीरचनाओनी सिद्धि.तथाजेओनी अनेकप्रकारनीरचनाविशेष जेमिद्धतेसर्वे पांचमामहापद्मनामे निधिमांहोयछे. ॥८॥ कालना-ए.निधिनेविषेज्ञान तथातीर्थंकरचक्रि वासुदेवबलदेवने वर्तमानअनेतेवे भावीकालअने भविष्यकाल, तेनुंज्ञान, तथालोक-कारनोहितनी,तथाउत्तमअधम अनेउत्पत्तप्रकारनीमजारोनां हितकारीकर्म (क्रियाओ) होयछे ९. ओहानीकानीसेना

प्रवालानी उत्पत्तिमहाकालनामानिधिमांहोयछे. १० योद्धाओनां नीआकर(खाणो) तेमनीउत्पत्तिनथा मणि, मोति,शिला, प्रवालानी उत्पत्तिमहाकालनामानिधिमांहोयछे. १० योद्धाओनां नीआकर(खाणो) तेमनीउत्पत्तिनथा मणि, मोति,शिला, प्रवाल
बगतर,डाल, तथाप्रहार करवानांसाधनतेमनी उत्पत्तिनथायवं युद्धकरवानीनीतिओ अनेदंडनीतिओ माणवकनामानिधिमां
होयछे. ११ नृत्यविधिनाटकविधि चारप्रकारना काव्यनीउत्पत्तिनथायवं प्रकारनावादित्रणप्पां शंखनिधिमांपनामानवमा
निधिमांहोयछे. १२ आठचक्रउपर (पइडांउपर) रहेलीआठयोजनउंची, नवयोजनपोहली, बारयोजनलांबी, एवीमंजूषाओ
(पेटारा) गंगानदीनामुख भागमांरहेछे. १३ तेमनांवैडूर्यमणिनां कमाडछेवलीसुवर्णमयछे, नानाप्रकारनांरत्नवडे भरपूरछेचंद्र
सूर्यतेवांचक्राकारचिह्नोदेखाइरहेलछे. एकपल्योपमनाआयुष्यवाला पुरुषदेवनेशुंएवांकमाडतेमनीउत्पत्तिएमाहेन,पल्योपमनीछे स्थितिजे-
मनी,निधिथीछे नामजेमनुंएवादेवो, त्यांनिश्चेरहेछे तेमनांआवास (रहेवानांस्थान) छेतं,अनेतेदेवोनुं, कार्यरहितपणुंअधिपति
पणुंअमूल्यछे. ॥१५॥ एमरत्नसारोद्धारनी गाथाओनीअनुक्रमे कोइकल्पवाळ्या, आप्रकारनीछेके—नेगांपआदिनवनिधिमां
शाश्वताकल्पपुस्तक रह्याछे तेमांसमग्रजगतनी स्थिति, व्याख्यानकरीछे. तेमांजेनिधिनेविषेजे व्याख्यानकर्युछे तेनेकहेछे १.
दसहजारकुलवालुं ग्रामकहीए. तेमांक्षत्रियादिकनी उत्पत्तिथनीहोय तेनेआकारकहीए. जेमांराजानेंब्यां योग्यपणोकरवगन
जेयालोहोय, तेनेनगरकहीए अथवाराजधानीहोय तेनेनगरकहीए. जेमांजलमार्गअथवा स्थलमार्गएवेणाथी एकहोयतेनेपत्तन
कहीएअनेजलमार्गने स्थलमार्गएवेहोयतेने द्रोणमुखकहीए जेमांअढीगाउनीअंदर अन्यग्रामनहोयतेने मंडपकहीएज्यां ल्लाक-
रनोपहाडरहेलो होयतेनेखेटकंगगारकहीए चशब्दनुंग्रहण करवाथीआपण पणकहीए. ।एग्रामादिकनुंअन्यथा प्रकारनुंपण
व्याख्यानकेटलाक करेछे. । तेकहुंछेके—वाडथवडेवीटेलुंहोय तेनेग्रामकहीए घणाचारेपासदरवाजावडे शोभतुंनगरकहीएनदी
पर्वतइत्यादिकथीवीटेलुं होयतेनेखेटकहीए पर्वतेवीटेलुहोयतेने कर्बटकहीएपासेल्यो हजारग्रामवडेयुक्त होयतेनेमडंब(मडब) कहीए

[illegible] होयतेनेवमनकरीए मयूरनीचेना(मीमाहो) आवतो होयएटले तेणेजीहंतुहोयतेनेद्रोणकहीए पर्वतनाशिखरचढे जीहंहोयतेनेआढक कहीए । दीनार,मोहरो (रुपैआपइया) मोपारीफलइत्यादिजे गणवाजेवां, एकबेत्रण, इत्यादिगणवा योग्यवस्तु छेतेनेगणिमकहीए त्रावमयतरहे पाटकराय,मबधांने गवाय,तेनेगणितकहीए मानएटलेमीनकादि, अर्थात्मेरवमेर इत्यादिकवायछे, भावनाएकमापवा योग्यधान्यादितेनेमानकहीएउन्मानएटले तुलाकर्षादि,तोलवु, जेमधारकर्पनुंएकपल, उन्मानप्रमाणवाय इत्यादिजोगवुतेने उन्मानकहीछे बीजयथा धान्यमनुष्यधान्यनी देशकालथीयतेत एवीउत्पत्तिकेनांनिपज एवीशोधनाधायीचार गाथानोअर्थकर्योछे पाठग्रंथकारकहेछेकेनथीलख्या ॥ सर्वभक्तिकेनांसर्वएवावस्त्रादिकमांरंगवा विशेषधारणकेवा यजीटकमुकोहयादि रंगनोविशेष.आगमे वातुकेनाचीदुप्रमुख जाणवु । जगतमांजेनवंशएटलेतीर्थंकरना भवभीवलदेवप्रमुखत संबंधीजाणवा. । तेमांभव्यकेनाथमे अनंभाविकेनांजुनाथइगयेल्या, उपलक्षणथीवर्त्तमानएण जाणवा. । शिल्पशतएटले कुंभारनोकमव१ लुहारनो२ चितारानो३ वणकरनो४वाइजानो५ एपांचप्रकारना शिल्पनेनाप्रत्येकवीश वीसभेदथीसोप्रकारनुं शिल्पकहेवायछे कर्मकेनाखेतीवेपार इत्यादिजघन्यमध्यम उत्कृष्टएवाभेदवडे त्रणप्रकारनुंकर्म, ९ ॥ शिवाकेनाककशिवादि शिवाजाणवी १० भावरणकेनांबखतर, वेष्टकेनांहारलप्रमुख, (गोफण) इत्यादि। चक्रव्यूह,इत्यादि एहारचनुंछेप्रमाण जेनुंएवीयुद्धनीनिपामाप्रदानप्रमुखनाप्रकारनोदंडनीति ११ युद्धिांगकेनांवादित्रएसर्वनीउत्पत्तिएपांक- हेवायछेपनेबीजा आचार्योआपूर्वेकहेलो सर्वपदार्थसर्वएवाएटले नवएवाणमनिधिनेविषे साक्षात्उत्पन्नथायछे, एमव्याख्या- नकरेछे. १२ चवेकआठचक्रमाळे रहेलुंजेनुंतेजगाए शाकत्पाथी अष्टशब्दनो परनिपातथयोछे. आठयोजनउंचाएगुछे जेमनुं पेटीआमंजूषाउरमां रहेलानांवमंजूषाप्रवशादिनाभाजनवडेनो जिनकपांपछी चक्रवर्तिनीजोढेपाताळमार्गे चक्रवर्तिनानगरमां

आकाशनेविषे निरूजेवा नमानछेद्वारयइनानेपनी, १४ आवासकेना आश्रयस्थान,
रहेठे.ऐहूर्यमणिनाछे कपाट जेनां सूर्यचंद्रना आकारजेवाछे निरूजेवा नमानछेद्वारयइनानेपनी, १५ एमकारेनवनिधिनुं द्वारकहां.॥
अनेअधिपतिपणा निमित्त मकरछेइहां जेपनुं अधिपतिपणुं मूल्यवदेमाप्तथयुंनथीए पामछे.१६ एमकारेनवनिधिनुं द्वारकहां.॥
सेनापति आदि चउदरत्न जाणवां तेमांसेनापति,गंगाअने समुद्रतेनापरपारलोविजयकरवानेसमर्थ, चक्रवर्तीनथी हणातीशक्तिजे
नीएवो. १ गृहपतिनोघरमांयोग्य एवाशालि प्रमुख (डांगरविगरे) सर्वधान्य,फळ,शाक, आदिवस्तुनेतत्काळ संपादनकरतो
समग्रचक्रवर्तीना कटकनूं पण अवसरे अवसरेपूरूंपाडनारएवो. २ अनेपुरोहित,सर्वएवा क्षुद्रउपद्रवनेनीउपशांतिनो करनारए
वो. ३ अतिशेवेग अनेपराक्रम तेणेसहित एवोहाथीतथाघोडो. ५ तथावर्द्धकिरत्नतो, समग्रचक्रवर्तिनुंसैन्य, तेनेपणजेपजेमजेगे
भवन(घर) विगरेनीरचना आदिजोइए तेसर्वनुं तत्काळसंपादन करीआपवामां महासमर्थ, तथाउन्मग्ना अनेनिमग्नानामेतेप-
हानदी अंनीसुगम एवीपद्याकेना पंथा,पगथीयां, इत्यादिनीरचनानो करीआपनारोएवोजाणवो. ६ सर्वस्त्रीमांपणी अतिशेअ
विकएवाकामसुखनुं निधानएवीस्त्रीरत्नजाणवुं ७ अनेहजारछेआराजेनी, वामप्रमाणं,सर्वआयुधमां प्रधान,कोइनगाणेनिष्फळ
नथतुंएवुंचक्ररत्नछे. ८अनेव्यामप्रमाणछत्ररत्नछेतेपकर्वतिनाहाथनोस्पर्शमात्रथवाथीबारयोजनविस्तारपामेएवुंतेनादश्यवंतना
उत्तरभागमांरहेलाम्लेच्छोने अनुरोधिरोफ्लार मेघकुमारेपुकेलोजळधाराने निवारणकरनारछे, नवाणुहजारसोनानीशळीयो
तेणकरीयुंथएलुंसहेलुं, सुवर्णमयमोटोदंडतेणेशोभतुं. ते, पश्चिमदेशमांमध्यमदेशमां पंजरवंडनोमतुं, अर्जुननामनुमथानपांडुर
सुवर्ण, तेणेकरीव्याप्तथयेलांछे पृष्ठभागजेनाएवुंने, सूर्यनोनदकोवायुरुष्टि इत्यादिदोषनुंनाशकरनारछे । नवरत्न. वेढायमां
पनुंछे, वेनाव्यवर्तनीउर्वरादिशेवर्तता म्लेच्छोएकरावेली एवीमेघवृष्टिथयेसते स्वामीनाहाथनोस्पर्शमात्रथवाथी बारयोजन
विस्तारपामतुं. आकाशनेविषेरहेलुं, उपरछत्ररत्नवडे आच्छादनकरेलुं, सकळचक्रवर्तिनीसेनानालोकोने पृथ्वीपिंडे आधार-

रणधनुं. अनेप्रातःकालेरात्रे, तेअपराह्णकालमांनिष्पन्नथनोएवोशालि (डांगेर)प्रमुखधान्यनीउत्पत्तिनुं निमित्तरुपएवुं. ॥१०॥ मणिरत्नचारआंगललांबुं, बेआंगल्पहोलुं. वैडूर्यरत्नमय, त्रणखुणावालुं, छत्रनातुंबमांरहेलुं. हस्तिनास्कंधउपर रहेलुंसतुंबार योजनप्रकाशकरेछे. क्षुद्रएवाउपद्रवनोनाशकरेछे, तेहाथमांराखेसतेशाश्वयवुंछे यौवनजेनेएवोथाय. अनेअवस्थितरह्याछेकेशनख जेनाएवोपणथाय ॥११॥ काकिणीरत्न, आठसौवर्णिकसोनैयाजेवुंभारेछे. चारअंगुलप्रमाणेछे. समचतुरस्रछे चारेखुणेसमान छे. सर्वविषनेहरनारुछे. तमिस्राखंडप्रपाता एवेगुफानुंबारयोजन अवधिवालुंअंधकारतेनुंहरणकरनारुछे चक्रवर्तिपरात्रिनेविषे सैन्यनीपरचेधायुंहोयतो सूर्यनीपेठेप्रकाशनेकरेछे. चक्रवर्तीतमिस्रागुफामां पूर्वअनेपश्चिमभीत्योनेविषे, प्रत्येकयोजननेआंतरे पांचसेधनुषलांबापोहला, एकयोजनपर्यंत उद्योतकरनारा, चक्रनीनेमिकेतांधारानेनाआकारेगोल, गोमूत्रिकानाक्रमेनीचाउ- चां, एकभीतनेविषेपचीश, अनेबीजीभीननेविषे चोवीश, एमओगणपचासमंडलोने, तेकाकिणीरत्नवडे खडीनीपेठघसेउल्ले- खनकरतोकरनागतिकरेछे. भरतखंडनाअर्द्धनेविषे, दिग्विजयकरवानेअर्थे, जेटलोकालचक्रवर्तीरहेछे तेटलाकालसुधी, तेमं डलोपणरहेछेनेगुफापण तेटलोनकालउघाडीरहेछे एमखंडप्रपातगुफानेविषेपणजांणवुं. ॥ १२ ॥ खड्गरत्नबत्रीशअंगुलप्रमा- णनुंछे. संग्राममांनथीहणानीशक्तिजेनी एवुंछे ॥ १३ ॥ दंडरत्न, रत्नमयछे. पंचलताकेतां (पांचफणसावालुं) एवुं, वज्र- सार, व्यामप्रमाणनुं, शत्रुसेनानेविनाशपमाडनारएवुं. विषमअनेउन्नतएवा भूमिभागनेसमपणुकरनारुं, शांतिनुकरनारुं. मनोर- थनेपूरनारुं, सर्वजगाएनहणातुं, हजारयोजनपणनीचे प्रवेशकरनारएवुंछे. ॥ १४ ॥ चउदेए, कहेलांरत्न, तेनाअधिष्ठायक; प्रत्येकनाएकहजारयक्षोछे. एचउदरत्नमां मानरत्नसेनापतिआदिक, तेतोपंचेंद्रियछे. अनेचक्रप्रमुखसातरत्नतोएकेंद्रियछे. पृ- थ्वीनापरिणामरूपछे. ॥ एमकारेचउदरत्ननुंस्वरूपकह्युं. ॥ चक्रवर्तीनेसोलहजारयक्षो सेवाकरनारहोयतेमां चउदरत्ननेविषे

प्रत्येकएकएकहजार, अनेएकएकहजारचक्रवर्तीना स्कंधनेविषेवसेछे. बत्रीसहजारमुकुटबद्धराजाओनां चोंसठहजार
अंतःपुरनीस्त्रीयां एकलाखबाणुंहजारवारांगनाओ. बत्रीसहजारदेशो, बत्रीसहजारपुर. बहोंतेरहजारमहापुर. अडतालीसहजार
पत्तन. नेवुंहजारद्रोणमुख छत्रीसहजारवेलाकुल, चउदहजारनलपथ, एकवीसहजारसंनिवेश. बत्रीसहजारमहानगरीओ. सोल-
हजारराजधानीओ. सोलहजारखेटक. चोवीसहजारमडंब. नेव्याशीकर्बट. चउदहजारसंबाधन सोलहजाररत्नाकर. नवाणुंहजार
सुवर्णादिआकार. वीसहजारसामान्यआकर. सोलहजारद्वीप छप्पनअंतरद्वीप छन्नुंकरोडग्राम. ओगणपचासहजारउद्यानओ.
गणपचासकुराज्य. सोलहजारम्लेच्छराज्य. चोराशीलाख, हाथीघोडारथोमलीनेजाणवा. छन्नुंकरोडपगेचालनारप्यादलो.
सर्वसैन्यमांसोअढारकरोडयोद्धा चउदहजारमंत्रीश्वरो. हंशीहजारपंडितो, नवाणुंलाखअनेसूत्रधार, मलेक, चोराशीहजार. नि-
योगीओकोसणकरोड. पांचकरोडकौटुंबिको. सणसेसाठरसोइया, चक्रवर्तिनीभोजनसामग्रीनाकरनारा. वीसहजारसोइआतो
वीसकरोडछे छत्रीसकरोडआभरणनाधारको. चोसठहजारकल्याण अनेमहाकल्याणनेनाकरनारा छत्रीसकरोडअंगमर्दकने-
षको. सणलाखमग्गधारको. पांचलाख, मशालोधरनारा. सणकरोडवादित्रो, चोराशीलाखनिशानो. दशकरोडपताकाधोय-
वीसहजारसर्वप्रकारनाटको. सणलाखभोजनस्थानो. बत्रीसकरोडकुल, एककरोडगोकुल. सणकरोडहल. अढारश्रेणिओ,
अनेअढारप्रश्रेणिओ. शेठ, सार्थवाहक, मांडलिक, पहगर, अंगरक्षक, स्थगिकाविगकेता फुलनीछाबडीओनाझालनारमा-
लिकोको. सौविदल्लकेनांगिपाल्यांको, महामंत्री, प्रतीहार (द्वारपाल) महामात्र (महावत) स्वारोसारथि, कथक, नर्तक
दूत, आदिअनेककरोडसंख्यावाळाहोयछे गंगाअनेसिंधुएबंदेवीओछे. । खंडप्रपातअनेतमिस्रा एबेनामनीगुफादेवीओछे.
मागधअनेवरदाम, प्रभासतीर्थ, एत्रणनादेवता. हिमवंतपर्वत, अनेऋषभकूटपर्वेना अधिष्ठायकएबावेदेवता एमकारेचक्रवर्तिनी

ऋद्विनुंस्वरूपवर्णवुं. ॥ ॥ ॥

इत्यादिनिरुपेअपूर्वअपूर्व रमणीयपेनतरर हजारोअतिशेआश्चर्यकारी एवाइतिहासप्रबंधनुंश्रवण करवुंनेथीथयोजे आनंद अनेविस्मयतेवडेएक पूरायुंछे, हृदयमध्यमेनुंएवो, तेराजातेनतुरएरा कोकाशप्रत्येबोल्यो. हेमोटाभाग्यशालि, तमोएआमकारनुंभानीर्थनुं माहात्म्यकियेप्रकारे जाण्युं. ॥ त्यारेकोकाशपण बोल्यो.हेदेव, सोपारपुरनेविषे रहोसतो, गीतार्थएवाअनेशोभायमानएवा, जैनशास्त्ररूप मोटावननेविषेप्रवेश करवामांनिरमणएवा मुनीन्द्रोथीआसर्वमृत्तांत, मेंसांभल्युंहतुं.केमकेसाधुपुरुषनीसेवा,परिणामे कुशलतानीदृढताने फलेछे,आपेछे, देशादिकनीसेवाघणाकाले फलशालीथायछे परंतुसद्गुरुनीसेवातो देवलतानीपेठेतत्कालफल आपेछे,तेकयुंछेके–सिंहनीगुफामांथीएजेथीमोतिं,हाथीदांत, मलेछेशीयालने घेरजइएतो, कोइजनावरनीपरीअथवाचांमडानोकडकोमले.॥१॥एमकारेसाधुगुणनुंवर्णनतेआदरपूर्वककांनदेइसांभलतोराजा, अक्षयएवाद्रव्यभंडारनीपेठेदुर्लभ,अनेउत्तरकालमांशुभकारकएवाअरिहंतनासाधुनेविषेअतिशेबहुमानतेधारणकरनारएवोजथयोसंगतिनावशथीअचेतननो पणतेप्रकारनोपरिणामथायतो सचेतननोथायतेमांशीनवाइ कांइनवाइनथी. तेकयुंछेके–केटलांकतुंबडांयतिना हाथमांआवेछे तोतेपात्रपणुंधारणकरेछे. केटलांसारावांसनी साथेसंलग्नथयेलां,तंबुरोएवानामनुं धारणकरीरसरहितमधुरगानकरेछे. केटलांनारीसूतरनीदोरीओथीगुंथइने. दुस्तरजलनेतारेछे. केटलांकवलनाहृदयजेवां लालथइरक्तपानकरेछे. ॥ एमकोकाशनीसहायताथीशत्रुपुरमांजवुंते वैरिनेअकस्मातशंघयो इत्यादिवडे मोटावैरिराजानेपण गोवालियानीपेठे लीलामात्रमांवशकरिने, एकछत्रधारीपृथ्वीमांछे. एवुंनामविख्यातकर्युं. ॥ तेकयुंछेके–सामान्यएवापण मित्रनुंमित्रपणुं, अतिमोटुंहोयछे. जेमवानरनीसहायताथीरामेरावणीजत्यो. ॥ १ ॥

एकदिवस, पांचसेंसाधुएवीटंख्या, अतिशयमहिमावडेदीपायमानथएलएवा, श्रीधर्मनंदसूरीश्वरजीनी वंदनानेमाटेअतिश्रेष्ठ-
रकंठावालो, हर्षथी, मेघलिवनोपतिनेकोकाशनेनीनाधिपतिआडंबरथीयप्राजागयो. त्यांगुरुनेभक्तिपूर्वकवंदनाकरीपोतानी
तानायोग्यस्थानकेपरिवारसहितबेठो. गुरुएभव्यप्राणियोना श्रवणनेअमृतसमानवान धर्मोपदेशकरवाआरंभ्यो तेजेमके-गर्व
नगारीसमाणिपायनेगुणपामवानीइच्छाछे. तेगुण, आल्गेकतुंनपापरलोकतुं एववेवकारनुंधर्मथीपजेछे माटेधर्मनुंजसेवन
करवुं. ॥ १. ॥ अन्यदर्शनिनाधर्मोउत्कृष्टछेनलेवाछे तोपणतेपनाकतेनोपिते निर्णयादपगुणे नतेनधर्मनोपुरुकरवापणं पेहनीवेछे
फलनेविवेचिसंवादीनथी एथीतोनिश्चेगुणकल्याणकल्याणछे. तेधर्म. श्रावकअनेसाधुएवाभेदथीबेप्रकारनोछे. इत्यादिविस्तारसहित
तेमणेधर्मदेशनाआपी तेथीबोधितोराजाविचारतोहतो. पोतानीश्रद्धावडे समकितछेतुंसमजुंएवुंश्रावकनावारव्रत तेनपोतानीशक्ति
प्रमाणेअंगीकारकर्यां तेमांदिगिरमणव्रतमां कोकाननीमहायवनाथी शेकडोयोजन, एकदिवसमांजवागमनछे तोपणनिर्विघ्नप्र-
माणेअंगीकारकरेला
नरात्वारराजाए, एकादिनमासेयोजनथी अधिकनजवुंएवोनियमकर्यो. साराश्राद्धधर्मनी समकृवासनापूर्वक, अंगीकारकरेला
प्रसमापथीज, अपरिमितवस्तु. घणाकालथीसंचयकरेलुं, कर्मरजनपेछ, अर्थात्नाशथायछे वली (धर्मथास्थिरकरवानेअर्थेजे
उपदेशकहेवोतेनेउपबृंहणाकहीए) गुरुएआमकारनावचनवडे, तेधर्मधारणकरनारराजानी उपबृंहणाकरी. तेवाणीकेवीछेके-जि
पनेपाणेईपनीपोटीनदी, जेगंगानदीनेनाजशगुरुने अनुमतीएट्लेजलजेवीमहाशांतपनांहरछे. तेवाणीनाविस्तारवडे, मच्छ-
लिवहेमोटाएवागुरुए, धर्मग्रहणनीपुष्टिकरी तेपगलाम्नमांकयुंछेके-धर्मलक्ष्मीनेस्थिरकरवामाटे उपबृंहणाकरवीते, मूलविनानो
मंत्रछे. दोरविनानुशृंगलछे, एटलेशक्त. महाबलवानुंबंधनछे. एजकारणमाटेउपबृंहणा तेदर्शनाचारनुंअंगछे. एवसत्वनेदीपु-
रूपोएकयुंछे. (निःशंकितइत्यादिगाथावडे) आठप्रकारनोआचारकह्योछे तेमांउपबृंहणापणगणायीछे. माटेप्रकारेपाहिरवी

करेलीउपगृहणपदेधर्मरंगनेधारणकरताराजाप्रत्येआनकारेगुरुबोल्या, हेमहाभाग्यशालि, चिंतामणिजेवोधर्ममात्रग्रहणकरवा
थकीवांछितकार्यनी सिद्धिथतीनथी. एतोविधिएसहितव्रतनुं आराधनकरवाथीजथायछे. । अनेआजीवतोअतिशेप्रमादीछे. ने
विशेषकोनेतोमेंदुंगण्यइत्यादि कनोमोटोव्यासंग (धणुकाम) राजानमुखहोयछेत्यांधर्मकार्यनांप्रमादहोयप्रमाद, घणा
मयत्नथीपणग्रहणकरेला अनेद्रव्यभावएवाबेभेदथी साररूपएवाधर्मनो, हेलामात्रमांसंहारकरवाने अग्निसमानछे तेमाटे आ
लोकपरलोकमांभांतनो अनर्थनोआपनारछे. तेकयुंछेके–विषअथवाअग्नि. तेतोतुच्छनाएकजन्मनोजविनाशकरेछे, पणप्रेतन
करेलोप्रमादतो मनुष्यनाशेकडोजन्मनोनाशकरेछे ॥ १ ॥ माटेभव्य दिवितडेविरंतनविस्तरगतथायएकारे जेणेव्रतधर्म
ग्रहणकर्योछेतेणेतोआराधनकरवो. अतिशेअलपएपण, अतिचाररूपकलंकडे तेधर्मनेबाधनकरवो एमकारेआराधनकरनागृह
स्थपुरुषेपण, मोक्षमार्गसाधवायोग्यथायछे. इत्यादिशिखामणरूपअमृतवृष्टिवडे संतापवाळुंथयुंछे हृदयजेनुंएवोराजा पोताना
मंदिरमलेआव्यो परस्परएकबीजानेबाधनकरे तेमधर्मअर्थअने कामएत्रणपुरुषार्थनेसाधतो, सर्वप्रकारेपरमामित्रएवाकोकाशनी
साथेपरमसुखपयथथेथोपगाळ, एराजाएअतिक्रमणकर्यो पछीएकदिवस, श्रुएराकोकाशनोसाथे, यशोदेवीनामेपटराणीए
सहितगडउपरबेठोनेकोइदिशे, कौतुकजोवानेअर्थेराजाए जवानीतैयारीकरीनेमधे, तेकार्यमां, कृत्याराक्षसीनीपठे, अनर्थ
करवानेइच्छती, विमलानामेराजानीबीजीस्त्रीए, मथमथीजरण, शोकनुंरहुसानदेवो, अतिअद्भुतांमेजीइर्ष्यावडेमदीसम-
येजारोपवाळीहती. तेणीएबेरअभानपारनोविचारकर्योके–आदरणीएपपवीएनमाशिरवशकरीलेतेर, आराजा, वश
कर्योछे, माटेएजनेराबेलइजायछे, पणमनेनोस्यारेणकइजाणतथी, एवीअणमानीनीकरीछमाटे, तेनोएकउपायकरुंके, एराजा
पणमाराअपमाननुंफळभोगवे. एमकारेस्त्रीजातिनास्वभावने शुलभतुच्छबुद्धिवडेएकसुथारनेछानोबोलाव्यो. अकार्यकरवामां

पणमेंकेंसुंसारुकामकर्युंछेएममाननारीनेस्त्रीए, तेगरुडमांपाछुंवेरभावतुंएवीकीलिकानेठेकाणे, तेनाजेवीएकनवीकीलिका (खि-
ली) करावीने, जेखिलीनामयोगवडे पाछुंवली अनागएवीविद्याकरवी तेनेकोइजनाणपुमकरी, तेनेठेकाणेवलीखीली पूर्वनी
पेठेस्थापनकरावीकोइनजाणेएम एकामांनविघ्नपणेसंपूर्णकर्युं. तेकयुंछेके–उन्मत्तथयेलीभिमनागर्वथी जेकामथी भोआरंभेलो
कामपवित्रकरवाअसाधारणसमर्थथतोनथी. ॥ १ ॥ तारपछीउत्साहथीतिथीनथीजाणुं कीलिकानुंरूपजेणे एवा कोकाशनीये
पाछेपूर्वनीपेठेगरुडउपरबेसीराजा अनेतेपटराणीकोइदिशमले आकाशमार्गेनाखवा. जेटलाकथोडाकालवडे नगरनवाकांनुक
जोवानवानवांन्तोकथीनृपान सांभल्वाकुतूहलकरवांइत्यादिवडे तेराजाएयगोमार्गउल्लंघनकर्यो तेटलामांहारग भाणेला दिक्-
मर्दानयमवडेसंभ्रमसहितकोकाशमल्येबोल्योके–भोस्वामिन. केटलापोजनआपडेआव्याहइस्युं ? तेपणओफमन कहाननेपार-
गनहतोमाटे तेनेसानथीदेवीनेनिर्णयकरीने राजाबल्येबोल्यो. हेस्वामिन्ननिश्चयवडेयोजनअतिक्रमणथयां. तेवचनसांभलीकरवन
मेहरूपायोहोय, एमदुःखितथईछेचित्तवृत्ति जेनीएवोराजाबोल्योके–अहो गरुडनेपाछोवाल्य पाछोवाल्य. लगारमात्रपणविलंब
नकरीश एमशोककरवावंदा हाहाणारामोटापापनासंग्रहकर्यो जेआकर्षणतेणेकरीनेथयोजेमोटोव्याक्षेप, आकुलव्याकुलपणुं.
तेथीविक्षेपनालुपथपूछ्यननेतुंएवोजेहुं, तेंमाराअनियमनोभंग, कामकुंभनीपेठेमिथ्याजकर्यो. मोटाअनर्थनीछेप्रवृत्तिजेथीएवीअ-
मानमानरणाएररीतिनेधिक्कारथाव. मछानथीदूरराजोवनीपूहनानेधिक्कारथाव. कुतूहलछेनियजेनेएवोमाणि कुतूहलमांलेना-
वाथीउत्कृष्टोपोतानोहितकारीअर्थ पणमिथ्याजनाशकरेछे. अतिशेमोटाएवापणसंसारनेविषेपूर्वेनपामेलुं, मोक्षनकालमांअनुपम
एवुंरपामहातनुभव्यपणुं. तेनाउत्कर्षपरिपाकपणावडेमातयवेजाअतिशे निर्मलएवाधर्मरत्ननुंपणमलिनपणुंकर्युंइत्यादिबोल्यो,
अने सर्वस्वहरणथयुंहोयनेनुं. एमअतिशेशोककरतोराजाथयेछने, कोकाशपणउद्वेगसहित मोटावहाणनीगतिनेजेमपवननेगरु-

इनीगतिनेकोइमकारेरोकीने तेनेपाछोवालवानीकीलिकाने हाथमांजेयीध्छेनेवामांआतो तेकीलिकानहीअन्यछे एमनिश्चय करीभतिचिंतामांव्यासथयुंछेमनजेनुंएवाराजानेआमकारेकहुं. हेदेव, दुष्टदैवनावशथीकोइये आकीलिकानुउलटपालटकर्युंछे. निश्चेआमारीकीलिकानथी. अनेआकाशगमनशक्तिनाजेवी मारीकीलिकाविनाआगरुडने पाछोवालवाइसमर्थनथी. माटे, हवे हेराजन्आमगाएकजउपायछे, के-आआगळदेखातानगरमां जइनेत्यांकोइसुथारनेघेरजइनवी कीलिकाघडुंतोतेनाप्रयोगवडे, निर्विघ्नपणुंगमनकरीशकाय, अन्यथातो, निश्चे. आजगाएपननमुखअनर्थथशे, तोतेमांजीवनानोपणसंशयथशे. एमकारवुंने कोकाशनुंवचनसांभळेसते, जेममुखेमिष्टजगातुंअनेपरिणामे दुष्टएवाऔषधनेविषेज जेमएमअरुचिपणाने हुंकारमुखकरवावडे देखाडतोराजातेकोकाशमत्येबोल्यो. आतशुं !!! पोतानाआत्मानेअनुचित, नकहेवायोग्य, नसांभळवायोग्यतुंबोलेछे वि- शुद्धएवाधर्मनामर्मनेस्पर्शकरनाएवा, तमाराजेवापणज्यारेआमकारनुं धर्मनाशकएवुंवचनकहेशेतारेहंनइतिखेदएटले आनातखे- दकारकछे. तो, सर्वएवीपणधर्ममर्यादाआश्रयरहितथशे. मतिभरमुलभएवुंआलोकनुंजीवितसारुं, आलोकनासुखादिमाटे, अ- नंतभवडेपणदुर्लभएवुंपरलोकसंबंधिपाथेयरुप (भोजनकरवानुंभाथुंहोयतेनाजेवुं) पोतेअंगीकारकरेलाधर्मकर्मने, माराइदे- शमांकोइनकारेमासथपेला कल्पवृक्षनीपेठेमूलमांथीकोण मूढात्मापुरुषउखेडे. जेमाटेअणविचारेला आविपडेलाव्यासंपमुख- वडेनियमनोभंगथयोतेनोअजाणपणेथणो एवोपणतेथायनोअंगीकारकरेला व्रतनुंमलिनपणारुपअतिचारजकहेवाय, परंतुजांणी जोइनेअतिअल्पएवोपणनियमनोभंगकर्योसतेनोअंगीकारकरेलाव्रतनोभंगजकर्योकहेवाय. माटेअतिचारवडेखंडनकरेलाव्रतनेतो काचाघडानीपेठेसुखेसांधवासमर्थथवायपण.भागेलापाकाघडानेकोइमकारेकोइबुद्धिवान्पणसमर्थनथाय.वळीसचेतननेव्रतनाअ- तिचारनुंकारण,प्रमादवडेआचरणथायनेजछेनेपणअतिअपदमुंछे.परंतुजांणीजोइनेनियमनोअतिक्रमकरेनोतो,नतेनीपणचूलिका

परंतु आणीन काळना मध्यापनोपण आगळ एकपगळुं गण थइ, एटलेवन भंगउपरांनिगरथनुं, तेमाटेने अनिचारणयाछेनेटलेजीपंधरहो, अनेतेआगळ पगलुंभरवानी अनुमोदनापणकुंनथी करतो अंगीकारकरेळा व्रतनोनिर्वाहकरवोएजमोटापुरुषनेघटेछेअने अंगीकारकरेलानो निर्वाहकरवोएजमोटा पुरुषनुंलक्षणछे अनेवीजानेतो अंगीकार करेलामांपण शिथिल संबंधमकारेजराप नही. इत्यादिकमांकरेली रेखानीपेठेपोताना व्रतादिकछे, परंतु मोटापुरुषनातो, ते पाषाणनारेखा पणुंहोयछे. ॥ जळ,पूज्य,पृथ्वी, शेपनाग,पर्वत धारण करेलीपृथ्वी पृथ्वीपणकदापिचं कर्यांजेपोनिश्चळछे. ॥ १. ॥ तेटलुंजके—दिग्गज, काचबो,कुलाचळ, शेषनाग,पर्वत धारण करेलीपृथ्वी पृथ्वीपणकदापिचं चळताभलाथी ॥ २. ॥एज कारणमाटे कर्यांजेपोनिश्चळछे. ॥ १. ॥ एम दिग्गज, काचबो,कुलाचळ, युगांतकाळमांपणचळे नहि ॥ २. ॥एज कारणमाटे वनथाय,तोपण, अचळमनवाळा मोटापुरुषोए अंगीकार करेलुंव्रतादिकतो, युगांतकाळमांपणचळे नहि ॥ २. ॥एज कारणमाटे अनेउपायनोत्याग करीआगुरुदंतपणो वाळवानेअर्थेपरानर्पत करेलीएटले, सानीकुळीनेमृत्युले, अनपयापेली, वानीबाज कुळीनेजोडो,कदापि दैवयोगथीएज कुळीनहे,आगहदृथोडांपणपाळोवळीचाले. । एम हारतुंराजानुं अब्द्रत मचनसायेलीअयंत यवहारानेवधुंठे चिनजेतुंएवोकोकाश, विचारेछेके—मारा विज्ञानथीपण अतिशेनिज्ञानवाळुंजे चितजेतुंएवारामानुं (कदेर फटे) केटलुंकेटलुं धर्मनेविषेदृढपणुं तोहंगो, केटलुंघणुं वधारेछे,(वधुरेवधुरे) थायरेयावे, जेनीउपमानथीएवुं तोएराजानुं मात्रिकपणुंछे. निष्कपटछेचित्त वृत्तिजेनीएवा आराजानीजीववानीपण अपेक्षानथी (कट,कट) क्यांकया !!! आकेटलीवधी आश्चर्यकारीक्रियाछे अहोभदोएराजानुं मोटुंउत्साहपणुंनो विचारो,केपोतेग्रहण करेलाव्रतनुंपालनकरवा माटेइत्यादिअंतर मापणीनर्दापाकरवाणी नत्वाएरीतेकाश, तेमकारनाढ़धर्मवाळो राजा,तेनानियमनुं अतिक्रमनथायएवुंजे आमळागमनकरवुं तेविषेनीजेउपदेश दया,तेथकीउत्पन्नथयेली जेलज्जा,तेनावशपणाथी नीचुंकरीछेमुखजेणे एवोकोकाशगो, परंतुशुंकरे,तेवख नेकोइअन्यगति नथीमाटेपछीतेणे केवळदैवाधीनपणुंज अंगीकारकरी,मघम जोडेलीजेगमनकरवानी कीळिकानेकाढीने,ते-

दवाकपावदछेली तेकीरिकानेगहदने पाणीवालवाजेोहछे तेदछारूमांज, तेगहदनीवेशांमो, मंधाथेजमीचाइगाके, तुरतइंद्रना वम्रर्धाउंडाछे पाणपोजेनीएवा परंतनीपेठेआकाशनभ्धी पदतानेगहदनीजेोटेज दुष्टदैवनाविधासनेवश थइनेराजाआदिथे- भेवणदाराशर दरवामां ररर धपामगामरणपाम्या होयनेगुंएमनीचेवढ्या. परंतुपूर्वनाकांइक शुभकर्मवडेमरेवरनाराणिउपर एवरापीसंदन नथवेनपिडाएवाहिणछे समग्रभंगजेमनां एवांनेशेणजयनरवानी क्रियानेविषेपारंगत एवां अदीनशत्रुचिवडे एटले मारवानपणे जयवरनीपेठेतरनो तीरदैअनेमासथया. ॥ तेकयुंछेके—वनमांरणमां शत्रुमध्येअग्निमध्ये मोटासमुद्रमध्येपर्वतनाम- स्तकउपर, अथवा,सुतेलाने,प्रमत्तने, विषमस्थानमांरहेलाने पूर्वेकरेलांपुण्य, रक्षाकरेछे ॥१॥ त्यांसमीपेरहेलुं एकनगरनेदेखी, राजारेकोकाअने आमकारेकहुं । हेमनेवरांअंग लक्ष्मीनीरचनावडे लोरपोलेंडुंआनगर कियुंछे. । कोकाशाण हेस्वांकहि इवहेमोलीवोल्यो. के-हेदेव,देवतातुल्यअने नदीमातृकइत्यादि मोटागुणवडेगांरव पामेलीलक्ष्मीवंत, एवाकलिंगनामे देशनीउ स्वीलएरीनानुवर्जु प्रोशरमवान, कानतुल्याये आनारउ आमर्वनगरोमां मशानछे.कनकमनामे कलिंगराजानी राजधा नीछे काचेनतो अरिअनिमजाए अनेतेमानशायोरनउ मकुनिवदेराम, निश्यपराभिमानीछे. नोएवनामनायवडे महान साकारेकोमकारे पोतानीआज्ञाने मनावेलोछे जेमकोइथी ग्रहणनथतादुष्टसर्पने महामांत्रिकपुरुष. पोतानीआज्ञाने ग्रहणक रतोधअभिमानीपुरुषने करेलुंअपमानशोनेने असाधारणतापर्नु कारणजहोयछे ॥ तेकयुंछेके—वैभवरहितएवो नरनरुप, अनेविपरीतथयेली नकरी,सो,अनेवचारहितएवो गुणीपुरुष. अनेअपमान करेलो अभिमानी पुरुष.एसर्वेजदुःख वहनकरेछोदुः- खीउत्पनवी. माटेतेपुरुषने रंकरूपनिको नेराजा,नरागमपे कराणिसेहपोतादैसननो अभिप्राय देखाडेलोपण.तेविश्वासकरवा योग्यनथी. ॥ तेकयुंछेकेपूर्वेजेनी साथेवेरोरथयेलोछे एवापुरुषनोविश्वास नकरवोअथामित्रपणाने पमेलाएवा शत्रुनोपण

मिथ्यात्वकरतोतेउपर दृष्टांतछे–कागडापंडुरडोरेया अंधवैद्यवचनेजी पांडवसीवडंवर्णवंदी गुणगेहेनो. ॥ १ ॥ ते
मोटोजिनपुरुषनिवातो पईननगरमध्येमहंत गृहस्थनांमगरदे नवीदीक्षितांनिमगावींने पाळोदाईआव्युं त्यांमुनीतवेदेषी
कुलवधूमेनगादवानवने गृहनेशाषोपमगची वांदेत्वागुमाण करेयोतेवकोइपण ममतेनआत्मंतपदी गिरे.इत्यादि हृदकांने
पनगरनीअंदर कोकागडगो आनमरवा मनकोइनाहिआव्तो एमवारीतिनःशंकपणेन नगरमध्येकोइमुमाररना वरगांगताहिरओ-
वरीवांगिहरमनां चकवडाजानेउपर श्वेतमुमाररवामेथी कोकागे,कीडिकावदवानेओ पाशांगांधदवानां उपकरण कट-
लोकमांगांनेमुमार पणतेवातेओउपकरण त्यामरवाणगो तेवाणांकागडवाना लिंगानमाणद वांनेकरवागाने गुमारेतेथ
मायवानेमांडत्योहुं चकवोतेवरीतेशपमां तेयारकर्तुनजंतुनेनुं वदवुंपणमोनाओ पोतेजउंगुरमुंह. तेहामवीगुरमा पकीदेवा
पकनीपिटेशेमानी पोतेजप्रपणकरे, तेमोतवगुरमां अकडावतोपाठुंवळी पोतानीआगळआवीउभुंहे अहोआंतेकेवाठोवक
वगानीरखभवदवांछे. तेतेरोरवतपरोत्रशणी, पोतानुंहितजपवा मादेतेनेनथी विचारीनकरो ॥अथवा॥ तेपुरुजेनेविरो,
कुमतपणुंधारणकरेछे, तेपुरुष, तेवस्तुनोवांगपवेनने, एपृवपरांथीनगमेमवांछे. जोपणवहोवनो, सनुनानगरवांकोकाठ, ते
मकारनाणकनेदयागाटंकरे ॥ १ ॥ अथवा पुदनोरराधीनवणुंनवतुंहोयनो त्खवणजीर्वपुकनोमथ. मिथ्यांकुकरनाकर ॥
कोकाण,तेमकनेदरीशानेअर्थेवग्रणकरारोरतेनेपुत्रापण,वगानेत्रोउपकरणत्नेइआव्यां,तेतेमवनमध्येअशातानपणुंआश्रयेना
मपृहतेवुंतेपकनेजेइनिमुगपणेमुमारविचारकर्यांहे–आअमाआरणद्राजेड आगकोकाजांनथीछे. आतोआमाधारणकाल
वाळोभांजणवपाकोइरगद्दीडांमणीअनेवाथल्योपणनथी एककोकाजनछे मांटेतेमआपुकागछे अतिशेमडाईपीडवाराजानांमित्र
आपुकागेतेनुंभवशागवनगुंछे तेवाजनोआपदारागानेकहोपनो निश्चेहुंअतिशेराजानीमवस्थानुंभागधइश. आमकारिएहुए

आ० १५

प्रा० १२

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

९९

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

एमकारेकाकपिध्वजेपण माणधारणनेकरनोएशो तेरानाभनेराणी. तेमणेकेटलोककालनिर्गमनकर्यो. अहोमोटापुरुषोनेपण आमकारनीभयटी, नकहीशकायएवीदुर्दशाहोयछे. अथवाभरोस्थतिनुं; पर्वतनीपृथ्वीनामार्गनीपेठे नीचाउचापणुभक्ति लिद्धछे एमजेसामाविकछे. ॥ १ ॥ तेकहुंछुके कोण आलोकमांसदासुखीछे ? कोइनथी तेकोनीलक्ष्मीअवरायीस्थिरहो छे ? कोइनीनथीरही. कोण दुःखथीग्रस्तनथीथयो ? विषयथीकोण क्षोभायोनथी ? संसारनादुःखछे. ॥ १ ॥ एकादरनक लिंगदेशनाराजाएश्रा कोकाशसर्वभनर्थनुंमूलछे एमधारीभनिसेकोधथी मरंसरहरण कारकचोरनोदेडनो वधकरानेचोनाना पुषयोनेआज्ञाकरी तेपुभशोनेडंरनाशाहेर नगरबहारजइनेराजुरीपेठेसद्स्थानमां कारागारकरराव्या. परंतुकोकामशगापूर्णनम्नता कोइशुभकर्मनानथीनगरमां मारामारालोकोएदयाए माहेदेखानेमनेरकडायरन अनेतेभात्रपूर्णकमारकारेका जरागराने विशारनाकरी हेराजन ! हिमाचळपर्वतनी कष्टीविज्ञामनेउपहास्य करनारीतेने कोनेने धारण करनाररपेसाशुकरोएमअने घाउअन्यजनपेयोग्यआनुंकरवानुंआरभ्युंछे ? जेअणाविचार्युंकरवुंतेनोकिशाकहेवनाकळुं आगावि करवानोकरानोइस रिणांमोहितकारीथतुंनथी तेपणशास्त्रमांकहुंछेकेशल्यनथा अग्निनथाविषएसर्वनाउपायकरवा तेमूलपछेपरंतु सहनाव्कामेकर- वानीजेक्रियाकरवीतेथकीउत्पन्नथयेलो जेपश्चात्तापतेनुंतोऔषधमनथी ॥ १ ॥ पाहेराजन ! हेवनथीकळानुंसारएंनजे कामदुंधनीपेठेवांच्छितअर्थनेसाधनारएवो आमकारनोपामेलोकळापात्र पुरुषनेकोण दायोपुरुषकोपवडेपिडवानाशकरे ? कोइ नाशकरेनहीं केमकेकळावान्पुरुषतोमर्वजगाए निश्चेयारणशक्तिवाळोछे. पुरुनातेरेआराधनाथीमने आपारकोइयादिपान करवानुंचिंतवनहोतुंनथी तेमगुणवानरत्न कळाचंतपुरुषोनीविपेरणनथी. कळावानपुरुषतोमर्वजगाए महुमानकरवायोग्यछे. कळावानपुरुष, पारकोहोयअथवापोतानोहोय तोपणतेविशेषपणेमाहिमानोकरनारछे, जेकळावानचंद्रछेतेशिवनोमहिमाकरेछे

भेग. कळावानएवोअनेओषधिओनो अभिषेकरूपएवोदशामिश्रभूतपयटाशी जेनांकिरणछेएवाचंद्रवदंपिण, अथिअनेपर्वादिक तेनेधारणकरनाएवाशिवछे तोपणतेनिरंतरपयगुप्तीथायछे एटलेकाळकूटझेर, अथिमपत्रीजुनेत्र अनेनपनांआभूषणएवोभुजंग दायीछे तोपणएककळावानचंद्रनो अंगीकारकरवाथी शिवपोतेसुखीथायछे अनेबीजाने सुखीकरेछे तेमाटेआनकारनो कळावानुरूप बहुमानपूर्वकतमारी पासेरायोवटछ जे तेनीकांन्ती कळानाअतिशयवडे अन्यराजाथी तमारोमनाय. अपरग्र- हर्षीतेपमूर्छनोमनाप, तेमभनितेचवांपरी थयेइत्यादिनगरना लोकोएनानिरोध कल्लाकलिंगदेशनाराजाए नांरहोतथी पो- तानापुरुषोपोकनी कांकवतेपोतानी पासेबोलाव्यो, अनेपछुंके मारदोलाश ! आतिशेचमत्कारनुं स्थानएवुंनटशा पुरुषोने आनंदकरनार एवुंतथोगुंशुं विज्ञानजाणंछो ? त्यारेकोकाशशेल्यो कहेराजन्! विश्वकर्माना पेठेसवयरएवुंपण शिल्पज्ञानअतिश पणेसर्वथीसरसहुं जाणुंछुं त्यारपछी तेराजाबोल्यांकहे कळाकुशळ! कमळनाआकार जेवुंचारेपोरगएवुंएक मोटुंमंदिररचोअने तेकमळाकारमंदिरनी सोळांगकारनां, तेमांमांपरुनेवितेचारामोरुप रेखेवाना स्थानरचो पोतानीशोभाथी जीत्योछेदेवतानां भवनजेमणेएवा तेस्थानशीघ्रपणेरचो एवकारनुंतराफकळानुं श्रेष्ठपणुं नेशोध देखाडाअेणकरीने सगनगदूपांपण माराजेवीय वननीसमृद्धिकोइ राजानेनहोय. एसाववुंसांभळनेकाग एवकारेतेराजानी आज्ञापामेतहावी कोकाशउभागयो तेवख्वतेंनुं बंधनादिकरवरवापणुं सर्वत्यागकरावी महासुखीकरीनेरकाइ भुवनेकरवायोग्य एवांकाष्ठादिकळावताने तेनीआज्ञापारदेनार पणामाणसआप्यां एमकारेअतिशेगस्तानथी कामकरवाना जेराजाए आज्ञाआपीत्यारपछी उत्पन्नथयछेतीवचानी आशाजेनए- नाकोकाशेननो सर्वअभिरायगुप्त रात्रीएराजार आज्ञाआरंभाभुवन करवानेसाहसोने यांगपरवासारांकाष्ठ मंगावरावीने- रेखोसर्वआरंभकर्यो. पछीप्रमाणरहितअति उत्कंठावडेपोतानो स्वामीबंधीताने एटलोजेकाकनंध राजानेसमळवानीघणीइच्छा

छेतोपणकालिंगराजानी आज्ञाविनातेने मळवामसमर्थनथनो एवोअनेज्यारेपोतानी स्त्रीएसहितगुप्तस्थानमां रह्योहतोतेवखततेगुप्त
स्थानमुंशत्रुनेकह्युं तेरूपभयथतुंजणातुं दुर्जनपणुंनेनेकरवाथी उदासमनवाळा थयेलाएपोताना स्वामिनीसंभावना करवामाटेए
टलेउदासमनपणुं निवारणकरवाने अर्थेकोइरूपोताना मित्रद्वाराएमाशात पोतानाअभिप्रायने जणावनारएवो एकनवोश्लोक
करीनेपोतानास्वामि पासेमोकल्योने श्लोकनोअर्थ–हेमंदपुरुष ! तारामुखनेअर्थेवैद्य लोकोएअतिशेक्रूरकर्म कर्युंतेथीआटलोय·
योउदासकेमथायछे ? एउपायतोनिश्चेतत्काल तारागुणनेअर्थेथशे एमजाणआमकारे अन्योक्तिगर्भित कोकाशनीसुंदरवाणी
सांभळीकाकजंघ राजाएविचारकर्यो केजेस्वाभाविकगुणमनुष्यछेतेणउपरथी जणातुंपोतानुंविपरीत कर्मकर्युंतेपरिणामेदुःख
दायीपणुंनथीकेमके कलिंगदेशनाराजाएकोकाशनाकहेवाथीमनेआमकारनुंबंधनकष्टदीधुंनेपण मारोमूळमांथीनथवानोहशेनेनुं
निवारणकरवानेअर्थेकर्युंहशे एमआश्लोकथीजणायछे माटेएमारोमित्र छेटेछतोपणपासेजछे. एजामित्रमनेअत्यंतदुःखथीमूकावी
निश्चिंतकरशेजेमराहुनाग्रासथकी चंद्रमानेमूकावेतेम. तेकार्यपणघणाथोडा काळमांकरशेएमजणायछे. त्यारपछीकोकाशेवि-
चारकर्योकेपोतानास्वामिने मूकाववानोउपायपरिणामे हितकारीथायएवोरीते मारराजानीआज्ञाकरूं एमधारीनकरतिनाम्हेल
जेवुंअतिशेरचनाएसहित. अतिशेसुखकारीनेम्हेलनुं काममेटलामांसमाप्तकरेछे एवामांराजानीपासे रहेनारएशालधारणकरनार
एकसत्पुरुषेराजानीपासेथी एवोविचारसांभळेलोके आम्हेलपुरोथतासूधी शत्रुराजाराणीनेजीववादेवां पणमारवांनहीकेमके
एमनुंमरणसांभळीने कोकाशनोजीवउदासथशेतो माराम्हेलनुंसारूंकामनहींथाय अनेवधेवियनथजे पाटेमारवानेइच्छेछेतोपणते
शत्रुनेजीववादेवो अनेनवाम्हेलनुंकामपुरूंथाय अनेनेमांमेंरहेनुंमुहूर्तसिद्धकर्यापछी तेजदिवसेशत्रुनेमारीनांखवो–आविचारको·
काशनेजणावीदीधो. करवतनाजेवुंकठिणतेवचनसांभळीने अतिशेक्रोधाक्रांतथयेला कोकाशेविचारकर्योके माराराजानेमारतो

पहेलांनगुनिकथीआकलिंगदेशनाराजानेकुर्दुवगरितपारीनांगवां. एवोविचारकरीने एकबुद्धिमानपुरुषकाकजंघराजानोपुत्रजे शिल्पनाशास्त्रनेनेनीपाठसंगुभपणेपांकरयो. तेणेआदरथीनेअनगूडीनुं तेपुरहनुंनेपुरगवंतूतानकर्युं. तेशिल्पपुरुषपणअतिशेमोटुंउत्कटकर गृहअतिशेनीग्रपणेपोताना पितानावैरनोबदलोवाळवानेगुप्तरणे कोइपिवभीतमीपगायपा भावीरहोछे. जपकोइमहादेवयदेवाप नहींपदीरसिनेचमुरगोन्य कोइमकारेगुप्तरागेकुंछे त्यारपछीकोकाशेआश्चर्यकारी एवानेपयाकरनायेशागाद तेपांअनुपमएवीज कोइमंगळकारकतोरणादिमपग्रगापग्री मंपादनकरेगतंअतिशेहर्षपावना कलिंगदेशनाराजाए मगलपूर्तआवेगनेमांटाउत्सवपूः वैकयोपुत्रेगादिनदेवनाएवीरिस्लोईद्वनेमगमांमांभवेशाकरेनेमपवेशकर्यो. अतिशेअद्भुतआश्चर्यव्याकुळ एवातेराजाएआगादरथी मारीपेटेजोयो. अमाददानसन्मानपूर्वकतेणेकोकाशनां वणावखाणकर्यानेकर्युंके आवीशिल्पचातुरीकोइकाळे दीठीनहोतीने सांभळीपणनहोती अनेमने एणगंधरनहोतोकेतेप भारतीवर्षवी चातुरीकरीनकनोअपवारत्नगांपगृथ्वीनेविषेसुंनथीर्भयरतुं ! गर्वे पस्तुनोगंभवछे. तेकर्तुछेकेदानवो, मयवो, जोषिनो, विद्याननो, सिनयवो, नीतियांआश्चर्यनकरतुंतेपकेंगृथ्वीपणारत्नशालीछे. त्यारपछीगुप्तछेविचारतेनोपवायमहाबुद्धिमानने कोकाश, कलिंगराजमत्ये आमस्कारबोल्यो—हेदेव ! अतिशेमोटोएवोपणआभार सादरकथमनागरनीपेठेएकज कुंवीदेवाधीनतत्काळदिव्यविमाननीपेठे आकाशमांउडछे. तेसांभळीकौतुकमोयामां रसिकएवो कलिंगराजामगलपवुंनेनुंकरेतुंभेपाश्रांतथयुंछे अंतःकरणजेनुंएवोतेनगरपाननो, आमकारेगन्मानसहितकोकाशमत्येबोल्यो—हे हृदयपादिशनविल्परचनाकरवामांइंद्रनाशिल्पीविश्वकर्मासमानहेकोकाश ! तमेकहोछोतेपछेतोएकौतुकहमणांजदेखाडो. जेदेव· पालेधर्यनिस्वाराधीगामडामारेहेनारलोक जेपनगरनोमोटीव्यविस्मनोवाने उत्साहवाळोहोयतेमअतिशेउत्साहवाळुंअमाहंगनथयुं छे. तेसांभळीकोकाशबोल्योके—कोइअपूर्वमकारनुंकौतुक पुत्रसहीतनपनेतरकाळदेखाडीश एमअंतरमांबोलनोमनोउल्लासेसहीत

कोकाशेराजाप्रत्ये वाणीनोविलासप्रकाशकर्योकेहेदेव ! मोपुत्रेसहीत, ताराएसहीतजेमचंद्रशोभतेमपोतपोतानास्थानकमळनो अंगिकारकरो एटलेपोतपोतानेस्थानेबेसो. जेमतत्काळकुंचीनाप्रयोगवडे अनुपमएवुंकौतुहळदेखाडुं. त्यारपछीमहाद्दुकाळमां अतिशेभुख्यापयेलारंकपुरुषोजेमनिशंकपणेभोजननेअर्थेअतिशेउत्साहथी पडेतेमकौतुकजोवानेअर्थेउपराउपरीसंकडाशनेकरनात-स्काळराजाअनेतेसर्वेपुत्रो हुंवहेलोप्रवेशकरुं, हुंवहेलोप्रवेशकरुंएवीरीतेथइने तेप्रासादमांपोतपोतानेस्थानेबेठा. त्यारपछीमिद्छगुप्तअभिप्रायतेजेनोएवो तेकोकाशजेमवंधीखानामांथीनीकळे तेमपोतेतेप्रासादथी नीकळीनेबोल्योके–रेमूढपुरुषो ! मारास्वामिकाकजंघनेमारवाना गुप्तअभिप्रायनुंफळकिंपाकवृक्षनुंपरीपाकावस्थाए महाक्रूरथतुंएवुंजेमफळहोय तेप्रकारनाफळनेएकेकाळेजभोगवो. एमगुप्तबोलीनेअतिशेशक्तिथी एवाप्रकारनीकुंचीफेरवीकेजेना प्रयोगथीतेप्रप्रासादनिद्राळुनेत्रजेमपीचायतेमतत्काळसमग्रमीचाइगयो. तेप्रासादनीमांहेरहेलोराजापुत्रेसहीनमोटातेतेमनोरथनेधारणकरतोएवोछेपणहाहाकारकोलाहळशब्दनेकरतोजेमहाथीएमूळमांथी उखेडेलामीचायेलाकमळडोडामांरहेला दुःखथीपणुंआक्रंदनकरताभ्रमरनीपेठेरमवेषया. तेअन्यो-क्तिग्रंथमांकछुंछेकेअतिआसक्तिथी कमळमांरहेलोभ्रमररात्रिथीकमळमीचायुं तोपणतेनेमूकीनेगळो थवानसमर्थथयोनेतेणेविचारकर्योकेरात्रिजशेनेप्रातःकाळथशे, सूर्यउगशेअनेकमळलक्ष्मिप्रफुल्लितथशे एवोविचारकरेछेएटलामांएकआवेलावनना हाथीएतेकमळनेमूळमांथीउपाडीभक्षणकरीलीधुं. तारपछीकोकाशसंकेतकरेलो विजयनामनोकाकजंघनोपुत्र ओचिंतोहल्लोकरीनेआव्यो. मलयकाळनामेघनीपेठे कलिंगदेशनानगरनो विध्वंसकरवामांड्यो. तेप्रकारनोचारेपासथीअयाटित थनोविध्वंसजोइअतिशेआकुळव्याकुळथतानगरनालोकनो आक्रंदशब्दसांभळीकलिंगराजानो सेनापतिअतिशेउतावळोथइ सेनालइनेनगरद्वारेआव्योनेमोटागर्वमांलेप रनराजेनीनगरमां प्रवेशकरतीविजयपुत्रनीसेनानेक्षणमात्ररोकी. तेसेनाथीअपारपराक्रमवडेएकक्षणमात्र

रुद्रनी गंधाये रुद्र, वरुणनी गंधाये वरुण, अग्निनी गाथे अग्नि, पछी
एवं पूर्व दिशाना स्वामीनी गंधाये स्वाम, मात्रानी गंधाये मात्रा, चंद्रनी गंधाये चंद्र, पाहीनी गाथे पाही, पुष्पनी गाथे पुष्प, केवनी गाथे
वनीगंधाये वहीन, मुद्गरनी गाथे मुद्गर, मलयनी गाथे मलय, चक्रनी गाथे चक्र, स्वभानी गाथे स्वभा, मागानी गाथे मागु, पवनी गाथे वन, इत्यादि
केत, वाहुनी गाथे वाहु, कुणीनी गाथे कुणी, हायनी गाथे हाय. पोतानां द्वारपालोनुं पूर्वपुंजनुं आश्रया कर्यु केणपीविनाशुं केदकाहारे
एकवीगानुं वरस्वर आत्काळनयुं धीपहामयानकपणुं पोतानां द्वारपालोनुं पूर्वपुंजनुं सहितनीचे पंदगकि वात्त्रीथई, तेणिकनृपाळनी
सेवकडिनरानानागेनायविनी सेनायागंथावरनाळ्यागी थाकेलाचंद्रमागुनायंग्रानीचेठे पुरुदमनगरनाणदवाणीकडिनराजानुं नगरमूळिकानासागण
तेनानुंवळयद्दियाग्यु. पाळवानोसाहिमायकल्पवनानदनीचेठे पुरुदमनगरनाणदवाणीकडिनराजानुं नगरमूळिकानासागण
नीचेवैरपुरनुसांगरयं. गविध्वंसनानपकालेम भयारपराकवपाळो भिमयकुमारपरमदुःखकरणनाकारणं जणीनानानानामाणे
मानेनकंपावीभेवउद्धारणकरतेथ तेथेनुंप्रहणकरी अनिरुद्धिना मयंनपीतिद्दकर्युं छेकार्यजेणे पपोकोकाश मनेतेयिनपुरयंतिनमे-
मणेवळानगरसाथीनेमनीकळे सेमचारेपागचतुरंगसेनाए श्रीरक्षा अतिशेवनाबळापुले पोतानानगरमां आव्या, तेअनिरुद्धमोटा
उत्सवपीमातापितानेआगळकरी नगरमांप्रवेशकर्यो. नारदपीकनवकुमारोवर्षे श्रेष्ठपदाउदारपनवाळो दानीपुरुषमां चक्र-
धर्मीसमानताकरनार राजापरपरउपकार करनारलोकाथने अगणीतपणीसुवर्णादिक वांछितमणी अद्भुत समृद्धिआपी
मनेपूर्णनापोहा तेयानेंकरोपोहा मनेइंद्रनाहाथीनेसा मोटागंधहस्तीतरीके समृद्धिगहीलसंकटो आव्या,तेयणेक गामभनेन-
गरपणभर्पणकर्यां. एमकारीनीभनीसे समृद्धिए अतिशेनोभनो लोकादनेपोतानानामपानकर्यो. ग्रंथकारकहेछेकेकोण कृतमपुरुष,
कहेलाउपकारनो प्रत्युपकारनकरी थाराधनाएलोनवंशीकिवदे तेलोकादनुं भतिशेपीरवकर्युं. तेकर्युंछेकेपोतानेघेर पाळेलोतरखी
भूपनीनयाभनेकरनो भानरणपणीनाअनिसे उपकारनेद्दरयोनरगृपकार करेछेलोमवसिरहीत पणेछोराजाने भकारनाउपका-

कोकाशेपराजाप्रत्ये वाणीनोविलासप्रकाशकर्योकेहेदेव ! मोपुत्रेसहीत, ताराएराईतजेमचंद्रहोयतेमपोतपोतानास्थानकमळनो
अंगिकारकरो एटलेपोतपोतानेस्थानेबेसो. जेमतत्काळकुंचीनामप्रयोगवडे अनुपमएवुंकौतुहळदेखाडुं. त्यारपछीमहादुकाळमांअ-
तिशेभुख्याथयेलारंकपुरुषोजेमनिशंकपणेभोजननेअर्थेअतिशेउत्साहथी पडेतेमकौतुकजोवानेअर्थेउपराउपरीसंकडाशनेकरतात-
ळगुप्तअभिप्रायतेजेनोएवो तेकोकाशजेमबंधीखानामांथीनीकळे तेमपोतेनेप्रासादथी नीकळीनेबोल्योके–रेमूढपुरुषो ! मारा
स्वामिकाकजंघनेपारखाना गुप्तअभिप्रायनुंफळकिंपाकवृक्षनुंपरीपाकावस्थाए महाक्रूरथतुंएवुंजेफळहोय तेप्रकारनाफळनेएके
काळेजभोगवो. एमगुप्तबोलीनेअतिशेयुक्तिथी एवाप्रकारनीकुंचीफेरवीकेजेना प्रयोगथीतेमयग्रप्रासादनिद्राळुनेत्रजेमपीचायतेम
तत्काळसमग्रमीचाइगयो. तेप्रासादनीमांहिरहेलोराजापुत्रेसहीतमोटातेतेमनोरथनेधारणकरतोएवोछेपणहाहाकारकोलाहळशब्दने
करतोजेमहाथीएमूळमांथी उखेडेलामीचायेलाकमळडोहामांरहेला दुःखथीयणुंआक्रंदनकरताभ्रमरनीपेठेनेसर्वेथया. तेअन्यो-
क्तिग्रंथमांकह्युंछेकेअतिआसक्तिथी कमळमांरहेलोभ्रमरात्रिथीकमळमीचायुं तोपणतेनेमूकीनेगळो थवानसमर्थथयोनेतेणेचि-
तवकर्योकेरात्रिजशेनेप्रातःकाळथशे, सूर्यउगशेअनेकमळलक्ष्मिप्रफुल्लितथशे एवोविचारकरेछेएटलामांएकआवेलावननाहाथीए
तेकमळनेमूळमांथीउपाडीभक्षणकरीलीधुं. त्यारपछीकोकाशेसंकेतकरेलो विजयनामनोकाकजंघनोपुत्र ओचितोहल्लोकरीनेआ-
व्यो. प्रलयकाळनामेघनीपेठे कलिंगदेशनानगरनो विध्वंसकरवामांड्यो. तेप्रकारनोचारेपासथीअघटित थतोविध्वंसजोइअ-
तिशेआकुळव्याकुळथतानगरनालोकनो आक्रंदशब्दसांभळीकलिंगराजानो सेनापतिअतिशेउतावळोथइ सेनालइनेनगरद्वारे
आव्योनेमोटागंडशैल्यपर्वतनाजेवीनगरमां प्रवेशकरतीविजयपुत्रनीसेनानेक्षणमात्ररोकी. तेसेनाथीअपारपराक्रम...

जगमांपूर्वेलागांतीर्थिने धारेवागतऊस्यागना अनेराजानागुणेणु भतिनेनंकारकर्यो. त्यारपछीनेकाएनेभेदनार पुत्रपोणीन-
पारकर्योहिपूवर्णनावरवादेवी पगराजानेकांइनकारकोकदरोनांइए. एमविचारीनेमनवगनिमनेनगीपुत्रनानपुत्रनोअतिशेऊ-
मावरुणीउन्नमपभान्ना, मनेकोशाननेभतिशेमगापकरीपोतानापगापनी जीरिवकपयिलानप्रतागीयागी, अनेअतिशेभाग्र-
हथीतपर्तनारनी त्यारेअवकाशनागंणकोकांनपरनाइगननीकेकविगनगनाओमारानानी निरयगेशाकरेनोएरानानेमीरजोते-
पांणीईकाईएपकरीनेवाअधीमोएअतिनेआदरथीग्रहणकरी. त्यापछीकोकायेनःकाळ नेनगरनलोनइ (कीलिका) कुंचीनुं
भाकर्णकरवाथीनेनगरकोकनी आज्ञापणदीनेतेमापादअरूपानउघरीगयो. नेपांगीरिकेआव्याछेराजानेना एवोकलंगदेवनो
राजाणोपुत्रहीनगरेवागमांथी नेषनीकळेनेमनेत्रापादपांणीनीकळ्यो. नेपुत्रनीतरानानाणेकरीनीचमोणगोहोगणपमाननो,
कोकामने विवानीवेरेगणयोनेने कयुत्कराबेनगमपाने माळदेवनाराजानीमेनापारयो. भावकानुंतेनीउपमानथी ज्युकोपु-
कादमुकुमळभायुं. नेणेकरीनेदिगोदिमनमेकरयो विनापणपोतानोसामिपुत्रकणयो भनेअतिशेवेराळेराजापणगणयो. अ-
नवाषधीनुमाग्रणिनराजभेगराने विवादोनोएगनेपणगगनेमाग्नीनथाइ! एकदिवसनारथाननायणी कोइमहामुनीनो
गमनी. नेवकुंरदनादिशिरकिकरीने राजाएपोतानोअनेकोकाननो पूर्वभवनोसंबंधपूछ्यो. त्यारेमानिबोल्पाकेहेराजन! पूर्व
जगपानगरनगरनोपुनैनीतराजाहतो भनेआकोकाजनेतीमाणन नारीमगमनानुंयागएवो विनयवानराजोहतो. तेनापत्नकरी
मेंभनेकनेवनापादकरावया भनमीर्णोद्धारकरावया नेनानाप्रकारनारत्नादिमयमीनप्रतिमाओकरावी. तेराजनारराणीकरीले
नेणेमीनपगनकरावीनेनी नेनेभानेविजनीवणागपुनी पुत्रकरीनथी. नेणेदूधीर (दुःखेथारणकरवायोग्यपणुं) व्रतधारण
कर्युनथीनेनेपोतानोअनक्रोगदुपावनांछे. नेपुत्रपारेराजानाकशावीपण अधिकरोगानीभक्तिवडे नवीनवारणशोभादिकनीर-

रनकरनारनेविषे मत्युपकारीकेमनाहोय ! तेपणकयुंछेकेस्वामिएतो विशेषेकरीनेकृतज्ञथयुं. जेमाटेकयुंछेके कृतज्ञस्वामिनोसं-
बंधकरनारोने उत्तमस्त्रीनोपरीग्रह करनारोनेलोभ रहितनेमित्रताकरनारो पुरुषकोइकाळेखेद पामतोनथी.जोपण अकृत्यनेक-
रनारमयेस्वामिकोइपण नबोलेनेरयारेपणमर्मवचनवडेनव्यथाकरे तोपणसेवकपुरुषनिरंतरशंकितचित्तवाळोहोयछे. माटेपोतानी
मेळेजआशंकावाळुंछे हृदयजेनुंएवीविपरीत कुंचीस्थापनकरनारी विजयानामनीस्त्रीनुंते मकारनुंदुष्टचेष्टितजाणुंछेतोपणशो-
कनीइर्षाधीस्त्रीजातिमां अघटितकरवापणानो संभवछेएमधारीतेनुंदुष्ट चेष्टितराजाएपोताना गंभिरगुणवडेक्यारे पणप्रकाशन
कर्युंतेपणनीतिशास्त्रमां कयुंछेकेबुद्धिमानपुरुषे धननोनाशथयोहोयते नथामनमांकोइप्रकारनो परितापथयोहोयते तथाघरनां
माणसनुंदुष्टचेष्टितने तथापोतेकइकठगायो होयतेतथाकोइजगाए अपमानथयुंहोयते प्रकाशनकरवुंअनेजेनो रोषअनेसंतोषनि-
ष्फळनथीएवोएराजाछे तोपणतेणेस्त्रीनाउपरक्यारेपणरोषनुंफळन देखाड्युं. पोतानेतत्वज्ञानछे तेणेकरीनेपोताना चित्तमांएम-
कारनोविचारकर्योके घहुधासर्वेस्त्रीजाति इर्षालुंप्रकृतिवाळीहोयछे. तेपणशास्त्रमांकयुंछेके आप्रकारनीवस्तुतो कोइजगाएज
होयपणघहुधानहोय, केवाणीओहोयनेतेठगेनहीं, ब्राह्मणहोयनेतेसंतोषीहोय, क्षत्रिहोयनेनेक्षमावाळोहोय, वायुहोयनेतेस्थिर
होय,अग्निहोयनेतेटाढोहोय, जातस्त्रीहोयनेतेइर्षारहीत होयएवीवस्तुशुंघणीहोय? नजहोय इत्वेत्यारपछीशत्रुनाकांचनपुरमांअ-
तिशेगुप्तपणेकुंचीदेवाथी तेप्रासादमांचइ गयोतेनेउघाडवानेप्रधानप्रमुख सर्वलोकपणसमर्थनथया. पछीतोपुत्रसहीत
राजानेतेप्रासादमांथी खेंचीकाढवानी आशाएतेप्रासादने उघाडवाघणाकारीगरएकठाथया पणकोइथीनउघाडायोशेनट
छेदनकरवा, भेदनकरवा, कोवाडाप्रमुखआयुधलइघणालोकोमंड्या. एवामांतेप्रासादनामध्ययंत्रमां एकाग्रपणेगोडायेलोसो
काएनेनाउपरपडेलाघाततेथी अंदररहेलाअतिशेउछळता, अतिशेदुःखीथता, मायाउपरघापडवाथी अतिघेबकोरपाडता, पां-

दिकुंथनोअतिचारकहेवकारे आलोचनकर्यो. एटलेयथाख्यातगुरुए आपेलुंपापनिकंदनकर्युं पछीकेटलाकदिवसे पोतानुंजनकेतुं पवोतेराजापोतानास्थानमांआव्यो अनेकोकाळनीसहायथाी अतिशयवंसकारथी कार्यसिद्धिथनेथयो घणाकाळसुधीराज समृद्धिनेभोगवीसमयआव्यो त्यारेपोतानापुत्रनेराज्यआप्युं. पछीपोतेअपूर्वमोटाउत्सवथी गुरुश्रीपासदीक्षा लइनेनीचमां देवलोकमांजइमोटादेवतानां सुखनोअनुभवकरी, पछीमनुष्यभवपामी, तेजभवमांपरंपरागनेमोक्षजशे. अनेकोकाळनोपोटीअनु पपपृथीपोतानीजिनपकळानी चतुराइथीआशुद्धिवर्णामोटायशनो विस्तारकरीराजानाभंडारथीगत्वरमांथी नीकळीएटलेदीशाल्इ गणुआयुष्यहोवाथी घणोकाळचारित्रपर्यायपाळी माहेन्द्रदेवलोकमांइन्द्रनो सामानिकदेवथइत्यांथी चवीनेमोक्षजशे एमकारे जिनमतमांकुशळपणुंतथाजिनपरमात्मानीभक्तिकरवीतथानियममांदृढपणुंराखवुं तेदर्शनाचारनेविषे आदर्शनजाणीनेहेभाई बुद्धिवाळालोको ! तेदर्शनाचारपाळवामांप्रयत्नकरो. ॥

एमकारेदर्शनाचारने विषेकोकाळअने काकजंघराजानेतुं उपाख्यानकर्युं. हवेदर्शनाचार आठप्रकारनोछेतेगाथानो अर्थः—१. निश्शंकित, २. निःकांक्षित, ३. निर्विचिकित्स, ४. अमूढदृष्टि, ५. उपबृंहणा, ६. स्थिरीकरण, ७. वात्सल्य, अने, ८. प्रभावना एदर्शना चारना आठभेदछे एमांनिश्शंकितपणुं एटलेशंकारहितपणुं तेदेव,गुरु,धर्मविषेकरवुं तेमांदेवतत्वे अने, गुरुतत्वविषे निश्शंकितपणुं एवुंछेकेसंयमनाप संन्यासीतेणेपरीक्षा करेलीएवीकुळमानाथे श्राविकानेनादृष्टांतथी जाणवुंतेगुरुतत्वेतोश्रेणीक राजानुंदृष्टांततेराजानी दृढपणसमकीतना दृढपणानेविषेहीनिकरीछे तेअवसरदर्दुरांकदेवतेनी परीक्षानेअर्थेमळने ग्रहणकरतुं एवुंपोतेतुंरूप देखाडीनेतेनीसंघाथे मच्छादिककर्याछेतेनुं काव्यआमकारनुंछे. तेकाव्यनोअर्थने मळनेग्रहणकरता यतिनीगाळ नेश्रेणीश्रेणीकराजाए पूछ्युंकेहेभिक्षुक ! आतारीकंथाशिगिळकेमछे ! त्यारेतेभिक्षुकबोल्यो केआतोकंथानथी, आतोमाळछे

आ० ७० भा० प्र. २

धनानीनमामादमांकरी. तेकहुंछेकेकळावाननीतेकळामोटापुरुषोए पणवखाणवायोग्यछे केजेकळासर्वज्ञपुरुषोनीशोभानाका-
रणमांउपयोगीथायछे. तेसूत्रधारेपोतानीब्राह्मणपणानीजातिना स्वभावथीएकादिवसअहंकारकर्यो. पछीएकदिवसकळामांच-
तुरएवोएकसारोगसमृद्धिवाळो जैनसूत्रधारकोइराजापासेथीनाशीने त्यांआव्योहतो. कळानामत्सरथीपिशुनपणावडेतेणेराजाने
जणाव्युं केमकेकळावाळो, धनवाळो, विद्यावाळो, क्रियावाळो, राजानोमानीतो, तथाराजा, तथातपस्वीतथादानीपुरुषोते
सर्वेपोतानेतुल्यएवाबीजापुरुषनेसहनकरतानथी. कर्णनादुर्वळपणाथीलोभी एवोतेराजाएनवोआवेलो कळावानग्रहणकर्योपण
एषदीपछीपश्चात्तापकरीनेतेसूत्रधारेत्यागकराव्यो. पछीराजाएसत्कारकरी तेनेविदायकर्यो परंतुसाधर्मिकपुरुषोनोसत्कार
अथवातिरस्कारतेनुंअवश्यफळथायछे. माटेतेमनोतिरस्कारएजदुर्गतिनोसत्कारछे. पछीतेसाधर्मिकनेकरेला तिरस्कारनुंपापतेनुं
मायश्चितकर्याविनातेराजा अनेतेसूत्रधारबेमरणपामी सुधर्मादेवलोकमांदेवतानीसमृद्धि भोगवीत्यांथीचवीने (पडीने) तमेबे
जणथयेलाछोमाटेएमकारनीअरिहंतनी भक्तिवडेहेराजन् ! तमारुंआमकारनुंऐश्वर्यथयुं. अनेतेसूत्रधारेअहंकारकरवाथीतेनेदा
सीपुत्रपणुंप्राप्तथयुं. अनेजिनमंदिरमांभक्तिथीकळाकुशळपणुंकर्युंहतुं तेथीआजन्ममांअनुपमएवुं कळाकुशळपणुंप्राप्तथयुं. अने
नवोआवेलोजेसाधर्मिकळावानपुरुष तेनेछपदीमूधीमिथ्याधारणकर्यो माटेतमनेयेजणनेछमासपर्यंत बंधीखानामांरहेवुंपड्युं.
अनेतेनेछोडवाथीतमोतेबंधीखानाथीछूट्या. इत्यादिपूर्वभवनाकर्मनुंवृत्तान्तकह्युं. तेकहुंछेकेवाचिक, कायिक, मानसिकएवुंजे
कर्मपूर्वेकर्युंछेतेसफळबीजनीपेठे बीजाजन्मपानेकरेलाकर्मने सहस्रफळआपेछे. माटेबाळपुरुषोनेकरेलापापनोदुष्टपरिणामजाणे
छेतोपणतेनुंमायश्चित्तनथीकरतो तेअज्ञानपणानोप्रकारआश्चर्यकारीछे. एमकारनुंज्ञानीनुंकहेवुंसांभळीने जेपूर्वेपोताथीथयेलोअ-
नर्थोभवपएवोअतिचारतेरूपपापनुंमायश्चित्तनथीकर्युं तोतेथीमोटुंकष्टप्राप्तथयुं एमविचारीनेतेराजाए अजाणपणामांथयेलोएवो ७०

दिक्पवनोअतिचारकदेमकारे भाखोनतरुयां. एटलेपथासामगुरुए आपनुंराज्यथिनरुपुं पछीकर्त्रकरहिनछे पोतानुंराजनेनुं पवोनेराजापोतानास्थानमांआव्यो अनेकोकाननीमहायताथी अनिशयमर्वप्रकारेथइछे कार्यसिद्धि जेनेरो घणाकाळसुधीराज्य समृद्धिनेभोगवीममयआव्यो त्यारेपोतानापुत्रनेराज्यआप्युं. पछीपोतेअपूर्वमोटाउत्सवबडे येग्रीओएमहीनदीक्षा लइनेनीवर्ण देवलोकमांजइमोटादेवमाना सुखनोअनुभवकरी, पछीमनुष्यभवपामी, नेजपणनगराशइनेमोक्षजशे. अनेकोकाननोपाटीअनु पमएवीपोतानीनिर्मळकळानी चतुराइथीआगृत्तिपामीमोटायवनो विस्तारकरीराजागंयागनगरमांथी नीकळीएटलेदीक्षालइ घणुआयुष्यहोवाथी घणोकाळचारित्रपर्पाळी महेन्द्रदेवलोकमांइन्द्रनो सामानिकदेवथइत्यांथी चवीनेमोक्षजशे एमकारे जिनमतमांकुशळपणुंतथाजिनपरमात्मानीभक्तिकरवीतथानियमसाहपणुंराखवुंमेरुपदर्शनाचारनेविषे आदरवानजाणीने हेनारी बुद्धिवाळाओको ! तेदर्शनाचारपाळवामांमयत्नकरो. ॥

एमकारेदर्शनाचारने विषेकोकाननअने काकंगराजानेनुं उपाख्यानकह्युं. हवेतेदर्शनाचार आठप्रकारनोछेतेगाथानो अर्थः—१. निश्शंकित, २. निःकांक्षित, ३. निर्विचिकित्स, ४. अमूढदृष्टि, ५. उपबृंहण, ६. स्थिरीकरण, ७. वात्सल्य, अने, ८. प्रभावनाएदर्शनाचारना आठभेदछे एमांनिश्शंकितपणुं एटलेशंकारहितपणुं तेदेव,गुरु,धर्मविषेकरवुं तेमांदेवमल्ये निश्शंकितपणुं एवुंछेकेभेयस्वनाचे संन्यासीतेणेपरीक्षा करेलीएवीसुलसानामे श्राविकानेनादृष्टांतथी जाणवुंनेगुरुनसंबंधेश्रेणीक राजानुंदृष्टांतनेराजानी इंद्रेपणसमक्षीतना दृढपणानेविषेकीर्तिकरीछे तेवचनदर्दुरांकदेवेतेनी परीक्षानेअर्थेमच्छने ग्रहणकरतुं एवुंयतिनुंरुप देखाडीनेतेनीमंत्रापे मश्नादिकलपर्याछेतेनुं काव्यआमकारेनुंछे. तेकाव्यनोअर्थने मच्छनेग्रहणकरता यतिनीजाळ नेदेखीश्रेणीकराजाए पूछयुंकेहेभिक्षुक ! आतारीकंथाशिथिळकेमछे ! त्यारेतेभिक्षुकबोल्यो केआतोकंथानथी, आतोमाछलां

मारवानी जाळछेत्यारेराजाएपूछयुं केशुंतुंसाधुथइने मच्छभक्षणकरेछे ! त्यारेतेभिक्षुकबोल्योके मद्यपानकरती वखतेआथ-णनेठेकाणेएमच्छ वापरीएछीए. त्यारेराजाबोल्योके वळीमद्यपानपणकरेछेकेशुं ? त्यारेभिक्षुकबोल्योकेहुं एकलोकरतोनथी मारीसाथेवेश्याने जोडेलइनेकरुंछुं. त्यारेराजाबोल्योके वेश्यानोसंगपणकरेछेकेशुं ? त्यारेभिक्षुकबोल्यो केशत्रुनागळाउपर पगदइनेकरुंछुं, एटलेशत्रुनेपणगणतोनथी. त्यारेराजाएपूछयुंके तमारेसाधुनेशत्रुकोणहोय ? त्यारेभिक्षुकबोल्यो केजेनाघरमां राखीएगमेएवी सांधेलीभींतोहोय तोपणतेमांछिद्रकरी एटलेखातरपाडीनेचोरी करीद्रव्यलावीएतेअमारा शत्रुकहेवायछेत्यारे राजाएपूछयुंकेअहोहेभिक्षुक ! चोरीपणतुंकरेछे ? त्यारेतेभिक्षुकबोल्योके जुगटुंरमवापैसाजोइएते माटेचोरीकरवीपडेछे त्यारे राजाबोल्योकेतुंभिक्षुक थइनेजुगटुंपणरमेछे ? त्यारेभिक्षुकबोल्योके हुंदासीनोपुत्रछुंमाटे जुगटुंरमवुंमारेयोग्यछे. ॥ १. ॥ पछी राजाएसारीयुक्तिनां वचनकहीनेतेसाधुनेते सर्ववातनुंनिवारण कर्युंपछीआगळचाल्योत्यारे तोएकगर्भवंतीसाध्वी (आर्जा) दीठीतेनेजोइसारी युक्तिथीठपकोदइपोताना घरमांगुप्तपणेलावी कोइनजाणेमाटेतेनी सुवावडनीतमाम क्रियापोतेपोतानेहाथे एकांतकरीएमकारे साधुअनेसाध्वीएवुंदुष्टआचरणदेखीनेपण राजाएएमजाण्युंकेआवे जगजैनशासनमां अयोग्यकर्मनां करनारछेपरंतुबाकीना सर्वसाधुचारीत्रधारी, पूजनीकएवाछेपणएम नहींविचार्युंकेएकनो दोषदेखवामात्रवडे सर्वसाधुमांएवी अयुक्तआशंकानकरी एमकारनीश्रेणीकराजानी धर्मनेविषेदृढताजोइ एमनहोयतोधर्मनेविषे, लोकनेविषेपण सर्वव्यवहारना नाशनोप्रसंगआवे एमविचारतोतेराजा उपरतेपरीक्षाकरवा आवेलोदेवअतिशे प्रसन्नथयोनेअढारसेमां चक्रछेएवोरत्ननोहार आप्योतथादिव्यएवां वेहीरागळवस्त्रआप्यां तथादिव्यएवांबेकुंडळ आप्यांएमकारेगुरुनेविषे निःशंकपणुंकरवुं. धर्मनेविषेनि-शंकपणापरमुग्धभट्टनुं आख्यानआमकारेछे. कौशाम्बीनामेनगरीने समीपशालीगराम नामनुंगामछेतेमां दामोदरनामेपिता

अनेगोमानाविणाला तेहनेपूत्रगुप्तभद्र एहेनांपमाणसदृशो. तेनीस्त्रीपणार्पछेनाम जेनुंपतीगुल्दशगानामेहनीपुनीएवानेस्त्रीपुरुष-
नांकल्लोकरनाळ गणाणछीनेपुण्यभद्रना मातापितामरणपाम्यां. अनुक्रमेशाणरनांविनानी लक्ष्मीनाशपामीने नीतिनाशपर्छकरतुंछे
केलक्ष्मीशोनानेपाणग स्थिररहेतीनथीवांने शीलानेवेराग्याथीस्थिररहेने ! लक्ष्मीरागीनांनुवरण तेकमठनेवाणग मंदमाकाळा-
गेमरहेछेरछीत्याधी तरीरहेछेमणांव ज्योतिषारेणीस्त्रीनीवंठे राणीएमरसूकीनेजनी रहेछेत्यारपछीनेपुण्य भद्रनेवणीविपत्तिनुं
स्थानपूर्णदारिद्रमाश्री मरदुंनेशाम्रथाकर्युंछे केद्रव्यरहितपुरुषज्ञानी पावेछेनेकज्ञावाळो पुरुष तेजथीभ्रष्ट थायछेनेतेजरहित
पुरुषतिरस्कार पराभवपामेछेनेगर्व नगाएपराभवपामवाथी तेनेवैराग्यनाशथायछे तेनेराग्यवाळोपुरुष शोकपामेछेनेशोकवाळो
पुरुषबुद्धिरहित थायछेनेबुद्धिरहित पुरुषनाशपामेछेमाटे द्रव्यरहितपणुंसर्व आपत्तिनुंस्थानछेएमआश्चर्यकारीछे. त्यारपछीनेपुण्य
भद्रज्ञानवदेशीने पगहेणगारगर पण्यगामेछानो, नगरमांथीनीकळी पारपंपर्णनपरदेशमां भनने भर्भभ्रमण करीकरीनेजे-
पानगाहमालोपाज पातामाल्याल्यार पछीनाराजनपाळी एनीपोतानीगोने पूछतुंकेहेमिये ! तेएकवीएवारवर्ण पमेनशीरीने
निर्वाहकर्यो ! त्यारेतेस्त्रीयोग्योंकेमाणमित्र ! मकानिथीजअतिदो नगरमां वीविमळा नामेमेनपराणनीएडपदेश कोल्हापनामो
दामाविणालना एणपनिमपगाइने पैथारवर्णवारदिवमनी तेहेभोनकपरकर्णछे तेनाननाभळीअनिने आश्चर्यपामनो पुण्यभद्र-
गीनेतेस्त्रीनरवेयोल्यो—केतेकारणमनं पणकहेनेणंकरीनेहुं पणनाराजेषोगुणीपइ त्यारेतेस्त्रीएजीव अजीवइत्यादि तत्त्वनोविचार
कहेवमारेरुणोने गामडीनेपुण्यभद्र पणश्रावकथयो नेगामनारहेनारविच्याद्दष्टि प्रावणोएअनेनिंदा करीनेपण नेवजणद्र
हपणेरापश्रावक रमाएकदिवसमान पाणमां अनिशेटाहना मधुरगीतांनानापुत्रने लक्ष्मणापमाणपछेती एनीअतिदोषनीकुं
दिता (गुद) नीपागेनापणा आवेछेनेरपणनुं विष्याद्दष्टिप्रामणोए अतिदोषनीअपणेहेपामीए! अहिंयांदूरमा,दुर्गाएपनिकार

तेतुंनेजरत्नपात्रुंआप्यूं. अनेनेउपशांतकोटीरत्नआप्यां. तेराणीओपगभक्तिस्हेतेलक्ष्मिने धर्ममार्गेशापरीकृतार्थपणेमरणपामी स्वर्गेगयो, अनुक्रमेमुक्तिनेपणपामशे. एमकारेअन्यदेवनी आकांक्षारहितपणानेविषेदृष्टांतकह्युं. एमकारेवीजोभेदसंपूर्णथयो. हवेत्रीजोभेदकहेछेके विचिकित्साकहेतांधर्मफळमांसंदेहकरवोते. तेमंदेहथीरहितपणुंयत्नुं तेनिर्विचिकित्सकहीए मंत्रदेवतानाआ- राधनमांपणानिश्चेनिःसंदेहपणुं सतेजफळनीमाप्ति थायछेपणसंदेहपणुं सतेफळनीमाप्तिथतीनथी तेउपरचोरअने भवदत्तएवेनी कथाआ प्रमाणेछे श्रावस्तिनामे नगरीनेविषेजिनदत्त नामेसारोश्रावकरहेतो हतो,अनेतेपंचपरमेष्टीना मंत्रनुंसाधनकरवाथी तेनामतापेविद्याधरनीपेठे आकाशगमनकरतोहतो अनेशाश्वताएवानांदिश्वर द्विपमांअष्टाहिकाउत्सवजोवानेगयोहतोनाएकवर- लीजिनपूजानेअर्थेसुगंधीदिव्यद्रव्यनासुगंधथीअतिशे सुगंधीथयांछे वस्त्रजेनांएवोपाछो आव्योत्यारेभवदत्त नामेएकमित्रतेणे विचार्युंकेशाथीआ अतिशेसुगंधीमानशरीरवाळो थयोछेएमआग्रहथी तेणेपूछयुंत्यारेतेणे विद्यानाबळथीनंदिश्वर द्विपजवुं इत्यादिकसर्ववृतान्तकह्युं त्यारपछीतेमित्रेतेविद्यामागी त्यारेतेश्रावकेकह्युंके तुंश्रावकथायतोतने आविद्याआपुंत्यारपछी तेणे पणतेमजअंगिकारकर्यो तेविद्यानोसाधनविधिपणकह्योके समकितअंगिकार करीनेत्रिकाळजिन पूजाकरवी,पृथ्विउपर शयन करवुं,ब्रह्मचर्यपाळवुं, निरंतरएकवखतजमवुं, संसारनोसर्वव्यापारत्यागकरवो, इत्यादिनियमपूर्वकछमासपर्यंतजिनपरमात्मानी अखंडितपुष्पवडे पूजाकरवाथी एकाग्रपणेमौन पूर्वकलक्षमंत्रनो जापकरवाथीसुगंधी गुटीकानोलक्षप्रमाण होमकरवाथीएकार्य नीसिद्धि थायछे. तेमांपणजिन सेवाकर्यापछी काळीचौदशनीरात्रिए स्मशानमांवृक्षनी शाखानेविषेचार शींकांबांधीनेतेनी हेठळएकत्रिकोणकुंडकरीने तेमांखेरनाल्लाकडाना अंगाराभरीनेएक शीकाउपरबेसीने आविद्यामंत्रनो एकसोआठवारजाप क- रवोनेतेशीकुं छेदीनांखीबीजाशीकापरबेसवुं. एमचोथुंशीकुंछेदनानीपछी आकाशगामिनीविद्यासिद्धथायछे. पछीतोतेणेतेज

तेथीतेनीजेअभिप्रायदवानी प्रकारेमनेंकर्यु परंतुमेशीकानीछेदवानेअथवारेविद्यासिद्धिमनेंएसेकेनहींआय एमाफळमांसंदेहकर्यो एवाअवसरमांएकचोरनगरमांथीना-शीकथीकंल्पो. तेशीकाउपरपदेल्लोनीचेउतरीगयो. पाछोस्वस्थथईनेतेशीकाउपरचढ्यो एमाअवसरमांएकचोरनगरमांथीना-
नरपादीरयनीपंदीउपानीलोआव्यो. पछवाडेवांटीआवनारा राजानारोवकोजाणी तेचोरतोवननाअंदरकोइजगाएनेजीगयो.
राजनेणकोएनाण्युंके प्रातःकाळेचोरनेशालीनुंएमथारी चारपासतेवननेवींटीनेठा. कुंदनाअग्निनोउद्योतदेखी पेलाशीकाउपर
गदउतरकरतो तेनणिकनेदेखीनेआचुंछएम तेचोरेपुछ्युं. वाणीआएजेवुंहतुंतेवुंकृतांतकह्युं. त्यारेचोरेकह्युंकेतनेआविद्याकोणेआ-
पीछे? त्यारेतेबोल्योकेमनेएकश्रावकेआपीछे. त्यारपछीतेचोरेजाण्युंके आश्रावकसाचाबोल्योछे एमहृदआस्थातेनाउपरथइ.
तेथीतेचोरबोल्योकेआरत्ननीपेटीनुंग्रहणकरनेमनेतारीविद्याआप. पछीधननालोभीएवाअनेविद्यासिद्धिमां संशयवाळाएवातेवा-
णीआएतेमकर्यु. ग्रंथकारकहेछेकेलोभथीअंधपणुंछने आलोकनातथापरलोकना सुखथीनिश्चेभ्रष्टकरेछे जेथीजडबुद्धिवाळोते
पोतानुंहितअहितअर्थनेजाणीशकतोनथी. तेआप्रकारनीचेष्टाकरेछे. ॥ १ ॥ त्यारपछीसत्यनेधारणकरतो एवोतेचोरएकचीका
उपरबेसीविधाने १,०८ वारजपीनेसंपाथेमचारेशीकानीछेदनकर्या. तेजवखततेचोरनेदेवतानाजेवी आकाशगामिनीविद्यासिद्ध
थइ. तेआकाशमांउडीचाल्योगयो. तेमवदत्तपणप्रातःकाळेतेरत्नपेटीनेलइतेवनमांथीनीकळ्तांजराजानापुरुषोए चोरनीबुद्धिथी
पकड्योनेराजापासेलइगया. अनेराजाएआज्ञाआपीकेएनोवधकरो. जेवामांवधभूमिमांलइजायछे एटलामांपारोविद्यागुरुतेवा-
णीओनुंकरेछेएमविचारीचोरआकाशमार्गेआव्यो. तेनेतेमकारनोदेखीनेकोपपामेला तेचोरेएकमोटीशीलाउपाडीराजादिकने
भयभीतकरीनेअतिशेत्रासउपजाव्यो तेराजादिकतेणेआणीभवदत्तनेपगेपडीउलटोसत्कारकर्यो. एमकारेमंत्रादिसाधनमांपणनिःसं
देहपणुंमनेफळनीप्राप्तिथायछे. एमधर्मफळनीप्राप्तिनेविषेपण निःसंदेहपणुंकरवुं. जेमकोइपनाढ्यनोपुत्रअल्पश्रद्धावाळो तेने

गुरुएउपदेशकर्योकेदेवनुंपूजनकरवाथीराज्यमळेछे तेवातनेणेखोटीमानी. केमकेतेमकारनुंदेखातुंनथी माटेएमविचारकर्योकेआ-पणेकुव्यापारछेमाटेनित्यजिनपूजनकरवुं. एमधारीजिनपूजानेकरतो. तेनेतेजन्ममांतथाअन्यजन्ममां कांइपणफळथयुंनहीं, ने शरीरेपणंकष्टथयुं. भोजनादिकनोअंतरायथयो, दुर्ध्यानथीमरणपामीयणांजन्मरझळ्यो अनेतेनोपासेरहेलोएक गोवाळीओतो तेगुरुनीवाणीमांजदृढश्रद्धावाळोहतो तेणछमासपर्यन्तजिननीपूजाकरी तेथीतेनेछमासमांराज्यमळयुं अनेअन्यजन्ममांस्वर्गादि-कनीप्राप्तिथइ माटेपर्यफळनेविषेसंदेहनकरवो एमकारेत्रीजोदर्शनाचारनोभेदकह्यो. हवेएजगाएनिर्विजुगुप्सा एवोअन्यपाठछे तेपसेभावोअर्थछेकेसाधुपुरुषनो मळ्वतेमेलुंअंग, मेलोवेषजोइनेनिंदाथीरहितपणेथवुं. तेमांपूर्वजन्ममांकायोत्सर्गकरीनेरहेलामु-निनेनेत्रमापहेलाकांटालगेदवातेमां आमुनितोनरदममळ्वहेप्याक्षछे अंगजेतुंएवोछे एमजाणीसंकोचपामतो एवोपुण्याढ्यनामे राजातेनुंदृष्टांतछे. एमकारेएमथमना त्रणभेदउपरविशेषव्याख्यानअमारीकरेली श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रतेनीटीकाथीजाणजो. ए मकारेत्रीजोभेदसंपूर्णथयो.

तथादेव, गुरु, धर्मनेविषेअमूढदृष्टिपणुंकरवुं तेमांमिथ्यादृष्टिपुरुषोनाविद्या, मंत्र, तप, पूजा, प्रभावना, इत्यादिदीठेसतेपण जेनीदृष्टिमोहनपामेतेअमूढदृष्टिकहीए. तेअमूढदृष्टिउपरअंबडनायेसन्यासीए परीक्षाकरेलीसुलसानामे श्राविकातेनीपेठेजाणवी. एमकारेचोथोभेदकह्यो.

तथाउपबृंहणाएटले प्रशंसानेपणलोकमां अत्यंतबहुगुणने करनारीछे.बहुधातेप्रशंसावडे सर्वलोकनोनिरंतर निर्वाहदेखाय छे जेमकेपिता,काका, भाइ,भत्रिजा,पुत्र,पौत्र, माता,पुत्री,बेन,स्त्री,पुत्रनीस्त्री, मित्र,स्वजन, सेवकइत्यादिअने शेठ,वणिक, राजा,योगी, मोटीऋद्धिवाळो, तेसर्वेपणप्रशंसा करवाथीजबहुधा वृद्धिपाम्योछेउत्साह जेमनोएवाथायछे अनेपोतपोतानेसा-

धणप्रकारथकी एमप्रकारे प्रयत्नकरेछे.राजादिक पणजीतकाविताादिकवडे संतोषपमाड्या पनाजहजार, त्याग,कंपआगी रेछे.कर्णराजा, भोजराजा,विक्रमराजा इत्यादिकनाद्रष्टांत जाणवां. देवतापण स्तुतिआदिकवडे वखाणकर्यांथकाजमगमस्था- पछे,अनेपोताना इष्टकार्यनेकरेछे एमज्ञंकोत्तरकार्यमां पणएटलेपरलोकना कार्यमांपणदेव, गुरु,शिष्य, साधर्मिकइत्यादिकने विषप्रकारनोविचार जाणवोमाटेतप, स्वाध्याय,विनय.तेवपावृत्त(सेवाकरवीते) तथागुरुनआज्ञा करेलादुष्कर विहारतथा वादीनेजीतवुंइत्यादि धर्मकृत्यमांउद्योग वाळातोधर्मनेभावनी वृद्धिनेअर्थगुरुआदिके पणजेपरेतेमनेनी प्रशंसाकरवीतेकयुं छेकउपबृंहणअने उपबृंहाअनेप्रशंसनाएबेशब्दनो एकअर्थछे तेज्ञानादि गुणनीप्रशंसाकरवीते एशब्दोनोअर्थछेअनेते ज्ञाना- द्गिुणनेवधारनारीछे माटेमोक्षनेसाधन करनारीप्रशंसाछे अनेवळीप्रशंसावडेभव्य गुणवाळोपुरुषपणसारा गुणनुंउपार्जनकरना उद्योगीथायछेअने शीवणहोयतेपण सारासाथीपसन्मान करेलोसंग्राममांशूरवीर थायछेअनेसमग्रसुंदरगुण छतातिगुणोनीयोग्य पणीपणप्रशंसाने उचारेनपामेत्यारेदुःखवडे मानथनाएयानेगुणोने उपार्जनकरवानो आदरकोणकरेतेमाटे कोइशिष्यविनयक- रीनेआपेसमेतेशिष्यने विशेषेज्ञानादि गुणनोक्लेशदेवायछे तेनीप्रशंसाकरवीने पणज्ञानादिगुणने वधारनारछेमाटेतेमगफिन वुंअंगपणथायछेअने जेपुरुषप्रमादथीतथा अहंकारथीकोइपुरुषना गुणनीप्रशंसानथीकरतो तोतेनागुणनथी वृद्धिपामताअने तेपोगुरुआदिकपुरुष कद्रसूरीनीपेठेपुनिजननो अनेपोताना आत्मानो नाशकारीथायछेतेउपर कद्रसुरीनुंआख्यान आनकारनुं छे.कद्रानागेंतागच्छमां परमसिद्धसाधुएता तेनांप्रथमनोसाधुप्रमादन नापेवादथियाद करवानीलब्धीवाळोहतो अनेबीजोसाधु समाकरनारोपणासुपर्मीनपहल्यादिकपणा तपकरनारतपस्वीहतो अनेत्रीजोसोपीलनामे शिष्यनिमित्तशास्त्र (ज्योतिशास्त्र) मां गणोहुंशियारहतो अनेचोथोशाणार्य नामेशिष्यसाधुनीक्रियाने विषेपणोहुंशियारहतो तेथीतेचारेनीलोकमां अतिशेषप्रशंसाथइ

भा०
न. २

[illegible] आल्यो [illegible]

[illegible]

[illegible] आल्यो [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रतिनोदनारहीत [illegible] [illegible] मग्[illegible]नमकनं[illegible]करणकरहाग.
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]गृणभयो ॥३॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तेषां
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आचार्य
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible]. [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ११८, [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible], पान, [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ७ ॥

तथाप्रभावनाकहेता जिनशासननीअतिशे उन्नतिकरवांतेअने तेउन्नतिनाकरनार प्रावचनीकादिक आठप्रकारनापुरुषो
कहाछेतेआठेनानाम, १. प्रावचनीक, २. धर्मकथिक, ३. वादी, ४. नैमित्तिक. ५. तपस्वी,६ वैद्य,७. सिद्ध,अने ८.कवि.
एवाप्रावचनीक तेप्रवचन(शास्त्र)ना करनारगौतमस्वामी सुधर्मादिकजाणवा, धर्मकथिकतेगणिकाना घणाआचार्यसुधीरहे·
लानेनित्येदशदश पुरुषोनेप्रतिबोध करवानोनियमवाळाश्रीनंदीषेणअनेथी आगमनानेनिर्बाध करनारबप्पभट्टीसूरीआदिक
पुरुषोजाणवा वादीपुरुषोतोवृद्धवादीसूरी, मल्लवादीसूरी, वादीवेताळश्रीशांतिसूरी तेवादीदेवसूरी प्रमुखपुरुषोजाणवातेमां
वृद्धवादीसूरीनुं स्वरूपसिद्धसेनसूरीना संबंधमांकथकर्युंछे अनेमल्लवादीनोसंबंध आकहीएछीए भृगुकच्छ (भरुच)मांजिनान·
नामुनिआनंदनामपुरुषो जितेंद्रीयवादनेविषे जिनानंदसुरीने बौद्धनीथीपराजयपामीनेवल्लभीनगरीमां आव्या त्यांपोतानीबहेन दु·
र्लभदेवीएअतीतमत. यक्षअनेमल्लए नामनाचणपुत्रसहीत दीक्षालीधीहती अनेतेत्रणपुत्रोअतिशे पंडितथयाहता.तेमांमल्ल
वादीपुत्रविषेमे करीनेपंडितहतो. त्यारपछीपांचमापूर्वथी उद्धारकरेलुंने अधिष्ठायकदेवेसहीत एवुंद्वादशारनयचक्र एनामनुं
पुस्तकतेजेणेकरी एकआगमलेआदिने अंतसुधी,गुरु,संघनेमनीपूजादिक मोटाउत्सवेसहीत वांचीनेआपेलतेने आराधनरा
योग्यतथावांचवा योग्यथाय.एवुंमहाप्राभाविक पुस्तक,पुस्तकना भंडारमांहतुंतेपुस्तक कोइनेपणनदेवाडयुं एवुंदुर्लभदेवीना·
मेमाव्हीनेतारीपेठे भक्तामणकरीनेगुरुए अन्यजगाएविहार कर्योहतो.तेममेकौतुकथी एकानेजदमल्लवादीए तेपुस्तकउघेडीना·
घवावांच्युं.तेमांपहेलुं आर्याकोलोक,जिनय, भंगनेलजिनेनाराहित पणाथीअनर्थकरोएम आचार्येएककहुंछेअने जैनशासनथीअन्य
शासनगुरुओनेपी वैधर्म्यपणुं(विपरीतधर्मपणुं) थायछेएना अर्थवाळी प्रथमनीगाथामल्लवादीए वांचीएटलामां श्रुतदेवीएआवी
तेनाहाथमांथी पुस्तकहरणकर्युं. तेथीतेअतिशयखेद पाम्योतेवाततेनीमाए तथासंघलोकोएजाणी त्यारेतेमणेघणो ठपकोदीधोप·

पीनकुवारीवरे पूरव नीवासिने अपूर्वकपर्वतउपर जनेपणुंवपकर्यु अने नपनाराराथावदिरुक वास्तुंवभवगहरवादना नो दावालीवारणुंवनी वनवेतगवानोवोए अतिशेआदरकरी विज्ञाति.पी.दुष, दर्शोन्वादिविनव) ययोग्यग्रहणकरावी. त्यारप-छीपंच शैवोए आराधनकरीनीपुन देवीएपरीक्षानेअर्थे एकादिवसरात्रिए अगामीवानगवावतुंवादीने आचाद्यपारहीपुकुं–वेकिंहा(किहवानूर्णी?) त्योमजवारीए वपृके–वशाः(वान्ए मिहवस्तुं) वजीउवर्हिनारीनी गयाश्चादेवीए आवीनेपू-(डुवेवनावेनीमापवीहाते?) एवरवातिदेवीवोनी त्यारमहुवादीवोल्याके गुरपूनेन (गोटवीनीनावे) आनकारनोउनगमा-पर्वनेनीवारना वृद्धिनोविदेविए गभाद्धमहधानेकर्षुके मुवरमागपनास्तुवादी वोल्याकेनयचक्रनुंपुस्तक आपोत्यारेदेवि-वोनोवेएवंध मराःरकरवाधीयुदेवीना अतिशेउपद्रवधरमाटे मथमजेपूर्वनीआयो वांचीउतेनेअनुसरीनिर्जु नयचक्रसंग्रह करीसंवारवीवधारणी तेपुणदेवीनाभंडारथी १०००० श्लोकनोनयचक्रनामे नवोग्रंथकर्यो तेनेनुविवरण(टीका) वानीनग्रंथ-धोकेनीपाधारेमर्के एविनोधीदग्वपाव एहुंकर्युं.एवीसंपन्नोकोए तेदुमसकेनेदाधीना स्कंधउपरस्थापन करीपोताउत्सवेनमही-मोत्सवारीनेरनुभी नगरमांपवेशकराव्यो. पछीसंघनेदेवसूरवादीनी मार्थनाकरीनेनीशामे आवकारनी गधवगायाल्यावी नेनोअर्थहेनवचकारे शीलाउवसधपनिवादी नुजेतेएवात्नभणवडे नेसराद्धपीपीसदृथना अनेजिनवचन दवीआकाशन-उद्योतवनारानी रदवादीनुरीजयवंन वर्तोअनेभजीवषक्षनाया गाभाए२४००० श्लोकनापरिमाणवाळुं पद्मचरित्र (रामच-रित्र) सारुं भवे शरामद्दवधारेत्याने अधोविपावरनावनुं व्याकरणअनेन्यासनेवे करायांअनेपक्षनाया पुरीवामेअष्टांग निमित्तवोनाधारीने मदवरागाजेवडुवादीने पोतानापुरीपदषां स्थापनकर्या. अनेभद्रचर्यांभावीसुद्धानंद नामेवोद्धमतना वोटवीमावे तवादववेवादकर्यो. अनेर्दारकयंपवाने जयपुरेवेनयचक्रना अभिमायनमाणेउ दिवसवादकर्योहोएल-

वादीएजेनेपूर्वपक्षकर्यो हतोतेनुंधारणकरवा असमर्थथतोवृद्धानंद वादीतोपोतानेतेनुं स्मरणनथवानेअंगेरात्रिए वादीभीपोताना
हाथेलखतोहतो. एकादिवसतेलखवानुं विस्मरणथवाथीगभितो खेदपामेलोहृदयमांथी मुंझवणथवाथीहृदस्फोट एनामनोरोग
थयोतेथीतेमरणपाम्यो प्रातःकाळे शासनदेवीएतेवात जणावीतेमल्लवादीनाउपर पुष्पनोवरसादकर्यो अंतेराजाए 'वादी'ए
प्रकारनुंबिरुदआप्युं, तेथीबुद्धलोकोनेपोताना देशमांथीकाढीमूक्यानेफरीथीआव्याजनथी अने वृद्धानंदतोपणतेदुष्टव्यंतरथयोते
मल्लवादीनाकरेला एग्रंथनोअधिष्टायक देवथइनेएवोंकर्यो के कोइनेतेग्रंथवांचवाज देनहीं एमकारणोसंबंध प्रभावकचरित्रादिक
ग्रंथनेविवेचनथी जाणजो, अनेमळधारीराजशेखरसूरिएकरेला प्रबंधनेविषेतोआमकह्युंछे केगुर्जरदेशमां खेटमहास्थाननामे
नगरमांदेवादित्यनामे ब्राह्मणनीसुभगानामे पुत्रीहतीअनेतेबाळविधवा हतीतेणीएसूर्यनोमंत्र जपवाथीआकर्षण थयेलासूर्य
देवेमनुष्यनुंरूपधारण करीबलात्कारेते विधवानोसंभोगकर्यो तेसूर्यनीदिव्यशक्तिहोवाथी तेविधवानेगर्भरह्यो पिताएतेकन्याने
घणोठपकोदीधोपछी जेवीवातहतीतेवीपिताने कहीदीधीपछीलज्जाथी तेनेवल्लभीनगरीमां मोकलीदीधी तेणीएएकपुत्रनेपुत्री
बेयसाथेउत्पन्नकर्यां. अनेतेनुंदिव्यरूपहतुं अनेआठवर्षनाथयां त्यारेतेनेनिशाळामांभणवा मूक्यांत्यांछोकराए बापविनानोछे
एवीमश्करीकरी त्यारेतेणेपोतानी मातापासे आवीपितानुंनाम पूछ्युंत्यारेमाताएकह्युं केहुंजाणतीनथीएवुं मातानुंवचनसांभळी
अतिशयखेदपामीतेणे मरवानोआरंभकर्यो. तेवखतसूर्यदेवेसाक्षात आवीनेकह्युंकेहेपुत्र ! हुंतारोपिताछुंअने जेतारोपराभवकरे
तेनतुंकांकरीमारीश एटलेतेनोनाशथशे एवोवरआप्योपछीजेछोकरो मश्करीकरेतेनेएककांकरोमारेएटलेमरे. एमकरीतेणेघणा
बाळकोमार्यात्यारे तेवल्लभीनाराजाए तेनेबोलावीघणो तिरस्कारकर्योत्यारे तेणेराजानेमारीनेतेनुं राज्यलइपोतेराजाथइ
बेठोतेशिलादित्य नामथीजगतमांप्रसिद्ध थयोतेजैनीहोवाथीतेणे शत्रुंजयतीर्थनोउद्धार कराव्योहतोतेराजाए पोतानीबेनेभ-

हपनाराजागंपाधेपरणाश्री तेनोपुत्रएमल्लहतोएक दिवसमोरेतेदेशनोत्याग करेएवीप्रतिज्ञापूर्वकवल्लभी नगरीमांबौद्धलो कोतथाजैनसाधुओने वादथयोदैवयोगथकी बौद्धलोकजीत्याअनेसर्वे जैनसाधुपरदेशमांगया, तेशिलादित्यराजापणबौ- द्धथयोअनेशत्रुंजय तिर्थमांऋषभदेवनी प्रतिमानेतबुद्धनीप्रतिमाछेएमकरीतेबौद्धलोकपूजताहता अनेतेनीबेहेनेपोतानामरणपछी वैराग्यपामीनेपोतानापुत्रमाहेगसुस्थितनामे आचार्यपासेआवीदिक्षालीधी एकदिवसमल्लपुत्रेतानाने पूछ्युं-केआपणाजैन संघकेमधोडोथयोछे! त्यारेतेणीएकह्युंके साधुसर्वेपरदेशगयाछे इत्यादिसर्ववृत्तांतकह्युंने सांभळीक्रोधपामी बौद्धलोकनेजीतवा नीतेणेप्रतिज्ञाकरी अनेपर्वतउपरजइ आकरुंतपकर्युं. तेवखतशासनदेवीएपूर्वे कह्युंहतुंनेमपरीक्षाकरीमनमा थइनेनयचक्रनुंपु स्तकआप्युं,तेनेतेनीचे भूमिउपरमूकवानोनिषेध कर्योतेपुस्तकएकदिवस पृथ्वीउपरमूकराथीरोपकरी तेदेवीएकह्युंकेहुंताहरुंना निष्फकरीशपछीहुं तारीगमीपेरहीशपण तेनेमत्यपक्षदर्शननहींआपुंत्यारपछीबौद्धसाथेवादकरनांजयपामीनाने तेनएबौद्धाचार्यमर णपाम्योइत्यादिजाणवुं. वल्लभीनोनाशथयो एमसमपमजाणीनेमल्लवादी सुरीपोतानापरिवार सहीतअन्यस्थाने विहारकरीग- याएमश्रीमल्लवादी सूरीनोप्रबंधसंपूर्णथयो.

हवेश्रीशांतिसुरीनोप्रबंधकहेछे थारापद्रगच्छमांश्रीविजयसंघसुरीनेपाटे श्रीशांतिसुरीथयाहता. अनेअणहिल्लपुरपाटणमां श्रीभीमराजानीसभामां कवींद्रचक्रवर्तिएमकारनुंबिरुदपामेलाहता. एकदिवसमिद्धथयोछे मरस्वतीमंत्रजेमनेएवाधनपालपंडित माळवाथीपोतानोकरेलो तिलकमंजरीनामनोग्रंथतेने तेसुरीपोतानागुरुहता माटेतेनीपासेशोधवानेमाटेआव्या. तेवखतनेगुरु कोइवेपारीनुंसाधनकरताहता. माटेबारणेबेठेलोएकनवोनानोशिष्य तेनेएककठिणश्लोकनोअर्थपूछ्यो तेशुल्लकसाधुएतोत त्काळतेनीव्याख्या, उपन्यासपूर्वकपणीसरसकरी. तेनेसांभळीचमत्कारपामेलो धनपालपोतानादेनमांसइने गुरुनेमाळवामां

आग्रहपूर्वकबोलाव्या. तेगुरुनेमाळवामांजतामार्गमांगाजीए सरस्वतीएकह्युंकेतमेएकहाथउंचोकरशोतेवखततमारीसंघाथेवादक-
रनारवादीतत्काळतमारापदनेभजनेजीतशे. पछीतेगुरुमाळवामांआव्या. तेवखतभोजराजाराजानगरीथी पांचगाउतेगुरुनीसामा
गया. भोजराजनाकोइथीनजीतायए॥ ५०० वादीतेमांहता. तेराजाएपणएवीप्रतिज्ञाकरीहतीके आवादीओथीजेकोइस-
र्वपुरुषथायेअनेएकवादीने जीतेतोएकल्याखकरियाआपवा एवीरीतेतेव्हावादीजीते एटलालाखरूपियाआपवा. पछीतेवादी
ओसाथेतेसंघाथेवादीने जीतेतोएकल्याखकरियाआपवा. छेवटजतांगुरुएहाथउंचोकर्योके तरततेवादीओनापद्योभने
मोकोनीमाथेभोजराजानीसभा आगळगुरुजीनोवादचाल्यो. तेजोइभोजराजाप्रसन्नथयोके आयु-
जीताणो. एवीरीते ८४ वादीपुरुषोजीत्या, त्यारे ८४ लाखरूपियागुरुनेआपवानाथया. तेजोइभोजराजाप्रसन्नथयोके आयु-
रीतेमारा ५०० वादीपुरुषोनेनिश्चेजीतशे पछीआपएकदिवसभणतानीगंथाथे राजाएविचारकर्योकेहवेआपणेकेमकरवुं.
मनमाळेउपायकर्यालोके तेनेमत्कारएगुरुनुंसन्मानकरीने एगुरुनेविदायकरशोतोलोकमांतमारीआबरूकाइकपणरहेशे. का-
रणकेएगुरुनीवादकरवानेमाटेकोइजगाए पोतानीमेळजतानथी आतोकथाजोवानेवास्ते आग्रहथीबोलाव्याहता. पछीतेवात
राजाएकबूलकरीअनेकह्युंके नामथीतोएज्ञानीगुरुकहेवायछे परंतुवादीलोकोनेतोवेनाळसमानछे. तेदिवसथीआरंभीनेवादीवे-
ताळशांतिसूरिएमनुंनामजगतमांविख्यातथयुं माळवानाएकलाखरूपियागुजरातना पंदरहजारकपैआनीबराबरथताहता.
एथीमाळवामांथीआपेलारूपियाना गुजरातीरूपियापिस्तालीसहजारथया तेगुरुनेआप्या. गुरुएतेद्रव्यवडे
पछीतेवेणपाळशानाथोराबीजारूपियाना गुजरातीरूपियापिस्ताळीसहजारथया तेगुरुनेआप्या. गुरुएतेद्रव्यवडे
गामधागामनावासक्षेत्रआनीवेस (जिनमंदिर) बंधाव्यां तेकथासांभळीनेआव्यापछी पोतेरहेताहतातेथारापद्रनगरमां ५०
हजारनुंपोतामकरायुं. अनेदेवकुळिकादिकपण तेमाथीजकरायुं. एकदिवसपाटणनाशेठजिनदेवनापुत्रने सर्पदंशथयोहतोतेमां-
त्रिकोएपणतेनेजीवाडवानी आशामूकीदीधीहती तेसमशानमांदाटवाते नानांछोकरानेसाटामांमुकाडेछेछतो तेवखतआयु-

[illegible] दाळे.कडावी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] नवनेपुस्तकीनामांभ-
[illegible] नेवीडानीनुगी
[illegible] एकदिवसवनमा [illegible]
[illegible] नवकारे [illegible]
[illegible], नेननाक्रमथी [illegible] कोणछे ? त्यारे
[illegible] ! मुनीबोल्याकेहुं ल्यारेबोल्याकेहुंकोण ! [illegible] भानकोण !
[illegible] चमत्कारपाम्यो पछी द्वार
[illegible] गुरुएनीवीढोधो एकदिवस [illegible]
[illegible]
[illegible] शहर सौरी टीकाकरीजे [illegible]
[illegible] नगरपनिसूरीनी [illegible]
[illegible] एकदिवस [illegible]

आजनोउभारहेवाथी मारांबनमहुःखताहता. तेदुःख-
गया, त्यांरेतेदेवीएशमीपआवीने सूरिनेउपकोदीपो. त्यारेसूरीयेंतेयाके आजनोउभारहेवाथी मारांवनमहुःखताहता. तेदुःख-
थीविस्मरणथयुं त्यारेदेवीयांजीकेतमारूं आयुष्यछमासनुंछे. त्यारपछीतेसूरीएपोताना गणाविद्वान १२ सूरीपदे १ सूरीने
पोतानास्थानपास्थापनकर्या. अनेपोतेंरैवताचळ पर्वतउपरजइ २५ दिवसनुंअनशनकरीसंवत १०९३ नावर्षमादेहनोत्यागक-
रीवैमानीकदेवताथया. एमकारेंशांतिसूरीनोंप्रबंधपुरोथयो तेश्रीवादीदेवसूरीनुं वृत्तांतनोचहुथीवखणातछे. अनेनैमितिकतो
श्रीभद्रबाहुस्वामीप्रसिद्धथया. भद्रबाहु अनेवराहमिहिरबेसगाभाइहता. भद्रबाहुजैनीहता अनेवराहमिहिरराजानीसभामांमोटा
पंडितहता. तेमनीकांळीआजवाराहमिहिरनामनिग्रहछे राजानीसभामांवराहमिहिरे एवीरीतेप्रकाशकरेल्होहतोके आभाकुंडाळुंक-
रेलीपृथ्वीमांबावनपळनुंमत्स्यपडशे तेथीतनभद्रबाहुस्वामियेंराजानेकह्युंकेएकावनपळप्रमाणनुंमत्स्यपडशे,अनेतेकुंडाळामांनहीं
पडेपणकुंडाळाना कांठाउपर पडशे भद्रबाहुनाकथनप्रमाणेजथयुं तेनुंकारणएवुंहतुं केतेभद्रबाहुएपणी कल्पनाकरीके बावनपळ
मत्स्यभारेलेउंचेथी पडतांभोंयनीउपर आवतांएकपळसुकाशे तेतेवत्तनाअनुमानथी केतेमायुनातोरथीने मत्स्यकुंडाळाथारणं
पडशेएवीकल्पना करेलीमाटे वळी वराहमिहिरेराजाना पुत्रनुंसोवर्षनुं आयुष्य निर्णयकर्युंहतुंते बिलाडीथकीतेपुत्रनुं मरणथशे
एवोनिर्णयकर्योहतो. त्यारेभद्रबाहुएएम कह्युंकेतेबिलाडीना मुखथीएपुत्रनुंसातदिवसमां मरणथशेतेमपाणे तेवानथइ (राजाने
घेरपुत्रथयोत्यारे नगरनासर्वलोक भेटलइनेगया अने सागीपुत्रनेआशीर्वाद देवागयातेवखतकोइ श्रावकेभद्रबाहुस्वामीनेकयुं
केआपणेजवुंघटे त्यारेतेंबोल्याकेएपुत्रनुं मरणसातदिवसमांबिलाडीनेथी मुख्यकाळीथीथशेत्यारपछीतेराजाना चित्तनीसमाधि
करवावास्तेनइ उपदेशकरशोएमाचुने पुत्रतोपरंतुपुत्रजन्म सांभळीतेवखतमांनीना उत्सवमांनथुंपुकनथी. तेवातराजाएसांभळी
मारेलगरमांथीतमाम बिलाडीओकाढीने काढीमूकावीपछीतेपुत्र सातमेदिवसथुनेत्यो हतोअनेतेनाउपरबिलाडी तेनामोढानी

हता. तेदुःख-
गया, त्यांरेतेदेवीप्रत्यक्षथइआवीने सूरिनेटपकोदीधो. त्यारेसूरीयेंकल्युंके आजनोउभारहेवानी थाराविषयदुःखनाहता. तेदुःख-
धीविस्तारजथयुं त्यारेदेवीयेंखीजकेनमार्गआयुष्यतमामनुंछे. त्यारपछीतेसूरीयेपोताना घणाविद्वान १२ सूरीमध्ये १ सूरीने
पोतानास्थानमांस्थापनकर्या. अनेपोतेरैवताचळ पर्वतउपरजइ २५ दिवसनुंअनशनकरीसंवत १०९६ नावर्षमांदेहनोत्यागक-
रीवैमानीकदेवथयागया. एमकारेशांतिसूरीनोप्रबंधपुरोथयो नेश्रीवादीदेवसूरीनुं वृत्तांततोबहुप्रसिद्धवर्तछे. अनेनैमित्तिकतो
श्रीभद्रबाहुस्वामीप्रमुखजाणवा. भद्रबाहुअनेवराहमिहिरबेसगाभाइहता. भद्रबाहुजैनीहता अनेवराहमिहिरराजानीसभामांमोटा
पंडितहता. जेमनीकरेलीआजवाराहीसंहितानामग्रंथछे राजानीसभामांवराहमिहिरे पृथ्वीउपरशाकरेलीहतीके आमाहंकुंडाळुं क-
रेलीपृथ्वीमांथावननुंमच्छपडशे तेवखतनभद्रबाहुस्वामीयेराजानेकह्युंकेएकावनपळप्रमाणनुंमच्छपडशे,अनेतेकुंडाळामांनहीं
पडेपणकुंडाळाना कांठपरपडशेपछीभद्रबाहुनाकह्याप्रमाणेजथ्यान थानेनुंकारणएजहतुं केतेभद्रबाहुएपवी कल्पनाकरीके वायनपळ
मच्छआटलेउचेथी पडतांपोंयनीउपर आवतांएकपळसुकाशे तेतेवखतनागुणयोगथी नेतेवायुनाजोरथीते मच्छकुंडाळाबहार
पडशे.एवीकल्पना करेलीमाटे पछी वराहमिहिरेराजाना पुत्रनुंसोवर्षनुंआयुष्य निर्णयकर्युंहतुंने बिलाडीथकीतेपुत्रनुं मरणथशे
एवोनिर्णयकर्योहतो. त्यारेभद्रबाहुएएम कह्युंकेतबिलाडीना मुखथीएपुत्रनुंसातादिवसमां मरणथशेतेप्रमाणे तेमानथइ (राजाने
घेरपुत्रथयोत्यारे नगरनासर्वलोक भेटलइनेगयाअने शागीपुरुषोआशीर्वाद देवागयातेवखतकोइ श्रावकेभद्रबाहुस्वामीनेकह्युं
केआपणेजयुंथटे त्यारेतेवोल्याकेएपुत्रनुं मरणसातदिवसमांबिलाडीथकी मुखथीथशेत्यार पछीतेराजाना चिंतनीसमाधि
करवामाटेजइ उपदेशकरवोएसाधुने युक्तछेपरंतुपुत्रजन्म सांभळीनेवधामणीमां उत्सवमांजवुंयुक्तनथी. तेथानराजाएसांभळी
सारेनगरमांधीतमाम बिलाडीओकाढीने काढीमूकावीपछीतेपुत्र सातमेदिवसहुतेळो हतोअनेतेनाउपरबिलाडी जेवामोढानी

शालशोटीफेरवीकेगुरुमाह्मणना मस्तक नीचेपृथ्वि उपरपड्यां. एवुंदिव्यशक्तिथीदेखाडयुं. तेथीमोटोहाहाकारशब्दोविस्तार
पाम्योअनेराजाअतिउद्वेगवाळोथयो. तेउठीआवीनेतेमुनिनाचरणमांपड्यो. त्यारेराजाएप्रार्थनाकरीकयुंके हेयोगिगुरु ! आ
माह्मणोनेजीवाडो. त्यारेतेउपाध्यायजीबोल्याके जोएवधाब्राह्मणजैनीसाधुथायतोहुंजीवाडुं. राजा, प्रधानाविगेरेसर्वेलोकोए
एवातकबूलकरी. त्यारपछीते. उपाध्यायजीएपोळीसोटीफेरवी तेथीमर्वेमाथांपोतपोतानास्थाने पूर्वनीपेठेहतांतेमथयां. तार
पछीतेसर्वेब्राह्मणोएजैनदिक्षालीधी नेराजाआदिकसर्वेजैनधर्मीथया. तेवातमांभळीआर्यखपुटाचार्ये पोतानास्थाने श्रीमहेन्द्रसुरीनुं
स्थापनकरीस्वर्गमांपधार्या. एप्रकारेआर्यखपुटाचार्यनो प्रबंधकह्यो. हवेश्रीजीवदेवसुरीनोप्रबंधकहीएछीए. वायटनामेमोटा
स्थानमांधर्मदेवनोमहीधरनामेमोटोपुत्रहतो तेदेशांतरमांभ्रमणकरतोहतो. तेनेदिगंबरलोकोएप्रतिबोधकरी दिक्षाआपीआ
चार्यपदमांस्थापनकरेलोहतो. दिगंबरलोकोएतेसुरीने परकायप्रवेशादिकविद्याओपणआपीहती. तेशेठनोबीजोपुत्रमहीपाळ
नामेहतो. तेणेपोतानाभाइनावियोगथी वैराग्यपामीश्वेतांबराचार्यपासे दिक्षालीधेलीहती. एवेआचार्यनोमेळापथयो त्यारेतो
आचार्येबधानेजीमाताएअशुद्धआहारादिक दिगंबरनादेखाडीयुक्तिवडे प्रतिबोधपमाड्योएवोनेदिगंबराचार्य श्वेतांबरीथयो
अनेतेमुरीपदवीमळ्या पछीनेजीवदेवसुरीएवानामथी जगतमांप्रसिद्धथया. पांचसेपतिनापरिवारेमहीतांविचरताहता. तेवखत
एकयोगीव्याख्यानवखतआवीबेठो. तेयोगीमांएवोगुणहतोके पोतानीजीव्हानेपछांडीनीपेठवाळी हवाववाथीव्याख्यानवांच
नारनीजीभ्हारथंभीजाय. अनेकोइमाणसनामस्तकनुंचुर्णमंत्रीने तेणपासेकरीराखेलुंतेजेना मस्तकउपरनांखेतेनेतेवखतथापएवो
थाय, नकाइथाय. पछीतेनेएवोचमत्कारदेखाडीपोतानो शिष्यकरीलीधो. तेनगाममांमल्लएवेनामेएकशेठहतो. तेणेसूर्यग्रहणनुं

पर्वआव्युंत्यारेपर्वनेअर्थे घरनवानाल्लाखरुपियानोसंकल्पकर्यो. ब्राह्मणलोकोनेपूछयुं त्यारेतेओएकयुंकेयज्ञकरीनापरो. ते
यज्ञतेणेयज्ञकर्यो एकशादतळेयज्ञकुंडनीधुमाडीलागवाथी एकमोटोसर्पपड्यो तेनेजइब्राह्मणलोकोएमांइलाकडीवडेयज्ञकुंडमां
नाख्यो. तेजोइलोकोएहाहाकारशब्दकर्यो. त्यारेतेब्राह्मणलोकबोल्याके आयज्ञमांमर्णपामेतेस्वर्गेजायछे. शेठेतेनातमांभळीपण
पोतानाअंतरमांसमाधाननथयुंतेथीतेपापनुं प्रायश्चितब्राह्मणपासेमाग्युंत्यारे ब्राह्मणोएकयुंकेएमर्पनाप्रमाणथी सुवर्णनो
एकमोटोसर्पकरीब्राह्मणनेआपो तथीएपापनीशांतिथशे. पछीश्रद्धावानशेठे तेनकारनोमोटोसोनानोसर्पकराव्यो. तेसर्पनुंआमं
त्रणकरीपूजाकरी. तेसर्पकोनेआपवोतेनिर्णयमांब्राह्मणोमांपरस्परबोलाबोलीथइ. त्यारेतेमणेनिर्णयकर्योके जेटलाअग्रेसरब्रा-
ह्मणछेतेमनेएसर्पना कटकेकटकाकरीवहेंचीआपो. एवोनिर्णयकरी तेसर्पनेकापनाकामेलुहारने बोलाववानोगडबडाटकरेछे ते
वखततेशेठबुद्धिवानहतो माटेतेनाअंतरमांविचारथयोके आनोउल्टुंसमणुंमनेपापलागशे एकसर्पनेमारवानापापनुंप्रायश्चितक-
रताविसर्पमारवानुंपापवळटुंमनेलागशे एमधारीयज्ञनोत्यागकरी अतिखेदपामीबेठोहतो तेवखतजैननाकोइसाधुभिक्षाकरवा
आवेलातेनेजोइनेतेणेतेवातकहीधर्मपूछयो. त्यारेसाधुओएकयुंकेतमेजीवदेवसूरीपासेआवजो. नेतमनेधर्मदेखाडशे. पछीनेसाधु-
नाकहेवाथीतेशेठजीवदेवसूरीनीपासेगयो. तेमणेप्रतिबोधकरीतेनेश्रावककर्यो. पछीतेबोल्योके संकल्पकरेलुंअडधुंलाखद्रव्यतो
मयमब्राह्मणादिकमांखरचायुंछे नेअडधुंलाखद्रव्यतमेग्रहणकरो. त्यारेगुरुएतेद्रव्यग्रहणकरावी जैनमंदिरादिककराव्यां. तेद्रे-
पवीब्राह्मणलोकोएएकमरवाने तैयारथयेलीगायजिनचैत्यनागभारामांराख्या. अनेतेगायमरीगइ तेवातगुरुएजाणी. त्यारपछी
गुरुएपोतानामठनीअंदरजइने आसनउपरबेसीने पोतानाशरीरनी रक्षानेअर्थेकेटलाकसाधुओनेपासेबेसाडीनेकुंभकवायुवडे
ध्यानकर्युं, नेपोतानीविद्यानाबळथीदेहनोत्यागकरी तेमरेलीगायनादेहमांप्रवेशकरीने तेगायनेब्राह्मणलोकना शिवालयमांम-

तेवारपछी पछीनेमापनादेहवापीनीकळीपोतानादेहमां आव्या. तेवातब्राह्मणोएजाणीनेसुरीनापगमांनमस्कारकरीयणीप्रार्थ-
नाकरी. त्यारेगुरुबोल्याके मारागछमांजेनवोआचार्यथाय तेनेमोनानुंजनोइएदेवरावीब्राह्मणना देरासरमांलेइजइने ब्राह्म-
णोएवेदमंत्रथीजनवारअभिषेककरवो इत्यादिकमेजेकह्युंतेनोस्वीकारब्राह्मणोएकर्यो त्यारेपूर्वनीपेठेजपरकायप्रवेश विद्याना
बळथीतेमणेगायनेदेराथीबारणेकाढी. आयुष्यनोअंतआव्यो त्यारेपोतानाकोइमित्रनेगुप्तरीते कह्युंकेमाहंकपाळफाडीने एक
योगीछेतेसिद्धविद्यावाळोछे; जिनमतनेघणोउपद्रवकरशे. माटेमारानिर्जीवकपाळने भांगीचूरोकरवो एमकहीनेसुरीस्वर्गवा-
सीथया. त्यारेतेमित्रसुरीनावचनप्रमाणेतेकपाळनेकर्युं. त्यारपछीतेयोगीकपटथी अतिशोकदेखाडतोत्यां आव्यो नेभांगीनेचुरो
करेलाकपाळनेदेखीहाथघसीबोल्योके विक्रमराजानाकपाळनुंएकखंडमारीपासेछे नेआयोगीनुंएककपाळखंडमनेप्राप्तथयुं होत
तोमारीविद्यासर्वोत्तमसिद्धथात, परंतुतेमनेमळ्युंनहीं पछीतेयोगीआकाशमार्गेजइ मलियाचळमांथीबावनाचंदननां तथाअगुरुनां
काष्ठथीसुरीनाशरीरनोदाहकर्यो. एमप्रकारेजीवदेवसुरीनोप्रबंधपुरोथयो. अनेश्रीहेमचंद्रसूरीनुंकंटेश्वरीदेवीवशकरवाथी अ-
तिशयविद्यावानपणुंपणजगतमांप्रसिद्धछे. अनेपाछीउपनिष्ठाजेमणेएवासिद्धपुरुषो तेनोविद्या, मंत्र, बुद्धि. योगनेआगमइत्या-
दिथीअनेकप्रकारनाछे तेमांनीदेवताजेनीअधिष्ठायकछे अथवाजेसाधनथीसिद्धथायछेतेविद्याकहीए नेजेनोपुरुषदेवताअधि-
ष्ठायकछेएवोसाधनरहीतपाठेसिद्धकहीए. आम्नायविद्यासिद्धअनेमंत्रसिद्ध एबेमांपरस्परभेदछेमाटेतेनोसंग्रह विद्यावाननेविषे
करेलोछेएमजाणवुं तेवातदर्शनसप्ततीकाग्रंथमांकहीछे. तेनोअर्थकेबहुविद्यामंत्रवाळो सिद्धकहीएअनेबीजो उचितअवसरने
जाणनारविद्यावानकहोछे तेमांमंत्रसिद्धतोतेछेकेजेमांस्थंभन, आकर्षणइत्यादिकहोयछे तेजेमकोइनगरनेविषे कोइपणाकारा-
गीगाभीरकीतेमआकाशथीपडतकरीताजा पोतानाअंतःपुरमांप्रसपोताग्रेपचलोकोप

मावुमाथीछोडीनहीं. त्यांकोइयंत्रसिद्धपुरुषेगजाना आगणामांआवीनेनाथनगाडव्या धंमयंत्रीआकाशमांलीधा. पछपछक-
नाराआवीनेनाराजाराजापुत्रसाथेनेछोडीदीधी अनेवृद्धिसिद्धनोअभय कुमारसमुद्रगुरुवांजाणवा.
अनेयोगसिद्धतेसिद्धपुरुषजाणवा तेजनीपारसुवर्णसिद्धिआदिकने उत्पन्नकरनारचूर्णडांपनथा दांकनारस्यांडालेडेघाडनार
अनेगोगसिद्धअंजनथीय तथापगलपरलेपादिकरवाथी आकाशमांगमनकरवाथीअन्यदीठीआखीकनुंसाधकजेनी
तथाअदृश्यकरनारइत्यादिअंजनथीय तथापगनापरलेपादिकरवाथी आकाशमांगमनकरवाथीभव्योनेआश्चर्यकनुसाथकजेनी
पाणेदोषमेयोगसिद्धपुरुषदेखाय. जेमगर्भीनाराजानेसच्छेदकरनार पुनअनेइत्यादानेसुवर्णमयकरनार श्रीकालिकाचार्यजा-
णवातथापगमांलेपकरीनित्यशत्रुंजय, रैवत, अष्टापदअनेसंमेतशिखरआदिकनी तीर्थयात्राकरनार अनेनागार्जुनयोगीनेशीति
बोधकरनारअने (नागार्जुनजेणे एजनथपा येगाधानीअंदरकहेली सुवर्णसिद्धिनेगोपवीराखनार) श्रीपादलिप्तसूरीतथा
पाइलापीनोपामोआर्यसमीतसूरी तेआदिकजाणवा. तेआर्यसमीतसूरीए कन्ना नदीपारनदीआनीनेरहेलाब्रह्मद्वीपनातापस
लोकोपणलेपकरवानीशक्तिवडेनदीउपरजताआवताहता तेजोया. अतिशेविस्मयपामेलाओकोएगुरुनाकहेवाथीश्रावकलोकोए
निर्मंत्रणकरीनपादोपलालकरेतेमनापगधोयाइत्यादिकपटभक्तिदेखाडीतेथी तेनापगउपरनुंलेपनरहेनथी पाछाजतीवखतेते
नदीमांबुडवालाग्या तेमोहश्रावकोएताळीओपाडीनेउपहासकर्यो. तेथीपणीलज्जापामीनेउभारह्या तथीतेश्रावकलोकोएतेवात
गुरुनेकहीत्यारेगुरुएआवीनेतेनदीओयोगचूर्णनाखुंतेथी तेबेनदीओनातटपरस्परमळीगयातेथी श्रावकधर्मनीघणीप्रभाव-
नाथइअनेतेतापसलोकोने गुरुएप्रतिबोधपमाडीजैनधर्मीकर्या ॥ ७ ॥
कविपणाथेप्रकारनाछे तेमांपहेलातोजिनशासननारहस्यनुंजाणपणुं तेणेकरीनेसद्भूतछे अर्थजेनाएवाशास्त्रनी रचनाकर-
नारा तेकहेवुंछेकेजिनशासननेविषे शब्दगुंथ्याएवाजे अर्थतेनुंजेनाशास्त्रमां गुंथनारासुरकविकहीए तेजेनाकेतत्वार्थशास्त्र तथाप्रशम

रीतइत्यादिकने करनाराश्रीउमास्वाति वाचक, तथासमरादित्यचरित्र, अनेकांतजयपताका, अनेकांतमतप्रवेश, षोडशक,अ
ष्टक,विंशतिका,पंचाशक,नेपंचवस्तुकआदिअढीहजार प्रकरणग्रंथनाकरनार श्रीहरिभद्रसुरी २, तथाभवभावना, पुष्पमाळात-
थाएवेनीटीकातथा विशेषावश्यकतथा अनुयोगद्वारवृत्तितथा श्रीआवश्यकवृत्तिटिप्पणक इत्यादिअनेकग्रंथना करनारमळ-
धारीश्रीहेमचन्द्रसुरी ३, तथापणासिद्धान्तनी टीकानाकरनारश्री मळयगिरिसुरीतथा प्रमाणमिमांसा, त्रिषष्ठीशलाकापुरुष
चरित्रनेव्याकरणादि त्रणकरोडश्लोकनुं प्रमाणजेमांछेएवाने सर्वग्रंथोनेविस्तारना श्रीकुमारपाळराजाने प्रतिबोधकरताश्रीहे-
माचार्यइत्यादिपुरुषो जाणवाअनेबीजातो अतिशेकविपणानी कव्यामांकुशळएवा श्रीसिद्धसेनसुरीनथा भक्तामरस्तवननाक-
र्ताश्रीमानतुंगसुरी तथाश्रीवप्पभट्टसुरी तथाठेकाणेठेकाणे कविपणानीकव्यावडे विस्मयपमाडेलो अनेत्यागकराव्योछे मृगया
तपायप्रइत्यादिकुकर्म जेणेएवोश्रीभोजराजानो धनपाळनामेपंडित इत्यादिपुरुषोजाणवा. ॥ ८ ॥

अनेश्रीनिशीथादिक सूत्रनेविषेतोआमकारना प्रभावकपुरुषोकह्या छे:—१. अतिशेऋद्धिवाळा, २. धर्मनाकहेनारा, ३.
वादी,४. आचार्य, ५. क्षपक, ६. नैमित्तिक, ७. विद्यावाळा, ८ राजसमूहेमानेला एवापुरुषोआतीर्थनी प्रभावनाकरेछेतेमां
अतिशेऋद्धिवाळातो बीजाथकीमोटाउत्कर्षनेपामेलीछेऋद्धिओजेमनीएटलेजंघाचारण,विद्याचारण, आशीविष,जल्लौषधि,अ-
वधि,मनःपर्याय,इत्यादिकछे लब्धिओजेमनेएवा पुरुषोजाणवाअनेधर्मकथी तोव्याख्याननी लब्धिवाळाअने वादीकहेतांपर-
वादीनेजीतनारा नेआचार्यकहेतांघारसें छत्रुगुणवडेशोभता नेक्षपककहेतांआकरुंतप करताअनेनैमित्तिक कहेनात्रिकाळज्ञान
वाळानेविद्यावानकहेतां सिद्धथयाछेविद्यामंत्र जेमनेएवा नेराजगण सम्मतकहेनाराजा प्रमुखलोकोनेमानवा योग्यएवापुरुषो
श्रीनशासननोउद्योत करेछे.इत्वाळादिकना विषमपणाथीपूर्वोक्त मिद्धिनो

नुष्ठान,प्रभावनापणे जाणवुंनेकहुंछेके पूर्वोक्तसंपत्तिनोप्रभावपणे यात्रा,पूजा,इत्यादिकनेकोइलोकने रथयात्राकरीनेतथाशुद्ध भावथकेजीनसंबंधी तथासाधुसंबंधीजेकांइ अनुष्ठानकरवुंतेसर्वे प्रभावनाजकहेवायछे. तेनीव्याख्याआप्रकारनीछे केपूर्वोक्तसंपत्तिनोविरहछतेपण्टले सर्वजणापण्लब्धीओ होतीनथीविशेषेकरीने तोआकालनेविषे शुं करवायोग्यछेतेकहेछे. के तीर्थनेविषे यात्राकरवी,उत्सवेसहीत संघसाथेगमनकरवुं, गुरुप्रधानादिकनुंवंदन करवानेअर्थेमोटी ऋद्धिएसन्मुखजवुं, पुष्पादिकवडेपूजा करवीअथवागुरुने वंदनक(वांदणा) देवाइत्यादि आदिशब्दथीजीवनेअभयदानदेवुं,सत्रागार (सदाव्रतमंडाववुं), तथाअमारी पडहोवगडाववोइत्यादि रुपजाणवुं.देवगुरुसंबंधीसर्वएवुं पणअनुष्ठानत्रिकरण शुद्धिवडेकरेलुंहोयतेलोकजापनने प्रीतिनुंउत्पन्न करनारथायछेते प्रभावनाकहीए एप्रकारेदर्शनप्रभाविकानीटीकामांकह्युंछे. अनेश्रावकतोप्रभावकएवाछे के तीर्थयात्राकरेजीन प्रासादकरावे, प्रतिमानुंस्थापन करावे,दानशालामंडावे, अमारीपडहोवगडावे।तथाश्रीगुरुनाप्रवेशनो मोटोउच्छवकरंतथा उत्सवसहीत प्रत्याख्याननुंधारणकरे तथासमकीतादिकने पामवानेअर्थेसाधर्मिकपुरुषोनुं वात्सल्यप्रमुखअनेक प्रकारनांपुण्यकरे तेजीनशासननी उन्नतिनाकरनार प्रभावकपुरुषोछेएम जाणवुं.आअवसर्पिणीमां नेमीश्वरतिर्थंकरथयापछी आठहजारवर्षगयांत्यारेश्रीशत्रुंजयतथा रैवतकतेनीयात्राने अर्थेअभिग्रहसहीत चाल्योअनेमध्येदेवे करेलानानाप्रकारना उपसर्गवडेपण क्षोभनपामतोअनेरैवतपर्वतने विषेसातउपवासवडे पूर्वेनुंलेपमयबिंबनुं गलनथवाथीखेद पामतोअनेसाडत्रणपणी (त्रेमासोपवास) वडेआराधनकरेलीअंबादेवीनो ग्रह्योछेआदेशजेने एवोअनेश्रीप्रभेद्र करेलीवचनथी नेमिनाथनीप्रतिमानो स्थापकएवोथी रत्ननामे श्रावकजाणवो. तथाछत्रीसहजार नवांजीनप्रासादनो करनारअनेनवाणुं हजारजीर्णचैत्यनो उद्धारकरनारने सवाकरोडजीनबिंबनोकरावनारएवो संप्रतिराजाजाणवो तथाअरादेशमां अमारीनेप्रवर्तावनारने १४०० नवाजीनप्रासादनो करावनारने

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

र्थावादिकने करनाराश्रीउमास्वाति वाचक, तथासमरादित्यचरित्र, अनेकांतजयपताका, अनेकांतमतप्रवेश, षोडशक,अ-
ष्टक,विंशिका,पंचाशक,षड्दर्शनसमुच्चय आदिअढीसार प्रकरणग्रंथनाकरनार श्रीहरिभद्रसूरी २, तथाभवभावना, पुष्पमाला-
वगेरेनीटीकातथा विशेषावश्यकतथा अनुयोगद्वारवृत्तितथा श्रीआवश्यकवृत्तिटिप्पणक इत्यादिअनेकग्रंथना करनारमल-
धारीश्रीहेमचंद्रसूरी ३ तथापर्यासिद्धान्तनी टीकानाकरनारश्री मलयगिरिमुनितथा प्रमाणमिमांसा. त्रिषष्ठीशलाकापुरुष
चरित्रव्याकरणादि ग्रंथकरोड श्लोक प्रमाणनमाणएवा सर्वग्रंथोनाविस्तारना श्रीकुमारपाळराजाने प्रतिबोधकरनारश्रीहे-
माचार्यजीतथा आगळअनेराजानो अतिशयविषणानी इत्यादिकराजएवा श्रीसिद्धसेनसूरीतथा भक्तामरस्तवननाक-
र्ताश्रीमानतुंगसूरी तथाश्रीबप्पभट्टसूरी तथाज्ञानदेवराणे वरिपणानाकत्रावड विरवदपमाइंला अनेत्यागकराव्यांछे मृगया
हस्तकल्पादिकवर्ज अंगदेवश्रीभोजराजानो धनपालनामेपंडित इत्यादिपुरुषोजाणवा ॥ ८ ॥

अनेश्रीनिशीथादिक सूत्रनाविषेनोआमकारना प्रभावकपुरुषोकह्या छे:–१. अतिशयऋद्धिवाळा, २. धर्मनाकहेनारा, ३.
वादी,४ आचार्य, ५ क्षपक, ६ नैमित्तिक, ७. विद्यावाळा, ८ राजसमूहेमानेला एवापुरुषोआनर्थिनी प्रभावनाकरेछेतेमां
अतिशयऋद्धिवाळाजो वीआचार्यांयोएउत्कर्षनेपामेलीछेऋद्धिओजेमनी एटलेजंघाचारण.विद्याचारण, आशीविष,जल्लौषधि,अ-
वधि,मनःपर्याय,इत्यादिकछे लब्धिओजेमनेएवा पुरुषोजाणवाअनेधर्मकथी नोव्याख्याननी लब्धिवाळाअने वादीकरेतापर-
वादीनेजीतनारा नेआचार्यकहेवायछे एवागुणवडेशोभता नेक्षपककहेवायछे करताअनेनैमित्तिक कहेनांत्रिकाळज्ञान
राजाओविद्यावानकहेलो सिद्धपणाछेविद्याजेने जेमनेएवा नेराजगण सन्मानकरेनाराजा प्रमुखलोकोनेमानवायोग्यएवापुरुषो
श्रीवज्रस्वामीउद्योत करेछे एवास्वाआदिकना विस्तरणाथीपूर्वोक्त सिद्धिनोप्रभावमनेनो जीवमननीपुष्टीनुंकरनारएवुंसंभ-

हवे अनुक्रमे प्राप्त थयेलो त्रीजो चारित्राचार तेनुं व्याख्यान करायछे.

तेमांचारित्रएटलेसर्व विरतीरूपसाधुनुं आचरणनेचारित्रकहीए तेकहुंछेकेसर्वप्रकारेजेसाधुनुं विरतीरूपएवुं आचरणनेचारित्र
कहुंछे.अनेयतिधर्मना अनुरागीएवागृहस्थ लोकोनेंतोतेचारित्र देशमात्रछे अनेचारित्रनो आजन्मअनेअन्यजन्मने विषेसर्वजगाए
उत्कृष्टफळनेआपनारछे तेकहुंछेकेआप्रकारना गुणसर्वविरतीरूप चारित्रनेविषेरहेलाछे, केजेमांकोइक्रियानेविषेनगमकरवानुं
दुःखनथीअनेस्त्री, पुत्र,स्वामीनेनांकठोर वचननुंदुःखनथीजेमां दुष्टस्त्री,पुत्र,स्वामीनेमना दुर्वाक्यनुंदुःखनथी नगरराजादिकने
पणप्रणामकरवो पडतोनथीतथाअन्न, वस्त्र,धन,स्थान तेनी चिंतानथी,अनेज्ञाननी प्राप्तिथायछेअनेलोकमां पूजायछेनेप्रशमसु-
खमांप्रीतिरहेछे. मरणथयापछी मोक्षादिकनीप्राप्तिथायछे एवागुणश्रमणपणाने विषेरहेलाछेमाटेहेबुद्धिमानपुरुषो! आलोकनेविषे
तेसाधुपणुंप्राप्तथाय तेमांयत्नकरो.चारित्र, निश्चेमोक्षनुंअसाधारण कारणछेअनेअत्रनएवुं बीजछेनेशास्त्रमां कहुंछेकेदर्शन,
अनेज्ञाननेजुदांजुदां होयतोसंपूर्णफळ आपीशकतांनथीअने चारित्रयुक्तहोयतो तेवेसंपूर्णफळनेआपेछे तेमाटेचारित्रविना
छेनेचारित्रनुंआराधन करवामांजतनराखछेएवा महापुरुषोनेअनंतभवमां उपार्जनकरेलांतीव्रनेमातेदार तीव्रएवांसर्वकर्मनोनाश
करवादिकमांतुंफळ थायछेतेकहुंछुंकहीए ! जेहतुमाटेचारित्रवानमहापुरुषोनुंबहुमानमात्र करवुंतेनुंपण अतिशे प्रमाणरहीतफळथाय
छे.तेउपरसिद्धवैद्यनो जीवजे वानररूपे थयोछेतेनीपेठेप्रमाण रहीतफळथायछे तेनुंकथानक आ प्रकारनुंछेके.

आलोकमांपुरुषार्थनुं परमार्थसाधनकरवाने समर्थएवास्वजननी पंक्तिवाळीकांतिमती नामेनगरीहती.तेमांतदासंपत्तमनुष्यो
तेपणवणानिपुणपणावडे मानवायोग्य निर्दोषविद्यासमृद्धीवडे प्रसिद्धसिद्धएवानामनो महावैद्यहतोतेवळी अनंताभवान्तरवडे
घणाकाळथीरचेला परिचयनावशवडे जाणेथयेलोमूर्तिमान् मोहहोयतेवुंएवा अंतरमांमोटोलोभनिवास करीरहेलोहतो.तेम

नकांवासनेविषे निरंतरमहाघोर अंधकारनोसमूह होयछे,तथाजेम नारकीनेविषेअतिशे दुःखहोयछेतेमतेवा जीवोनेअतिशेलोभ होयछेअनेतेलोभथी तेनुंहृदयहणायलुंहतुं अनेमघलुंइहापण पणनाशपामेलुंहतुं जेमअनीतिथीधननोनाश थायछेअनेधुमाडाथी चिम्रोनोनाशथायछे अनेतिमिररोगथीनेत्रनो नाशथायछेअनेकपटथी जेमभित्रनोनाशथायछे तेमतेनुंनिपुणपणुं गयेलुंहतुं.पछी तेलोभथीपराभव पामेलोवैश्रमवेश करेलाभूतेपराभव करेलोहोयनेशुंएम स्वजननेपणगणतो नोंतोअनेआपोतानो मित्रछे,आ परीजनछेएमपण नहोतोगणतोअने गरीबलोकअनेदारिद्र लोकअनेदुःखीतलोक तेमनासामुंतोजोतोज नहोतोअनेक्यारे पणय-मनोउपयोगनहोतो करतोपोतानोनेपरनो विभागविचारतोनहोतो अनेपुण्यअनेपापतेनुं परिणामेशुंफल्थशे एमतर्कपणकरतो नहोतोअनेनीतिनां शास्त्रनेसंभारतो नहोतोनेधर्मशास्त्रने हाथमांझालतोनहोतो. अनेस्वप्नमांपण संतोषकरवामां चित्तनेआवता देतोजनहोतोने लोकनोअपवादतथा अपयशतेनेगणतोज नहोतोशुंवधारेकहीए ? केरींगणीप्रमुखनेऔषध विशेषमांअनेगळोम-मुखनेवल्ली(लताओ) विशेषमांगणतोहतोअनेहरडे,गरमाळो, इंद्रवायणां,गोखरु,पुंवाडीआ,धंतुरा,धमासो तगर,एरंडा,आकडा, थोर, पीपळा, थीलां, उमेडां, खाखरो, मुळा, महुडां, कोठां, कौवच, राइ, अजमोइत्यादिकनेस्थाने तेआमकारनांनामस्था-पनकरीलोकोपासेथीठगीने पैसालेतोहतोकेआतोसुवर्णकंटिकाऔषधीछे तथाआसुवर्णमाक्षिकछे, आअमृतानामेवेलछे आअ-मृतानामनीगुटीकाछे, आअभयानामेतथाअपराजितानामे तथाविशल्यानामेऔषधिओछे, तथाआहस्तीचमत्कार, चक्रमर्दक, सुवर्णभस्म, गगनगंडप,नरेन्द्रमान्यअनेपद्मनारी, सहस्रकिरण, महातरु, श्रीवृक्ष, श्रीफल, हेमदुग्धक, ब्रह्मपादप, हस्तीदंतक, मधुद्रुम, दधीफळइत्यादिकऔषधोनांनाम कल्पितस्थापनकर्यांहतां. अनेआत्मगुप्ता, आसुरी, दीपिकाइत्यादिक जेवीतेवीगु-टीकानांनामस्थापनकरेलांहतां. एमकारेअप्रसिद्धअनेकमकारनांऔषधनांनामस्थापनकरवारुपआडंबरवडेअनेककृत्रिमएवांरस,

रगायणकरवामेंगकरीने मनेनगरनाजीवनेठगतोहतो अनेथवांकुडकपटथीउपार्जनकरेलुं घणुंधनसंचयकरेलोहतो. अनेधनाप-
ननीगंधथिवहर्षपामतोहतो अनेतपस्वीमांनिमित्तेजगारमामणथीयोनहोतो. एवंनेधनघनीवडेएकदहाडोहतो. अने
महामिथ्यादृष्टिहतो, नेभतिनेपापकर्मनाफळनेभोगवतां तेजघणोकाळभतिक्रमणकर्यो. एकादिवसदैवयोगेकोइवनमांरस्ता न-
रनोजाणपूर्तिमानमाणे उपवनदोयगवाकोइमुनिराज तेनादीठामांआव्या. भेघनेगवाल्योकरवंदनकरवानेमाटेना तेटोळामांत-
वेनकरीनेतेणेगणेमापुनीवंदनाकरी. अनेनेमापुण्यमंत्राभरणां मंनभारंरथीनेनेथेसाडो. कारणविनाल्योकनूंहितकरनार
एवादयानाममुद्रएवागेपुनिएनेनेधरामभाणीनेनेधनेयोग्यएवीदेशना (व्याख्यान) करवानोभारंभकर्यो. हेगलनो! आ
भयंकरमहासंसारसमुद्रमध्येजेवहूएव्याधिवडे पीडानोजीवछेमचेकरेला पापकर्मवडेएमसमुद्रमां भ्रमणकरेछे. तणयामणकोइ
नगापुविमामोहरगोनथी। अनेकप्रकारनाजन्ममरणनेकरनो नेमांरह्योहनारोदुःखनेपामतो नानाप्रकारनांदुःखमहदुःखने
सहनकरतोकोइप्रकारेपणदिव्य एवीपरीणतीनायवावडेमागमां अभिद्धएवादशदृष्टांतवडेदुर्लभएवो देवनानेपणदुर्लभएवोअप-
मुष्यजन्मनेप्राणीपामेछे. तेमांपण भार्यक्षेत्रमांजन्म तथाएवुंउत्तमकुंइत्यादिकदुर्लभछे नेकयुंछेकेमनुष्यपणामांजन्मथवोतेना
पणकुळ, रूप, आरोग्य, आउखु, बुद्धि, धर्मनाभळवानीश्रद्धा, संयम, एमउत्तरोत्तरमळवां तेमांवळीवधारेदुर्लभछे. एव
कारनोअतिदुर्लभमनुष्यजन्म अनेधर्मकरवानीसामग्री जेममहादुर्भिक्षकाळमांअतिजेभुख्याने गाडुंमिष्टान्नमोजनमळेतेनीपेठेम-
तिदुर्लभछे. तेरत्नअतिसुंदरधर्मकर्मकरवामां कोणपुरुषवीनयमाद करे ? कोइनकरे तेमांमपनोभाळीने तेवरगुंछेनेभन-
र्थनुंकारणछे. केमकेजेमदावानळ भोटामर्मनीपेठेअनर्थना कारणमां आगऊदोयछे. अनेदुष्टदगनोदोषने रणनोरनेरगवांर-
पूळदीपअनेस्नेहमहादुःखथवानुंमूळछे. निरंतरलोकोनेव्याधिवडे पीडापामवानेमाटेछे. अनेरोगीनेमाटेनवमुंएतुंगां-

७

नर्कावासनेविषे निरंतरमहाघोर अंधकारनोसमूह होयछे,तथाजेम नारकीनेविषेअतिशे दुःखहोयछेतेमतेवा जीवोनेअतिशेलोभ होयछेअनेतेलोभथी तेनुंहृदयहणायलुंहतुं अनेतयलुंइहापण पणनाशपामेलुंहतुं जेमअनीतिथीधननोनाश थायछेअनेधुमाडाथी चित्रोनोनाशथायछे अनेतिमिररोगथीनेत्रनो नाशथायछेअनेकपटथी जेममित्रनोनाशथायछे तेमतेनुंनिपुणपणुं गयेलुंहतुं.पछी तेलोभथीपराभव पामेलोवैद्यवेश करेलाभूतेपराभव करेलोहोयनेनुंएम स्वजननेपणगणतो नोंतोअनेआपोतानो मित्रछे,आ परीजनछेएमपण नहोतोगणतोअने गरीबलोकअनेदारिद्र लोकअनेदुःखीतलोक तेमनासामुंतोजोतोज नहोतोअनेक्यारे पणघ मनोउपयोगनहोतो करतोपोतानोनेपरनो विभागविचारतोनहोतो अनेपुण्यअनेपापतेनुं परिणामेशुंफळथशे एमतर्कपणकरतो नहोतोअनेनीतिनां शास्त्रनेसंभारतो नहोतोनेधर्मशास्त्रने हाथमांझालतोनहोतो. अनेस्वप्नमांपण संतोषकरवामां चित्तनेआववा देतोजनहोतोने लोकनोअपवादतथा अपयशतेनेगणतोज नहोतोशुंनधारेकहीए ? केरींगणीप्रमुखनेऔषध विशेषमांअनेगळोप्र मुखनेवल्ली(लताओ) विशेषमांगणतोहतोअनेहरडे,गरमाळो, इंद्रायणां,गोखरु,पुंवाडीआ,धंतुरा,धमासो तगर,एरंडा,आकडा, थोर, पीपळा, पीलां, उमेडां, सासरो, मुळा, महुडां, कोठां, कौवच, राइ, अजमोइत्यादिकनेस्थाने तेआप्रकारनांनामस्था पनकरीलोकोपासेथीठगीने पैसालेतोहतोकेआतोसुवर्णकंटिकाऔषधीछे तथाआसुवर्णमाक्षिकछे, आअमृतानामेवेलछे आअ मृतानामनीगुटीकाछे, आअभयानामेतथाअपराजितानामे तथाविशाळानामेऔषधिओछे, तथाआहस्तीचमत्कार, चक्रमर्दक, सुवर्णभस्म, गगनमंडप,नरेन्द्रमान्यअनेपत्रनारी, सहस्रकिरण, महातरु, श्रीवृक्ष, श्रीफल, हेमदुग्धक, ब्रह्मपादप, हस्तीदंतक, मधुद्रुम, दधीफळइत्यादिकऔषधोनांनाम कल्पितस्थापनकर्यांहतां. अनेआत्मगुप्ता, आसुरी, दीपिकाइत्यादिक जेवीतेवीग्र टीकानांनामस्थापनकरेलांहतां. एमकारेअप्रसिद्धअनेरप्रकारनांऔषधनांनामस्थापनकरवारुपआडंबरवडेअनेककक्षिमप्रकारस,

अगंभोगीनर्वग्रदुःखीछे अनेरोगकारेनेमर्णव्यापारकरनार अनेसमतावाळोनेपारा श्रावकनागुणवाळोतेनो प्रशंसाकरवो जीवनेजीवानंददेनारनीपेठे वेरकर्मटेवणनिर्णयामहागुणवडे मोटाभाग्यवाळोनथग्रशुभनोभागीदारथायछे तेमाटेहेमहानु भाग ! हेवैराग ! सर्वांगसम्यक्रूपमनंनिरंतरस्थिरकरो. तेणेकरीनेकंचनादिकथी अथवाइंद्रियोना हिंसानोत्यागकरीहृदयमां- तोरभागोवणकरो तेपोतानीलक्ष्मीवडे भगवानगीजापार्जन करवादोषनोत्यागकरो. तेसांभळजननेविषे सद्‌ध्यानकरोनेध्यान- णानाअभिमाननोत्यागकरो. वीतरागदेवनुंआराधनकरो तेगुरुमंत्रनोआदरकरो अनेगरीबलोकउपरदयाराखो तेणेकरीने कांइकाळेदुःखनेनहींपामो. अंतरंगनाप्रकारेकारबुद्धिनेसाधनोतांथोडाकाळमांशुकर्मथीविशेषवणानेपामशो तेपोतानीशक्ति प्रमाणेनतिकळे मुळमेनुंएनाश्रावकपर्यंकप कल्पवृक्षनेपाळनकरो. तेणेकरीनेअनुक्रमे शाश्वतामोक्षसुखनेपामशो. इत्यादिअ- नेतमकारनीउक्तियुक्तिवडेकहेलो सद्‌गुरुनोउपदेशसांभळीने पोतेदाणोछेमाटेधर्मएजनरत्नछे एमपोतानाचित्तमांजाणी सारी राजमाणेयर्थंकरीवपणकहीने घणालोकनेठगीनेमेळवकरेलुंछे तेथीदुर्गतिपामइ दुःखभोगववुंपडशे एवाविचारथीकंपतोसा- भुपणानीश्रद्धाकरतो विशेषथीतेतेगाथुनुंबहुमानकरतो तेवैराग्यतानेघेरआव्यो. परंतुतेअतिलोभनावशथी अनेपूर्वनाअभ्या- नथीएनीरीतेव्यवहारकरवामंड्यो. तेउपरश्लोकछेके अतिलोभनुं कोइप्रकारनुंमाहात्म्यआश्चर्यकारीछे. केतेणेकरीनेतेपुरुष पाछोहवांनेतोनेनरोगथयो. एमीनुंपीनुंआश्चर्यछे. १. अनेसर्वनेनाशकरनार एवोलोभनोजेगाथुनाचित्तमां पणवसेछेतेसाधुने पणअग्निनीपेठेबाळेछे. जेथीकरीनेवधेलुंतीक्ष्णकर्मजीवनानीविनतेपणनाशकरेछे. माटेहितार्थीपुरुषेतेनोविश्वासनकरवो. गुरुना उपदेशएमसंभळ्योभलपणोरेखंडी श्रीपुंगारपणीतवैरनेपरलोकनुं भाथुंपोतेकरेछुंबळवानकुकर्मएजएनीसाथेरह्युं. परंतुपणोनि- र्दयछेतोपणसाधुकहाछे एजसाराछेअनेपारेणाम्यछे एमविचारकरतोतेवेषसाधुनेनथीठगतो. सर्वजगाएअनर्थनेकरतो अनेलो-

वळी एकनो पण आ लोकमां मानवंत नथी थतो अने दुःखपामी होय ! तेथी महाकाळनामे नरकमां अतिशय सो योग्य आसमर्थ एवो एक मशगोळनो थयो. तेथी तानीत्वरापणे अवनदी वादरीओनो शळ आळोने उपसर्ग करनारा जीवमात्रनी पत्नीरीत छे के जेथी अनेक सनामीनी कदरे, अमविहारनो कीर्तिवडे मुनिराजने एक दिवसमां एम अरण्यमा तेनां दर्शन करनारानी संवेदशी अपराधे भवना आ वरसो एवो मंत्र प्रगट धीरजथी सदा वा ते एवो एक मुनि नामपुरनाथी ना दंशानी पिंडदार मा बसनाम नातें वयर्थ आव्यो. तेवा अति अनर्थमां शान करनार वाड वंशअतिवेगंभीर एतु भयानक दुःखनां चारेजामा धुनाम पडाथी एकमा पुराणमां ओसिवो वहोरायो तेवा टोनांश. कांटाळी दानानी ज्ञानी पिंडभागीयो नथी तेमाधुनेनगमा नभी वंदनाथई पछी तेनां पुण्य करतां आज समयमां थयो अने तेमाधु ते मकारना समयने आळस नाहनो एटले एक समय शब्दनो अर्थ सिद्धांत एवो छे तेथी आसमय शब्दनो अर्थ काळ वायक छे मारे आ एक एवा साधु बीजा साधुओने आमकारे कयुंके अतिशय गाडपणमा गयमां दीर्घ जीवितवाळा जे मारे आधी एक जगत पण ते चलावने मनथी मारे धारवास्त आचार भरण्यमांनिपेमर्वे साधुओ हीथा ओ तेवी कनथी वाहे मने एक स्थाने अहींथी मदाम वेउनाव याचाडीने संघनी माथे थाओ. नहीं तो आचार भयानक वन मां नमारा मन्तु आ नि शोभ रहेवं. अने हुं तो अहीं अन्नो रही शाश्वत आराधना करीश. इत्यादि वचनथी मर्व साधुने मपजावी एवना बीजी गति नथी एम नेमा साधु विचार करी तेमहामुनिने नमस्कार करी गया तीने हृदयमां दुःखी थइने जे दिशभणी संघ चाल्यो हतो ते दिशा भणीते साधु पण वीदरी गया. अने ते एकला रहेला साधु घोरा अरण्यमां एक मोटी शिला उपर निवास करीरहा. अतिशय गीएवी एवो तारतमनी शोहाने भगवन्नाधीमान करता महाधैर्यवान ते साधु अपमादरहीन उपशमपरमपांनिरंतर आत्मध्यानां संयमधो गन्हेआराधन करां छे एवामां एक दिवसने तेवारनाथ अनाथ पेमहीव मोटा भीछना समूहनी पेठे दुष्ट हृदयवाळु तेटोळुपमतुं त्यां आव्युं. ते

पगनेपूर्वकोइदिवसनदीकांठेजतेथोडापाणीने छेडेथीदेखीने किकियारीकरीनेचालवाढांच्यां. तेसापनेपुनमिवरणमेआव्यो तेपने जोईतर्कवितर्ककरतांतेनानरने जातिस्मरणज्ञानउत्पन्नथयुं. अनेपूर्वजन्मनांजिनपूजनेपोनाआगळनिगमयमनीयानकरेलीहती तेपर्ण तेनेयादमीआव्युं तेपूर्वजन्मेजेकुडकपटथी पापबांध्युंहतुं तेपणयादमीआव्युं. तेपापनोअतिशयपश्चात्तापकरतो, आमाघृणुंवारे बहुमानकरतुंपूर्णविचारतो, तेनापुनेवारवाउछळीआवती मर्यवानरीओनेनिवारणकरी मरणुपासेआवीनेपणनमस्कारकर्यो. परण आदरथीहाथजोडीनेनमीपोतानापापनीनिंदाकरतो, वारंवारनमस्कारकरतो पोतानेउत्पन्नथयेलाजातिस्मरणज्ञानवडेतेनागुना मगवांपागेल्याकोटानीरेखातेणेमाणी. पछीतेवानरेजनयाकर्षणपनागनीअंदरशियंगारी तेपुनिनापगमांवागेलाकांटानुंआकर्षण करीनेपणसंरोहिणीपनागनीऔषधिमेलावीनेतेनापूजोपरचुवेंद्दीनेतेनेभलिलेपारोकर्यो. आमकारेतेवानरजातिनुंआचरणभलि आश्चर्यकारीजोईनेपनेमुनिवरतानाशरीरथी तेणेद्रव्यशल्यकाढ्युंतेथी तेनाअंतरमांपरहेलुंमिथ्या दर्शनरूपभावशल्य नीकळीगयुंने भावशल्यकेयुंजे देवमनुष्योनाजरा जन्ममरणकरेलोपण तेभावशल्यनीकळवुंघणुं मुश्केलहतुं. तेपण तेनेत्काळ नीकळीगयुंआ मगाएकविनानी काउसग्गमांरहीधरणे शतुंगमआशुभकर्मतेनो संपरतेनेथयोछेपणो अनेपाछुनाबहुमानतिवितजन्मातरमांकरे- लुंमिथ्यात्वनीपेठेनवं कल्याणनीकरनारने शुभकर्मनोउदयनेने प्राप्तथयो तेथीतेवानरनीआंखमांथी आंसुनांजळपडवामांडयांने पोतेंपशुपणभवधारी मर्योतेनोपश्चातापतेने घणोथयो. तेअभिमानने अनुपानथीजाणीतेमुनीश्वरकृपा करीधर्मदेशनाकरीजे श्रीके-देवानेन्द्र ! निर्वचयोनिर्वाणतें मोटुंकर्मकर्यु कंचळसंयमादिकनी पेठेपणेकाळेअथवा चंदकोतिकमपनीपेठेथोडाकाळ- मांशुद्धधर्मपारनाअंतनेपाणीजवाहेतारीशक्तिमपाणेसमकितले मूळजेनुंएवाश्रावकधर्मनुंआराधनकरयतेधर्मकरवाथीकेपणाका- ळथीमंनयकरेला पापकर्मतेपणक्षणमात्रमां क्षीणकरेछेतेमापण मरतुंपशुंपणकरवुंउचितछे. तेमांपणसर्वसंग्रहकहेलुं देशावकाशीक

एनामनुंश्रावकनुं व्रतनुं स्वरूपटलेजेटली दिशामांजवानुंप्रमाणकरेलुं होयतेथी।अधिकदिशमां जवुनहींतेव्रतवे प्रकारनुंछे.तेसामा-
यिकसहीतपणछे अनेसागाधिकसहीत पणछेएमसामायिकसहीत एवुंपणतेव्रतदिवसमां पणथायअनेरात्रिये पणथायमाटेतेव्रत-
पोतानीशक्तिप्रमाणे अंगीकारकर्यपोतानानियम करेलास्थानथीलगारपण आगळनजवुंतेथीत्रैलोकमां रहेलासर्वसूक्ष्मतथा
बादरएवाजीवोनेअभयदान आपवारूपमोटुंफळथायछे. यनवडेपणसावद्यकर्मनो त्यागकरवाथीतेव्रतचारित्र धर्मजेवुंथायछे.
इत्यादितेनेप्रतिबोध कर्यो नेवानरपणसंपूर्ण फळनोअभिलाषीथइ प्रतिदिवससामायिक सहीनतेव्रतनुंआराधन करवानोअभि-
ग्रहग्रहणकर्यो. अनेपोतानाआत्माने कृतार्थथयोएमजाण्योए प्रकारेतिर्यंचजन्ममां पणसम्यक्त्वधर्मना लाभथडेजेमपहानिधान
नालाभथडेआनंद पामेतेमतेवानरआनंद पाम्यो त्यारपछीतेमुनिहित साधुएधर्ममांस्थिर करवानेतेवानरनी प्रशंसाकरीविहार
कर्यो.अनुक्रमे संमेदशिखरपर्वतनी यात्रामांप्रमगयेला सर्वसाधुनेतेसाधुमळ्या अने तेवानरतेजदिवसेरात्रिए पर्वतनाशिखर
उपरजइपोतानाजुथने तथाबीजानाजुथने दूरमूकीनिर्दोषभूमिए सामायिकसहीतनेव्रतने अंगीकारकरीमनवडे पणपापसहीत
कार्यधारेनकरवुंएवुं चिंतवनकरीशुभध्याननथी एकाग्रचित्तवाळोथइबेठोहतो एसमयमांरगो पहोळुंकर्युंछे त्रिकाळमुखजेणएवोने
उछळतीछेचंचळ जीव्हाजेनीएवोएकमहा भयानकसिंहआव्यो.तेणेनिश्चळपणेद्रढबेठेला तेमोटावानरनेदेखी पोतानोआहारए-
कजगाएथीसंपूर्ण थशेएवुंधारीदेहनीपण जेनेअपेक्षानथीएवो अनेमहासाहसिक एवोमहामुनीश्वरना जेवोतेवानरतेसिंहनेदे-
खीलगारपणहाल्यो नहीअनेशरीरवडेतथा मनवडेनियमकरेला स्थानथीखस्योनही. आजगाएकाव्यछेके वानरनीजातिस्व-
भावथीजचंचळहोयछे तोपणआवानरनेमनथी पणचंचळनथयोअने मरणांतमहामोटोउपसर्ग प्राप्तथयोतोपण महामुनीनीपेठे
निश्चळरह्योएमांटुंआश्चर्यछे केटलाकलाजमांआसक्त थयेलापुरुषोनथाजशना अर्थीपुरुषोनथाधनना अर्थी पुरुषोनथा अभिमा-

निर्मलनागिरथामकार्यु करतुंतेमणुं दुष्करछेभाववंदकहत्याक नीवडवाणुं
नीवृक्षोअतिशेदुष्करपणुं कामकरेछेपणआतो निर्मलनागिरथामकार्यु करतुंतेमणुं दुःखदायकपणीकरतुंदुःखदायकछेकल्लोलकर्तुंतेमणीर
पामेछेनेपाकळवेछे भुंजनीदोरदरथायछे नेपढुःसाध्यपणाकर्मने पणहिनताणीमांयछे पणमनथीकरवुंदुःखदायकछे पांदडांगोनी
पुरुषोत्यांगुणीभवनना नथीरत्नगुणीनेमने मेरुपर्वतउंचोगणायछे अनेगमुद्रपणत्यांगुणी दृष्टिवरनामांगमायछे अनेअकणनापनामहा
मतिनिपमछे. पर्वतोनिहितेनानवुं पंदोरनंदनवीनत्काळ भराणकर्युं अनेतेनानर शुभध्याननीभरणपाम्यो नेकढ्युं.नानाप्रकारना निर्मळमणिको-
विमानपणिनाधर्मना आउपानाळोपोते देवपणोअनुक्रमेत्यांथी नवीनेउत्पन्नथयो नेकढ्युं.नानाप्रकारना विमाननेवर्णन. मणिनागोदृश्यनेजुं मणिमंदिरनावेन
रणनागुहमंडपनाम शास्त्रोछेअंधकारजेनाने सर्वप्रकारनाश्रेष्ठ,दिव्य,विमाननेवर्णन. मणिनाचंदरवाओनी मणिनानीगामडांनी भोळीश्रीओकोइ जगाएनिर्मळस्फ-
टिकनुंतेमविशाल पंचवर्णनाअसाधारण मणिमयमंडपनाबारणां मेरोमणिमयीगामडांनी भोळीश्रीओकोइ जगाएनिर्मळस्फटिकनाअयथकीत्यांआसन
टिकनीपांखीओपृथ्वीमां रहेलाअतिशेसुंदररंग तेथीअतिशोभायमानरत्नमयगृहनेवातेनेकोइजगाएराकरुनाअयथकीत्यांआसनमणिना
मणी.कोइजगाए निर्मळतेस्वरूपमणिनी वर्णेलीभुमिमांनारी कल्पवृक्षनाअग्रथीचोवाजनी कोइजगाएजीलोपमनेमांदडीमणिना
समुदायाळारथकमां झीलीपानगनागमृहना अग्रथीज्वाजनी. कोइजगाएमानेपीळारत्ननीपांकमां हरताळनोसमूहजाणीग्रहण
करवाइच्छनी कोइजगाएवैदुर्यमणिनीपछेडी पृथ्वीमांअंतरभागमां रहेलीपांखीकांतिवाळा मणिसमूहनेकपूरनो समूहजाणीजा-
णीदायकोयोतनी कोइजगाएजळनी भ्रांतिकरनारपणा मनोहररत्नसमूहमां निर्मळजळनाभ्रमथी स्नानकरवानीवांछनी
कोइजगाएउपवनभागमां स्थंभाणिमय पारेवा,मयूर,हंस,सारस,पोपट,मेना, तेनांचित्रदर्शनमां विस्मयपामीकुतुहलनावश-
थीतेनेजाणवानेमाटे आणीनेग्रहणकरवानी बुद्धिमवर्तती कोइ जगाएउपरथीआविमान स्थापनकरेलीने हठकलेपाय-
मानपणीमहापुष्पमाळा, रत्नावळी,कनकावळी, लटकतुंसुवर्णइत्यादिक नानाप्रकारनाआभरणोनां मणिचित्रोनेसाजणीने आ-

राज्यऋद्धिनी संपदाए करीने इंद्रनी पेठे तेराजा,शिवनी पेठे निरंतरप्रजानुंपालन करतो हतो.तेराजानेराजागंधर्वी गुणोवालीमृद्धि-
श्री.तेरूपश्री ओहुं मगमगर्कहूनमगमकं एवीरीते वरवीहनीपापक लोकोनेप्रेम गोहणानकरवेन प्रीतनेआपतो तेपर्णानुंदान
आपतोहतो.लोकने सर्वप्रकारेआनंद करनाराप्रतिगतानी वल्लाणवायोग्यविशाळ हृदयनाअलंकाररूपजेने दिव्यमणिमाळाने
पृथ्वीपणिमाळानामनी कथादिसर्वगुणथी श्रेष्ठरीतनीकुळदेवता होयनेशुंएवीपट्टराणीहती. अनेतेनीकळाकौशल्यसर्वांगतथाअ-
निवार्यक्षपणे साक्षातकामदेवनी स्त्रीनाकंठ्रेनागेवी जणातीहती.पणस्वभावेरण अनिरुद्धनीपेठेजेनी स्त्रीनोप्रभावनहतोए
टलेजेनीस्त्रीनो प्रभावस्वभावेरण रोकायेलोनहतो जेपट्टराणीप्रभावपवडे तथाहंसगतिवडेसाक्षात गरुत्वनीजेवीहती जेमपर
स्त्रीप्रभावीउत्तम थइहती अनेहंसउपर वेरानिगतिकरतीहती अनेआतोप्रानेकरीने प्रभावपानेपामीहती अनेएनीहंसनामनी
गतिहती. पणतेपरस्त्रीकन्यावस्थामां पणजिनानापाणीग्रहणकरवानीपणिवाळीहती तेराकोइनकामनाकलंकनाळी आराणी
नहती. वळीतेअतिशेआश्चर्यरूपप्रकारनागविनानुं परमादिमात्रपणावडेसर्वेसिद्धगयेली नवीओमांश्रेष्ठगंगाजेवी जीवोगाथात
नहती. वळीतेअतिशेआश्चर्यकारकनागविनानुं परमहिमाळपणावडेसर्वेसिद्धगयेली नदीओमांश्रेष्ठगंगाजेवी श्रीजीगाथात
पार्वतीहोयनेशुंएमजणातीहती. परंतुत्यारेपणतेपार्वतीनीपेठे कद्रगंगनएवीनहती. एटलेरीमाळनहती वळीतेपुरुषोमननाहृद-
यनेहरणकरवाकगुणवडे तथासर्वजननेआनंदकरवावडे साक्षात्मत्स्यरूपजणातीलक्ष्मीजेवीहती. परंतुलक्ष्मीनीपेठे कांइदिनगचं-
चळस्वभाववालीनहती, एकपोतानापतिनेविषेजलिनगतिनपालीहती. वळीतेपोतानानिर्मळगुणवडे पोतानीगंगतिकरनारनेपण
निर्मळकरेएवागुणवडे मनुष्यरूपनेधारणकरनीएवी साक्षात्गंगाजेवीहोयनेशुंएवीजणाती. परंतुतेगंगा जड (जळ) तेनीगंगति
वालीते.आश्चर्यरूपणनहती, एटलेनिरंतरगजननोजगमागपरावतनी. वळीएपोतानीसर्वकळावडेकांत (कान्तिनीति) करवावडे
अनेस्वामीनापागंनेअनुसरवापणे पृथ्वीमंडळमां अवतारधारणकरीनेआवेली कळावानचंद्रनीरोहिणीनामे श्रीमाखातहोयनेशुं

पमजणानी. परंतुकोइदिवसपणदोषोदयकरनारीनहती एटलेरोहिणितोदोषाकरकेतां रात्रिमांउदयपामतीहती अनेआपटराणी कोइदिवसदोषनोउदयकरतीनहती. रोहिणितोदुष्टग्रहनोसंगधारणकरतीहती अनेआस्त्रीतोदुष्टग्रहकेहेतां कदाग्रहतेनोसमागमकरतीनहती. एवीएपटराणीनेविषेमंदराचळ (मेरु) पर्वतनीगुफामांजेमकल्पवृक्षउत्पन्नथाय तेमतेमथगकहेलोवांदरनोजीव तेस्वर्गमांथीचवीनेतेपटराणीनीकुंखमांउत्पन्नथया त्यारेतेमणिमाळानास्वप्नमां पोतानामुखमांप्रवेशकरतुंनेअरुणभवननामेविमान तेणीएदीठुं नेविमानमांतेवांदरानोजीवदेवपणेपूर्वेहतो. तेमहास्वप्नवडेतेभवननाजेवो अतिशेतेजस्वीनेअतिशेमहीमावाळोनेअति आश्चर्यकारीपणीसमृद्धिएगाढनेनेसमग्रमन। आधाररूपइत्यादिसर्वविमाननागुणवडे तेपुत्रनागर्भसंपूर्णहतो तेस्वप्नवडेजणातुं हतुं. जेममहावांछितअर्थनालाभने साधन। ग्रहानुकूलवडे मोटाकार्यनीसिद्धिजणायनेमतेरास्वप्नवडे अतिशेहर्षितथयुंछेमनजेनुं एवीअनेपोतानासर्वशरीरनारोम, नेत्रवनउदयथयां अनेवखाणवायोग्यएवामोटा अर्थवाळासंदर्भनेमोटाकविनीवाणी जेमधारणकरेतेमतेगर्भनेगुप्तेथीधारणकरतीहती मांनदिवसगर्भनीवृद्धिथीशरीरनुंकृशपणुंपामेलीहती तोपणजेमअल्पअक्षरनेघणाअर्थवाळीपंक्तिदीपतेनीपेठेविशेषथीशोभतीहती नगर्भनाप्रभावकरीने अनेतेनाअंतरमांआप्रकारनादोहद (दहोळा-नानाप्रकारना मनोरथ) आप्रकारनाउत्पन्नथनाके प्रचंडएवुंखड्गधारणकरुं अनेतेनीधारामांमाहुंमुखदेखुं. अनेनगरमांहमारीआज्ञाप्रवर्तावुं अनेसर्वराज्यनीचिंताहुंकरुं अनेसर्वरिपुनाव्यसरने हुंलीलामात्रमांत्रासपमाडुं अनेसर्वप्रकारनाधर्मविधिनुं आराधनकरुं एवा नानाप्रकारनाउत्पन्नथनाजेमनगुवा नेराजानाप्रसादथीतत्काळज सर्वेसफळथवाथीपरमआनंदपणानो अनुभवकरती. अनुक्रमे संपूर्णदिवसथयेसतेउत्तमस्थानमां गृहआव्यानेमुहूर्तवेळामां सर्वजननेआनंदकरनारएवो रत्ननीखाण जेमरत्ननेउत्पन्नकरेतेमते णीएपुत्रउत्पन्नकर्यो. राजाएरणपुत्रजन्मनी वधामणीनेकहेनारीदासीने पोतानामाथाउपररहेलामुकुटविना सर्वअंगनांआ-

मगधवंशीतानेपदेन्याजोकनेकोडीपूरुषा, अनेपान, उ-
भूषणभाष्या अनेमस्णागमूनीनेनुंसर्यविगानुं कायकारीनाम्नुं मगधपुरवेवानकरीए, मोत्तनुंपापकर-
स्नानअनेमपाणनेवणपोतानाउत्साहथी यथारुचिमोटा करीआव्या. एटलेअन्नेपापकरनाराजनपुरवेवानकरीए, अनेकीपगपिनादिकनुंतेने
नारपाचवेरी, दणवेरीपणितेवीगरे प्राजवाणिवरंथीइत्यादिनोपाय, तेथिगेरेउत्थानकरीए अनेदीपगोपितादिकनुंतेने परस्परवेरावयुं
ममाणदमुपमवंती शुद्धिगोमानाउत्साहथी करीअनेचंद्रनरगनुंछाट्युं, पुष्पनागपूरना हारविगेरेआभूषणकरी परस्परवेरावयुं
तगरचीतानलोपुर उचेरवीअनेअनेक प्रकारनागीत,वाजीत्र, नृत्य,तोरण, धजाओ मंडावी नगरमनोगाळिमद्रव्यआपतुं
नगरदंबजवेनां,दानलेवं इत्यादिगवाकोई मनुष्यनीपणालेवुं नहीनुंरादयुं,नगरना लोकोएपणपोतानी तेजेआणेकुंडोगनक-
रनोपाळुंनेदनार धणुंभावइत्यादि प्रकारनाहर्षउत्साहथी अतिशेआनंदपावयानं पोतानोदेशादिनगरनेनकर्यो.एटलेदश
दिवसनोपुत्रजन्म महोत्सवकर्यो निरंतरप्रयाणवारस जेमांश्यनशापकरीपणो नेउत्सवकराव्योअने स्नानकरीपोतानीगर्भशांति,
स्वमन,परिजन (सेवकां) सेपनेस्नान,भोजन,वागवस्त्र इत्यादिकथीसत्कार करयो,गन्धानकरयुं इत्यादिकर्यापछी मातानेस्वप्न
मधुहतुंतेनेअनुसरीनेते पुत्रनुंनामअकरोनद्य एमकारनुंस्थापनकर्युं. पछीपांचप्रकारनी धावनावंदमहाग्रनथर्ये जेमघिधपांमेच
पालनकारनीधावीनानाथांए रातदिवस पालनकरेछेतेपांचधावीनानाम.—१. क्षीरधात्री, (स्तनपानकरावनारी),२. मज्जनधा-
त्री(नवरावनारी), ३. मंडनधात्री (आभूषणपहेरावनारी). ४. क्रीडाधात्री(रमाडनारी), अने ५. उत्संगधात्री (खोळामांबेसा
डनारी) आमपाणेरातदिवस पालनकरेछेतेकुमार पाळवनिकुमारनी पठेअनुकमेवृद्धि पामेछे.आमआठ वर्षनोथयोत्यारआो
गुरुपासेपाठिका मातापीताभीएवुं विचारीनेआठेभवाळदहतुं तेकळाकरनोआपरने तेकुमारेजेमआपनीकुपि एकअंजलीपाणीनेग-
मुद्रनुंपानकरीगया तेमन्हीगमानलाविद्यानाग्रहणकरीलीधुं.अनेपछे कळानोसमुहअनुराग पोतानाग्रहेकाठिण प्रयोगमनेन-

गनूपाकहेवातोहनो तेनेक्रीडाकन्यापनी पेठेमहेजेग्रहणकरी लीधो.तेथीसंपूर्णकळावाळा चंद्रनोजाणेमतिवादी होयनेशुंएवोथपो
कविकहेछेकेस्थानने विषेआरोपण करेलागुणमोटा मूल्यवाळाथायछे मद्‌भनेमदनतेनाजन्मनुंस्थानएवुंनवुं यौवन विंध्याचळ-
गावनजेवुंपुनागनाजेवुंवित्तसहितनेकुमारने मासथयुंएटलेविंध्याचळमां ज्यांधनहोयछेत्यां पुन्नागनावृक्षोउत्पन्नथायछेतपविंध्या
चळनावनसमान एवुंनवुंयौवनहतुंभने पुरुषमध्येनागदेव समानएवोतेपुत्रदेदीप्यमान हतो परंतुतेमांआटलुं विशेषछेकेवित्तक-
हेतांधननेवित्त एटलेप्रसिद्धि तिणमळवाथीउन्मत्तथवायछे एनेतोप्रसिद्धिमळवाथी उन्मत्तपणुंनमासथयुंएटलुं विशेष जेनीउपमान
थापएवुंतेनुंरूपअने जेनामोभाग्यभागळ देवतानुंसौभाग्य दुर्भाग्य जेवुंजणातुंहतुंनेतेनुं वळअतिशयमोटुंहतुंने तेजनोपतिजेसूर्यते-
नाजेवुंतेनुंतजहतुं मथमथयेलादेवतानां जन्मथीप्रमपूर्वक रूपादिगुणोतेमांआव्या होयनेशुं ! एमनहोयतोतेमां एवागुणक्यांथी
होय ! एकदिवसपोताना मित्रोनाथएकसुंदर बगीचामांरमवागयो हतोनेभतिशेकौतुहळ रसमांयणोआसक्त एकलोतेमित्रोथी
दूरथइगयोएटलामां वीधेल्यामृगना जेवांछेचंचळनेत्रजेनां नेपुनमनाचंद्रनोसर्वगर्व हरनारुंछेमुखजेनुं नेदेवतानीस्त्रीओने लज्जा
पमाडतुंनवीजुवानीना सुंदरलावण्यपणावडे वर्णनकरवायोग्यछे देहकांतिजेनीएवी अनेजुवानपुरुषोनेनवा उत्पातनेप्रकटकर-
नारएवीऊंभाकाने जेनीएवीकोइस्त्री. स्त्रीजननामनजेवीचंचळ सोनानादिदोव्यामांहिंचतीने तिलकादिकचौद मकारनांआभ-
रणवडेसर्वथाशोभतीएवीदेवकन्यानाजेवी जणातीनेस्त्रीएरूपवडे कामनेजीतनारएवानेकुमारनेविषे अर्थनाअंजलीप्रदानजेनो
प्रथमदर्शनथीप्राप्तन (भेटसमान) पोतानाहृदयनामाक्षातरहस्यजेयो, नवाअनुरागनुंजाणेसर्वस्वहोय एवोप्रथमप्रेमकरवामां
चतुरएवोपाटोषाणवडे जेमलक्षवीधेनेप्रकटाक्षवाणशीघ्रनांख्युं. जाणेअमृतरसनोपडोदोळयोहोय एवातेकटाक्षवडेक्षणक्षणाट
थयुंछेहृदयजेनुंएवो तेकुमारनवाजळधरनीधारावडे सिंचनथयेलाकदंबनाकुसुमनीपेठे सर्वअंगमांरोमांचितप्रफुल्लितथयो. अनेभा-

[illegible] पीडा पामे जो [illegible]
[illegible] देवाद्वारा पाटे आणे [illegible]
[illegible] आवाद करनी पेठे, ल-
[illegible] ते रत्नने कुमार, [illegible] अग्नि[illegible]
[illegible] भानी पेठे, [illegible]
[illegible]
[illegible] ते कुमार पोतानो.
[illegible]
[illegible] ते कुमार [illegible]
[illegible] अग्निकोपथी
[illegible]
[illegible] त्यार पछी अतिक्रम करनारने
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गादपकळनुंपरणथवुं, नळराजानिराम्यथीप्रहवुं. रायणनेवंधीपानानुं मवनकरवुंभनेतेनुं परणववुंसर्वराजना चराभीगायके पाटेकोणवुकवकोतुं रक्षणकरीशके ? ॥२॥ वळी हतुंकेकंरगारे हुंपामनानागर्भमांहतो त्यांरमारीआजीविकाने गाटेभेकोइश्व- रेमानानास्तनपां दूधवरलवकर्युंछे.तन्न थवापछीथाकीजी भाजीविकानीचिंता करवामांनिपुणपणोछे अणनापरणपामगोछेके धुं ? वळीजेपवलेभनेभगवाननावद्वनं कारणछेनेनेहुंसंभाळवुं नोनेपनेकेमपालशीजशे ? वळीपानाळमांपम भगव्यावृष्विना रमनुंभारणणकरवुं नेथेकरीनिरवंननी इंद्रपणं रेखानछ्हलोने पणतेनीपांदछेनेपाणी रदाढेपनहीकरे ? इत्यादिविचारक- रंछेपदवानेकुमारना शुभकर्मनाउपशीमोरा भव्यनामसरवामीपना पदमानाआरवंदनळ गंधुगदूहंगमोपकरली पड़ीपकमोटी वोल्तीपाणीपीनाआवी तेपापाणीपीने भीगंगदेवपाणोकुमारने शीघ्रतेआमकारनी बुद्धिउत्तमथइहूं आपीनाबुच्छनं वळगुंभोपारांथी कयायदिरलीदराय, पदुंथारीअतिशेमांश पवानेनापुच्छनेदृढ पणेग्रालयुंनेयोपण मेंवनीदेठेने कमारनापारने नगणमीमीव्यापापवानेनेग्रह फुवाथीयारणेनीकळी. तेपीतेकुमारपणवारणेनीकळेयो अनेयरहछेनीयवानीविशेरआसानेनेपवो नेयणीक्षुधातृपानादुःपथीआकुल्याकुळथनोनेशून्य भरणयमां पारेपामभमवापंरयो. पुनीरीतेफरनाफरनांतेप भगरनेयुलवाळुं मृदायछेनेपकोइकगामतेनादीठापांभाव्युं. वळीतेगामनीदिवालोपीचाल्यां भेकोन वाल्योपटलेपानुष्योचारणवननना आकारजेवा किल्लाथीपरिवेष्टनेमाराकवीपट करेलोमननेणमम्हारे पवानयंपनामेवुं अनेनानाप्रकारनाअेछमायावडे शोभनुंनेशीजुंपानुष्यतेप होयनेगुंपवुंपोटुंएकनगरतोपापा आव्युं. तेजोइनेतेरागपुत्रअतिशेआनंदपाम्यो. तेनगरनीलक्ष्मीनासुंदरपणाथीआकर्षणथंत्र यदेनेपदपर्रेचातोअतिशेउत्ताभ्रळो तेनगरमव्येचाल्रतानंदनवन समानएकउद्यानआव्युं. तेमाएकजगाएमोटादेवालयमुंद्वारदीठुं. तेमांआगोपाळवगीपोटीवाम्याए चोरनीपेठेभयानकंपनजपीदृढ्यपेिलो अनेरुपादिकगुणवडेसहीत एवाएकपुरुषनेदीठो. ते

पापनांबंधनथी पुरुषनेद्दीठी करुणस्वरथीरडतीएकस्त्रीनेजोइ. त्यारपछीनिर्मळभक्तिवडे पोतानाहृदयरूपदर्पणमां तत्क्षणेते स्त्रीनादुःखनुंसंक्रमणथयुं तेथीतेणेतेस्त्रीनेपूछयुंकेआशुंछे? त्यारेदीनथयुंछेमुखजेनुं एवीतेस्त्रीएकह्युंके अंगिकारकर्युंछेपारकुंदुःख जेणे एवाहेमहानुभाग! आयांपेलामारास्वामीने आबंधनथीतमेमूकावो. त्यारेतेकुमारेआदरथीपूछयुंकेशाकारणथी आनेबांधे-लोछे? त्यारेस्त्रीबोलीके हेयशस्वीपुरुष! आलक्ष्मीदेविनुंमंदिरछे तेलक्ष्मीदेवीएपोताने रमवानेअर्थेनानाप्रकारनीजातिजातिना मफुल्लितपुष्पोथीशोभतावृक्षमालीनथयेलागुणगुंजारवाकरतांछे मुखजेमनांएवाभ्रमरनासमूहे सुंदरशब्दनाझंकारवडे मोहपमाडे-लाछिमार, विद्याधरनांस्त्रीपुरुषनांयुगल जेथीएवुंलक्ष्मीरमणनामे आमोटुंउद्यानछे तेनुंएकपुष्पमात्रपणजोकोइअजाणेग्रहणकरे तोतेनेघोरनोपिडेतत्काळ तेलक्ष्मीदेवीनिग्रहकरेछे. हमणांमारास्वामीविद्याधरे वेगनात्रपणाथीपुष्पितथयेलावृक्षथी एकपुष्प ग्रहणकर्युंनेथी भनिशे वळताळीतेदेवीएथोडाअपराधीने पणमोटाअपराधीनीपेठेगणीने आप्रकारेसज्जडबांधीदुःखदीधुंछे माटे हेसत्पुरुषशेखर! आमहाभयानकएवाआलक्ष्मीना बंधनथीकोइप्रकारेपण मारास्वामिनाथनेतमेमूकावो. कमळमेघ, चंद्र, सूर्य, तेनाजेवापरोपकारणांतमएवा तमाराजेवासत्पुरुषोछे. वळीकह्युंछेकेकोनीआज्ञाथीसूर्य, लोकनाअंधकारनोनाशकरछेने मार्गनाजनारलोकनेछायाकरवावृक्षोने कोणेहाथजोडीप्रार्थनाकरीछे? अनेवृष्टिमाटेनवामेघनीकोणेप्रार्थनाकरीछे? कोइए पार्युंकेशितळछायानाजेवो एकपरोपकारमूकीने मोटाएवापुरुषनाशरीरनुं वांछीभावृक्षनीपेठे बीजुंकांइफळनथी एटलेएकप-रोपकारकरवोएटलुंएजफळछे. तेकह्युंछेकेमृगनाशरीरथी उत्पन्नथतीकस्तुरीनेएशरीरनुंमोटुंफळछे, हाथीनाशरीरनुंपनांदाडकां पमोटुंफळछे, पशुनाशरीरनुंफळएनुंचामडुंछे, गायनाशरीरनुंफळएनुंदूधछे, मोरनाशरीरनुंफळएनां चित्रविचित्रपींछांछे, पेटां

[illegible] नगो, पगा, शीनरो, नग, [illegible]
[illegible] ([illegible]
[illegible] कोशि, [illegible]
[illegible]) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ! चिंतामणीरत्नसमान [illegible]
[illegible] ! [illegible] आत्मकारना [illegible] करनारो
[illegible] ! [illegible]
[illegible]
[illegible] ! [illegible] उत्तमपुरुषोनो
[illegible] आत्मपराक्रम [illegible]
[illegible] ! [illegible]
[illegible]
[illegible]

वचनसांभळीअतिशे मगनथयेछलिक्ष्मादेवीए माग्याविनानुंपणरोहिणि, महाज्वालादिकपोताना हृदयनुंरहस्यरूपविद्यानुं दानतेकुमारनेअर्पण कर्युंअनेबांधेलोविद्याधर तत्काळमुक्तकर्यो. पछीतेविद्याधरपोतानी स्त्रीएसहीतपोतानो मोटोउपकारी जाणीनेतेनोनिरंतर नित्यसेवकथइने पासेजरह्योअहो ! परोपकारनुंफळपांच पांडवोनीवल्लभाद्रौपदीतेजेम संघाथेरहायतेमतेनुं तत्काळअतिशेमोटुं फळदेखायछेत्यारपछी राजपुत्र,स्त्रीएसहीततेविद्याधरेविद्याशक्तिवडे तैलमर्दनस्नानादि पूर्वकनानाप्रकार-नांभोजनवडेजमाड्यो. पछीश्रमरहीत थयोजेमअर्थनेकाम संघाथेगृहस्थधर्मशोभे तेमस्त्रीसहीतविद्याधरे सेवनकरेलोतेउद्याननुं सुंदरपणुंजोवानीकळ्यां अमृतरसनाआस्वाद जेवातेवागनेजोतांजोतां एकयोजनमात्रक्षेत्रनेपाम्यां तेटलामांश्रीदेवीएनीपजा-वेलुंमणिमयश्रीशांतिनाथ तीर्थंकरनुंचैत्यजाणे रोहणाचळपर्वतनुंअन्य शिखरहोयएमतेमनादेखवामां आव्युंत्यारपछीअतिशेम सन्नथयेलांतेसर्वेएने प्रासादमांप्रवेशकर्यो. तेवखततेनीमध्येरहेला तीर्थंकरनेअतिशेभक्तिवडेनमस्कार करीअतिशेमोटा अर्थवाळा सुंदरस्तवनवडेस्तुतिकरी मध्येउभीरहेलीभारती देवीनाबेबीनमस्कार करीनेत्यांबेसछेतेनजोइ कुमारविचारकरवालाग्योकेम थमाहिंदोळाउपर बेठेलीनवीयौवनअवस्थावाळी अनेजणेपमाकामनहरण करीदिककुमारोनी पंक्तिमाथ्यश्व थइहशेअनेअ-भाग ! तमारीभक्तिवडेनथा अपूर्वनवास्तोत्रनी युक्तिवडेहुंप्रसन्नथइछुं माटेकहुंछुंकेअनेक धनाढ्यलोकोनाबुद्धि पामतामागने हरणकरनारीमोटी रिद्धिवडेगर्वपामेलोने वैताढ्यपर्वतनापृथ्विनो स्वामीनेमणिपुररथनेपुर नामनगरनो अधिपतिवैरीवेग नामेविद्याधरनो अधिपतितेनीआरूपादि गुणसंपत्तिवडेमण लोकनेअतिक्रमणकरतीं शान्तिमतिनामेकन्या हुंतनेआपुंछुं जे पर्वभ्रमरजेमपुष्प माळानेअभिलाष सहीतदेखेतेमतेंदीठीछे. आमकारनीअमृतसृष्टि जेवीनिगारनीभीवाणी सांभळीअतिशेमप्र-

भगवो अनेविचारेछे के मेकन्याहरणावारीकेम इच्छा करेछे ! तेवननेग्रामनमां केम आवीहुं ! तेम [illegible] केवलीपदं-
[illegible] थइ ! तेनेपनेवीरीते [illegible] ! इत्यादि विचार करेछे [illegible] हरिहरमाता [illegible] एवी अने
[illegible] कुमारना पूर्वपुण्यनो [illegible] कन्या [illegible]
[illegible] दिव्यविमान [illegible] अहो पुण्य [illegible]
कन्याओ आवी. [illegible] श्रीकंठे [illegible] अनेवली [illegible]
[illegible] कन्याओ [illegible] कुमारने [illegible] [illegible] आ
पुण्य(पुण्यरहित)छे त्यारपछी कुमार, [illegible] कन्याने देवी [illegible] विचारनी [illegible]
कन्या [illegible] कारणसमाधे के [illegible] भगवंतनी पूजा [illegible] करी
[illegible] ते अहो [illegible] त्यारपछी [illegible] दुःख [illegible] आगी अहो !
[illegible] कुमारने त्याआगमन [illegible] विद्या [illegible] अन्यथा !
[illegible] कुमार [illegible] ! [illegible] पुण्य [illegible] ! [illegible]
[illegible] पुण्यरहीत [illegible] पुण्य [illegible] त्यारपछी [illegible]
[illegible] कन्या [illegible] त्यारपछी [illegible] अनेपोता
[illegible] कुमार अहो [illegible] कन्यानी [illegible] नाना प्रकारना [illegible] विचार [illegible]
[illegible] पुण्यजेवो [illegible] अने [illegible] विद्याप्रमुख [illegible] कन्याना [illegible]
[illegible] प्रतिहारिका(दासी) [illegible] कन्याना [illegible]

पुष्पागेनइआमकारे निवापनाकरी देवणजगतनाआधाररूपकुमार ! ज्यांसुधीरथपुरनगरनो राजावेरीवेगनामे विद्याधरेन्द्रअ हींआवेत्यांसुधी मगादकरीथईआज तमारेउभुंरहेवुंएमकहीआकन्या एनापितानां मत्यक्षदेखतां,अत्यंत स्नेहनीमूर्तिहोयएवो पएलेखकन्याएआपेलो तेकुमारनेअर्पणकर्योने कंठनेविषेतेकुमारीनेवरमाळस्थापनकरावीदासीए सहीतपोताना नगरमत्येगइ. त्यारपछीविस्मय दर्पवडेभरपूरथयेला तेकुमारेतेविद्याधर पतिनालेखनेतेमआनंदसुंदर पुस्तक रुंनेवु रडारही पांनरापांच्यो. तेआमकारेछेः स्वस्तीश्रीमज्ञत. समस्त,वस्तुनाविस्तारनुं सागररूपरथपुरनगरथी पोतानाप्रासाद्राउपना समृद्धिनाउत्क- र्षथीइंद्रतापेस्पर्धाकरतो श्रीवज्रवेगविद्याधरेन्द्र त्रिजगतनेअतिक्रमण करतोप्रसिद्धरूपपराक्रमादि सर्वसंगठ्यास गुणवडेअनुपम फळरूपथयेलाकल्पवृक्ष जेवामणिमंदिरपुरना अधीश्वरश्रीमणिशेखरनामे राजातेनापुत्रसंसेनर सहित आलिंगन करीबहुमान सहितआमंत्रणकरेछे केश्रीदेवगुरुगोत्रपवित्र मंत्रनीसंस्मृतिवडेतत्र करीछे,कृतार्थकरीछेअतुल्य समग्रकल्याण लक्ष्मीजेणेएवा मारीसाथेसकळ परिवारसहीत शुभवाळानपोएसर्व जगाएदीपवानेपोतानी स्थितिस्थानादिकने कहेनारीकुशळवार्ताविस्तार करवायोग्यछे. मातःकाळनीकांतिनी पेठेस्त्रागीनाउदयने कहेनारीसर्वेनअतिशे आनंदमकाशकरनारी कुशळवार्ताजाणवीसर्व मकारेउदयपामनारनुं पणकार्यएटलुंजछे केनित्येअपत्यरहीत एणानेणानताएवाअमारी साथेअपाराअद्भुत शुभदैवयोगथी जगत्जननेआनंद करनारीनगरअंगतारा लक्षणथीकल्पवृक्षनी लतामेवीत्रणलोकना पुरुषोनेस्पृहाकरवा योग्यएवीअनुपम रूपसौभाग्यादिसर्व गुणमणिधीभरपूर रोहणाचळनीखाण समान,मत्यक्षलक्ष्मी समानशांतिमतिनामेकन्याछे तेत्रणलोकनेअ- तिक्रमणकरनारएवुं रूपादिनिर्मळजळने उल्लासपमाडतीगंगा नदीनाजेवीअनुक्रमे वृद्धिपामेली,लीलावडे सकळकळानासमुद्रने जाणनारीमकृतिवडे वसंतसमयनापुष्पमाळा हसनीसुंदरमंजरीतेना रसास्वादलेडन्मार पामेलीयाळकोकिलाना जेवीअतिशे

मधुरबोलनारीअने उन्मादवाळा कर्याछेमन जगतनाजनजननेणे एवानवयौवनने पामेलीनारीकन्याने योग्यवरनिमित्तानीज
सतेआराधनकरेली महासिद्धियावदेवताइला समेवरक्षोअनेअनुपमरुप लावण्यादिगुणवडे गौरवतानेपामेलोवारी कन्यानोवर
तेमाराबाश्रयवर्गंददनो स्वामीथशेकेशीजोपने ? एमकरारेमैंनेपूछ्युं त्यारेतेणीएमप्रकट्युंछे केहशणांजनवर्योना गुणसंपदानुं
पाप्रश्रीमणिमंदिरपुरना मणिशेखरनामेराजानो पुत्रकांतिवडेसूर्यसमान अरुणदेवनामेअसाधारण गुणवालीकन्यानोनारी
राज्यलक्ष्मीनोस्वामीथशे. पूर्णचंद्रनाजेवाकार कुवलयनेउल्लासकरनारा सर्वकांतिनोस्वामीतेरुपानि यथायोग्यछे, एटलेजेम
अनवाल्हीरातनतांअने चंद्रकांतिनोपतिचंद्रमा शोभेछेतेमनारीकन्यानो अनेनारीसमृद्धिनो पतितेजकुमारयोग्यछे. अनेतेकुमार
हालमांपोतानीइच्छाथी विचरतोश्रीदेवीना करेलाश्रीशांतिनाथना चैत्यमां(मंदीरमां) आव्योछेतेणे कोइनगारनाराज्या
ननाल्हीमणीमणिमंदिरपुरना उपवनमांहींडोळे क्रिडाकरतोदीठोअने कन्यापणअनुरागथी रोमांचितथइने कुमारदीठोतेज
पगनल्हीजोचिना यमराजनीपेठेकंइकथी आवीनेअनेमथपथीज तेकन्यानोअभिलाषी नाटवांनततिनापरनोभाइनेविद्युत्पण
नामेविद्याधरने कुमारनेदूरथीआवतो जोइनेजलदकरी छळथीतेकन्यानुंहरण करवानेइच्छतांएमकारना मनवाळोतेविद्या
धरतेणीआशंकाधारीने अतिशेचतुरपणीतेकन्या. देवतानीपेठेतत्काळअदृश्य थइजवानुंकरीअहींआवीछे अंतःपुरनीअनु
पणएवायळपराक्रमवडे अनेकप्रकारनीविद्याथी उन्मत्तथयेलोविद्युन्मत्त नामेविद्याधरने लीलामात्रमांजीती लीधांइत्यादि
सुवानवडसिद्देवीए कहेलुंमांगळीडुंआदिक सर्वलोकपण अतिशेचमत्कारपाम्याने आनंदहर्षपाम्या.माटे अमाराआवताधूपी
अपाराउपरअनुग्रह करीनेचैत्यमांजअमारी नाटजोणो कुंपणविलंबवगर तेयारथइत्यांआवी चिंतवनकरेलामनोरथने सफळ
करीशंपणीतेमारा चित्तेअतिशेहर्षणुं अवधारणकरवुं इतिकल्याणम.

[illegible] भगवंतनां [illegible]
[illegible] आगमननो मार्ग [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] त्यारपछी [illegible]
[illegible] त्यारपछी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] आकाश [illegible]

[illegible] दुराचारविद्याधरन-
[illegible] आदि [illegible] प्रार्थना करी [illegible]
[illegible] हृदयमां [illegible]
[illegible] पवनकारे अतिशे [illegible] वायुवेग
[illegible] विद्याधर [illegible] ! आदु-
विद्याधरने शरण थयो. [illegible] वायुवेग [illegible] पण [illegible]. ते
[illegible] अनेने दूरे तेव-
[illegible] संख्या
[illegible] पोताना [illegible]
[illegible] वायुवेग पोताना अतिशे अभिमानना
[illegible] विद्याधरने दूर करो. [illegible] इत्यादिक [illegible] पण
[illegible] ! [illegible] अमारा जेवा
[illegible] अतिश्रेष्ठ
[illegible] ? शरणागतनुं पालन करवुं [illegible]
[illegible] पीडा हरवी, शरणागतनुं रक्षण करवुं, दान आपवुं,
[illegible] चिंतवन करनार तुज
[illegible] अनुराग करवो, [illegible]

अनर्थनेपामीश. इत्यादिकभतिशेनेंरा तेनापुरानुवचन, दूरद्वाराएणमहीइन्द्राम पामतोइरोमजेनां, अतिशेकोपनाआरंन-
पामावेरामकणदेवेवांने वेपकारेपणमहानवाळो॑छे एटवप्यरुं लश्करनुंगमनामछे अनेतोनानागरीरनुं गामध्यंएतो
पण अंछे भारेवेपरारे पराक्रएवा तेकुमारेवारेपामथी तेविद्याधरनुंनगर, मोटालश्करथी तत्काळवींटीलीधुं. पछी
पर्णीलेणाशाळो तेधनिलेयाज्ञी एवानेविद्याधरे चतुरंगसैन्यमां तत्काळतेकुशारने मनुष्यगइ मोटायुद्धनो आरंभकर्यो
अनेशूद्रदेवहांतोना अंतुभार्गितोरुंधवुं अनेअग्निअस्त्रअने जळअस्त्र, अनंवअस्त्रअने वायुअस्त्रनागपाशने गरुडअनेअंधका-
रनेउद्योत, अनेसंभारनअनेआगरण, इत्यादिकएकबीजाना अस्त्रवरनथानांविविधारवाद्या बाण, शक्ति, चंद्रहास मपुरआयुद्ध-
वडेनानाप्रकारनी क्रियाओवडेसमर्थजनना मननेचमत्कारनोबीरनार करनारएवुंयोद्धुद्द पाताटेसमार्थने पयुंअनेमोटादात्रा
तत्मीयेवेअनेक भीतोनाभंडारकरवाना अतिभयानकनेयुद्धना भाटेमदिरमेत्रायुवेग पानेनयुद्धकरतांमहा दर्पवाळाशर्पनीपेठे
गारुडीविद्यावाद जेरामकपदेवनेअनवांवडाकीनिनोविध्वंस कर्यो भनेतेनुंनगर, जुना शून्यपरनीपेठेअस्त व्यस्तकर्युनेशक्त
अतिमदवायुछे तिमजेनुंएवोजाइपोन्यण पणीरयाळनीपेठेचारे पामनामतोनेनेश्नाची निग्रहकर्यो आ जगाएकवि एववर्णन
करेलोकाएवछे. मोटापुरुषेकरेला अर्थनेअनर्थनोकरनार अनेवेणेद्रणकरवा इच्छेलापदार्थनेइच्छतो, मोटामाथेरवीगाएलो
पुरुषनिपिडीपरगं मोटाअनर्थनेपावेछे त्यारपछीपरपसदीछुछे मोडुंकुमारनुंमाहात्म्य जेमणे मनेगयोछेगर्व अंशकाएजेमनेएवा
मर्वविद्याधरोएकठा पहनेदक्षिणश्रेणीतथा उत्तरश्रेणीनाविद्याधरोनुं चक्रवर्तिपणानाराज्यमां तेकुमारनेअभिषेक करीस्थापन
कर्यो. अनेमदंसग एवु विद्याधरोचक्रवर्ति सर्वजगाएअहनदेवछेएमउद्घोषणाकरावी. एनगाएगाथाकाव्यछे सर्वविद्या
धरोअहन्देवनी सेवाधारहा, जेमदेवताओदेवनी सेवामांछेतेमअनेते सर्वअहन्देवनीसमजनाने निरंतरइच्छेछेपनुग्यमात्र

नेपूर्वजन्मनापुण्यनुं फळछे. आमकारे जीवोने
पुण्यपणेअकलदेवनी पणानिधानरीतीपनीहनी. आवकारनुंनिवारणकरीशकशुं तेपूर्वजन्मनापुण्यनुं फळछे. आमकारे जीवोने अनेतनप्रमाणेतेटली
पुण्यकुशिकारणजोयुं. एहवेकृषिकारणथेनामिघनातनुं दारो तेदयाभिमुनजेणटकेनाव्यामिदेवकोकोछे अनेतनप्रमाणेतेटली
पुण्यकुशिकापणजेयुं. एहवेकृषिकारणथेनामिघनातनंदाटछे तेदयाभिपुनछेपटकेनावयामिदेवकोकोछे पोतपोतानानि-
धर्महोयनेतेदारणनकेल जेनेशरणमांजे रतुनमळेतेनगतमां धम्रजनकहेवाय. तेमांजबन्नविषावरोनामपूर्णा पोतपोतानानि-
मवनेअनुसारेअक्ळदेवनीमांगिवनुवद अकारमामभृरतोउदत्तकर्यो. पछीपोतानीइच्छाममाणे वंधनीओनीशणजयवन-
स्थावरोवरस्थापनकरीइन्नीपेठे अनेकक्रोडोवसमहीनपोटीविभूतथी पोतानानगरमत्सोगयो. त्यांश्रेष्ठेकोडेकोटीश्रद्धिवोगवतो
पणमैनेसजननभीदेवता अनेतनेदुर्जनपरानभीदेवतानो नेरिद्धिअन्यजानिनीपेठे किपाकनाफळजेवीनिष्फळजाणवी. वळी
कपुंफिंदानअनेउपभोगनेथीरहीत एवीलक्ष्मीनिपंजाना विशेषणभोगवतानथी तेकुरूपनीपोत्रीरूपीहोयतेपण अरूपी
(दारीद्र) गणाणवी. अनुक्रमेतेणांतानामाणवंदरपुरनी गलीविआरामपावडारना एणो अनेत्यापोता आडंबरपबेमंगलनुं
सैन्यस्थापनकर्युं. तेगाणेवंदरनुंनगरहोवपणुंथयुं त्यारपछीकोइसारावखतनीसाथे अलदेवकुमारना आगमननीवधामणी
पितानेकहावी. पुत्रनाविरहथीआकुळथतो अतिहर्षावंतथीनिदानने आपतो, मोटाआडंबरथीतेपुत्रनासन्मुखआव्यो. तेकहुंछेके
आचरणछेतेगुरूनेकहीआपेछे, शरीरभोजननेकहीआपेछे, संभ्रमस्नेहनेकहीआपेछे, भाषणदेवनेकहीआपेछे एहवेप्रकारेदेश-
नोपाणपछेतेनगरवेजेत्यारपछीअभिषेकोदानेमहारनाआडंबरेमहीतकुमारनत्वेजेमचंद्रमरवेउल्लासपामतोसमुद्रापतेमअतिहर्षेरा-
वाच्योपितानापगे. तेहवेनामवाणनीउपमादेवानेनिश्चयथतपणमुन्जणायछे. अनेतनपुत्रआवेलोकुमार, पितानेमळवातेवखतना
हर्षनुंयोग्यवर्णनकरीए ? पछीमोटाउत्सवथीते पुत्रनोनगरमांप्रवेशकरावी मोटाउत्सवपूर्वक पोतानुंसर्वराज्यपुत्रने अर्पणकर्युंअने
निर्विघ्नपदपाळ्योधयो एवोपणितेसरराना इहेमकारेजीनधर्मनुं पालणकरेछे. आजगाएगाथाओछे तेनोअर्थःभारनेसहनकर-

नारएवोपुत्रसते जेपुरुपपोतानोभार पुत्रनेविषे स्थापनकरीनिश्चितपणे रुडेमकारेधर्मसाधननथीकरतो तेथीकोणअन्यपुरुपमूढ छे ! कोइनथी. अनेजेपुत्रयौवनअवस्थाने पाम्योछे तोपणपितानाभारनीचिंताने पोतेहरणकरतोनथी अनेधर्मकरावतोनथीते पशुनीपेठेउत्पन्नथयो तोपणतेणेकरीनेशुं ! त्यारपछीतेअरुणदेवसर्वराज्यचिंताकरवामांसावधान एवोनवोराजानवाउगतासूर्य-खंडजेणेएवोनवाउत्पन्नथयेला वासुदेवनीपेठे हुंप्रथमहुंप्रथमएमकारे सर्वनरेन्द्रअनेसर्वविद्याधरेन्द्र तेमनांसमुहोएसंभ्रमसहीत नमावेलांमस्तकनाशेसरथी प्रसरतामोटाराग, पणापरागएटले पुष्पनीरजतेणेकरीने सुगंधीमानकर्युंछे चरणकमळयुगळजेनुं एवोअनेनथीखंडितथइ आज्ञाजेनीएवाइंद्रनीपेठे मोटासमग्रभोगतेणेसहीत पोतानाराज्यनेभोगवेछे. आजगाएगाथाओछेतेनो अर्थःएअरुणदेवेपूर्वजन्ममां तिर्यंतपणामांपणएटले वानरनाभवमांपण सामायिकसहीतएकवारकरेलुंएनुं पणदेशावकाशिकव्रत तेमांपणउपरमछेफळजेनुं एवोव्रतधर्मविधिछे अथवाएव्रतनुं आकर्युंतेनुत्च्छफळ्नेशीगणत्रीमां ? एथकीतोजीनसमृद्धिभोगफळ पणशिघ्रपणेजपपायछे. तेनीआगळपूर्वोक्त कहेलुंफळकांइगणत्रीमांनथी. एकदिवसतेनगरमां मोटीसमृद्धिवाळाश्रावकसमूहे राजानीआज्ञापूर्वकरथयात्रानो मोटोउत्सवकरवामांडयो. तेनेउत्सवउपरबहुमानसहीत अनेकगामतथानगरनोचतुर्विधसंघएक-काएटलेएकठोथयोहतो. तेनेमांसुवर्णनोमाणिमसूहवडेजडेलो अनेसुंदरचंदनना-टलेसाधुसाध्वि, श्रावकश्राविकाएचारप्रकारनो समुदायएकठोथयोहतो. तेमांसुवर्णनोमणिसमूहवडेजडेलो अनेसुंदरचंदनना काष्टवडेघडेलोअनेउंचोअसंडमाणिसोनामयमहादंड तेउपररहेलीवायुनेअनुकूळ लहेरोलेतीश्रेष्ठपंचरंगवर्णवाळीने सुकुमारही-रागळवस्त्रनीअनेकध्वजपताकावडेशोभतो सर्वअंगसुंदरजणातो मोटोएकश्रेष्ठरथनीपमावेलोहतो. अनेतेरथसाथे जोडेलाश्री-

वजाग्रमनेशागरेअंगे भतिसंपूर्णलक्षणना धारणकरनारत्रण लोकनामननेहरण करनार,शीतळतानेदेनार, मणकार
कर्णीरत्नमयीजीपुतळीओ जेनाअग्रभागमांअतिशोभकती सोनानीगोळीओवडेअनेश्रेष्ठ अलंकारोवडेअतिशोभिता अनेकेणपात्र
दांतवडेदगकर्णकनकामनेनाणं संयोगिनरूपादोषनेत्र एवासवाळ्पनाश्रेष्ठवरुदनोरणाहता. अनेतरणनोभारणीभभंगळे,
सुहरोमराजंवनस्तनोअंतो नेकोआदितगनभागनो अतिशेवेपीठोपर्यंतमेनेपनो अनेयकतिवडेअतिशोभितागोग, सर्वने
मानशाणोगअनेपहेरेलीसुंदरवस्त्र. मुगुट, कुंडळ, बाजुबंध, कडां, हार, अर्धहार, नेपुरिकादिसर्वअलंकार जेणेपहेर्याअनेभ
भिक्षोमानेकाणेपूछिवरअनेयो हिनोगारपीठोप एमणाओअने रत्नथीजडेलोसोनानोभाजन (परोणां) जेछेदायणां
तेनेपूत्रोणकश्रेणुमारणीहतो. मारणीमंसुंदरएणनेविनेविस्तार सहीतस्नानमहोत्सवपूर्वक गर्भंगोदिकआभूषणवडेशोभित
पुष्पअनेश्रेष्ठगुर्गीमानतुल्यमाळादिवडे पूजेमूर्तिकमणिमयपगथीनुं मनिबिंबनेमगाराश्रावको. श्रेष्ठमामादमोटाउत्सवदे
स्थापनकरीनेपनेरणमांपधरावकर्युं. मारणीगर्वजननेआनंदकरनार सोंधवनेपुष्पनेविषेआवेलाभूपणना रथनीपेठेमणिकांचन
वंदेशिमिमरतीमणुशीमणनमने सुंदरएनानामरनेमनेकरुणी ध्वजपताकामयुक्तमोटाआडंबरवडे तंत्रीनाळआदिकवणांतिनशब्द-
नावादिश्रणतेसनेमनेहरणन, परणमनेशाळगन अनेभस्यानगतएवारमकारनो मधुरगीतनुंगानथयेलने अनेकनृत्यकर-
नारीनामपुरुषोतथादेवदेवांगनानामपूरवडे शोभायमानजयजयशब्दनेकरनाएवामद, ब्राह्मणआदिलोकथयेमतेवंदादनगान-
धूपवाडवे माह्मणजनउच्चारणकरेगने नवाळवानबंधनेभणनार विरुदावळीनेकहेनारकुशोबोलनेगने तेरथनुंचाल्युंथयुं. तेव-
एनेहगलेहगलेउपारेता अनेस्तुतिकरता नेभोगपुरुषोनेदानदेता अनेचंदनरसनेछांटनापुष्पसमूहने उछाळनापनाका, तोर-
वादिकवडेसुशोभितकरेलाश्रीक (त्रणरस्तावाळामार्ग), चतुष्क (चाररस्तावाळामार्ग) अनेचत्वर (चकलां) नेचतुर्मुखमहा

पनपागनापपमारानरतरअमप्रादरहतु एवोअभिग्रहतेराजाएधारणकर्यो. नेजेवीरीतेदिक्षालीधीछे तेजप्रकारेतेदिक्षानोजाव-
ज्जीवपर्यंतप्रधानमनवडेनिर्वाहकर्यो. मोटापुरुषनुंस्वभावथीज सिद्धथयेलुंलक्षणएछेके जेनोअंगिकारकर्योतेनो जीवतांसुधीनि-
र्वाहकरवो. एप्रकारेनेराजा,ग्रहणकर्युंछेसूत्र, अर्थतेनुंतत्वजेणेजीनकल्पीनीपेठे नित्येप्रमादरहीतमासक्षपणकाळमांदेवतानेदुर्लभ
एवामोटातपनेतपतो, वायुनीपेठेकोइजगाएनबंधातो, पृथ्वीमांवीचरतो, रात्रीएकायोत्सर्गे रहेतोएवातेमुनिराजनेकोइजगाए
जयलक्ष्मीदेवीएदीठो पछीतेदेवीएअवधीज्ञानवडेजोइनेओळख्यो. पछीतेणेकरेलाअभिग्रहनीपरीक्षानेअर्थे स्त्रियोमां
जीतमेळवनारीअनेपुरुषमात्रने वशीकरणकरवामांचतुरएवी अनेकदेवांगनाओप्रकटकरी. अनेतेदेवांगनाओदिव्यएवुंनृत्य
अनेजयमेळवनारएवागीत, नृत्य, हाव, भाव, विभ्रम, विलास, हास, आलिंगनआदिनवानवाप्रकारवडेप्रातःकाळपर्यन्त
तेमुनिनेक्षोभपमाडवानाउपायकर्या तोपणतेमुनिलगारमात्रपणक्षोभनपाम्या. एप्रकारेधर्मध्यानमांछे एकचित्तजेनुंएजप्रकारेप्र-
तिक्रमण, प्रतिलेहन, इत्यादिधर्मकार्यने पोतपोतानीवेळाएकरता मासक्षपणादिपारणामांपण भ्रांतिनपामता अतिसूक्ष्ममेघबिंदु
विकुरवीनेसमीपरहेला श्रावकगंधनीद्रढनिमंत्रणावडे तथापारणामांक्षेमवंस्थानेकरेलुं अन्नादिकमांअशुद्धपणुंतेमांपणभ्रांति
पामतातथापुत्रनुंनगरवेरीलोकोए रोकीलीधुंइत्यादिवातोकहेवाथी पणनचंचळथनाएपअनुकूळ अनेप्रतिकूळएवाउपसर्गोवडेछ
मासपर्यन्ततेदेवीएपरीक्षाकरी. तोपणलेशमात्रकोइजगाए आर्तध्यानादिप्रमादनकरता. त्यारपछीअतिशेचमत्कारपाम्युंछेहृ
दयजेनुंएवीनेअतिप्रीतिरसथी उल्लासपामतीछेशोभाजेनीएवी श्रीदेवीएपोतानुंस्वरूप प्रकटकरीपोतानाप्रर्वेअपराधखमावीते
मुनीन्द्रनुंस्थानेस्थाने सर्वलोकमांमोटुंआश्चर्यप्रकटकरती नित्येतेनीपासेदासीजेवीथइरही. माटेजगवमांअप्रमादीपणानुंमोटुं
फळआश्चर्यकारीथयुं. आप्रकारनाअभिग्रहनो जावज्जीवनिर्वाहकर्योतेथी मोटापोतानापाहात्म्यवडे विस्मयकर्युंछेत्रिलोकजेणे

एवुंतीर्थंकरनामगोत्रकर्मबांधी अनेनिरतीचारचारित्रधर्मपाळीने अनशनादिकरीसमाधीवडे मरणपामीनेअनागारना आउखा-
वाळोदशमादेवलोकमांश्रेष्ठदेवपणेउपजशे. त्यांथीचवीनेमहाविदेहक्षेत्रमां मोटीऋद्धिवाळीराज्यसमृद्धिनेतथातीर्थंकरऋ-
द्धिनेभोगवीपरमपदनेपामशे. एमकादंबरीअटवीनेविषे वानरमतिनुंदृष्टान्तकह्युं.

चारित्रनुंजेआचरणतेचारित्राचारकहीए. अनेतेचारित्राचार पांचसमीतीअनेत्रण गुप्तीएमभेदवडेआठ प्रकारनोछे तेकहुं
छेकेप्रणीधानएटले चित्तनुंस्वस्थपणुंतेने भिनेयोगकहेतांव्यापार तेणेसहीतपणोएटले पांचसमीतीअनेत्रण गुप्तीनेयोगसहीतपणो
चारित्राचारछेतेमां पांचसमीतीमांते इर्याभाषादिकजाणवी. तेनामूळसूत्रविषे निर्दोषस्थानमांरह्या साधुस्वाध्यायादि
धर्मकृत्यकरवुंअने ज्ञान,दर्शन,चारित्रतेनी वृद्धिरूपजेआवश्यककार्य ग्रामथीग्रामनेआगळ कहीशुंएवाविधिवडे गमनकरवुंतेथी
भद्रबाहुस्वामिए कह्युंछेकेआवश्यकारण ग्रामथीग्रामनेगमनकरवाने विवेकादिकगुण एकाग्रचित्तवाळानेअने मासकल्पवगाथुने
पापछेपणबीजाने थनानथी माटेएवुं आवश्यककहीएत्यारे कोइशंकाकरेछेकेसाधुए नवकल्पविहारकरवुं तेकेमकह्युंछे ? तेनो
उत्तरएछेकेतेविहार पणबहुगुणनुंकारणछेमाटेधर्मनीवृद्धिनेअर्थेजछे तेकह्युंछेआचारांगसूत्रनाबीजाश्रुतस्कंधनाबीजा अध्या-
यनमांबीजाउद्देशाने विषेकेजेसाधुऋतुकाळ, उष्णकाळनेविषेएक स्थानमांमासकल्पपूरो करीनअनेवर्षाकाळमां चारमासनुंअ-
तिक्रमणकरीनेतेना तेजस्थानमांकोइ कारणविनारहेतोएसाधुने कालातिक्रमदोषनोसंभवथाय. अनेजे साधुऋतुबद्धविहारकरी-
नेअथवावर्षाकाळ अतिक्रमणकरीनेबीजी जगाएएकमास अथवा चोमासु बेत्रणमासरह्याविनापूर्वे स्थानमांमासकल्पकरे अथवाचोमासु
करेएटलेबेत्रणमासनुं व्यवधानकर्याविना तेनातेस्थानमांआवीरहे तोतेस्थानउपस्थानक्रिया दोषवडेदुष्टथायछे एटलेतेस्थानमां
रहेवुंकल्पतुंनथीएम तेनीटीकामांअर्थकर्योछे. अनेश्रीकल्पभाष्यादिकमां पणएकमासथीउपररहेतां मायोश्रुतमाध्यायअने

दोषपणउत्पन्नथाय अनेकारणनेएटलेरोगादिक कारणप्राप्तथयेसतेनिवाय करवोपडेतोघणीयतनाथी भिक्षादिकग्रहणकरे. तेनीटीकामांएम कह्युंछेकेदोषएटले गृहस्थनीसाथेस्नेह बंधायतथाप्रतिबंध थायइत्यादिकदोषप्राप्तथायछे अनेग्लानपणुं, उपद्रवपणुंतथाकोइरागादिकना द्वेषप्रमुखकारणउत्पन्न थयेसतेनोगामथकी अधिकपणरहेवुंथायतोअन्यअन्य स्थानेनिवासकरेतेमज भिक्षापणकरेस्थंडीलादिक पणतेमजकरेनेअधिकरहेवामां विधिनोपणविशेषकरवाने विशेषथवाळोथाय तपोनिधिनीवृद्धि करेअनेद्रव्यादिकमां प्रतिबद्धपणुंजणायतो नानाप्रकारनादेशमांविहार करेअनेविहारनकरवामां आप्रकारनादोषछे. प्रतिबंधपणुं,लघुपणुं,लोकोपचारनुं शिथलपणुं, देशज्ञाननुंअभावपणुंने ज्ञानादिकनीअवृद्धिपणुं इत्यादिकदोष प्राप्तथायछेअनेविहार पक्षमांएसर्वेगुणरूपथावना करीलेवीअनेसाध्वी आश्रीनेनांएमकह्युंछेके जोएमहानगादिसाध्वीओने अधिकनथीतोपण नित्य विहारकरेगतेमने आप्रकारनादोष उत्पन्नथायछे साध्वीमांसादिकनी पेशीसरखीछेमाटेनिवास स्थाननथायोग्यभिक्षातेनुंदुर्लभपणुंथायएवाकारणवडे अवर्षाकाळनेविषे(चोमासुविना) एकस्थानमांवेमासरहे तेनीटीकामांआप्रकारनो विशेषछेकेसाध्वीतोमांसादिकनी पेशीसरखीसर्वनेपण अभिलाषकरवायोग्यहोयछे तथातेमनेयोग्यनिवासस्थान दुर्लभहोयछे माटेशास्त्रोक्त गुणरहीतस्थानमांअथवा दोषयुक्तस्थानमांरहेवाथी प्रवचननेबाधथायइत्यादि घणादोषउत्पन्नथायछे एवाकारणमाटेतेमने अवर्षाकाळमांबेमासरहेवानी आज्ञाकरेलीछे अनेबेमासथी अधीकएकजगाएरहेतो तेमनेपणप्रायश्चित्तप्राप्त थायछेअनेदोषपण घणाप्राप्तथायछेअने कोइकारणसतेएटलेग्लानपणुं सतेनिवास, भिक्षानेनेघणी यतनाथीग्रहणकरेअने विहारकरवामांकह्युंछे केनिरंतरगमनकरवाथी जेवीजराअवस्थाप्राप्त थायछेतेवीबीजाथीनथी माटेकायक्लेशरूपतपअने नानाप्रकारनापरीषह,उपसर्गसहनकरवाइत्यादिक गुणपणछेमाटेइर्यासमीती आदिविधिवडेगाधुएधर्मनी वृद्धिनेअर्थेविहारकरवो अनेइर्यासमीतीनुंस-

[illegible] आकाशनी [illegible]
[illegible]
[illegible] गमन करवुं [illegible]
[illegible]
[illegible] गमन करवुं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

समोवोल्लेछेकेकोइपण मारी
कहेछेकेआनेचोपोचोरइत्यादि गालगालगेगने जेमकेकाइअभिमानादि पमपमुंछेनिचगेनुंपणो
जातिमपुरनवेंगुल्यनणी. एमवांग्लेछइत्यादिमाथा मनेजेमकेनरनेठगवाने अर्थेअपरिचगनाळा स्थानमांरवोमनो पुत्रादिकनेविषे
एमकहेछेकेआमारो पुत्रनथीअनेहुंएनो पितानथीइत्यादि लोभथयेगनेजेमकेकोइकनाणिह पारकुंएवुंगणपात्रादिक वस्तुनेआ
सोमारुंछएमकहेछे इत्यादि हास्यगामथगे मनेजेमकेहास्यविनोदमां आमकपणेकोइतेमकारना कुलीनपुरुषनेपण आनोकुळर-
हितछेएमकहेछेने भगमाणथयगेजेमकेकाइ तेमकारनुंनकरवानुंकाम करीनेबेठेल्यानेकोइपुछेके केजेणेआकामकर्युंछेतेमनुंछेके
नहींल्यारेतेमांहेकेहुंतो तेरातनेदेशमाज हतोनहींइत्यादिमुखरपणुं (वाचाळपणुं) सनेजमकेजेनातेनापण परीवादादिकनेनिंदा-
दिकनेवोलनोगयहेछेने विकथानेविषेएटलेस्त्रीकथाने विषेअहोनिहीनाकटाक्षना विशेषकेवासरमछेइत्यादि एमविकथाकरनो
अर्थनीटीकामांकर्युंछे एमकोधक्रोधादिकनेतथा राग,द्वेष,मात्सर्य, मोहआदिकस्थानने वर्जिनेभाषानोल्ची तेकरवुंछेकम-
स्थानेगदवाना पोल्लुंअनेगद्गभावनं सदशामिगतगुंअनेपोतानी शक्तिगगानलोपकरयो एमजेगाणेछेनेपंडित कहेवायछेआ
जगाएमहत्वाथनदवकहेंतो पाल्लामकरणने अनुकूळपणभाषणकहेंतो थोडुंवोलवुंनथीपणमोटा कार्यनीसिद्धिथायछे. तेदशवै-
कालीकसूत्रमांहेल्या पावयनुद्धिनापा अध्ययनने विषेमतिपादनकरेल्याएना अस्फुटवोलवापणुंतथाममं भाषणकरवापणुंइत्या-
दिकदोषरहीतनिर्दोष भाषणकरवाकप भाषानेविषेजनसरथु तेभाषासघीभीकहीए तेकरवुंछेकेमधुरएवुं, निपुणएवुं,थोडुंएवुं,
कार्यमांआवीपडेलुं, अनेगर्वरहीतअने अतुच्छअनेमथमबुद्धिपूर्वक विचारेलुंअनेधर्मसंयुक्तअनेजेथीपरने दुःखनथायअनेजेथी
प्राणीनोवधनथाय तेजेथीआत्मा नेजेमां नपंदएवुंगीतार्थपुरुषो भाषणकरछेभाषानुं स्वरूपदशवैकालिकनिर्युक्तिआदिकग्रंथो
मांआमकारेकयुंछे. तेमकेभाषाचारमकारनीछे. १. सत्या, २. मृषा, ३. सत्यामृषाअने ४. असत्यामृषाएचार मकारनीभा-

देशान्तरोमांछे लोकनेजीवतांछे एमजेकहेवुंतेजीवमिश्रभाषाकहीए. ते ५ अजीवमिश्रभाषाकहेछे घणामरीगयेलाह-
रिणादिकनेजोइनेआजीवतांथोडां एमजेकहेवुंतेजाणवुं. ते ६ जीवाजीवमिश्रभाषाकहेछे जीवताअनेमरेलाएवाशंखादिकनाढगला
नेजोइनेआटलाजीवेछे अनेआटलामरीगयाछे एमजेकहेवुंतेजीवोनीसंख्याजीवाजीवमिश्रभाषाकहेवायछे. ७. अनंतमिश्र
भाषाकहेछे. जेमकेमूळकंदादिकनेविषे परीतअनेअपरीतजीवछतां एवादिकनेविषे सर्वअनंतकायछेतेने अनंतमिश्रभाषा
कहेछे ८. परीतमिश्रभाषा. जेमकेअनंतकायनो लेशमात्रसंभवछेतेनेविषे परीत अनेअनंतकायजाणवा... ९ अद्धामिश्रभाषा
कहेछे. एमजेकहेवुं तेजाणवुं. ते ९ अद्धाकहेतांकाळतेनेविषेमिश्रितते अद्धामिश्रभाषा जेमकोइपुरुषउतावळोथयोथको दिवसने
विषेकहेकेऊठउठरात्रीथइगइछे इत्यादिकवचनबोले तो तेदिवसहोयतोपणतेनेरात्रीकहेवुं ते अद्धामिश्रभाषा. १० अद्धाद्धामिश्र
भाषा. दिवसअथवारात्रीनाएकदेशनेविषेबीजाअंशसहितकहेवुं तेअद्धाद्धामिश्रभाषाकहेवाय. जेमकेदिवसनाएकपहोरने विषेकहेकेमध्यान्हथयो
इत्यादिकहेवुंतेप्रमाणे एमजेकहेवुंतेअद्धाद्धामिश्रभाषाजाणवी. एमदशप्रकारेमिश्रभाषा दशप्रकारनीजाणवी. हवेअसत्यामृषा
भाषाबारप्रकारनीजाणवी. जेमके १ आमंत्रणी हेदेवदत्त! इत्यादिभाषाबोलवी विलक्षण व्यवहारमांकहेवाकारणअरथापीअसत्या
मृषाजाणवी. २ आज्ञापनी तुंआकामकर एमजेकहेवुंतेआज्ञापनी अवसरपामीनेवचनबोलवा अभावप्रमाणथी व्यवहारदृष्टिये
सत्यासत्य. ३ याचनी जेमकोइवस्तुनुंमागवुं एमजेकहेवुं तेयाचनीभाषा. एहवोउपदेशनीभावनाजाणवी. ४ पृच्छनी जेमकोइपुरुषकहेछे.
जेनाथीसंशयपडेतेनेपुछीनेनिर्णयकरेतेपृच्छनीजाणवी. ५ प्रज्ञापनी जेमकोइहिंसादिकपापकरेतेदुःखीथाय
एवोउपदेशकरवोतेप्रज्ञापनीभाषाकहेवायछे. एवीरीतेमांहेवळी एमजमाणवानुंछे. ६ प्रत्याख्यानी. आहारनोत्याग. इत्यादि जेकहेवुं
तेप्रत्याख्यानीभाषाकहीए. ७ इच्छानुलोमा जेमकोइवस्तुमां हेतुमारोअभिप्राय छे? एमपुछेतेमनेतेवस्तुगमेछे एमजेकहेवुंतेइच्छानुलोम

कोणाकहीए. ८. अनभिग्रहीता. जेनां भांपग्रह कर्योविनाकहेवीतें, डित्थादिकनीपेठे. अथवायणाकार्यमांतोएक मनेदुंशुंकहुं एमपूछतेथकाजेनिकार एमकेकहेजुंतेअनभिग्रहीताकहीए. ९. अभिग्रहीतानेविषेअर्थनुं ग्रहणकरीनेजेकहीए तेअभिग्रहीताक- हीए, घटादिकनीपेठे. अथवापणाकार्यआवीपडे एतेहुंकिंशुंकामकरुंएमपूछतेथकेएणापाछापकर एमकारेनेकहुंतेअभिग्रहीता कहीए. १०. संशयकरणी. जे अनेकअर्थकरवामां साधारणतानेसंशयकरणीकहीए, सैंधवादिकनीपेठे. सैंधवशब्दनो अर्थलवण, वस्त्र, पुरुष अनेघोडो एवाचारअर्थथायछे. तेमांकियोअर्थकरवोएवासंशयवाळी.तेसंशयकरणीकहीए ११.व्याकृतापटछेस्पष्टअर्थ जेना, पुरुषअनेघोडो एवाचारअर्थथायछे ... जेकहेवायछे तेजी चालीतेआदेवदत्तनोभाइछे इत्यादिक. १२. अव्याकृतापटछे अस्पष्टअर्थवाळी. बाळकनेलाडलडावतां जेकहेवायछे तेवी कल्पेलीभाषा. एवारभाषानेविषे विगळेन्द्रीयने असत्यामृषामाछे. तेमनेगस्पष्टअर्थपरीज्ञान स्मन्नादि आशयनेपनो संभवनथीमाटे. तिर्यकपंचेन्द्रियपण जेबीछेतेवीवस्तुनुं प्रतिपादनकरवुं तेनेविषेवलणनी सर्वाभिमतारणकरवुं (जेमकरवुं) इत्यादिकबुद्धिना अभावथीबोलेछे. वळीदांतोकोणपामेमते बीजानेमारवानीइच्छाथयेछे. मोपणएमनेएमरहेछे. माटेअसत्या मृषामतेमनीभाषाछे. शिक्षादीधानिनास्वाभाविकछे एमजाणवुं. अनेशिक्षादीधेलीतो मेना, पोपटइत्यादिकने संस्कारना नि- पुणपणाथीतथाकोइ जगाएजन्मान्तरनाक्षयोपशमनाविशेषपणाथी तथाजाति स्मरणकरीनेतेपछव्यवहारमां कुशळपणाछपउत्तर गुणनीछाळीजेआविने सत्यादिकचारप्रकारनी पणभाषावेमनीकहेवायछे. हवेआचारप्रकारनीभाषानेविषे साधुएकेमकारनी भाषाबोलवी. एकसत्यानेअसत्यामृषापणवीजी बेप्रकारनीभाषानबोलवी तेउपर भाष्यवचननुंप्रमाणछे केचारएनीजेभाषानेनुं भाषाबोलवी. एकसत्यानेअसत्यामृषा ... स्वरूपबुद्धिवानपुरुषेएक बरोबरतपासीनेबेप्रकारनीबोलवानीभाषानेविषेविनयशीखवो. नेबीजीबेप्रकारनीभाषातोबोलवीजनहीं. तेमांपणएकअसत्यामृषा अनेसत्यातेबंनेबोलवायोग्यछे. तेपाछिनिर्दयपणुंनेअकठोरपणुंनेविचारीनेबोलवापणुं अनेसंदेहरहीतबोलः

भा० १०८

पापपूर्वीर्णनेबुद्धिवानसाधुबोले. सत्पणानेपीडानुंकारणहोयतो तेवुंसत्यपणनबोलवुं. तेकयुंछेकेपरनेपीडाकरनारएवुंसत्य वचनपणनबोलवुं. लोकमांपणसंभळायछे के लेकारनासत्यभाषणथी कौशिकऋषिनरकेगया अनेजेमन्यप्राणीनेविषे परनेपीडा थायएवुंजणायतोतेजगाए मौनपणेरहेवुं. अथवा अन्यप्रकारे सत्युत्तरकरवो अनेजेवचनबोलवामांकडवुं होयपरंतुपरिणामेहि-तकारकहोयतोकषायनो परित्यागकरवानेअर्थे उपदेशादिकनीपेठेकहेवुंतेयुक्तछे, तेउपरआर्षवचननुंप्रमाणछेके परपुरुषरोष पामोअथवातोषपामो तोपण हितकारकभाषाबोलवी. केमकेतेभाषाआत्मानेगुणकरनारीछेमाटे वळीशास्त्रमांकह्युंछेकेहितकारी श्रवणकरवाथीजोपणसर्वने एकांतपणेधर्मस्वरूपथतोनथी. तोपण अनुग्रहबुद्धिवडे धर्मकहेनारनेतोएकांतपणे श्रेयथायजछे ए मवाराग, द्वेष, मोह, मत्सर, अहंकार, कलह, हास्य, तेनुंप्रकाशकएवुं पणवचननबोलवुं. तेकयुंछेकेविकथानो, विनोदना-थानो, अंतरभाषानो. अनेअवाच्यभाषानो, तथाजेजेनेअनिष्टछे एवीभाषानो, अस्पष्टभाषानोत्यागकरवो. तेमांअवाच्यभाषा एटलेजेमांगकारमकारइत्यादिक अपशब्दोआवेछे तेभाषाजाणवी. एप्रकारेभाषासमीतिकही. ॥ पिंडविशुद्धिआदिकग्रंथमां कहेलाभिक्षाग्रहणनेविषे ४२ दोषनेधारणकरनाराआधाकर्मएवगादोष तेणेकरीनेनदोषपामेलुंअनेनवकोटीविशुद्धएवुंअनशनआदि, आहारनेपात्रऔधिकअनेऔपग्रहिक एवंप्रकारनाउपधीने अनेदोषरहितएवानिवासनेमुनिएग्रहणकरवा तेएषणासमीतिकही-ए. तेकयुंछेकेएषणात्रणप्रकारनी गवेषणा, ग्रहणेषणाअनेपरीभोगैषणा. अनेआहार, उपधीअनेशय्यानेविषे आत्रणए षणानीविशुद्धिकरवी. तेमांपेहेलीगवेषणानेविषेउद्गम, उत्पादनएवादोषनोअप्रमत्तपणानेविषेत्यागकरवो. एटलेआधाकर्मदोष, धात्रीदोषइत्यादिक दोषनोत्यागकरवो. बीजीग्रहणेषणानेविषे शंकीतादिकदोषनोत्यागकरवो. अनेपरीभोगैषणानेविषे संयोजनादिदोषनुंपांचप्रकारेदोषपणुं तेनोत्यागकरवो. अनेअंगारअनेधूमएवेनुं मोहनीयमां अंतरगतपणुंछे. माटेएकपणुं

भा० न. ३

वधुछे. मननाकरनांधारंपनिकहीए. नरकांटीविशुद्धि भावकारेछे. तेशरनारमाथो दुवेकाळनिर्युक्तिकहीछे तेनो अर्थ. मनकोटीनेविषे परेतीसरवगम कोटीथाछे. एटलेअविशोधनकरनारीकोटीओछे. तेथंगनवित्रण कोटीओ विशुद्धकरनारीछे एवरीतेनवकोटीजाणवी. तेनवकांटीनेकोइगमवडे गोंछे,कोइंयरछेसेछे एवांभेदवडेनवनेगणीएत्यारे ९×२=१८ भेदथया अथवातेनवमिथ्यादृष्टिआग्रनीपालनारीमेवेनो. कोइगणसम्यकदृष्टिविरतपुनिपण अनाभोगादिकथी एटलेअज्ञानपणाथी अनेकोइपणसम्यकदृष्टि नविरतपणे एटलेमिथ्यातभावनपनेओविरती एवणवडेनवनेगणीएतो तेनारउभेदथाय. आनगाए अनेकोइपणसम्यकदृष्टि नविरतपणे एटलेमिथ्यातभावनपनेओविरती एवण्वडेनवनेगणीए त्यारे७४थाय.तेनननेकदाचित् पुष्टभालंबनवडेदन रागद्वेषनुरागपीगथा. अनेन्यारेरागीएकारेते नेवडे८१नेगणीए त्यारे२४थाय. तेमकेकोइपुरुषने विपकलादि मकारनाशानिभादिक भंगाकरानेअर्थेनेरनकरीए त्यारेनवनेदशवडेगणीएत्यारे नेतुंथाय. तेमकेकोइपुरुषने विषकलादि पंदरेत्यारनकरीशनि आदिकार्यनेत्राळीशुं एमविचारीनेदणदणोतेरत्यादिजाणवुं. अत्यावान्यगेनारिय निमित्तकरेथाय. एवकारेनदाचितान्यपणाथी चारित्रनेविषदोषनोत्रण विशेषीज्ञाननिमित्त नहोय. तेमकेकनमपुरुषने विषकलादिवडे हेत्वारणकरी ज्ञानिभादिर्णंनाळीशुं, नानाथकारनांशास्त्रभणीशुं अथवादर्शनेनेस्थिरकरनारशास्त्रवडे दर्शनेनेनिर्मळकरीशुं. एमविचारीनेदणेत्यारे एमकारेज्ञाननुंभाजन थशुंकेदेशाथीज्ञाननिमित्त अनेदर्शननुंभाजनपणु कहेवानीइच्छाथीदर्शननिमित्तपणहोय. एमकारेविचारतुं एमाटनेपुनेज्ञान,दर्शन, चारित्रपणावडे गणीएत्यारे २७०. कोटीओथाय पिंडनिर्युक्तिनी वृत्तिमांतोएमकह्युंछेके भाषाकर्मिकरवरूपनी दायावगभाषाकर्मिकदीधापछे न थायनेतांउपरकरेछेके केटलाकआचार्योतो पुष्पोकारणनेतेमुंझ्यार एटलेआहारनुंफळदुष्पसाधुनाकायमांआवधेणमधारीवाचेत्या वसनोपणत्यागकरेछे. केटलाकआचार्य एटलेअर्णाताथी भाषाने वसनीछायनेपणभाषाकर्मिकी नाणीनेतेनोत्यागकरेछे. परंतुतेयुक्तनथी. जेमाटेफळपणतेसाधुनं

आ० १०६

यंथीछेंतेवृक्ष आरोपणकर्योत्यारेआधाकर्मिकवृक्ष संबंधीछायाबीजाभंगमां अन्यनेअर्थेथायछे. पणसाधुनेअर्थेजतेछायानथीथती. माटेतेवृक्षनीछायामां बेसवुंसाधुनेकल्पेछे. आप्रकारनोभावार्थछेकेसाधुनेअर्थे वावेलुंकेव्ळमपुत्तनुंवृक्ष तेनेज्यारेफळनिष्पन्नथाय त्यारेतेमांसाधुनी संज्ञाछेतेनोत्यागकरीने आत्मसत्तानोसंबंधकरीनेतेफळनेनाखे तोतेफळपणसाधुनेकल्पे तोछायाकल्पेतेमांशी नवाइ ! तेछायासर्वथाप्रकारेसाधुसत्ता संबंधरहीतथीकहेवाती. केमकेसाधुनेछायाथायतेवानिमित्तेतरुआरोपणकर्युंनथी. वळीतेछायाकेवळवृक्ष मात्रनिमित्तनथी केमकेसूर्यनिमित्तवाळीपणछे. छायापडखेनीमर्वजगाएतडकावडे वींटळानियमीतकरेला देशमांरहेलीश्यामपुद्गलरूप आतपनाअभावरूपछे एमकारनीतेछायासूर्यनाज अन्वयअनेव्यतिरेकपणाने अनुसरेछेपणवृक्षने अनुसरतीनथी. वृक्षतोकेवळतेनुंअनिमित्तछे एछायावडेजकोइसाधुदोषपामतानथी. छायापुद्गळनुंवृक्षपुद्गळथकीभिन्नपणु छेमाटेवृक्षजआधाकर्मिकहोयपण तेआधाकर्मिकरणएतवृक्षनीतोचरहेलाकहलाक प्रदेशोपणपत्ताछेएमजाणवुं.छायानु आधाकर्मिकरूपणुंकहे छतेप्रातःकाळेनेसंध्याकाळजे अतिशयलांबीपसरेलीछाया तेनीमांथसंचराकुंभवंएवुंपणगाममवंधीनिरासादिक पणदूषितथाय. एवातआगममांपणनथी. माटेनेआधाकर्मिकीछायानकहेवाय एमांपरं सर्वेकसूत्रमानेसूत्रनीवृत्तिमाछे आजगा एऔधिकउपधीजीनकल्पीकादिकनेजयुक्तछे. तेकहुंछेकेजेथीसाधुनेउपक्रियाथायछेतेनेउपकरणकहेछे तेउपकरणकहेताउपधी वेप्रकारनोछे १.औधिकअने २ औपग्रहीक एमबेभेदछे तेमांओघएटलेप्रवाहसामान्यपणेसदाथायछे कहेतापरपराप्रवाहकरीने साधुएग्रहणकरायछेतेऔधिककहीए. अनेउपकहेतासमीपेसंयमनीपुष्टिनेअर्थेजवस्तुनुंग्रहणकरवुं तेउपग्रहजाणवुं तेतउपग्रहछेप्र योजनजेनुंतेऔपग्रहीककहीए. एटलेकारणपडेगतेसंयममात्रने अर्थेजेग्रहणथायछेतेऔपग्रहीकजाणवुं पणजेनित्यग्रहायतेनजाणवुं तेमांऔधिकउपधीबेप्रकारनोछे. १.गणनाआश्रीअने२.प्रमाणआश्री.तेमांगणनाआश्रीतेएक,बे, त्रणआदिकछे तथाप्रमाणआ

[illegible] छे. तेमां भी [illegible] नी [illegible]
श्री [illegible] छे, ४. पाप [illegible]
[illegible] तेना १. पाप, २. पापबंध [illegible], ३. [illegible], ५ [illegible]
[illegible], ६ [illegible] करनारो [illegible] करनारो.
[illegible], ७ [illegible] करनारो [illegible] उदाहरण [illegible]
[illegible] १. पाणीपात्र अने २. [illegible], तेमां [illegible]
[illegible] करनारो [illegible] छे. २.
[illegible] अने [illegible] द्वीक, त्रीक, चतुष्क, पंचक, [illegible], दशक, ए-
[illegible] अने २ [illegible] द्वीक [illegible] करनारो छे. अने
[illegible] उदाहरण [illegible] करनारो छे. अने
[illegible] त्रिविध-
[illegible] तथा पूर्वोक्त द्विविध, त्रिविध, चतुर्विध अने पंच-
[illegible] दशविध, एकादशविध, द्वादशविध [illegible] तेमां
[illegible] करनारो [illegible] जाणवो. [illegible]
विध, एकादशविध, द्वादशविध, [illegible] जाणवो. [illegible]
[illegible] श्री [illegible] प्रतिपादन कर्यो छे. [illegible]

नीकळनातिर्थंकरोने एकउपधीहोयछे, (देवदूष्यरुप) ने तेथकीपरतोजीवतासूधी तिर्थंकरोनिरुपधीकहोयछे. सातप्रकारना पतद्ग्रहमांरजोहरण अनेमुखपातिकाएमळीने नवप्रकारनोउपधीप्रत्येकबुद्धनेहोयछे. प्रत्येकबुद्धतोदेवताए आपेलालिंगसहीत होयछेअथवालिंगरहीतपणहोयछे आजगाएमीनकल्पीकने बारप्रकारनोउत्कृष्ट अनेजघन्यपणेबेप्रकारनोउपधीछे तेश्रीविशे-षेप्रकारनाछे. द्विक, त्रीक, चतुष्क, पंचक, नव, दश, एकादश, द्वादशएआठप्रकारना विकल्पजीनकल्पनेविषे औधिकना कह्याछे. इहांकेटलाकजीनकल्पीने रजोहरणअनेमुखवस्त्रिका एबेप्रकारनोउपधीछे. जेअन्यनेकल्पनीसंघाथेगणीए त्यारेत्रणप्र-कारकहेवाय. नेबेकल्पसंघाथेगणीए त्यारेचारप्रकारकहेवाय. नेत्रणकल्पेकरीनेकहीए त्यारेपांचप्रकारेकहेवाय नेकेटलांकने मुखवस्त्रीकानेरजोहरण एबेअनेसातप्रकारना पात्रनिर्योगसहीतकरीए त्यारेनवप्रकारेथाय तेजकल्पनीसंघाथेकरीए त्यारेदश प्रकारेथाय. बेकल्पनीसंघाथेकरीएत्यारे ११ प्रकारेथायनेत्रणकल्पनीसंघाथेकरीए त्यारेबारप्रकारेथाय अनेसंगतिनेऔधिक उपधी २५ प्रकारनांछे. तेकह्याछेकेजीन १२ प्रकारनाछे. नेस्थवीर १४ रुपेछेनेआर्यानुं २५ प्रकारपणुंछे. एथकीआगळ सर्वेउपग्रहउपधीजाणवो. औधिकउपधीजेनित्यग्रहणथाय तेअनेजेकारणपणुंप्राप्तथयेसते संयमनीरक्षाकरवाने अर्थेग्रहणथाय तेऔपग्रहीककहीए. तेअनेकप्रकारनोछे. जेमशय्या, संस्तारक, उत्तरपट्ट, दंडक, अनेउच्चार, प्रस्रवण, खेल, मल्लक, नेमूत्र नखरदनीका, इत्यादिकजाणवां नेगुरुयोग्यछे पांचप्रकारेपुस्तकादिकपणऔपग्रहीकछे, परंतुमुख्यपद्धत्तिवडेतेनथीकल्पतुं सं-यमनीविराधनादिदोषनी प्राप्तिथायछेमाटे अनेद्वितीयपदनेविषेअनुज्ञा (आज्ञा) छे. ज्ञाननीवृद्धिआदिककारणथी. आज्ञा

करेछे. इत्यादिक अनेकप्रकारनो उपधिग्रहण धारणादि विधिछे. अनेरी, पत्र, पंडक आदिनासंबंधी रहीत समीग्रहणादि विधिछे. तेवीनानीपडिलेहणनाकरनो विशेषमर्यादथी थीकल्पमाप्तनुं अवगाहनकरवुं, एटलेंआपीविवेकजाणवो. एमकार पूर्वकआमीथीनीकरी. पूर्वकहेलोजेऔधिक, रजोहरणमुखवस्त्रिकादि अनेऔपग्रहिकसंथारोदंडकआदि. एविनावीजुंपण जेकांइप्रयोजनविशेषथी मागवंजेकाष्ठ, काष्टआदिनेसर्वनेइ प्रतिलेखनकरी इत्यादिकनोग्रहणकरवुं तेमनजगृहस्थआदिकना पूरवुं. एटलेंतेवस्तुनेंसंयोगाभ्यकमकारे रजोहरणादिकहेवानथी प्रमार्जनकरीनेग्रहणकरवी. एम अन्यथानकरवी. कंपके पनक, कुंथु, किडिकादिकनीहिंसाथाय तेथीसंयमनीविराधनाथाय, कदाचितवींछीप्रमुखनुंप्रदनथवाथी आत्मविराधनादिक दोषनोसंभवछे. एमकार आदाननिक्षेपणसमितिकहीछे. तेउपरमार्गवचनछेके औधिकअनेंऔपग्रहीक बेप्रकारनुंभाटकमुनिग्रहण करतोनीकळनो आयकारनाविधिमेंवांछे. चक्षुएकरीपडीलेहनकरी प्रमार्जनकरीग्रहणकरे, मुकं, एरीतकारेसमीतीवाळोमुनि निरंतरथाय. वळीएकुरीनापत्रवीजथापुंजथी जेयतनानेंप्रमार्जेछे तेनेंभीपवंविवेकयानथी होतीनथ! इत्यादिकप्रकारे जाणवुं एम गच्छनावासपन्यातकहुंछे. अनिर्णयकोमळपीछीप्रमार्जनीवडे पृथ्विआदिकनेंप्रमार्जनकरे. कोंतीसूक्ष्म, बादर, एवाजीवनो जमारवाधपणविराधनानथाय. महाव्रतनीवस्तुनिक्षेपनोतेमप्रकारेकरवी. जेथीवायुकायप्रमुखजीवनो क्षमादवनाविराधनान थाय. प्रमार्जनाप्रनोमडिलेहना एवेनुंजीवदयानेअर्थेज करवापणुंछेपाटेनेंपेजमाए माधुएअतिअप्रमादपणेकरवुं. तेकहुंछे जेव- जिनप्रवचनेकरमोक्षरखवानांकरंछे तथादेशनीवाचोकरेछे तथाप्रतपच्चखाणभांगेछे गणापोतेवांचेछे, संथारेछे, एटलेंगाळे, भणावेछेतेपृथ्वि, अप्, तेज, वायु, वनस्पति, त्रस, एछप्रकारनाजीवोनो विराधकथायछे एमजाणीशरीरनुंप्रमार्ज- नअनेप्रति लेखनादिकनेविषे अप्रमादपणे सावधानपणेवरतवुं. एमकारेपांचमीआदाननिक्षेपसमीतीसंपूर्णथइ. हवे-

[illegible], [illegible], [illegible] इत्यादि आहार, वस्त्र, पात्र,
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] अनेरमा-
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] एक [illegible]
[illegible]
[illegible] द्रव्यथी
[illegible] भावथकी
[illegible] त्यागकरवो अनेषम, प्राण अने [illegible] त्यागकरवो, एम
[illegible]
[illegible], १ [illegible]
[illegible]

करीए, एम्पवहारपक्षीकहेवायछे, नेतत्वथीनोनेअसत्यछे, केमकेनेजेधुंचिंतवदुंछे नेवा अर्थनो अयोगछेमाटे. नेमगाए मानेवनो पटछेनेत्मावोइत्यादिकहे मतेचिंतनकरनाराने असत्यामृषाभाषाए,एवाव्यवहारवडेज असत्यामृषाकहेवायछे,अन्यथातोछेज-
रवानीबुद्धिपूर्वकछे माटेअसत्यनेविषेज अंतरभावथायछे, नेनेथी अन्यनोसत्यनेविषे अंतरभावथायछे, तेआनकारनामननुंगो-
पनकरवुंनेगुप्तीकहीए, तेगुप्तीत्रणप्रकारनीछे, आर्त, रौद्रएबाध्याननेअनुसरनीकल्पनाकरवी इत्यादिकल्पनामाळथीरहीतपण-
पमभेदथयो, नेशास्त्रनेअनुसरती, परलोकमांहितथायएवी, धर्मध्याननेअनुसरती, माध्यस्थपरीणतीनेबीजोभेदथयो, अनेकु-
शळनेअकुशळएवीमननीवृत्तिने रोकवीतेनिरोधावस्थामां थवोएवीआत्मानीआरामताछे, एत्रीजोभेदथयो, तेकहुंछे केकल्पना
माळथीरहीतनेसमपणानेविषेरहेवुं, २ नेआत्माराम, ३ एवुंजेमननेमनोगुप्तीकहीए, १ हवे आर्तध्यान च्यारप्रकारनुंछे.
अनिष्ट शब्दादिकनो सर्वकाळे अत्यंत वियोगथवानी चिंता १ ए प्रथम भेद जाणवो एमकारेरोगादिवेदनानो वियोगक-
रवोएवीचिंता २ अनेइष्टएवाशब्दादिकनुं सर्वकाळेअत्यंतसंयोगनोअध्यवसायकरवो, ३ नेदेवभोगनीऋद्धिने राज्यादिकनुं
निदानकरवुंएवोअध्यवसाय, ४ हवेरौद्रध्यानपणचारप्रकारनुंछे, १ हिंसानुबंधी. २ मृषानुबंधी, ३ स्तेयानुबंधी, अने ४
विषयसंरक्षणअनुबंधी ४ तेमां आपणोमतिकोपादिकवडे दुष्टमत्येवधकरवो. अंकनकरवुंएटलेडामदेवोइत्यादि. अनेदेवभंगक-
रवोइत्यादिजेचिंता १ अनेबीजोभेद, दुष्टएवाजेमनुष्यरूपो तेनेविषेगढ़भूतएवोनेमधानकरवो इत्यादिआणिनुंप्रणीधानकरवुंने
१ पारकापनहरवानीचिंताकरवीते, अनेशब्दादिविषयनाधनने अथवारक्षाकरवाने अतिविश्वासकरवीने उपघातकरवो,
एवेपकरनारछे, एवीबुद्धिवडेदुर्ध्यानथायछेते, ४ आर्तरौद्रध्याननोपरीत्यागकर अथवनीमनोगुप्तिनेविषे आपणमनोगुप्तिनुं
लक्षणमूचवुंछे तेआमकारेछे एगाथानो अर्थ संरंभसमारंभआरंभतेपनसंबंधीछे,अनेतेजुंधारवुंछे आचरणथायले

मरसण, उच्चार, नेश्लेष्म अने रजनथानमलोमळइत्यादिकपापरीष्ठापनकरवानेयोग्य जे असन, पान, इत्यादि आहार, वस्त्र, पात्र, इत्यादिकनेदरीत,बीज,पनक,कंथु, किटकादिरहीतएवा अनेअचित्तएवायंडीलमांसाधुएयतनाथीपरिष्ठापनकरतुंएटलेत्यागकरवुं. तेयतनाआमकारेजाणवी. मूत्रअच्चादिकनेथोडुंथोडुंजुदाजुदामदेशमांत्यागकरवुं. जेमनेनोमवाहनथायनेतत्काळसुकाइजायतेवी रीतेमनुंउत्सर्जनकरवुअनेअशनादिकनुंतोभस्मादिकनीसंघाथेमर्दनकरीनेत्यागकरवुं. जेथीकिटकादिकनोविघयनथाय. अनेवस्रा-दिकनुंतोदीणुंदीणुखंडकरीजेमएइत्यादिकनाध्यापारमांनआवेएवीरीतेदोपरहीतपरठववुं उच्चारादिथंडीलनागुणआमकारेआ-गमघांकह्याछे. अनापातएटलेज्यांबीजानुंआववुंजवुंनथीतथादेखवुंनथीतथाज्यांउपघातथायएवुंनथीएटलेउड्डाहनथायएवास्थान मांतथासमानएवास्थानमांतथातृणादिकवडेनढांकेलास्थानमांज्यांविछीमपुलनहमे, किटीकादिकनपडेतथाआचिरकाळकरेला एवाअग्निआदिकवडेमासुककरेलाएवास्थानमां उच्चारादिकनोत्यागकरवो. तेऋतुबद्धकाळमांजाणवुं. बीजाकालमांमिश्रजाणवुं. अने स्थंडीलनुंस्थानविस्तीर्णपणं जघन्यथी एक हाथप्रमाणेअने दूरअवगाढहोय, दूरहेठळउतरीअचित्तएवुंहोय,अग्निआदि-कनातापवडेजघन्यपणे चारआंगळउंडुंप्रासुकहोय तेपणअनासन्नहोय एटलेघणुंदूरहोयने आसन्नपणुंपणबेमकारनुंछे. द्रव्यथी तथाभावथी. तेमांद्रव्यथीमर्यादावणुं बीकोइमोटीबाधेरहेलो हवेलीआगळपरीष्ठापननकरवुं नेभावथीआसन्नपणुंतो अतिवेगथी जइनेतेनोत्यागनकरवो, छिद्रवर्जीतएवास्थानमां त्यागकरवोअनेत्रस, प्राणअनेबीजतेणेरहीत एवास्थानमांत्यागकरवो, एम कारनाविधिवडेपरीष्ठापनकरेसते परीष्ठापनीकानामे समीतीपांचमीकही, हवेत्रणगुप्तीओकहेछे. तेमांमनोगुप्तीतेमन, सत्या-दिभेदथीचारप्रकारनुंछे. तेकहुंछेप्रज्ञापनासूत्रमां, १ सद्भूतवस्तुनुंचिंतनकरवामांतत्परएवुजेछेतेसत्यकहीए, तेनाथीबीजुंतेअस-त्यकहीए. अने चारदीप्रमुखवस्तुवडे मिश्रहोयअनेघणा आमोघाअर्थनांसहोयतो आअधोकथनछे एमजेचिंतववुं तेअसत्यामृषा

करीए, एव्यवहारथकीकहेवायछे, जेतत्वथीतोजेअगलपणुं, केमकेतेजेकुंचिंतवकुंछे तेवा अर्थनोअणोगजेमाटे, जेजगतप्रमाणेवर्तनो घटछेजेन्यायोइत्यादिकरे मनेचिंतवकरनाराने असत्यामृषा अःपाथए, एवणव्यवहारवडेज असत्यामृषाकहेवायछे, अन्यथातोछत- रवानीबुद्धिपूर्वकछे माटेअसत्यनेविषेज अंतरभावथायछे, जेनेथी भन्यनोमत्यनेविषे अंतरभावथायछे, तेआमकारनामननुंगो- पनकरबुंनेगुप्तीकरीए, तेगुप्ती त्रणप्रकारनीछे, आर्त, रौद्रएवाध्याननेअनुसरनीकल्पनाकरवी इत्यादिकल्पनाजाळथीरहीतपण- यपभेदथयो, जेशास्त्रनेअनुसरती, परलोकसाधिकथायएवी, धर्मध्यानने अनुसरती, माध्यस्थपरीणतीनेवीजोभेदथयो, अनेकु- शळने अकुशळएवीमननीवृत्तिने रोकवीतेनिरोधावस्थामां थवीएवी आत्मानी आराधताछे, एत्रीजोभेदथयो, तेकयुंछेकेकल्पना जाळथीरहीतनेसमपणानेविषेरहेलुं, २ नेआत्माराम, ३ एवुंजेमनतेमनोगुप्तीकरीए, १ इहां आर्तध्यान च्यारप्रकारनुंछे. अनिष्ट शब्दादिकनो सर्वकाळे अत्यंत वियोगथवानी चिंता १ ए प्रथम भेद जाणवो एमकारेरोगादिवेदनानो वियोगक- रवोएवीचिंता २. अनेइष्टएवाशब्दादिकनुं सर्वकाळे अत्यंतसंयोगनोअध्यवसायकरवो, ३ नेदिव्यभोगनीऋद्धिने राज्यादिकनुं निदानकरवुंएवोअध्यवसाय, ४ एवेरौद्रध्यानपणच्यारप्रकारनुंछे, १. हिंसानुबंधी. २ मृषानुबंधी, ३ स्तेयानुबंधी, अने ४ विषयसंरक्षणअनुबंधी ४ तेमांआपणो मानेक्रोधादिकवडे वधप्रत्येचेष्टाकरवो. अंकनकरवुंएटलेडामदेवोइत्यादि. अनेदेशभंगक- रवोइत्यादिनेचिंता १. अनेबीजोभेद, शुभएवानेमध्यपुरुषो तेनेविषेगदूभूतएवोजेमघातकरवो इत्यादिश्राणिनुंप्रणीधानकरवुंते १ पारकाधनहरवानीचिंताकरवीते, अनेशब्दादिविषयसाधवाने अधवारसाकरवाने अतिविश्वासकरावीने उपघातकरवो, एप्रेपकरनारते, एवीबुद्धिवडेदुर्ध्यानथायछेते, ४ आर्तरौद्रध्याननोपरीत्यागरुप प्रथमनीमनोगुप्तिनेविषे आपणमनोगुप्तिनुं प्रमाणभूतपणुंछे तेआमकारेछे एणायानो अर्थ संरंभकेतांसंकल्पतेपनसंबंधीछे, अनेतेदुःखकरतुंके आवरणथायछे, एनकारेजेकहेवुं

[illegible] अनुभवीने [illegible] आरंभे [illegible]
[illegible] अनुसरवीजे [illegible], तेधर्मध्यान
[illegible] आज्ञाविचय [illegible] १. रागद्वेष
[illegible] २ [illegible], स्थिति, प्रदेश, अनुभाग
[illegible] ३ [illegible] ऊर्ध्वलोक, [illegible]
[illegible] ४ [illegible] शुक्लध्यानने अनुसरवीजे
[illegible] द्रव्यादिक [illegible], स्थिति,
[illegible] शुक्लध्यान [illegible]
[illegible] अविचारछे. [illegible]
[illegible] उत्पाद [illegible]
[illegible]
[illegible] नारकादिनीछे. तेनुं
[illegible] प्रवृत्ति [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible],
[illegible]

गमीशीमांथेनिवर्त्तवादि गुणगुणवाणीनीमगुप्ति कराय.एमकायवचन गुप्तीकही. ७ कायगुप्तिपणबेप्रकारनीछे. १ कायचेष्टा-
नीनिवृत्तिकरवीते. जेमोभावमवावमांछे केविविधर्दकायचेष्टानोनियम करवोते.२. जेपइंलीकायचेष्टाछेतेदेव,मनुष्यअनेतिर्यंच
मांना करनारछिअनि आगरागनअनेरतन इत्यादिभावमांकहीनि स्थणाउक्तानीउपसर्ग अनेपरीषहमेनो सद्भावअपेक्षाते
वहिवगणीमने नायमांअनेदमोरहतो अगवाबैठेलोअथवा पुकेलो,त्यांवाकर्णाछि देहवनेपणनानाप्रणे कायोत्सर्गवदेअथवा
अत्यमवारिवाणनी जेनिकळवादिमांग नियमनेकरनारानेतदंघा चेष्टानोपरीहार करवोते. १. जेदीनीनोशयनगोविषे, वेसवाने
विषे,दृकवानेविषे, भादानने(रंव,गदनवोविषे,स्थाननेविषेत्रादीभोना व्यापारमेवेविषे स्वच्छंदवृत्तिवर्जन कायचेष्टानोपरीहा-
रकरवोतेकायगुप्ति नियमवडीए. २. जेगोजवनकर्दुनेगविषे विवेकजाणवुं,वणदिवसने विवेनजाणवुं. साधोग्लान(रोगी) अने
मार्गेनोथाकेलोअने वृद्धइत्यादिकनेवचनोने जेपालणवर्ग्यावहोरनो त्यागकरीदृकनेवृद्धीने प्रमाणयुक्तवसतीने विषेमुनिनमोह
प्रमार्जनकरीपंमार्ग, पादलोपवठोकी जेउवरवाथर्गनेनेप्रमार्जक इत्यनतीपादेमहीमनारीरने दुष्प्रमार्जितकारणोहरणपदेममा-
र्जनकरीअनुकारेण संथारादिकंअनेवहन कर्मांतिपालनवयार महीनणानाविकयुक्तजेणेने कर्ष्टछेदावारापनुं वधीकुंभेणे
र्जनकीनयमारेवाछे दीपवनेणे,कुकडीनी देहमाकाश्यातणागुंछे तेवानेणे अथवामर्गार्जन करेलीपृथ्वीतळमां थापनकर्पांछे
धारणंनेणदेवाभने पणीसंरादिणणार्दछे अगवानार्दवाणमंकोच दपारांछनयममाणे प्रमार्जनकरीछांदनवाक जेणचलोअनेउ
द्वार्तकाउनेविणे दृष्वतीवागीदपाजेन वर्दुछेमारीरनेणअन उल्लंघनहिमनथीनिद्रा जेनपूर्वतेमृण,प्रमाण युक्तो वसतीम-
जानपोणापृथ्विनो प्रदेश,प्रमार्जनमाजन प्रमाणायुक्तेउपरिहेवानुं गायछेहावकळअवकाश पुरकतेनहोगछे.तथा बेसपुंनेनेम-
देदंनेविणकरवाने इच्छेतुंहोगतोनेपवडे जोइनेनेरजोहरणवडे प्रमार्जनपदारोनिणदृगाने (भासनने) पागरीवेसेअने बेठेलतेपण

लांबादुंकापणुंतेज प्रकारेंकरेकेचर्पाकाळमां पीठादिकनेविषेबेसवाने कहेलीसमाचारीप्रमाणे बेसेअनेदंडादिकने विषेनिक्षेपने आदानएटलेमूकवुंने लेवुंतेपणजोइने,प्रमार्जीने करवुंअनेगमनपण आवश्यकप्रयोजनवाळा साधुनेचारहाथप्रमाणे आगलाप्रदेशनेजोइनेथेसेअने त्रस,स्थावर,एवाप्राणीनी रक्षाकरतोत्वरारहित पगनुंथापनकरतासाधुने प्रशस्तछेअनेस्थानपण उभुंरहेवा रुपछेएसणजेनुंएवुंछे अनेअवष्टंभादिक एटलेओठींगणतेपण भींतप्रमुखनेजोइ प्रमार्जनकरीनेतेप्रदेशनुं ओठींगणकरवुं अनेइंद्रीओनुंपोतपोताना विषयप्रत्येव्यापारण पणरागद्वेषादिपाप हेतुवाळुनथायतेमकरवुं युक्तछे.तेयोगशास्त्रमां कह्युंछेकेउपसर्गनो प्रसंगप्राप्तथयेसते पणकायोत्सर्गवाळा मुनीएशरीरनुं स्थिरपणुंकरवुंते कायगुप्तीकहीछे अनेशयन,आसन, निक्षेप,आदानअने गमनतेनेविषेजे चेष्टानोनिषेधतेवीजी कायगुप्तीकहीछे. एप्रकारे कायगुप्तीजाणवी. अहींआंसमीतीओ प्रविचाररुपछेअनेगुप्तीओतोप्रविचार अनेअप्रविचाररुपछेअने प्रविचारतोकायीक,वाचीक, व्यापाररुपछे. कुशळअनेनिर्दोषइत्यादि गुणेसहीत वाणीनुंउच्चारण करवुंतेसमीतकहीएने गुप्तपणकहीए.अने गुप्तीनुंप्रविचाररुपपणे पणअभिधानछे.माटेसमीत तोनियमाएगुप्तछेअनेगुप्ततोसमीत पणानेविषेनियमाए विकल्पवाळोछे. जेकायवाणीनेरोकीने शुभमननीउदीरणाकरेछे तेएकाग्रमनवाळो पुरुषनेविषेहोयछे. तेगुप्तहोयपणसमीत नहोयमाटेसमीतनुं प्रविचाररुपपणुंछे. अनेजेकायवाणीने रुडेप्रकारेजोडेछेते गुप्तकहीए अनेसमीतपणकहीए. तेकल्पभाष्यमांकह्युंछे केसमीतनिश्चयथीगुप्तछे. अनेगुप्त,समीतपणाने विषेधवानोछे. कुशळपुरुषवाणीने उदीरणाकरतोसतो जेवाक्गुप्तपणछे अनेसमीतपणछे. १. जेवळीकाय,वाक्गुप्तछे तेनिरुद्धकर्युंछेकुशळ जेणेएवुंमनने उदीरण करेछेअनेएकाग्रमनं थइयेसेछे.तेनिश्चेगुप्तकहीए. पणसमीतनकहीए. २. गुप्तीनेविषेसमीतीनो अंतर्भावपणथायछे. तेपणतेजग्रंथमांकह्युंछेकेवाचीक समीतीवीजी,अने श्रीजीमानसीवी समीतीपणहोय अनेवाकीनीकायीक समीतीओजाणवी.तेनेविषेमन,

अविरुद्धछेएनीव्याख्या आमकरनीछेके वाचीकसमीतीथीओ वाकगुप्तीपाळवी. उपरिनिश्रेषाभाषासमीत भाषछेतोपरित्येम
भाषानोअसमीत मलनकर्मबंध रोकायछेतेमवाकगुप्ती सर्वेपणकर्मबंधनेरोकेछे. एमकारंभाषासमीती अनेवाकगुप्तीएनेनुंएक
पणुंछे. अनेश्रीजीएषणानामे समीतीतेमानसिकहेतो मानसिकउपयोगथी थयेलीछे. एनोस्पष्टार्थएछेके ज्यारेसाधु, एषणा
समीतिथायछेत्यारे श्रोत्रादिइंद्रियछे ग्राहकथायछतेनुं श्रोत्रादिकनेविषेउत्पन्न थयेलाशब्दादिकने विषेउपयोगी थायछेमाटे
एनेमनोगुप्तीनाभेदरूपपणुंथायछेतेथाकीनी समीतीओईर्या,आदान, निक्षेप,उच्चारआदि परीष्ठापनीकाएनामनी कायचेष्टा-
थीनिष्पन्नथयेलीछे माटेएत्रणनुंपण कायगुप्तीनीसाथेएकपणुंछे. मानसिकउपयोग सर्वप्रवृत्तिमांहोयछेमाटे तेनेअविरुद्धछे,पांच
समीतीनेविषेपणछे एमोमाटेजाणवो. एजकारणमाटेचेष्टासहीत जेमनोगुप्तितेनेसर्व समीतीनुंमनोगुप्ती साथेएकपणुंमानवुं.ए
आठेप्रवचनमाता एमकारेकहीछे. एथीद्वादशांगीरूपसकळ प्रवचनउत्पन्नथायछे. माटेकहुंछेकेप्रवचननी माताछेद्वादशां-
गनेउत्पन्नकरेछे पुत्रादिकनुंशरीरछे. तेनेउत्पन्नकरवाथी, पाळवाथी,संशोधन करवाथी,साधुनीमाताओ आठकहीछे. एमां
विषेसकलप्रवचन अंतर्भावथायछे देखाडवाआगळकहेछे केजीनजीनेनमस्कारकरवुं तेद्वादशांगरूपप्रवचनछे. तेकहेछेकेइर्यासमीतीने
विषेप्राणातीपात विरमणव्रतआवेछे. अनेतेवीरीतेजेणीजांपतअेमांजबीपनो अंतर्भावथायछेमाटे तेमजीविषेतेनघातकुंतथी
तेथकुंछेकेप्रथमने विषेमव्रतनीछेनेबीजाने विषेसर्वद्रव्यछे.बाकीना तेमहामतछे तेतेना देशरूपजाणवां.
एमकारेअर्थथीसर्वपदुंप्रवचननुंदर्शावानेछे. भाषासमीतीतोसावद्य वचननोपरीहारकरवाथी निरवद्यवचननुं भाषणरूप
छे.तथावचनपर्याय समग्रपणआसीमछे एटलेतेथीद्वादशांगद्वादशांग नथी.एमएषणासमीती आदिकनेविषेपण पोतानीबुद्धिथी
भावनाकरवीअथवा सर्वपरीषणपचारिकमछे. तेयोगशास्त्रमांकहुंछे केसर्वप्रयोसावद्ययोगनो त्यागकरवोतेचारित्र कहुंछे.

[illegible] अपवादावगमीती अनेमनकुसीकेवेविघ [illegible] तेजमन्यकृनारिव [illegible] अनुरागी [illegible] अनेनाग्निवणशान [illegible] नदी [illegible] [illegible] धावेनानुकरेतुं ? [illegible] कुमारनी [illegible]

[illegible] कुमारनी कथा कहे छे.

[illegible] एकीआवसी [illegible] जेनी आगळदेवनगरी [illegible] मोटी [illegible] अनुरतो अपूर्व [illegible] पारग [illegible] अधिक [illegible] प्रसंगीसार [illegible] अनुरूपे [illegible] एकमत [illegible] आश्चर्यकारी [illegible] तेहुकथावत्त-

मनानथी. तेनेविषेएकपुरंबेरानानेभाषेक यानकरवायोग्यहशे. पणतेमणेतेनेकहेवरावम्यु अनेकरारदेवायाम्नयुरिएकमाटथी
पुत्रीयह. कुकरपणेनमानवायोग्यपुत्रीनेपुत्रिगनानेयणीमानीभीहती. तेपुत्रिनेम्यानीकुकरहती. कोइरामीनीपुत्रिहोयएवुदर्थ
पपरलांटनीदेवीनेकोइपायुत्रिकआत्मनाएनारपुरुष पोतपोताअायुष्यकोराजानीगमभिते. तेमणमनमानीरीतनेनेत्रोभा.
नीतीमहो. अनेएनांपुत्रशाजानो अधिराजपणे. तेपाकोरांदेदनथी. तिशेमाकांपांटाकुल्ताननीपुरित. एनांअागनोराणी
आवानडुंगल्लकहुंछुं. एमउचंपनेरनेदोल्यो. एवाणीनथानेगरणमानीतेवारनी निश्चयकरीतेपुत्रिनेलक्षोमनरायकरीतेमानकरो
हतो. तेविषाहकरवायोग्यपरस्पारेविवाह विनारकयोंके तेगयवचनापुरुषनीवाणी अन्यथानहोय. माटेकोइकरानाने मेटनी
भेटमाकन्यामर्पणकरवी. पीनातृदेशना रानानोदेवाभिनहोतोते अनेआजविरनागरे राजाभोगेपागमेंरहते पाटेकोने
आपवी ? पनीरानाएवधीरापणीअोनेपुछ्युं गारनेकोनीअंके नरवरीतपुत्रिनो किगरानाआदरकरे ? पनुंकहुंहोय लोक-
स्तुतीनोएणअनादरहोय अनेधणुंनहोयतो हीगल्लोकनोवणयनोआदरथाय अनेतोइकाहिन्दि एरेगारानुकानेतो पगुंहोय
तोएण अनिष्टमानिहोय, कोइनगाए अनिष्टयणीगाकाहोय तोपनत्नेकाकानीपेटेमावटनीनहोय. गारीयपुत्रीहोयतोते
नगाएगामान्यपत्नुनोआदरनहोय. मपुत्रनेवाछुगंगीमानवहे तुमपणेत्नानेउचितपुथयमां रहितयीहोय ! तोएनकन्यानया
पिगाथेपुरपानगो जोहीएगोगोदनारनी बीजीविगायले तेनमोरनांमनकीनिगायते. एमावेनागीने तेणेदेवीलगनाने तंमयेअाते
तेवनेकन्याआपी. रानापरर्णीनेनाहाइनिष्टवगाधी, तेकन्यापरण्यो. परंतुअेकपुरुषांदागीनीरेते कोइतेनोआदरकरेनहीं. ते
रामापणकांपेलोहोय तेवनेनागन्नुगरगननूप. एरादिनगरानाएमांभनेकपुके पागमेंपारानुवके तेनीवराराजनेपोगमीहपोरुप
यमनेमणापछे ? शारेमेंपिषोल्योके हेराजन् ! एनाकर्मीपितानेएवरावहे. पिताडनेपुरनागुननानेनेउरहे वेपिनलापुणनाणे.

त्यारेराजाबोल्योकेहेमधान ! आसर्वपुत्रमांविषे पनेतोसंपूर्णगुणवाळो एकपणपुत्रजणातोनथी. जेममारवाडमांवृक्षनहोय तेम राज्ययोग्यपुत्रनातो आमकारनागुणजोइए. नीति,विनय,पराक्रम, उदार्यता,गांभिर्य,धैर्य, चातुर्य,स्थैर्य,तेज,विद्या, निर्व्यस नीपणुं,परनारीइच्छापणुं, निर्लोभपणुं, सुभगता,कृतज्ञता,पुण्य,शीळपणुं, साराकुळपणुं,पितादिकनीआज्ञामांतत्परपणुं, सर्व लोक तेनेमानतादोय एटलेसर्वलोकनी संमतिवाळोहोयत्यारे तेसर्वगुणसंपन्नपुत्र राज्ययोग्यगणाय. एक,बे,त्रण, चार, गुण होयतोपण असंपूर्णपणुं कहेवाय. माटेगुणरहीतअथवा असंपूर्णगुणवाळोपुत्रराज्ययोग्यनथी. राज्ययोग्यतो संपुर्ण गुणवाळोपुत्रहोयतेजथाय. बीज,राज्य,बळ, दान,वृष्टि,विद्या,हितोक्तिएसर्वे सत्पात्रमांअर्पणकर्युंहोयतो घणुंसारुंफळ आपेछे, अनेअसत्पात्रमांआपेतो तेनुंअगतफळथाय छे. पछीमंत्रिबोल्योके जोमारीपुत्रिनो पुत्रथायतोतेनिश्चेसंपूर्ण गुण- वाळोथाय. एमकारेसत्पुरुषनुंवाक्यछे. तेमधाननी वाणी वडेमंत्रिनीपुत्रीराजानेकोइवखतभितिनुं पात्रथइकेआशामात्रने विषेपणअहोमोटुंफळछे. अनुक्रमेशुभछे स्वप्नजेने एवीतेमंत्रिनी पुत्रिनेशुभगर्भरह्यो. जेममेरुनीपृथ्विमां कल्पवृक्षनोउदयथाय. अनेजेमछीपमां मोतीनोउदयथाय. तेमतेगर्भनोउदयथयो. हवेतेनेजेजदोहद (गर्भवतीनेजे मनोरथउत्पन्नथायछेते) उत्पन्न थयातेसर्वेपिताएपूर्णकर्या. दोहदनेअनुसारेराजाए निर्णयकर्योके आस्त्रीनोपुत्रजरुर मोटोराजाथशे. सर्वप्रजानी प्रितिरसजेमां छेएवासमे तेपुत्रनोजन्मथयो. जेमपूर्वदिशापूर्णचंद्रने उत्पन्नकरे अनेखाणनीपृथ्विजेम माणिक्यमणिने उत्पन्नकरे. एमतेणीए सुंदरपुत्रउत्पन्नकर्यो. तेपुत्रनागर्भे उत्पन्नहोवता नेमर्वेश्वर्यसंपत्तिने जणावनारातेग्रहोछे एमजोशी लोकोपणकेहता हता. तेपुत्रनोजन्मथयोहोवाथ अतिशयमोटोराजाएकर्यो नेसर्वप्रजाआनंदाश्चिर्यपनेपामी. अर्थथीअनेनामथीपण पुण्यसार एवेनामे मोटाउत्सवथी तेपुत्रनुंनामस्थापनकर्युं. पांचधात्रमाताओए पालनकरेलो तेपुत्रअवस्था, तेज,यश,अने लक्ष्मीतेसर्वे सहीत

दिनदिनप्रत्ये वृद्धिपाम्यो अने ७२ कळानीअभ्यासपणशीखीलीधी. अनेअनुक्रमकरीने सुन्दरपणुं मेळव्युंअनेचातुर्य,उदा-
र्य,गांभिर्य,अनेधैर्य इत्यादिसर्वगुणनेरहेवाना स्थानकपण्यो. १२ वरसनोथयोत्यारेतेने पाटप्रधानेकने नीतिशास्त्रकहे आनाग
मे,नेपुत्रनेतोइनेराज्यनीइच्छावाळा बीजासर्वपुत्रोपणतेनाउपरइर्ष्याकरी. तेवातनेराजाएजाणीने विचारकर्योकेआवो
पुत्रमेंदशनामाकोइएकठामराख्योहोयतोठीकथायएम विचारी तेणेपुत्रनेतेडावी आ वातकरी. पाटप्रधानेसुनि धैर्यने
करनाराएवोपुत्ररत्नप्रयत्नथी रक्षणकरवोपणराजाए विचारीनेतेसर्वपुत्रोने मारामाराअलंकारआपवा इत्यादिथी तेमनुंयत्न
मानकर्युं अनेतेनानापुत्रनुंअपमानकर्युं. तेराजानामान्यपणाथी महत्वउत्पन्नथयेला तेपुत्रोदिनाना पुत्रनेपरनाराणनीपेठेजाणी
तेपुत्रनीपेठेद्वेषकरवालाग्या परंतुपिताअनेपाडशो तथीउत्पन्नथयेलोपराभवअसह्य तेथीतेपुत्रपोतानापाघडी देशनोत्यागकरीने
नेमनीपेठेतेम परदेशत्यागकरीनीकळ्यो. तेकुंवरेकपुण्यना पुण्यनीपेठेयत्नथी पुरनोउल्लंघनकर्युं. कांतोमनंदोकनाकाग
उपरपदीनेवेगथीअथवा तेवोतोगनवनेतो वनथीनगरबहार पुरुषमांसिंहसमानएवोतेपुत्र सिंहनीपेठेनिर्भयपणेगतो कोइनी
सहायतानथी एवोराजीपुत्रनगरमांथी नीकळीपूर्वदिशाभणीचाल्यो. तेटलामांपणाम्योकने भयपामनारएवोभैरवीनोभयंकरशब्द
डाबीबाजुमांथयो तेसुतनतापीयनी दक्षिणदिशामध्येचाल्यो तेवामांअकल्याणकरनारी एवीशियाळनीवाणीसांभळी. पछी
तेअपशुकनथया जाणीपश्चिमदिशभणीचाल्यो. त्यांतेसुतारशब्दनेकरतो एकघुवडनीवाणीसांभळी. तेनेअपशुकन जाणी
उत्तरदिशभणीचाल्यो. तेवखतडाबीबाजुएकमोटो मोटोसर्पचालतोतेणेदीठो. तेवखतनेपुत्रअतिशेसंभ्रमपामीत्यांजऊभोरह्यो.
तेराजपुत्रकुंवरके थयेलाअपशुकनजाणीने जनारनोसंभवथतोनथी. अनेवैदिकनाद्वेषीने आयुष्यरहेतुंनथी,तेनीनिंदाकरना-
रनीलक्ष्मीरहेतीनथी. अनेधर्मनाद्वेषीनुंलोकोदयपणरहेतुंनथी. पछीमार्गनी चिन्तानेपामेलोएवुपुत्र एवीरीतेचिन्तासागरमांपडेलोहतो.

त्यांतवखतआकाशमां वाणीथइनेतणेसांभळीकेतुं निश्चितपणेशुंनिद्राकरेछे ? अनेफोकटचिंताकेमकरे
छेस तारीचिंताकरवामांजागेछे. तेवचनसांभळी विस्मयपामेलोतेपुत्र विचारवालाग्योकेअहो ! आव
? अनेमारेनिश्चितपणुं केवीरीतथने ? आवनमांहुंतोसुतोछुं अथवाज्ञानीपुरुषोएकह्युंछेके दिव्यवचनसत्य
नुंउल्लंघननकरवुं. तोहुंतेअदृष्टनुं प्रधानपणुंकरीआजगाए गुर्वनिद्रानोकेमनआश्रयकरुं ? एमविचारीत्याग
त्योगनोगूडरह्यो. एकदेलामाभमां जेमक[illegible]चनस्त्रीपुरुषनेवशकरे एमतांनिद्राए तेनेवशकर्यो. मोटापुरुषस्वल्प
[illegible]पछीवाछोडव्यो तेवखतदेवना[illegible]कर एवासुवर्णमणिमयएवामोटा प्रसादमांसातमा
[illegible]पृथ्वीविषे अनुपम[illegible]देहनेदीठो. अनेतेवखतचारे दासप्रसरता
[illegible]छेके दिव्य[illegible] करनारआतोशुंस्वर्गछेकेशुंछे अथवा
[illegible]ने आदेदस्वर्गनो[illegible] [illegible]भ्रमथयोछे अथवाकोइनी आ
[illegible]नुं [illegible] [illegible]शब्दकरवामां तत्परएवाप्रधान
[illegible]. [illegible] आनगरनेविषेश्रीराजनाम
करे [illegible]एकपुत्र उत्पन्नथइ. [illegible] गुण[illegible] सर्वअंगसारीलक्षणने धारणकरतीसर्व
[illegible]स्थाने [illegible]कोइश्रेष्ठराजानां पुत्रआकन्यानो अनेमारीराज्यलक्ष्मीनो पतिथायएवोवर
[illegible]छे अनेसर्वज[illegible]पणकोइस्थळेएपण [illegible]

यो. यारपछीभरतमार्गनाथमां आतुरथ‌ श्रीगनेंद्रवराय पूजेलापत्राथीतरागदेवनी आठमकारनी पूजाकरीनेस्परोतिनपद न्यो. यारपछीभरतमार्गनाथमां आतुरथै क्षोगनेंद्रवराय पूजेलाप्रवाथीतरागदेवनी आठमकारनी पूजाकरीनेस्पराचनपह

कायोत्सर्गकरीउभोरहो. तेवननद्दिपपत्नीहितकारकभारती (वाणी) मनन्दयइनेदेराजन्! निश्चाअतिशे चिंताकेमकरोछो ! नरनेजन्म, मृत्यु, विवाहमुखमर्व देवाधीनछे माटेभावतीराशिप्रांथेपहोर शुभअदृष्टथीविचाइमानेलो कन्यानेयोग्य एवोवर भावशे. आमोटामणिमंदिरनागलर (डोरयार) मां नारीपुष्टिवालो, औचितोआवेलोमुंदेखीश. अकस्मातविस्मयकरनारीअ-

द्भुतनेदीठेथाशंनदे आणेजननुंमर्वऐश्वर्यपाम्योहोय एवाआनंदथीभरपूरतेराजाथयोछे माटेतेराजापुत्रनेलावबाअमनेअही गांकरवाछे माटेइच्छागिन! तमारुंदर्शनआपीअमारा स्वामिनेप्रसन्नकरो. त्यारपछीमगन्नणपेलो कुमारराजाआभेगयो. रा- जापत्नीगिथीनमस्कारकरी पुत्रीमांपिटपेतानात्योआवीबेठापो अनेपणाविनयथीयुक्त हेरयच्छहदयवालावत्स! स्नेहथी मारीकन्यानोअंगीकारकरो एमकहीवांटोविवाहउत्पन्नकरी तेणेपोतानीकन्याआपी अनेअंतरनास्नेहथी पोतानुंमगधराज्य पणआपेगर्यु. कविकहेछेअहोभाग्यशालीनुं जागतुंअविनाशीभाग्यतो जुओकेजेथीमदेशमां पणओचितुंदेवाधिपतिपणुंमात घर्युं. कन्यानुंतथाराज्यनुं अर्पणकरीपोतानी संपदाने कृतार्थकरीपोताना आत्मानुंकृतार्थपणुं करवादीक्षाग्रहण करीपरम पदने पाम्यो.

एकीपुण्यसारपोता राज्यनेसुखेथीकरतो, पृथ्वीपालकराज्य करेबरावतोतेनेनगरीमां इंद्रनीपेठेशोभतोहतो. एकदिवस कोइएकदेशीपुरुषे सूर्यनाघोडानेपेठेसर्व अंगसुलक्षणवालोएक सुंदरघोडोभेटकर्यो. सर्वघोडानेपोडावदे संतोषथायछेअनेराजाने तोतेवाघोडावडे विशेषसंतोषथायछे माटेतेघोडाउपरबेसी जेटलामांफेरवेछे तेटलामांतेघोडोआकाशमां उंचोइंद्रनाघोडानी पेठेचाल्योगयो. अनेरणवाश्रणअतिशे दूरपवाथीतेवकोने अदृश्यथयो.तेतेजगिद्ध पवीनानाप्रकारनीलीलाने करतोपहासप्र-

तेवामांपणीनिद्रानथी आवीतेवखतआकाशमां वाणीथइनेक्षणेमांभळीकेतुं निश्चितपणेशुंनिद्राकरेछे ? अनेफोकटचिंताकेमकरे छे ! थारंदैवतोराश्रिदिवस तारीचिंताकरवामांजागेछे. तेवचनसांभळी विस्मयपामेलोतेपुत्र विचारवालाग्योकेअहो ! आवताकोणबोल्युं ! अनेमारुंनिश्चिंतपणुं केवीरीतथशे ! आवनमांहुंतोमुनोछुं अथवाज्ञानीपुरुषोएकहुंछेके दिव्यवचनसत्य थायछे माटेमेंवचननुंउल्लंघनकरवुं. तोहुंतेअदृष्टनुं प्रधानपणुंकरीआजगाए गुस्तेंनिद्रानोकेमनआश्रयकरुं ? एमविचारीत्याग करीछेचिंताजेणेएवोमनोगुप्तरयो. एकहेलामाधमां जेमकोइचतुरस्त्रीपुरुषनेवशकरे एमतेनिद्राए तेनेवशकर्यो. मोटापुरुषस्वल्प निद्रावाळाहोयछे माटेक्षणपछीपाछोउठयो तेवखतदेवतानामंदिरनेतिरस्कारकरे एवासुवर्णमणिमयएवामोटा मसादमांसातमा माळनीभूमिकामां मणिबांधेलीपृथ्वीविषे अनुपमदिव्यपलंगमां बेठेलोएवोपोतानादेहनेदीठो. अनेतेवखतचारे दासमसरता रत्ननाउघोतवडे आनेरात्रिछेके दिवसछेएमतेनिर्धारनकरीशक्यो. स्वाभाविकनित्यउद्योत करनारआतोशुंस्वर्गछेकेशुंछे अथवा इंद्रजाळविद्याछे अथवादेदिप्यमानथतुंएवुंकोइमकारनुं दैवछेएवोविचारकरेछे तेवामांजयजयशब्दकरवामां तत्परएवामधान पुरुषोतोआवीआमकारनुं सत्यवचनबोल्या. शब्दथीअनेअर्थथीप्रसिद्धएवा श्रीसागरएवानामना आनगरनेविषेश्रीराजनाम नोराजायशवडेचंद्रमाजेवोशोभेछे. अपत्यविनानो माटेअपत्यसंबंधीपीडामां वर्ततोएवातेराजानी मीतिनुंएकपात्ररूपएवीअने लक्ष्मीनेपणआश्चर्यकरे एवीरूपाळीएकपुत्रीउत्पन्नथइ. तेकन्यामर्वअंगे गुणवडेसहीतने सर्वअंगेसारांलक्षणने धारणकरतीसर्व कळामांकुशळएवी यौवनअवस्थाने सन्मुखथइतेवखत कोइअपुत्रराजानो पुत्रआकन्यानो अनेमारीराज्यलक्ष्मीनो पतिथायएवोवर शोधवामांतत्परहताजेछे अनेसर्वजगापधवावने शोधतोपणकोइवरएवोउद्दिष्टपण नाआव्योनेथीनाक्षेतामळ्यामां पणनाआ-

ज्यो. त्यारपछीभरतंगदंगामां आयुधशालामांचक्ररत्नउत्पन्नथयुं प्रजाकरीनेहर्षथीतेणेपण सर्वोत्तमगंधवीउमेोकलो. तेवखतेकेवलीनीवधामणीआपनारकुमारनी (गाथी) प्रकटथइकेहेराजन् ! मिथ्याअतिशे चिंताकेमकरोछो ! नरनेजन्म, मृत्यु, विवादप्रमुखगर्वथतुंनथीतेथी माटेभावनीरावीपूर्णपणेधरवीसद्गुणयुक्तपुत्रीआइत्यादिकन्यानेयोग्य एवोवर थावशे. आणोटाभणीचंद्रिकानामनल (दीव्या) मां नारीवृंदवाळी, आनंदितोआवलीतुंदराछे. अकस्मातविस्मयकरनारीअ- द्भुतनेपीनेराणीवदे जाणंतनुतुंगर्भधर्मपाम्योछेप्रएवाआनंदथीभरपूरतेराजायघोछे माटेतेराजापुत्रमनेलावराअमनेअही पांकरवाछे माटेहेस्वामिन ! तमारुंदर्शनआपीअमारा स्वामिनेप्रसन्नकरो. त्यारपछीमनमथयेलो कुमारराजाराज्यमांगयो, रा- जापुत्रीतिथीनमस्कारकरी पुत्रीनेपरणावीतेपोताराज्योठामांबेसाड्यो अनेघणाविनयथीवधुंके हेस्वच्छहृदयवाळावत्स ! स्नेहथी मारीकन्यानोअंगीकारकर्यो एमकरीमोटोविवाहउत्सवकरी तेणेपोतानीकन्याआपी अनेमंतरनास्नेहथी पोतानुंमगधराज्य पणअर्पणकर्युं. वळीकहेछेअहोभाग्यशाळीनुं जागतुंअविनाशीभाग्यतो जुओकेजेथीमदंगमां पणओचिंतुंद्रव्यआविपनिपधुंमळ गयुं. कन्यानुंमगधराज्यनुं अर्पणकरीपोतानी संपदाने कृतार्थकरीपोताना आत्मानुंकृतार्थपणुं करवादिक्षाग्रहण करीपरम पदने पाम्यो.

पछीपुण्यसारमोटा राज्यनेवृद्धिकरतो, पृथ्वीपालकंराज्य कहेवरावतोनेनगरीमां इंद्रनीपेठेशोभतोहतो. एकदिवस कोइपरदेशीपुरुषे गुर्जरनायोघोडानेधोमर्गे अंतपुरजनवाळोएक सुंदरघोडोभेटकर्यो. सन्मित्रोनेघोडावडे संतोषपामछेअनेराजाने घोडेनाघोडावडे विशेषसंतोषपामछे मोटेतेघोडाउपरबेसी जेटलामांखेलावेछे तेटलामांतेघोडोआकाशमां उंचोइंद्रनाघोडानी पेठेचालवोगयो. अनेराजपामगमांअतिशे दूरजवाथीतेघकोने अदृश्यथयो.तेतेतसिद्ध पछीनानाप्रकारनीलीलाने करतोमहासमु-

[illegible] पवनाभ [illegible] रथनुपुरनाम नगरमां [illegible] नामे [illegible] विद्याधरनो राजा [illegible]
[illegible] थयो [illegible] नेरावानेवशने [illegible] अग्राथामनगर
[illegible] आवी [illegible] पुत्रीतेमदानामनी पाकहरद कन्याउत्रानारने वासिनृकश्रेष्ठ
[illegible] पूर्व [illegible] राजा [illegible] राजपुत्र [illegible] आवनेपुत्रकाम
[illegible] थासमपदर्शानी [illegible] पुरुष! [illegible] नमाणनी
पुत्र [illegible] कन्या [illegible] कन्यानुभरण [illegible] नेपुत्रने
[illegible] मोटाविद्यापणजाण्य एठीनिवाश्वरवइ [illegible]
[illegible] पवनवषासेन आदित्यान्य, नेचकी आदित्यशीस्य [illegible] कान
[illegible] अयाउ. शुभोक पोनेविद्याधरनो [illegible] मनुष्यनातिप्रा
[illegible] वासवतुनगानोराजा [illegible] विद्यावंत [illegible]
[illegible] एवाविद्याधरराजाओए [illegible] कन्या [illegible] एउत्तपूर्ते-
[illegible] आदिनाराजा [illegible] कन्या [illegible] अविद्याधरोए [illegible] पुत्रकेह
[illegible] आश्चर्यदेवानी [illegible] कनेकप्रतिनिधि [illegible] वस्या-
[illegible] नीतिनाथ [illegible] मनुहितनाथ [illegible] जेनदेवना-
[illegible] आश्चर्यनी [illegible] आश्चर्यकेकृपाथी [illegible] मनुहिने [illegible] एठी

... उज्जयनीनगरीनो राजा [illegible]
लक्ष्मीरूपकुसना उदयनाचलाकर माळवदेशमां समृद्धिवडे कुबेरनी नगरीने जीतनारी उज्जयनीनगरीनो राजा [illegible]
लक्ष्मीरूपकुसना उदयनाचलाकर मालवदेशमां समृद्धिवडे कुबेरनी नगरीने शोभावनारी उज्जयनीनगरीनो राजा [illegible]
नामेराजमथी प्रसिद्धहतो. अनेतेनी पद्मनयनानामनी अतिशे प्रियकारकस्त्रीहती. वीजीपणतेराजाने घणीराणीओ हती अने
तेमनाथी केटलाक पुत्र पणहता. परंतु पटराणीनेतोपणेकाळे दिव्यअंगवाळीएक पुत्रीहती. तेणेपोतानापोताना पूर्वनापुण्यनाविपाकने
अनुसारेपूर्वादिक संपत्तियोमासथायछे. अन्यहोयतेतेपणमांडु मानपक्षेअनेपोताना भाग्यथीयोहानेपण अपमानपक्षेमारे
पिताादिकलेपुत्रादिशी पणअतिशेमानीती साक्षात्लक्ष्मीनाजेवी तेपुत्रिहती तेपुत्रिए लीलामात्रमांजीओनी ६४ कलाओशीखी
लीधी. अनेते शीलवतनागुणनाएक मार्गमात्रजहतो. विद्यावडेविणावगाडवामां तेपुत्रिनुं अतिशेप्रवीणपणुं हतुं माटेतेनीविणा
सांभळवानेआवेला देवतापणस्थंभ थइनेरहेताहता. त्यार पछीतेकन्यापुखावस्थाने आवीत्यारेतेणीएएवी प्रतिज्ञाकरीकेजे
पुरुषविणावगाडवानी कळावडेमनेजीतेतेज श्रेष्ठवरनेमारेवरवो. त्यारपछीचारेदिशथी राजालोकोपोताना पुत्रोनेअतिश्रेष्ठवि-
णावगाडवानीकळा शीखवीलइने आवताहता. परंतुतेपुत्रि पोतानीकळावडे सर्वपुत्रोनेजीतीलेतीहती. पुत्रिनेवरवानीआ-
शिनथवाथीपिता आदिसर्वस्वजनोचिंतामां पड्याहता. पछीसर्वसहीत विणाकळामांप्रवीण एवाश्रमणसंघ आदिकसर्वलोकपण
एकन्याकेवानी स्पृहाएआववामंड्या. एप्रकारेतेकन्या सर्वसाधारणथइ परंतुतेकन्यानी विणानाशब्दथीथता उन्मादवडेमदेन
थयेलापोताना अहंकारनोत्यागकरी हाहाकारनेधिकार एवाशब्दोनोग्रहण करीजेनाआव्यानेवा चालयाजताहता. तेवातप्रसिद्ध
थवाथीविद्याधर लोकोएजाणी. तेविद्याधरोपणपोतपोतानी पुत्रीओनुं राजाओनी सभामांआवीनेकन्याना रूपनुंतथागुणनुंवर्णन
करवामंड्या. तेथपनसर्व नगरलोकोनेयाननांभळी विस्मयपाम्या. त्यारपछीतेपुत्रनाराजपुत्रोविचार करवाकेनाकोआपणेपणएको-
तुकजोवाजइए. एमविचारीने केटलाकविद्याधरोए सहीतजेमदेवताए सहीतइंद्रनागमनथाय तेमसहीत विमानउपरचे-

त्यांपुण्यसार कुमारउज्जयणिनां आव्यो. त्यांविणानादनाविवादने अर्थेएकमहामोटी शोभावाळोमोटो मंडपमंडाव्यो
दीठोअनेत्यां थतुंसर्वकौतुकपण दीठुं तेपुण्यसार कुमारनापूर्वपुण्यना प्रभावथीतेकन्याने विचारथयोकेआ कोइपुण्यमूर्तिमान
कामदेवजेवो जणायछे.अनेकोइ प्रकारनाभाग्यपुण्यना उदयथीअहींआव्या थयोछे.माटेए निश्चेमारोवरथशे एवीकल्पनाकरेछे
एवामांराजानी आज्ञाथीगुणिए विणावगाडीते वखतपुण्यसार कुमारआप्रकारेबोल्यो केआविणामांत्रण प्रकारनादूषणछेतेथी
जेवोजोइएएवोस्वरआ विणाथीउत्पन्नथतोनथी.तेमांएकदोषतो विणानादंडमांछेने बीजुंदूषणविणामांछे नेत्रीजुंदूषणआतुंबमां
छे. तेमांविणानादंडमां तोएवोदोषछेके आतुंबमांपवन थयेलोदंडदग्धथयेलोछे नेआविणानातंतुमां एदोषछेके एकभंग
भागमांथीशेवाळचोटेलोछे नेतुंबमांएवोदोषछेके तेनोबंधअत्यंतथयेलोछे तेथीआविणानोशब्द अत्यंतशुद्ध, मधुरलागतो
नथी. एवेतेपरदेशथीआगतदूषणनेसांभळी राजापणआश्चर्यपाम्यो अनेतेविणाना सर्वअवयवजूदा करावीजोयातोतेपुण्यसारेकह्युं
हतुंतेप्रमाणेज तेमांतत्काळदूषणदीठुं. अनेपुण्यसारनेवगाडवानी आज्ञाराजाएकरी. पछीकोइविद्याधरनी अतिशेविशुद्धवि-
णानेग्रहणकरी तेविणावगाडवामां अतिशेआदरवाळोते पुण्यसारेआदरेसहीत जगतनेआनंदकारी एवारमना उल्लासनेकरनार
एवागीतिस्वरशब्दवडे विणावगाडीतेमांथी सर्वसभाचित्रामणमां लखेलीहोयएवीअचेतनथइत्यारपछीराजाने कौतुकपमाडवा
तेसभामध्येअचेतनपणुं प्रगटकरवाकेटलाकना वस्त्र, कुंडल,भूषण उतारीपालटीकर्या अनेकन्यानापितानो मुगटतथाकटारीवि-
गेरेस्थानांतरमां स्थापीनेकन्यानी कोटमांरहेलामोटाहारने तेनाहृदयेमहीत ग्रहणकर्यो.आप्रकारनुंमोटुं आश्चर्यकळाभ्यासनुं
देखाडयुं.जेथीसचेतन हतातेपणअचेतन थया. उपमाए रहीतपोतानीकळासभामां प्रगटकरी पछीतेसर्वेसचेतन थयात्यारेजेनी
जेवस्तुहतीतेमीहनी तेतेनीसर्वेअर्पण करीतेथीअतिप्रेमप्रमत्त थयेलाराजाएमोटा महोत्सवनी परंपरापूर्वकपूर्ण मतिज्ञाथवाथी

तेकन्यानोविवाह पुण्यनाग्युवराजाथे कर्योअनेदायी, पांडा,गोर्नु,वाजिंत्र, वेश्याओ,गंवको आदिकमंगल्या सहीतवरेराम-
नीवाभाव्या. मनीपनयाकरवाने कोइपणसमर्थनथी. त्यारपछीनगरद्वार नगरमांप्रजानुपालन करवानीमीनिवाळो तेयणारा-
जाप्रजनेतेजो मनाथोजनावेगमा हतो.कामिकतेके गनाज्योकोरीओ नरेकुमगनानथी, मांटेप्रजापाळराजाने एकहजारस्त्रीओ
हती.अनेतेवनी कन्याओरनारी हती.जेमकेमनं नगरनाज्योकोने पुत्रकरमांपुत्रीओनी हांढेहोयछे.एक दिगंतरना मतवा
स्त्रीओनामोटा उदयनोनित्य छे पांगुनेराजानाघरमां लोस्त्रीओनेमोटो उदयहतो सिद्धान्तवाणमांभलीएछीएके तथापीव
गुणनागावनारपुत्रो होयछेपरंतुतेथीअधिक गुणनेगावनारीआ राजानाघरमांस्त्रीओ हती.अनेघणीपुत्रीओ होयछरेतेराजा
नगरमांभनादरनुं पावआगते.पुत्रोत्पत्तिना दुःखनेधारणकरता एराजानेलोगीभवस्थानी मातिगइ.त्यारेएक दिवसतेइंद्र-
नगरमांभनादरनुं पावआगते.पुत्रोत्पत्तिना दुःखनेधारणकरता एराजानेलोगीभवस्थानी मातिगइ.त्यारेएक दिवसतेइंद्र-
गवाक्षिनारकर्योके आठमीस्त्रीओ हवावारेएकपणपुत्र उत्पन्नथयोनहि राज्य कोनेआपवुं ! अनेहीसाहीरीतेछडं ! एवी
चिंतावामांगुर मनेजोतेराजानामनमां मल्लिनाथजिनेन्द्रनी पूजानंथापाकरेछे तेवामांआमकारे आकाशमांथायी गइकेराजन!
पोतानाचित्तमां शिव्यापैनाधीद करेछे ! पूर्णपुण्यनागंधदविना चिंतितकार्यथतुंनथी. हवेपुणनारीपटराणीने आठमीकन्या
नारमांतितोपानीनी पण.अनेतेपीनारां हृदयथी.अनेतेकन्यानो जेमर्थायर्थशेतेनारी राज्यलक्ष्मिनोभर्थार थशे.अनेतेदीहिव
नारीभ्रमणपणोहो राजानुं मापकारनी अमृतनरणी आकाश वाणीमांभळीनेतेराजा अतिशेआनंदपाम्यो, जेमकेदीहिवनी
भाग्यवानभलानथी. पछीएराजानी पटराणीएअतिशं मानीती.स्तुतिकरवानुंपात्ररूप पुत्रीउत्पन्नकरी. आठमीतारानामेतोगि-
नामेपीत्रेहाने पुत्रीनीवधामणी मांगळी,वधामणी भापनारदासीनेपोतानामुगटविनागरेअंगना आभूषणअर्पण कर्यां तेवखतेमोटी
गणाइस्त्रीनेतेनाआदिकमोटोउत्सवकर्यां.गणपगनेठापुत्र करतांपणाविशेषपणेठांत्तेउत्सवने जोइअनेदुर्भपपतो देवीनोविजयथ-

थेलोजोइ तेपुत्रिनुंनामविजया एमकारेराजाप्रमुखसर्वलोकोएकर्युं. अनेसौभाग्यनेदक्षपणुंइत्यादिकगुणवडेसर्वकन्याओनेजीतती एवीतेकन्याजयंतिना जेवीपृथ्वीमांशोभतीहती. बाळचंद्रमानाजेवीतेबाळा अतिशेनिर्मळकळावडे वृद्धिपामतीलोकमांअतिशेमाननुं पात्रथइ. ६४कळामांअतिशेकुशळपणुंपामीशीखनारपुरुषनुंजेमअतिविचपडतेमतेनीकळानाअतिविचरुपतेथइ. तेकन्यावरपामवाने योग्यथइ त्यारेपिताएविचार कर्योंकेदेवताना कह्याप्रमाणेआकन्यानोवर थशेपणतेकोइजगाएकेमदेखातोनथी. एवोविचारकरेछे एटलामांआकाशमां देववाणीथइकेहेराजन्! विवाहनीसर्वसामग्री तुंतैयारकर अनेलग्ननीवखतेजदेवतानीअद्भुतशक्तिथीसर्वअंगे आभूषणनोधारणकरनारवरएनीमेळेजनेजगाएआवीउभो रहेशे. पछी तेराजाएविचारकर्योंके प्रथमजेमदेवतानीवाणीसत्यथइहती तेमआपणसत्यथशे, एवुंधारीसर्वविवाहनीसामग्रीतैयारकरीविवाहनुंलग्नलीधुंछे तेवखतेवरनीवाटजुएछेतेवामांतत्काळमोटाविमाने मढीतदेवतानीपेठेविद्याधरोएमहीनआकाशमांथीतपुण्यसारकुमारउतरीआव्यो आश्चर्यपामतासर्वलोकोनीमध्येतेराजाएपुण्यसार वरनीसाथेतेकन्याना विवाहनोमोटो उत्सवकर्योअनेहस्तमोचन समयेराज्यनीसत्यताने करनारएवीयौवराज पदवीतेकुमारने आपीअनेबीजुं पणघणुंधनआप्युं. कविकहेछेकेतेसमेमनुराजाना मनमांनदेवायोग्यवस्तुशीछे? कांइपणनथी. राजा(चंद्र)ना प्रसादनामसरथीथयेला रसनाउल्लासवडेतेराजा समुद्रनीपेठेशोभ्यो, परंतुतेमांआटलुंविशेषछेके समुद्रनोजळाशय (जळनो आशय) छेअनेआराजानो जळाशयनथी, एटलेजडअंतःकरणवाळोनथी. तेजगाएतेकन्यावडेजेम लक्ष्मीवडेलक्ष्मीपति शोभे एमतेनीसंघातेरहेलोघणा कामभोगनेभोगवता अनुक्रमेपुत्रउत्पन्नथयो. रुपादिगुणवडेअद्भुतएवाते दौहित्रनीप्राप्तिथीअतिशे प्रसन्नथयेलाराजाएपोतानुं सर्वराज्यजमाइनेअर्पणकर्युं. अनेपछीचारित्रलक्ष्मीनोपति थइनेएटलेदिक्षालइने तेजभवमांमोक्ष लक्ष्मीनेपाम्यो. त्यारपछीपुण्यसारकुमारतेनगरथीनीकल्योएटलामां, पितानानगरथी नीकळीगयापछीपिताादिक पोतानापुत्रना

वियोगथीअतिशोकदुःखपामताहता चारेपासपुरुषोमोकल्यानेते पुत्रनीशोधकरावताहता, जेमहाथमांथीमणीपडीजाय एमनगयलो
पुत्रनीशोधघणीकरावतां पणकोइजगाएंभाळनपडी. अपारदुःखसमुद्रमांपडेल्या राजाएजोगीनपुत्रोने पूछ्युंत्यारेतेमणेकयुंके
स्थानस्थानमांतमारो पुत्रफरेछेअनेअत्यंतसुखीछे, तेजपवनंदछेदीजतोजायछे तेमपनोवांछितभोगनेभोगवेछे, तमारेज्यारे
राज्यप्रापवानीवखत आवशेत्यारेवांछितदेवनी मोटीऋद्धिनासमागमनेयोगे पुत्रनोसमागमथशे. आप्रकारनातेज्ञानीपुरुषनी
वाणीसांभळीदुःखगयुंहतुं निश्चयकरीजेवोपुत्र माहिथीमळवानो तेवोभगवानथयो हवेपुण्यसारकुमारनीवात कहेछेकेपूर्वनिश्चळ,
ऊंचा.दुर्गमनाम नगरनेविषेस्थिरवसेली माहुलक्ष्मदोगनवोनरपति नामेराजाहतोजेनादेदिप्यमान प्रतापरूपअग्निमांशत्रुओरूपी
पतंगीआनीपेठेपडताहता. तेराजानीपट्टराणीनीघणा पुत्रथयापछीएकपुत्री लक्ष्मनाजेवीप्रसिद्धप्रथमा एनेनामेहती. लोकपाळनी
पत्नीनीपेठेजेप्रथम अपत्यथायतेघणुंमानीतुं होयछेपछीजेमजेमविशेषथता थायतेमतेमतेनुंमान्यपणुंनरहे. एपुत्रिपांचधाईथीलालन
पाळनकरेलीआनागोळामांथी आन.गोळामांपडीरीते स्त्रीओएस्नेहथीरमाडेली पितानाकुळनेशोभावनारीहती. रुपादिकगुण
एकएकनीस्पर्धाथीवृद्धि पामताजेमांछएवुंबाल्यपणुं अतिक्रमणथयुं. एटलेयौवनअवस्थामांसथइ त्यारेपितानाअंतरमांचिंताथइ
केआकन्यारत्नतेयोग्यवरकोणछे. एवीतपासकर्यां. पणजगतनीकन्याओमात्रने अतिक्रमणकरेएवुंजे कन्यानुंरुपहतुंमाटेपिताए
विचारकर्योंवेहुंस्वयंवरकरुं. पछीपुत्रीनीजरमां आवेतवरनेपाणीपदो विचारकरीअखंडछेशोभा जेमांएवोघणुंद्रव्य खरचीमोटो
स्वयंवरमंडपकराव्यो, तेमांदेशदेशांतरना राजाओपोतपोतानां पुत्रोनेल्इहुंप्रथमजउंहुंप्रथमजउं एवीरीतनीत्वराथीआव्या.
माटेविपनीलालच आप्रकारआश्चर्यकारीछे, जेमकोइएकपुंकेहुंब्राह्मणपणानो निर्णयकरीएकजसारा ब्राह्मणनेजमाडीश
एवीप्रसिद्धीकर्यापछी जेमघणाब्राह्मणनाटोळा आवेतेरीतिएकन्यानीस्पृहा माटेघणाघणाराजाओआव्या. पातेमिथ्यामोटा

वपमनेविश्लेनो अथवा केटलाकतोकामरागवडेआव्या, केटलाक लोभवडेआव्या, एममोटामोटापणमोहपामीनेआव्या.तेवखते पनद्वारनापारानुंपण निमंत्रणआव्युं. तेनेपुण्यसारेजाणी विचार कर्योके आमकारनासंदिग्धअर्थवास्ते हुं जाउंकेनजाउं. मनिसूरणेजाउंतो स्थानवरे तोपणमाहंउपहासपामवाने घणाराजाओनोस.माजथयोछे तेकौतकजोवानेमनथायछे रहेतुंनथीमाटेकेम करुं! पछीनिश्चयकर्योके आपणेगुप्तजवुं अनेएकमंचउपरछानामाना बेसीरहेवुं एमविचारकरीपुत्रादिकने आगळमोकली कोइनिपीसारीदेवतानुंस्मरणकर्युं. तेदेवतानावळथीज्यांसुंदर राजाओबेठेलाछेत्यां एकमंचउपरपोतेपणबेठो. अनेपोतानुं कुबडानुंभंगरेखाना मतापथीकर्युं तेवामांमोटाउत्सवथी दिव्यवेषनेधारणकरनीमखीओए सहीतपालखीमांबेठेलीतेकन्या स्वयंवरमंडपमांआवी.अनेप्रतिहारीदासीएवर्णन करेलासमस्तराजाने रूप गुणसहीतसांभळ्या पणतेमनोअनादरकरीआगळ चाली.एकपंक्तिमांबेठेलाराजाओनो अनादरनथायमाटेअनेआ शर्थ! तृष्णापामेलाराजाओए महामोहथीजोयेलीतेकन्याएकछुं केआपुरुषयोग्यछेआ मारेवरवायोग्यनथी. तेवखतआवेलासर्वराजाओ पश्चात्तापकरवामंड्या.केटलाकतोतेकन्यानीमातापितानो वांककाढेछे, केटलाकतोतेकन्यानो वांककाढेछे, केटलाकस्वयंवरने वांककाढेछे,केटलाकज्ञानीराजा पोतानाकर्मनोदोषगणेछे, थोडीवारपछीतेराजाओ देखीसाथळीकोपकरती एवीतेद्वारपाळ तेराजानुं वर्णनकरनारीदासीबोलीके आवाआवामहासमर्थ रूपगुणेसहीतछतां रूपानमानथीआवनानो आनुंकुबडानेमारेवरवुंछे ? एमतेकन्यानुंउपहासपकर्युं. तेउपहासने सांभळीहसीनने कुमरी कन्याएसपमस्वप्न देखनांथीकुबडानारंडमां वरमाळआरोपणकरी. केमकेस्वयंवरनापहेला दिवसमांतेणीए गोत्रदेवीनुं आराधनकर्युंहतुंत्यारे गोत्रदेवीएकयुंहतुंके तारेजोअतिश्रेष्ठपुरुषनुं स्वरूप होयतोगुप्तरूपथीआवेलो एककुबडोपुरुष तेनेवरजे.एवा स्वप्नने अनुसरीनेकन्याए सर्वराजानोत्याग करीजेपथपरीवीस पुरुषनो त्यागकरीकमकनेमानयाथ नेमसर्वनोत्यागकरीतेकुबडाने

मातपद, तेवखतआकाशमांथीपुष्पनो वरसादथयो अनेदेवताओ भद्रकेपणोमारोवरपल्यो. आमकारनुंनिरखण जोइनवेपुरुप
अतिशेआश्चर्यपाम्या. केटलाकइर्षालुपुरुषनो एमबोल्याकेआनायोग्य मोटाराजाओनीसभा वच्चेआतेमनुंअपमानकरीआकन्या
कुबडापुरुषनेकेमवरे? एमबोलतेछतेपण आकाशवाणीथइकेहेराजाओ! सर्वगमांश्रेष्ठएवोआतो पुण्यसारनामेराजाछे.
पाछेजेकोइएनेनहींनमे तेनेअमोशिक्षाकरीशुं. आतोआकन्यानापणापुण्यथी पैदाआवेलोछे एवुंसांभळीसर्वेनिरखण पामीनेकंपणा.
तेवखतत्यांआवेलाते पुण्यसारनापिताए पोतानापुत्रनुंनामस्मरण मात्रथीअतिआश्चर्यपामी विचारकर्योकेपुण्यसार राजातेथीजो
कयोहशे? निश्चयथीतेमजणाय एमविचारकेछतेत्यांतो देवतानाप्रभावथीतेकुबडो पुरुषअतिशेसुंदररूपे हवनेनुंएवोपूर्वनापोताना
रूपनेधारतोस्फुरायमान थयोअनेतरतजउठीपितानाचरणकमळमां तेणेनमस्कारकर्यो. केमकेक्यारेपणमोटा पुरुषपोतानुं
उचितपणुंचूकतानथी. अतिशेआनंदकारी पितापुत्रनोसमागमथयो. हवेतेपुण्यसारनुंजमणुंजाण जाणीसर्वेराजाओए अतिशे
प्रणामपूर्वकतेनोसत्कारकर्यो. तेकन्यानोविवाहमोटाउत्सवथी थयोकेमकेपुण्यथी दुर्लभवस्तुशीछे? कंइपणनथी. सर्वराजाओनी
संघाथेतेपुत्रनेयोग्याचीसहपरिवारसाथेपोताना नगरमांतेआव्यो अने मोटासमृद्धिमानउत्सवथी उपमारहीतएवीशोभावडेपोताना
नगरमांपुत्रनेप्रवेशनोमोटो उत्सवकराव्यो. पछीशुभदिवसेपुण्यसार पुत्रनेमोटामहोत्सवथी राज्याभिषेककर्यो. आमकारेराज्य
अर्पणकरवाथीनिश्चिंत थइमयेलातेपिताएनिर्मल गर्हितादिशाळीथीअनेते दिक्षानेसरोपरपाळीमोक्षसंपाम्यो. तेपुण्यसारराजा
अनेकप्रकारनीराज ऋद्धिभोगवतावेटीछे तोपणरामचंद्रनीपेठे पोतानापितानीराज्य समृद्धिपामीनेअतिशे हर्षवंतथयो.
प्रथमथयेलीआकाशवाणी सांभळीनेसर्वेराजाओए अतिशयमानआप्युं अनेकन्याओतथा सेनादिकपणीसामग्री अर्पणकरी
अनेतगरमांतेनीघणी प्रसिद्धिकरी, तेओतपोतानीजेमारी सारीवस्तुहतीतेतेअर्पण करीपोतानीमोटपनो त्यागकरीदासकिंकरना

तेवाप्रकारनाआचारवंती आज्ञाधारवा. एमकरीआठेदिशामां पोतानीआज्ञामांसघलांवनोमूर्यजेवकांतिवडेशोभे तेमआपृथ्विमां शोभतोहतो. अनेदेवतानामवीपणाथी मणगंदनुंअखंडराज्य पोतेएकलोकरतोहतो. कोइदिवसएराजाने दिग्विजयकरवा जवुंपडचुंनथी. तेमकोइदिवसमैन्य एणराखवुंपडचुनथी. तेमन्दाइपणकरवीपडीनथी. तेमणेकदीकोइशत्रुनी खबरमंगाववी पडीनथी. कोइदिवसगाधदाने मेरकरवोपडयोनथी. कोइनोदंडकरवोपडयोनथी. कोइविद्याभ्यासनेअर्थे देवनुंआराधनकरवुं पडचुंनथी. केमकेएटलोजबधोपोताना पुण्यनोमहीमाहतोके पोतानीमेळेजसघलसमृद्धिओप्राप्तथाय जेमस्वर्गमांइंद्रशोभे तेमपृथ्विमां एराजाशोभतोहतो एराजानेचौदरत्नोभाट हजीओआठपटराणीओहती तेनेनरनेरुनेएकएक हजारसेवकएडने सेवाकरता- हतीओबीजीराणीओहती.पांडवाने भाटहजाराणीओएराजानी होवएनजणातुंहतुं. तेवीवखतसांभुतनसमुद्रनापारंगत,महाविरक्त, श्रुद्धिनुंधारणकरनार, निसंगएवा गुरुमहाराज गुरुगणने माथेचलावता. तेवातनांभळी पणाश्रेष्ठ परिवारेसहीत हेलीहेलनं मणाइंदमहीत पुण्यसार राजानेगाथुनेदर्शन करवानीकळ्यो. मदसणादिकविधि सहीतने गुरुनुंवंदनक- रीपोताना पुण्यरमानथा अवरेमहीतेवेठो तेगुरुएबधीनोपाने पामेछेतेपुण्यनीमोटी उन्नतिकरछे. एमनहोयतो प्राणीनी पुण्यज्ञान क्यांथीहोय ! अनेराजानोआवकारे एवोउदयप्रगट्याथी होय ! तेकहुंछेकेधर्मथी ऐश्वर्य पामपाचछे. तेथतेनेजे नाशकरछेते मुगतिनेक्यांथीपामे ! केमकेतेनो पोतानाकरावीना द्रोहनोपातकीथयो. मोटा पुण्योदयथी सघलवस्तुओनाम थयेलीसमृद्धिवडे विशेषधर्मनुं आराधनकरवुं एमएकएकनी महानताकरवी. प्रथम जेवोरा सहीतमेमांरापणुं पापवानेधर्मनुं आराधनकरवुं. पछीमरथी प्रकारेप्रमाद रहीतथइने तेजधर्मनी वृद्धी करवी. जेमदेव, अज्ञानकरीने अज्ञानोपरमाद्करेछे. आनकाग्नीभमृतरूप देशनानांभळीनेपापज्ञाननाशकनार एराजा

द्वातनामपुरहतपत्वा तेपुरमलेपुण्यसारराजाए पोतानापूर्वजन्मनुंवृत्तांतपुछयुं. त्यारेगुरुबोल्याके हेमहाभाग ! पूर्वेमहापुर
नामानगरमां मोटाआनंदनामगृहस्थ शेठीयाहता. महाआस्तिकपणोएकपुत्रहतो. तेनेपितादिकआस्तिकपुरुषोनीक्रिया-
ओळखावी. त्यारेतेसंसारनेमंदपणुंकरीने प्रमादरहितधर्मकरवामंडयो. त्यारेलोकोए तेनुंनामधर्मसार एवुंस्थापनकर्युं. जेवुं
नामतेवाजतेनागुणहता माटेअन्वर्थ (यथार्थ) नामवाळोप्रसिद्धथयो. एकदिवसगृहउद्यानमां हर्षसहीतपितासाथे
फिरतोहतो अनेकौतुकजोवानीइच्छाए चारेपासभ्रमणकरतोहतो तेवामांएकस्वभावथीज शांतिवाळा उपशमगुणेयुक्तकोइक
मुनिनेकायोत्सर्गमां रहेलादीठा. अनेतेमुनिनेएककोइ अनार्यएवीवांदरीआवीने विदारण (छेदन) करतीतेनाजोयामां
आवी. त्यारेतेणेविचारकर्यो, केमनुष्यमात्रनीउपद्रवथकी रक्षाकरवीघटेछे तोआमुनिनी रक्षाकरवीमारेयोग्यछे. एमधारीने
वांदरीनेनिवारणकरी तोपणतेवांदरीए पिशाचीनीपेठे तेमुनिनेनमूक्या. तेथीमहाक्रोधउपन्नथयो पणतेकर्मवशनी पेठेसमताराख
रहीनेतेमुनिनेतत्काळ केवळज्ञानउत्पन्नथयुं. त्यारेतेमुनिवांदरी प्रत्येबोल्याकेभद्रे ! तुंताराअंतरमांविचारकर. अनेतुंमातज
न्मथीमांडथयेला द्वेषनाफळनेकेमनथीविचारती ? एवुंवचनसांभळीने तेवांदरीजिनधर्मथी स्तंभितथइजाय तेपणेनिश्चयपामी
स्तंभितथइ. तेपुण्यसारगुरुकेवळज्ञानी महाराजबोल्याके माराआश्रयमां आधारीरहीहती तेम. हुंअतिशआसक्तथइ पितादिकथीजुदो
पडयो. श्रीनामुनिनेआधीनथइ पितादिकथीजुदापडवा पूर्वपुरुषनेधिक्कारथाओ. पछीदैवयोगथीमारागुरुनी आस्तिकवाणीथीहुंश्रा-
वकनोधर्मपाम्यो अनेमिथ्यात्वपणेन जुठोजाणीतेनाथीश्रद्धारहितथयो. केमकेधर्मरहीतएवामतनेविषे कोणस्नेहकरवो ? एमारे-
मारीतेमाशिथिलआदरथयो आकुळथइनिरंतरदूषणकरतीहती तेथीवैराग्यपामीनेंश्रावकनोआदरकर्यो. पछीएवीमिथ्यात्वना
दोषपणथीअनेअनुक्रमे माराउपरवधारे द्वेषवाळीथइनेमरणपामी दुर्गतीपामीगइ. केमकेदूषणनाआचरणनेधिक्कारथाओ. दे-

वयोगथगिथेनमां वसावेणदतीतेजवनमां हुंकौपककरीनेउभोहतो. तेवखतमनेदेखीकरडवानेदोडीआवी. तेजवखतकोइआवता मोरेमारी. मरीनेद्वेषथीतेमयूरीथइ. तेमयूरीमनेउपद्रवकरवाआवी. तेवखतकोइश्वाने तेनुंभक्षणकर्युं. त्यारेतेमरीनेकुतरीथइत्यार पछीविराहीथइ. त्यारपछीवाघणथइ. तेवखतेमनेमारवाने तेदोडीनेएकपाडमांपडी. तेवखततेनांअंगउपांगसर्वेभाग्यां, तेव- खतबांदरानाटोळाए तेनेउपद्रवकर्यो, तेथीमरणपामीने आवांदरीथइछे. तेपूर्वना वैरथीमनेउपद्रवकर्यो. देहधारीएएकअंगे द्वेष कर्योहोयतेपणनिश्चेसहनथायएवोनथी. हालमांअमारीवाणीथीएनेजातिस्मरण ज्ञानउत्पन्नथयुं माटेपूर्वभवनेसंभारी शांतिपामी आवेठीछे. मनमांअतिशयपश्चात्ताप करती वैराग्यपामीगनेपणुंखमादेछे माटेएआठदिनमां मरणपामीदेवलोकमांदेवीथशे माटे हितनेइच्छनारपुरुषे मिथ्यात्वअनेद्वेषएबेनोत्यागकरवो, जेथीअन्यनर्कनाजेवी दुर्गतिप्राप्तथायछे. देहधारीनेरागछे तेदुःखोनि- वारणकरवायोग्यछे तेथीपणद्वेषतोविशेष करीनेनिवारणकरवायोग्यछे अनेधर्मद्वेषनो अनंता दुःखनेआपनार एवोनेसर्वअर्थ धामनोहणनारएवोछे अनेवयोवस्थानाविशेषपणाथी रागतोकोइवख्तनथी पणमसरतो परंतुद्वेषतोचारेपासथीप्रसरेछे माटे न्नापेनेपणद्वेषमटाडवोएकठणछे. एमकारनीतेकेवळीनी देशनासांभळीने प्रतिबोधपाम्योछे आत्माजेनोएवोथइनेबोल्योके हे प्रभो ! धर्मक्रियानोद्वेषकरनारने पापकरनारनीपुष्टिकरनार एवोहुंछुंमाटेमारीशीगतिथशे ? त्यारेतेकेवळीबोल्याके पूर्वेजेपाप कर्योहोयतेनेनुंमापश्चित्तकरीने सारासाधुनोसमागमकरी धर्मनुंआराधनकरेतो तारीपणनिश्चेसारीगतिथाय अनेतपःक्रिया, अ- भिग्रहइत्यादिदुःखेकरवायोग्य तेनेपणपोतानीशक्तिने अनुसारेकरनुं नेआठप्रवचनमातानुं तुंआराधनकर तोताराचित्तने विषेउदयपामतुंगमकितथशे. तेथीतुंचित्तनेस्थिरकर. पछीतेवहेतुंमरीनेसद्गतिपामीश. नेत्यारपछीमोक्षपणपामीश. पछीतेपु ण्यमारेतेमकारेधर्मनोभंगिकारकरी पोतानास्थानमांगयो. तेधर्मांएकाग्रहपणुं राखीनमादरहीतथइ तेनुंआराधनकर्युं. धर्म

यहोपुरुषोमां नवनापाविषएकहेंवायो अनेपछेनेमीतिनुंपाप्रथमे]. प्रथमनोयुजपणापकरीने भियहतोअनेहवेतेगोमुष्यनाहृणमान-
वाळापुरुषोमां नवनापावीषएकहेवायो अनेसर्वनेमीतिनुंपावथगो]. प्रथमनोपुरुपणापकरीने पियहतोअनेद्वेतेगोपुण्यनाहणमान-
द्धेळतकरियपणो. त्यांथीआरंभीनेपुण्यसार समकितगुणकर्त्त आपुणहेनेयनोसतोतस्यकमकोर इरियासमीनी,भाषासमी-
ती, विवेषणाएसणने विषेतणासवयारुचायांग वस्तुनोनिक्षेप भने आदान तेनेविषे तथामळमुत्रनोत्यागकरवो तेनेविषेतथान-
आदिकनुंग्रहणकरवुं तेनेविषेअतिशे यत्नवाळोथयो. मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति एत्रणने विषेपणयत्नावाळुंछे मननेनुं
एवोएहस्थाश्रमगांपण मुनियोनेदृष्टांतरूपनेथयो. मारेनापणित्यानभाव तथाकोइजनपलोकमने हसेनहींएवो विचारकरीधर्म
सारपणुंपोतानुंनामतेणे सार्थकदीपाव्युं. अनुक्रमेपिता, धर्मनुंआराधनकरी स्वर्गलोकपाम्ये सतेनेधर्मसारपुरुषदेवनावळो
अल्पसारएवोथयो. मारेमनाईयासनेअधिकारछे जेएकप्रकारेरहीकयनीजनथी तेकहुंछेकेलक्ष्मिनी मशूलिकेटलाक मयत्नेकरेछे
तोपणतेमनेमासथतीनथी. अनेकेटलाकपदयारहेछे तमनेपणलक्ष्मिसेवेछे अनेतेमेप्रकारनानथी तेमनेपणसेवेछे. अनेतेमप्रकार-
नाछे तेमनेपणसेवेछे. एमलक्ष्मिनोप्रचार विचारमांआवेतेवोनथी. तेपुरुषनोमीतिपात्र एकपदोसीमहेतोहतो नेतकुटुम्बवाळो
हतोअनेमकृतिवडे भतिशेभद्रिकहतो. अनतोपणपुंतेनुंनामहतुं]. तेमारापाडोशीनिमित्तिपये सतेतलक्ष्मिरहितहोय तोपण तेथी
परस्परगुणमानथायछे अनेलक्ष्मीरहीत होयतोपणपरस्परगुणमानथायछे, केनेमगुहोयतो एपुकार्यनीसिद्धिमयत्नाविना करी
शकेछे. अनेतेमोटोहोयतो आपणुंमोटुंकार्यसुखेथी साधीशकेछे. धर्मसारनोहरियादिक भिवनीरसाकरवा मगुलधर्मने देखीते
पहोशीपोतानीस्त्रीवाडी तथाकुयामपुत्रसंबंधी जिवहिंसकवायेने अतिशेनिंदतोहतो. तेधर्मसारनी निरंतरअतिशेनदंसाकर-
तोहतो. तेनामवचनमात्रनुं पदेशसिद्धान्तनुं आराधननेतो निश्चेपणीस्तुतिकरतोहतो. तेपोतानाशास्त्रनी निंदाकरतोहतो. तेपु-
रुषपोतानामोटाआरंभमां मवरतोतोपणतेमकारनी बुद्धिथीरोणेघणुंपुण्यउपार्जनकर्युं. तेविणवडेआमकारनां धर्मकार्यथायतो

आ० १२.

साह एकमोटापुण्यवानजेम करेलो दीपकनिर्दोष आचरणकरवामां तेपोतानीआतुरताधारणकरतोहतो. तेमोमनामनापुरुषे ते
वखतेपुत्रने सेठ अभिलाषवाळो आणीनेपोतानुंधनतेपासे अपेआपइनेदक पोतानुमान्यमनने दृढबुद्धिवाळोपुरुष होयते
अल्पपुण्यवाळोमनने मानीतवखतपी त्यारेतेनुं धनअरण्यमांजन्मघवेला मुद्गपुष्पनीपेठे तथाकुरआदिक वस्तुनीपेठे
वेचनादिकवस्तुनिरर्थक छे केमकेतेनाउपयोगमानथी आवनीमाटे जेमआरतकाळमां नौकाचलावनार करणधारमळेतो
तेनाउद्योगथी आपत्तिसमुद्रने तरावेछे. एमतेधारनेअर्थ आपवाथवावडे आपत्तिसमुद्रतरीने तेधनपाछुंतेनेआपीनेपोते
परोपकारपरायणथयो. एमकोइसमयवहाणनामध्यवरणामां मोटा आश्चर्यकारिगुणजे हतिपुरुषने विचारणीयरत्नमोटुंरहे-
लुंछेत्यारेतेनुं पछुंमाणकपुं तेवखतमां तेनादिवसथी आरंभीनेपरस्परप्रीतीथइ. एवानयेकमकेयोटा पुरुषनी
प्रीतथतीजे. इत्येकदुष्करधार्यपुरुष पोतानुंआयुष्यभोगवी मरणपामीनेपूर्वेकहेलो एवोपुण्यात्मापुण्यसारनामे कुमारथयो.
पछीसारोभावक धर्मनुंआराधनकरी अनुक्रमपामी आठमादेवलोकमां एकमोटोदेवथयो. तेणेपूर्वभवमांकरेलोपोतानोमोटो
उपकारमरणीशावती आणीपोतेकारनो सत्पुरुषकारकरवानी इच्छाएज्यारे पुण्यसारनेअपमानथयुं तेअभिमानथी परमुक्ती
थालेनीकल्यो तेदिवसथीअनुसरणे तेने मेवानेदेवनिरुपणविनयपणे करतोहतोअनेतेनेदिव्य वाणीवडेबोलतोहतो. तेदेवताए
तोतेनेकोता दिव्यतेनारत्नलीलणुं अनेअवसरेअवसरे सूचनापणुकरतोहतो. उत्तमपुरुषने विषेकरेलोअल्पपणउपकार
परदेशीजनोपेठे आगळआगळ मोटोविस्तारपामेछे. अहनवपदमालानी मनोमाहरुआराधनाथी अनेआठआठस्थानमां
हरीलालानीजयाधी वेराग्यादिकनी प्राप्तिथइअने मोटीसमृद्धिनी प्राप्तिपणथइ. अनेपुण्यना अनुमोदन माथीनरने
दुःखपड्युं अचानकतेनी शामियानी तेमजअंगमुनीपद. तेमनीअनुमोदनाथकी आनामोटाघडने तुरातो तोहवे

भा० न. १

मर्दहणादिने आपनारणनुं तेपुण्यनेमकारेअथवारणमकोटिकर. आमकारनुं तेमुनिनुं वचनसांभळीने मतिबोधपाम्यो अनेवृद्ध
धर्मबुद्धिमंत्रीपणोतेनो पोतानीसर्वसंपत्तिपदे सगणितपूर्वक इरियादिकनीविधे जनाचाळोपणो. आमकारनुं मोटुंराज्यमनेपण
मेरागानुंइत्यादिकने त्यिजवणापणनुं देवीनेकोनेआश्चर्यनथाय ? निश्चळचित्तवाळामुनिने एमनेआश्चर्यमनुंहतुं. मेघोराजा
नेरामानुंस्वादिकने विवेकपणागणनुं देखीनेकोनेआश्चर्यनथाय ? अतिशुद्धिवाळोतेरा-
होवतेवीजवधुभावमादोय माटेभर्मनांकित्यावो मजापालणगो अनेक्लेशपाम तेधर्मनुंफळपणुंगयुं. मुनिआदिकभारापना महत-
मावोइयतमयंजागरणमा एकाग्रचित्तथईनेवेठोहतो. केमकेसंयमविनाएकपणकार मथीनि, मुनिआदिकआराधना पारेदुपी
कीनथी. वळीकइयमुनोमानवाग, विचारकरताग्रहणकरवायोग्यनथी ! मर्वयतनुंअने जन्मानिरणपणुंजणायछे पाटेवापी
पुरुष (मुनिमन) तोराज्यादिक सर्वस्मनोत्यागकरीने शानरमनोआश्रयकरेछे केमकेअरहीनारमनीपेठे संकटोरम सेवन
कर्यादोयतोपण अंते मेरुसंनिरवथायछे अनेज्ञानरसनोआरंभमां थोडोदोयतोपणआगळजतांजतां अतिश्रेष्ठगुणदायकथायछे
माटेभावपुरुषएटलेराजाए आमशानोविचारकरी पोतानुंसर्वराज्य पोतानापुत्रने अर्पणकरीपोतानी आत्मीओपमहीत
विधिपुरुषनुं (दिक्षानुं) धारणकर्युं. अनेचौदपूर्वपर्यंतमनुक्रमे सिद्धांतपठनकर्युं. अनेअष्टमवचनमातानुं विशेषपणे आरा
धनकर्युं. अनेतेनेमतिपेएकाग्रमनपणुंराख्युं. अनेसर्वजगाएथी उपशमपणुंधारणकर्युं. एमगणादिकगुणथतांएक दिवसेक्षपक श्रेणी
मत्येआरोहणकरीने (चढीने) कर्मनापुद्गलविखेरवालाग्या. एमकरतांतेनेकेवळज्ञाननीमाहितिथइ. त्यारेदेवताए मोटीऋद्धि
वाळोवेशआप्यो तेनुंधारणकरी आठमवचनमातानुं आराधनादिकउपदेशथी लोकनेमतिबोधकरवायोग्य जिवोनेसंयममार्गमां
मवर्तविनोअनुपम केवळज्ञाननेपाम्य एवागुणनाआस्वादपणानेपाम्यो. एटलेमोक्षसुखनेपाम्यो. एमकारेपांचमुमति अनेगण
गुप्तिएरूप जेमाताओतेना आराधननुं दृष्टांतसांभळीहेभव्यपुरुषो ! तेनुं आराधनकरवामां मयत्नकरो. अनेमोक्षसुखनेपामो.

एमकारीवणाज्ञत श्रीसोमसुंदरसूरी तथाश्रीमुनिसुंदरसूरी तेनाशिष्यश्रीरत्नशेखर सूरीए रचेला आचारप्रदीपना-मनाहेपने विषे[illegible]आचारनो बधा प्रमादनोधीनो मकाशसपूर्णथयो ॥ १ ॥

[illegible] मरणणारते एटलेके तेमांथयाथीए देहकर्मादिक अनेकर्मोनेहरकरीए. तेआमयांकहुंछेके क्षय, रुधिर, काम, दद, अतीव, दाशा, शुक, अनेकरोगोनेहरावछे अने भगवत्वांक्षेयनयशावछे नथीतेनुंनामानिकन्नकरेनी-एकेनुंवरछे. अनेतेआवस्वे परवशनेविषेमर्मअर्थनुंमाववछे तेदखुंकमन्त्रोस्वभावने मांकाविनावांशी रामनारनराछे अनेरोग, देह, मूत्र, इत्यादिकथीरसावरनार अससविनातोवंमएणवजछे. अनेनपवहेअस्थिर होयनेरागनेस्थिरथायछे अनेतेपुरीदगेण सरखाएछे अनेदुःखांधवेतेजमुक्तथयछे अनेभयथ्यथरोपनेपण माडमध्यपायछे पाडेनयरंजमर्ष क्षयंमिठुमायछे. मदंदवीदंदुरिदोनो दरीणावन्तर्थीउपरन पापएवर्कुंछे. अनेवदुधानोभानिकानिननो उपक्रमथाय छेअनेतेषीहेनिकाविन एवीतबद्दंमदानिदोनो वदुषाउपकरथायछे माटेकर्मानिर्जराने अर्थेनगजनवुं. तेउपरऋषिराशिनवयन छेकेआलोकमापुमचे अर्थेतवखु वयायोदीराद्विने अर्थे एननथाकीर्तिने अर्थेतथा अन्यसुवने अर्थेरगनारनकरवुं. तरोभानोद शलाबेखिंवणारासुभवे भाविरकथ्यछे. ने[illegible]निर्जराने अर्थेतपकरवुं तेश्रेष्ठछे.

[illegible] एत्तनवकारनो विदाव (विपाकु) नरकीपुरवे न्यागकरवो. तेआमयांकहुंछे केतेपुद्गला शाविकुदमवकरोने शेमादिकनुं विपाकुंकरेछे तेअड (पूर्व) पुद्गलछेदक तेनोतेमरुद्देवात्मां दारप्रासादपशनो वृद्धि एनादीवाश्करोछे वेलेदृष्युरवर्णरावी. अनेनिदाननुं स्वरदशभवाए क्रोधीनादिकनण भूवनीशश्विभीसाणवुं. गमनोधव-[illegible] अकोरवादनुं आरंभाऊे. बुवारावस्तामेस्ये, तेमंजेभावरणकरवुं तेनथावारकरीए. तेउपरआवेशमपछे के

तपबारप्रकारनुंछे. तेकुलबुकलोप आभ्यंतरनेबाहिर एवाभेदथीकहुंछे. तेतपनुंस्वानि(निंद)रहीतजेकरवुंअर्थातजिननाआगमाद
पंकरवुंपण गमादिकनीवेठनी पेठेनकरवुंअथवा पोतानीशक्तिप्रमाणे करवुंतेनाचारकहीए. तेपणशास्त्रमांकहुंछे केतनका-
रनुंतपकरवुंके जेणेकरीनेमनमां ध्यानिनुंचिंतवनथाय. अनेजेणेकरीनेइंद्रियोनी हानीनथायअनेजेणेकरीने योगनीपणहानी
नथाय.एवाप्रकारनुंतप करवुं.अनेआशंसा रहीतपरलोकादिकनी इच्छापणरहीतनेतपकरवुं. तेतपनाबारभेद अनशनादिकछ
छे.अनेआभ्यंतरभेदनो प्रायश्चितादिक बहुप्रकारनाछे. तेपणशास्त्रमांकहुंछेके १ अनशन, २ उनोदरिका,३ प्रतिसंलीनता,
४ रसत्याग, ५ कायक्लेशने ६ संलीनताएछप्रकारे बाह्यतपछेअने १ प्रायश्चित, २ विनय,३ वैयावृत्य, ४ स्वाध्याय, ५
ध्यानअने ६ कायोत्सर्गएछप्रकारनुं आभ्यंतरतपछे.तेमांअनशनबेप्रकारनुंछे. तेमां१. इत्वरअने २ यावज्जीवक. इत्वरकोतो
नवकारशीआदिक श्रीवीरस्वामिनातीर्थमां छमासपर्यंतनुंछेतेथी नाभेयजीननातीर्थमां एकवर्षपर्यंतनुंछेने मध्यमतीर्थंकरना
तीर्थमांतोआठमासनुंछे. आगमाएश्रेणि, प्रतर,घन,वर्ग,यवमध्य,चंद्रमध्य, चांद्रायण,कनकावळी, रत्नावळी,मुक्तावळी, सिंह-
नीक्रिडित, इत्यादि नानाप्रकारनुं तपएमांआवीजायछे तेयावज्जीवक तपतो१.पादपोपगमन,२ इंगिनी,३ भक्तप्रत्याख्यानएवा
भेदथीत्रणप्रकारनुंछे. तेमांपोतानाकेटलाक शिष्यगच्छमांपोता भाग्यशाळीतपकरनार नीपजेछेतेशास्त्रोक्त प्रमाणेविहारकर-
वानोउद्यमयुक्तछे अथवातेमनुंमरण अभ्युद्यत छेएटलेमरणंकरवामां तत्परछे.१. एप्रकारनीदशाअवस्थानुं परीणामपयेमनेदे-
वगुरुनेनमस्कारकरीनेतेनीसमीपेअनशन ग्रहणकरीपर्वतनीगुफादिकनेविषे त्रसअनेस्थावर एवाजीवरहीतस्थळने विषेटले
स्थानमांरहतनीपेठे तेअनाभोगरूपरहीत पणेचेष्टारहीतपणे प्रथमसंहनना तेधणीछेअनेजेदेहनी कांइपणसेवानथी करताअने
तेतसंस्थानवडे रहीशकेछेअने प्रशस्तध्यानमांथी माणीतेपणइतनानथीने स्थिररहेवासमर्थछे तेथीतेपादोपगमन नामेअनशन

पाडवोछे.अने बीजुं इंगिनीनामे अनशन ते जे यथाख्यानमी अपेक्षाएशोनेशांच्छित करेलाप्रदेशमांरहीने पोतानीमेळेजपोता-
नाशरीरनेवेयावच्च इत्यादिकनेकरतोथको सहीनपाणनोत्याग करतांसुधीजेरहीशकेछे तेमनुंजेअनशनतेइंगिनी अनशनकहेवाय
छेअनेतेमजत्रीजुं रीतेशोआश्रयकरी गुरुपासेसंथारामांरहीदेहनो तथाउपकरणनीममता रहीतत्रणप्रकारेअथवा चारप्रकारेआ-
हारनेयावत्प्राणजाय पोतानीमेळेजग्रहणकर्योछेनमस्कारजेणेअनेसमीपरहेला साधुए आप्योछे नमस्कार जेनेतेपोतानीमेळेशरीरनी
उद्वर्तनादिकनेकरतो एटलेपोतेपासुंफेरववाथी वदेकाळकरेछेतेनेभक्तप्रत्याख्यानमामअनशन थायछे अनेए अनशननो नीमाएशरी
रनेशीतोष्णी कहेवायछेकेमके आर्यादिकनेपण साधारणछे एटलेआर्यादिकथकीपण थइशकेछे तथाप्रकारनुंछे केमकेआर्याओ
गच्छमांरहेलीपण संघयणविनानीहोवांथी देशविरतिमांपण भत्यास्यानकरेतेमपर्णपामेछे पूर्वोक्तपणजेअनशन रहितमनेजथइ
शकेछेअनेतेपणसंलेखना पूर्वकजकरायछे. अन्यथातोआर्तध्यान थायछे संलेखनाएटले आगमनाकहेलाविधिवडे देहादिकनुं
कृशकरवुंतेसंलेखनानुं लक्षणछे शास्त्रमांकह्युंछेके देहनीसंलेखना कर्याविनासहसात्कारे करेछेतेनाधातुमांक्षयथवाथी तेनेआर्त-
ध्यानथायछे.माटेदेहना अंतकाळेविशेषेकरीनेनुं अनशनकरवुंतेपण प्रथमथीदेहनीसंलेखना करवानोअभ्यासकरवो अनेव्या-
घातवेगवेगो व्याधिथीअथवाविजळी पडवाथीअथवापर्वतनी उपरथीपडवाथीअथवाभींत पडवाथीभर्गादिकना अभिघातथी
इत्यादिकपरिणामथयेलने संलेखनाविनापणते अनशनकरायछे. वेप्रकारनुंपणएअनशन सर्वकर्मनाक्षयनुंकारण थायछे.तेकह्युंछे
केदेहत्यागपूर्वकनिश्चयोछे अनेदेहधारीने कर्मसत्तारहेछेत्यांसुधीछेके ज्यांसुधीअप्रमत्तपणे पूर्वेनोत्यागथयोनथी त्यांसुधी.अनेएमांवे-
धनारीवेसोदेहथायछे त्यांसुधीतेछे. १ कषायअनेविषयदेनाआहारनो त्यागजेमांकरायछे तेजउपवासजाणवो. अनेबा-
कीनोतोलांघणमात्रजछे. आसनादिकसर्वेथीशोरथायछे. जेमकेकोइकनामनां महाभाग्योअल्पायनोकर-

नारब्राह्मणरहेतोहतो तेनेराजाएपोतानानगरथी काढीमूक्यो त्यारेतेचोरनीपल्लीमांजइरह्यो. तेनोरत्नापतिए तेनुंग्रहणकरीपो- तानापुत्रकरी स्थापनकर्यो अनुक्रमेतेपल्लीपतिमरणपाम्ये तेनेपोतेतेनपल्लीपतिथयो. एटलेतेनंचोरनोअधिपतिथयो. सर्वजगाए मारीकुटकरी त्रासपमाडनारो अनुक्रमेतेपल्लीपतिमरणपाम्ये तेनेपोतेजपल्लीपतिथयो. एटलेतेनंचोरनोअधिपतिथयो. सर्वजगाए मारीकुटकरी स्थापनकर्यो अनुक्रमेतेपल्लीपतिमरणपाम्ये तेनेपोतेजपल्लीपतिथयो. एकदिवसतेदृढप्रहारी चोरोनेलइकुशस्थलनामागामनेलुंट- निर्दयपणेप्रहारकरे.तेथीतेनुनामदृढप्रहारी एवुंलोकमांविख्यातथयुं. एकदिवसतेदृढप्रहारी चोरोनेलइकुशस्थलनामागामनेलुंट- वागयो. त्यांएकदरिद्रिदेवशर्मानाम ब्राह्मणनाघरमांथी परिपक्वथयेलोपायस (दूधपाक) तेहरणकरीआव्योएक पोतानां मेतरछोकरांदीठो तेथनननानाछोकराए पोकारकरवामांड्यो त्यारेक्रोधपामेलातेब्राह्मणे चोरोनेशस्त्रीपेठे मारनीपूंगळवडे मा रवामांड्या. तेनेमांइनेमनरिसाकरवामाटे दोडीआवता तेपल्लीपतिए सन्मुखआवतो तेब्राह्मणतेनगायपीलके मगवतेनेएवी ब्राह्मणीनेमारीनाखी. तेनेब्राह्मणीनुंपेट छेदनथवाथी तेमांथीनीकळेलोगर्भ तरफडीआमारे तेनेजोइतेपल्लीपतिने दयाउत्पन्न थइअने घणोतेनेपश्चात्तापथयो तेपोतानाउत्तमधने भिक्षाकरी एकउद्यानमांगयो अनेत्यांकोइरुद्रहेलायामुपाने तेणेदीक्षालीधी अनेएवोअभिग्रहलीधोके जेदिवसतेनेआहत्यानुंपाप सांभरेतेदिवसभोजननकरवुं तथाबीजोअभिग्रह एवोलीधोके मारीनेरतर समारायथी पणयतेथाय तोपणकोपनकरवो. एवाबेअभिग्रह लइनेतेजगामनां भिक्षा करवामाटेविचरतोहतो लोकपणतेने निंदा, तिरस्कार, ताडनइत्यादिकवडे पापसंभारीआपताहता. त्यांछमासपर्यंत कोइप्रकारेतेनेभोजननकर्युं अनेतेणेआर्त- ध्यानपणनकर्युं. तेथीतेसिद्धथया. एमकारेप्रथमनोभेदसंपूर्णथयो.

बीजुंउनोदरनामेतपजेमांउणुं एटलेओछुंपेटरासवुं एटलेसंपूर्णपेटभरीने नजमवुंतेउनोदरतपपणद्रव्यथी अनेभावथी बेमकारेछे. द्रव्यथीतोउपकरण, भक्त, पान, एछेविषयजेनेएवुंछे. उपकरणविषयकउनोदर तपतोजिनकल्पीकादिकने अथवा जिनकल्पनाअभ्यासकरनारनेथायछे. एमजाणवुं. पणबीजानेनथीथतुं. केमकेउपधीनोअभाव रातेसमग्रसंयमनुंपालनकरवुंदृढ

सरमुनवधीम . अथवाबीजाने पणअधिकउपकर्णनुं ग्रहणकरवानोअभावछे माटेतेथीपणउनोदरतपथइशकेछे अनेभक्तपानसं-
बंधीउणोदरतपनो पोतानाआहारना प्रमाणनोपरीत्याग करवाथीथायछे. तेआहारनुंप्रमाण आमकारनुंशास्त्रमांकयुंछेकेबत्रीश
कोळीआप्रमाणआहारथी पुरुषनीकुक्षपुरायछे. अनेस्त्रीनीतोअठावीश कोळीआथीपुरायछे अनेनेकोळीआनुंपरीमाण पण
कुकडीनाइंडाजेटलुं प्रमाणमायकयुंछे एवुंगीतार्थपुरुषोनुं वचनछे. तेपणअल्पआहारादिकना भेदथीपांचप्रकारनुंछे. तेकयुंछेके
अल्पआहारउनोदरिकानामे एककवळआहारथी आरंभीनेआठकोळीआपर्यंतनुंछे एककोळीआनुं मानजघन्यपणेछे नेआठ
कोळीआनुंमानउत्कृष्टपणेछे अनेनवकोळीआथी आरंभीनेजेकवळग्रहणकरवा तेनोमध्यममानछे. एप्रकारेनवथी आरंभीने
बारकोळीआपर्यंत अपार्धउनोदरिकातपकहेवायछे. तेरथीआरंभीनेसोळपर्यंत अर्धभागउनोदरिका तपकहेवायछे अनेसत्त
रथीआरंभीने चोवीसकोळीआपर्यंत प्राप्तउनोदरिका तपकहेवायछे नेपचीसथीआरंभीने एकत्रीसकोळीआपर्यंत किंचितउ-
नोदरिकातपकहेवायछे अनेअपन्यादिक पणभेदचोमवंजगाए पूर्वेनीपेठेभावनाकरीलेवी. एमअनुसारेपान विषेनुंपणउनोद-
रिकातपमालवुं तथास्त्रीओनेपणपुरुषने अनुसारेजजाणवुं. अनेभावथी उनोदरिकातपनो जेक्रोधादिकनो त्यागकरवोतेछे ते
शास्त्रमांकयुंछेके जिनवचननी भावनावडेनिरंतर क्रोधादिकनोत्यागकरवो तेभावथीउनोदरिकातप वितरागदेवेकयुंछे अने
उनोदरिका जिनेनपरपछे माटेमेरीरीतेभव्यपुरुष नमाणेनेपकरवाथी तेनुंबहुफळशास्त्रमांकयुंछे नेमज उपवासादिक तपपण
जाणवुं. अनेउनोदरिकातपने विषेनिरोगीपणादिकगुणपणथायछे. तेकयुंछेकेहित आहारवाळा, मित आहारवाळा, अल्प
आहारवाळाजेपुरुषोछे तेमनुंओषधवैद्यकरीशकतानथी. तेनोपोतेजपोताना आत्मानावैद्यछे. साधुआश्रीने मिताहारपणुं रीट
निर्युक्तिने विषेआमकहेलुंछेके सर्वमनोए(?)पोतानाउदरना छभागकरवा. एटलेअर्धोउदरनोभाग आहारवडेपुरवोअनेत्रीजो

अहवोभागरवो तेनाबेभागकरवा. तेनाअहयोभागवायुनाचालवाने खालीरहेवादेवो अनेअहयोभाग उणोरहेवादेवो. तेनी
टीकाआमकहेछेके पोतानाउदरनाछभागकरवा. तेनोअर्धभागएटले त्रणभागअशन, व्यंजनअनेछाश इत्यादिवस्तुनाभा-
रवालीकरवो. अनेबेभागपाणीनें खालीराखवा. अनेछठोभागवायुचालवाने खालीउणोराखवो. शीतकाळ, उष्णकाळअनेए
बेनोमिश्रकाळएमकारनात्रणकाळसाधारणपणेछे तेमांआहारनुंप्रमाणआमकारनुंछे. शीतकाळनेउष्णकाळनुंप्रमाणकहेछे. शीत
काळमांद्रव्य (नरम) वस्तुनोएकभाग, तेअशनाधारभागअथवा बेभागपाणीना अनेउष्णकाळमांद्रवना बेभागराखवा अने
त्रणभागअशनराखवा. शीतशब्दनोअति शीतएवोअर्थजाणवो. द्रवनोएकभागने भक्तएटलेअशनाचारभागएमजाणए अगना
शब्दसूत्रमांछे तेशीमध्यमशीतपणुंग्रहणकरायछे तेशीमध्यमशीतकाळमां वेद्रवनाभागने त्रणअशनाभागएमजमध्यमउष्णकाळ
मां वेद्रवनाभागने त्रणअन्नना भागअने अतिउष्णकाळमांतो त्रणद्रववस्तुनाभागअने बेभागअशना. एमकारनुंपरीमित,निर्दोष
आहारग्रहणकरवानुं जेसाधुनेछेतेसाधुने नित्यउपवासजछे एमजाणवुं. तेसाधुमांकदाचकोइ निर्दोषआहारग्रहणकरताएसामानुं
निरंतरउपवासजछे तेमकेतेसाधुने देशथीउणीएवीपूर्वकोटीपर्यंतसाधुपणुंपाळवानुंछेमाटे. १. तथाछठ, आठम इत्यादिविशेष
तपस्याने निरंतरपारणानादिवसे उनोदरिकाथइजळवीओ उत्पन्नथायछे. जेमकेसाधुनेतपगद्दीनयाळेद्रीयुठीमां देखाता
अपकाशगारिकलाकुल्माष (अडदना बाकळा) अनेएकचळुमात्रपाणी एमप्रमाणेअन्नजळवापरीपर्यंत छठआठमना पारणाने
थिनेकरेतोतेनेतेजोलेश्याउत्पन्नथाय. एमकारेश्रीवीरभगवंतनुंवचनछे. तेजप्रकारनाविधिवडे गोशाळानेतेजोलेश्याउत्पन्नथइहती.
एमकारेउनोदरिकातपसंपूर्णथयुं. २. वीर्तुंवृत्तिसंक्षेपनामातपकहेछे. जेणेकरीनिवर्तीय तेवृत्तिकहीए,एटले भिक्षामागेनुंअन्नजळ.
तेनोसंक्षेपकरवोएटले भोगुंकरवुंतेवृत्तिसंक्षेपनामातपकहीए. तेदत्तीपरीमाणकरवाहपछे एटलेएकदत्ती, बेदत्ती, त्रणदत्ती

निवध. येवी, अथवामहत्यादिकद्रव्यथी अभिग्रहकरवो तेपणतेमांज अंतरभावपामेछे. तेमांद्रव्यथी तो

आणवुं. अने वधीने एकवेरुत्यादिकवीरपग्रहणकरवुंछे. तथाभात्वानाभग्रउपर रहेल्यमंडकमात्रनुंजग्रहणकरवुंछेइत्यादि

परदारहीनेभावे तथाआपकारेरहीने आपणाअंत्योनो पानधागाम. परगाम. इत्यादिथीमात्रथयेलुं, अनेआपनारउमराउपररहीने आपेअथवा

वेगएकग्रहणकरावुं एवो अभिग्रह. अनेभावथी वा अभिग्रहनेग्रहणकरवुं. तथाकाळथीप्रथमपहोर, बीजोपहोरइत्यादि नियमकरवो

उभोहोय, सुतोहोय, गोर, कृष्ण, गातो, हसतो ठ. वृद्ध. नर, नारी. भूषणवाळुं, भूषणरहीत दुःखित, सुखित, बेठोहोय,

नेहाथेमेलेवरकरीए नेपनाधुएवाथारकं एवी रडतादिक देनारपुरुषहोय, तोजग्रहणकरवुं. इत्यादिअभिग्रहणकरवो

मदेविरतमानदमर्थएवा मुनिभोनिग्वेनवानवा तो नानीशक्तिप्रमाणे नित्यग्रहणकरवुं. तेपनिदिनचर्यानामाग्रंथमांकह्युंछेकेमुनि

नेधारेहापदांश्रावकरणे माजेनद्रव्यनोमअेनइत्रेण अभिग्रहनुं चिंतवनकरेछे तेनेअभिग्रहविनानो जेग्रहणकरवुं तेनुंमायाश्चितकह्युंछे

एनदुकारणथी. अनेतेनुंकारण अनिअभिग्रहनु ।। इत्यादिअभिग्रहनुंधारणकरेछे. आगकारनुंतपतोछठ, अठम, इत्यादितपथी

एणानुंनिरंतर करनारछोअनेआ नपनोकोमरहिं छे. केमकेछठ, अठमनुंतपतोनियमितछे तेप्रत्याख्यानकरवाथी आहारनीइ-

मधनुंथी. माहेएरवानिले आहारनीनिरोनिध माणेरधारे पणएद्रव्याभिग्रह पूर्णथशेएमपत्नुंआनेयत पणुंछे.पाटेएनु भत्याख्या-

मारवाकला) दरेकअनेकेवरिस्मार एहवानेतो रोष पणानीइच्छारहेछे. एजकारणमाटेकौशांबी नगरीमांश्रीवीरजीने द्रव्यथीकुल-

वीरश्रानीपुत्रि शमीपमानेवाथी भोपथे नगरमांनेपकरण उमराबारणेएवीरीते आपेतोलेवुंअनेकाळथी श्रीभेपहोरलेवुंतेभाव-

रहनीहोयनेसुपडाना खूणे भोपकारहरुं रोवतोअनेबेडीओथी पुरीहोयअनेमाथुंमुंडन करावेलुंहोयअनेवळी तेमुग्धीहोयअनेवळीते

आरेइबामे कसमावनेआपेतो पारणुंकरवुं. एवोअभिग्रहग्रहण करीनेनिरंतरपरीयार भ्रमणकरतां

[illegible] चारित्रग्रहण-
[illegible] श्रीपादचनेपणे भ-
[illegible] थीतुंनरकपुं. हवे
[illegible] कारणतेमाटे [illegible] शब्द [illegible] छे. ने
[illegible] करवानो [illegible] करवो [illegible]
[illegible] हरण,छमास,चानुर्मास इत्यादि भवधी [illegible]
[illegible] अथवा [illegible] [illegible]
[illegible] करे [illegible]
[illegible] विकार करवानो [illegible] पाळवुं [illegible]
[illegible] कारण [illegible] ग्रहण करवुं [illegible] गुरु [illegible]
[illegible] करवानो [illegible] पण [illegible]
[illegible] विनयपूर्वक
[illegible] भोगववा [illegible]
[illegible] करे अथवा [illegible]
[illegible] करे
[illegible]

छेतेमतपागना तवश्रुपोकरेछे माटेउपवासादिक थकीसत्यागकरवानुं मोटुंफळछेमाटेमोक्षार्थी पुरुषोएविगयना त्यागने विषेविशेषआदर करवो.जेमकेश्री मपोननसुरीनाशिष्य धीमानदेवसुरीए उपद्रवनीशांतिने अर्थेलघुशांतिना करनारएवानेश्री सुरीपंचदेवाने अथमेरजेनागरभा उपरलक्ष्मीअनेसरस्वतीछेतेने देवीएनुंचारित्रनाश थशेएमजाणीशास्त्रंधगुंछेपुत्र जेनुंएवागुरुथये सतेभीवसायुं विगानेआदिकनो त्यागकरवोइत्यादि तेणेअभिग्रहनुंधारणकर्यु. तेकहुंछेकेभक्तजन एवाजेश्रावक लोकतेनुं आपकुंभक्षादिकतथा समग्रएवीजेविकृतिओ तेमारेजीवनासूधीन ग्रहणकरवी एवो अभिग्रहग्रहणकर्यो तथाआघाटनगरमां राजानीसभानेविषे बधीमादिगंबरादिकने जीतवाथीपाम्युंछे हीरलाएवकारनुं बिरुदजेमणेएवाश्री जगच्चंद्रसुरी तेमणेजीवना पर्यंतआवेलकरवानो अभिग्रहधारण कर्योहतोतथाबार वर्षउग्रतपकरवाथी तेनागच्छनुंतपाएवुं बिरुदाननामधारण थयुं एम-कारेमापुरुषनो त्यागकरवो हवेपांचमुं कायक्लेशतपकहेछेके विरासनप्रमुखउग्र आसनकरवावडेतथा शरीरनुंअशीतकर्मवडे तथाकेशनोलोच करवोइत्यादिशास्त्रथी अविरोधीशरीरने दुःखउपजाववा रूपनानाप्रकारनुं तेछे तेशास्त्रमांकह्युंछे केवीरासन, उत्कटआसन(अंगुणहावेमवुंने) इत्यादिआसनोने विषेघणागुणरहेलाछे तथाशरीरनानीरोधवडे जीवनेविषेदयानुं पालनथाय छे.तेपरलोकनेविषे मार्थकसिथायछे. अनेबहुमानपणुंपण थायछेअनेनिसंगपणाथी पश्चातकर्मअनेपूर्वकर्म एवेनोत्यागथायछे. अनेलोपमाविष घणागुणरहेलाछे. दुःखमहनादितथा अनित्यभावनादिवेषां गुणवर्तेछे.तेलोकमां पणकह्युंछेकेजे मस्तकनोलो-चकरेछेतेनेपश्चात् कर्मअनेपूर्वकर्मने जीवहिंसानोपरीभव इत्यादिदोषनेनाजायछे. कोइआशंकाकरेछे केपरीषहसहन करवाथी एमाशोविशेषगुणछे तेनोउत्तरकहेछेके परिषहनोम्हकृत अनेअन्यकृतक्लेशरूप छेअनेकायक्लेशनो पोतेकरेला क्लेशनाअ-नुभवरूपछे एटलो विशेषछेमाटे कायक्लेशमांनिरंतर कर्मनोक्षयादिकगुणछे. माटेउद्यमवंतजीव कल्पिकादिकपण यथाशक्तिनिरंतर

उभारहेवुंअने कदापिबेसेतोपण उत्कटासनादिकविषम आसनबेसवें. एमकारेणतनुंकाय क्लेशनामनुं होयछे ५ संलीनतातप कहेछे.संलीनता एटलेगुप्तपणुंएकांत शयन आसनकरवुं. तेएकांतनेविषेकोई प्रकारनीबाधान उत्पन्नथायजेमांस्त्री, पशु नपुंसक इत्यादिवर्जित अगमकगस्थानमां तथाशून्यघरमांतथा देवकुळपर्वतनी गुफाप्रमुखगमेते एवास्थानमां रहेवुं तथा अनेर पीढपाटाद प्रमुखनुंपणए जगाएग्रहणकरवुं. तेकहुंछेकेआराम, उद्यान,इत्यादिकनेविषेस्त्री,पशु, पंडक(नपुंसक) तेणेरहीतप्रायस्थानमां तथाफलक(पाटीयुंप्रमुख) इत्यादिस्थानमां रहेवुं.तेद्रव्यथीजाणवुं अनेभावथीतो मनोयोग,वचनयोग, काययोग,कषाय (क्रोधादिक)अने इंद्रियोनुंसंवरपणं एजसंलीनताछे. तेचारप्रकारनीछे. तेकहीछेकेइंद्रीओ, कषायअनेयोगनेमने प्रतीतीकरीने संलीनताजाणवी तथानानाप्रकारनी चर्यापणवीतरागेकहीछे तेमांश्रोत्रादिइंद्रियोवडे शब्दादिकजेसुंदरतथाअ-सुंदरतेनेविषेरागद्वेष नकरवुंतेइंद्रिय संलीनताजाणवी. तेकहुंछेकेसारा अथवाजोडाएवाजे शब्दादिकतेनेविषे गृद्धपणनथवुं अनेकदापि पणकहेछेजेअभद्र एवांरूपादिकपशुपने मनोज्ञथायतोपण तेनेविषेरागद्वेषं नकरवुं. एमकारेबीजीइंद्रियोनेविषे पणजाणवुं. एवीरीतेमनाप्रवर्तवुं. तथाबीजीकषायसंलीनताकहीएछे उत्पन्नथयेलाकषायना उदयनुंरोकवुं तथानिष्फळकरवुं तेपणकषायसंलीनता तेनेविषेकोइप्रकारनो कषायनरहेतेकषाय संलीनताकहीए ते उदय थयेलाकषायनोनिरोध करवोनेउदयपामवतेंत्यानुं निष्फळपणुंकरवुं तेकषायसंलीनता पापसंलीनताकहीए. तेपणकहुंछेके उदय थयेलाकषायनोनिरोधकरवो अने कुशळयोगनीउदीरणाकरवी. तेपणकहुंछे कहीछेअनेमन, वचनअनेकायसंलक्षण जेनुंएवाजेअकुशळयोग तेनोनिरोधकरवो अने कुशळयोगनीउदीरणाकरवी. तेविधिमार्गमांचालवुंते योगसंलीनताकहीछे अनेएकांत केअप्रशस्तयोगनो निरोधकरवोअने प्रशस्तयोगनीउदीरणाकरवी. तेविधिमार्गमां चालवुं तेचारप्रकारनीछे गजसुकुमालइत्यादिमोटा ऋषियोनीपेठे चर्या(गति)करवी, शयन, आसनअनंतरकह्यां छेतेप्रमाणेकरवांते चारप्रकारनीछे. एमकारेसंलीनतातपकह्युं, एमकारेबाह्यतपछप्रकारनो यथावैपयिक (वोसरावीरहेवा) सुदर्शनशेठइत्यादिकनी पेठेपालनकरवी.

करवो, मंदलीकरवी, संघाडककरवुं, भक्तपानतुंग्रहणकरवुं, एकजगाएसंघाथेरहेवुं, इत्यादिसर्वेकरायछे. अनेज्यांसूधीआप- थितनकर्युंहोयत्यां सूधीतेनेसाधुरहेता होयत्यांनराखेअनेतेने शिष्यादिकपणन वंदनकरेनेग्रीष्मऋतुमांचतुर्थ, षष्ठ, अष्टएवांतप करेनेशिशिरऋतुमांछठ, अट्ठम, एवांतपकरेने वर्षाकाळमांआठम, दसम, द्वादशएवांतप, जघन्य, मध्यम, उत्कृष्टपणेकरेने पारणानेविषेनिर्लेप भोजनकरेअने जघन्यथीछमाससूधी अनेउत्कृष्टपणेबारवर्ष सूधीतपकरेत्यारपछी तेनेमहाव्रतनेविषेस्थापन करे. एवोभावछे. एवातनेआचार्य, उपाध्यायनेजछे अनेबीजानेतोएदोषनी मासिथयेसतेपणमूळ प्रायश्चितजथायछे. ९. जीन अथवाजीनप्रवचन इत्यादिनीआशातना करनारनेतथापोताना वेशजेवावेशनेधारण करनारीस्त्रीतथा राजानीस्त्रीइत्यादिकने सेवनकरनारनेतथा मुनिनो, राजानो, आचार्यनोवधकरनारने तोपारांचिकप्रायश्चित प्राप्तथायछे. नेतेनेगणथीबाहीरकदाय छेअनेतेअर्धयोजन प्रमाणेक्षेत्रांतरमां विहारकरेछेअनेजीन कल्पिकनाजेवामहासत्ववाळाने तेमोटातपनाकरनारने अनवस्थाप्य तपनीपेठेतपकरवादि रुपप्रायश्चितजाणवुं. एनेविषेपुलाकलब्धिवाळाने प्रथमनांछप्रायश्चित, बकुश अनेप्रतिसेवनाकुशीळने स्थवीरकलपनेविषेदशे पणप्रायश्चितछे. तेमीनकल्पीकनेतेयथालंद कल्पीकनेआठछे. नेनिग्रंथसाधुनेआलोचना अनेविवेकबे बेप्रायश्चितछेअनेस्नातकने एकविवेकरुपप्रायश्चितछे नेसामायिकसंयमवाळाने नेस्थविरकल्पीनेछेद अने मूळतेणरहीतएवांआठ प्रायश्चितछेनेजीनकल्पीने विषेप्रथमनांछछेने छेदोपस्थापनीयने स्थवीरकल्पनेविषे दशेप्रायश्चितछेने जीनकल्पीनेविषेआठछे नेपरीहारविशुद्धिवाळाने स्थवीरकल्पमांआठछे. सूक्ष्मसंपरायवाळाने आलोचना अनेविवेक एबेप्रायश्चितछे. एप्रकारेव्यवहार सूत्रनादशमा उद्देशानिटीकामांछे. एप्रकारेछेल्लांबेप्रायश्चित तोचौदपूर्वीनीसाथेज उछिन्नथयांछेनेबाकीनां आठदुःप्रसहसुरी पर्यंतछेएमजाणवुं. बाह्यतपनाभेदथकी प्रायश्चितनुंविशेषपणुंछे. कर्मक्षयकरवानाकारण बहेअंतर्गतपणुंछे माटेएआभ्यंतर

गवईराणपेअनेगुरुना आगमआवेतना करेलाआसनादिकनुं अन्तराय नेहरुद्धिगागांदरपभागवमां अनिशादनकयुं छे. मन मना
छाणहडांपामविगारनुं गोणभाडरवडे पगमादभिगनगी. तेगणाभेकहृपणार्थ इत्यादिकनाशकानांभळ्यायछे. एमकारेभागविग
नपूर्णनी, इवेविनयदरछे विनयचारप्रकारनोछे. १. ज्ञाननोविनय. २. दर्शननोविनय. ३. चारित्रनोविनय,नेऔपचारिक
विनयदसापूरनी चारकारनोछे. तेपांवहुमानपूर्वकज्ञान ग्रहणकरवानोअभ्यास करवोतथातेनुं स्मरणकरवुंइत्यादिक ज्ञान-
नोविनयजाणवो. सर्वणादापिकादिक गरुकदृवापृवने विनयवंतेनकाथ करेमावदार्थमन्यथा नथीभनेनेनोअर्थभय पगन-
पी.गुरुदानगणापं मनवापनीश्रद्धा करवीविनयाननंकीनवादिकवडे करवी. तेदर्शनविनयकहीए अनेचारित्रनीने श्रद्धाकरवी
अनेगाणकवदाते आगारनकावुंअने बीजामागजगनेनी प्रकपणादिककरवुं तेचारित्रविनयजाणवुंअने मलशपना आचार्या-
दिकरवंगनेवनुं पदे,अनुगमनं, हाथजोडवा,इत्यादि करवुंतिगगानमानापांदिक परांसनतेकाप, वाणी,मनवडे अंजलीकि-
पाकरीनपानेयवा गुणनुंकवनकावुं मनामपणकरवुं इत्यादिनवंउपचार विनयजाणवो. उपयोगमात्रनी शुश्रूषाकवुंछे.
अनेपीठनैकालिक गुरुनीशुश्रूषादिक स्वकथातोनानकारनो विनयकरताते.तेपूर्वोक्त चारप्रकारनोविनयपण मन,वचन
अनेकापपूपन प्रकारनोविनयछेतेनुं मालकरवाधीनानभेद पापछे.तेकहुंछेके आचार्यादिकनो सर्वकाळेमन, वचन,कायवडे
विनयकरवो. तेथयुक्तमन, वचन, कायनोनिरोध करवो नेकुशळनीउदीरणा करवी. १. दशवैकालिक निर्युक्तिमांनेपांच
प्रकारनोविनय कहोछे.तेवा१ लोकोपचारविनय, २ अर्थनिमित्तविनय, ३ कामहेतुकविनय, ४ भयविनय,अने ५ मोक्षवि-
नय एमाप प्रकारनाविनयकह्याछे. तेपांमनमनापार प्रकारनाविनयपनेनो मनप्रंगणीजाणी लेवा.अनेशागमां मोक्षविनयछे
तेनाभेदकहेछे. तेपोताविनयपांच प्रकारनोछे. १ दर्शन, २ ज्ञान, ३ चारित्र, ४ तपनया ५. उपचारिक एवापांचभेदछे. इवे

[illegible] [illegible], मतिश्रुतज्ञानादिनुं [illegible] तथा आशातनानो त्याग करवो ए [illegible] छे. अने [illegible] [illegible] [illegible], अने [illegible] एवा भेद [illegible] अनुसारे करवा कह्युं छे. [illegible] [illegible] [illegible] अने [illegible] [illegible] आठ प्रकारनो, चार प्रकारनो अने बे प्रकारनो छे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], भोजन आपवुं, [illegible] करवो, वंदन करवुं, सुश्रूषा करवी अने पछवाडे जवुं, [illegible] अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महाराज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अने समाधान करवां ते गुरु आदिकनो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विचारी [illegible]. [illegible] [illegible] १. तीर्थंकर, २ [illegible], ३. कुल, ४. गण, ५ संघ, ६. क्रिया, ७. धर्म, ८. ज्ञान, ९. ज्ञानी, १०, आ-[illegible], ११. स्थविर, १२. [illegible], १३. गणी. एतेरनी १, अनाशातना, २. भक्ति, ३. बहुमान, ४. वर्णसंज्वलन एवा [illegible] [illegible] [illegible] १३-४ ५२ प्रकार. आ [illegible] [illegible] नागेन्द्रकुल, चंद्रकुल इत्यादि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करवा [illegible] एवा अनेगणी [illegible]

निद्धिनुंमापनकेछे. इत्यादिज्ञानाचारना बीजाभेदनीव्याख्यानो मधूंछे.एणरीतेविनयकर्यो. २ हवेवैयावच्चकहेछे. रोगव्याधि,प-
रिषह,उपसर्ग, इत्यादिकमांथणे मनेपोतानीशक्ति प्रमाणेतेनामनिवार करवोएकदेशउपाय करवो.अन्न,पान, वस्त्र,पात्रादिक इत्या-
दिकनुंआपवुंतथा तेमनेविश्रामण इत्यादिकनुं(हाथपगदाबवा इत्यादिकरे) तेमनेअनुकूळपणुं आचरणकरवुंते वैयावच्चकहीए,
अर्थातसेवाकरवीते. तेनादशभेदछे. १. आचार्य, २. उपाध्याय, ३. स्थविर, ४. तपस्वी, ५. ग्लान, ६. शैक्ष (   )
७. साधर्मिक, ८. कुळ, ९. गणने १०. संघ. एमनीसेवाकरवीते तेनास्थवीरत्रण प्रकारनाछे.१. श्रुतस्थवीर, २. पर्यायस्थ-
वीर ३ वयस्थवीर समवायांगपर्यंत भणेलाहोयतेश्रुत स्थवीरकहीए. जेनेदीक्षालीधां वीसआदिकवर्षथयां होयतेपर्याय
स्थवीरकहीए: साठीवरसादिक पर्यंतनेथयाहोय तेवयस्थवीरकहीए. तेदशमप्रमुखविकृष्ट तपनोकरनार तपस्वीकहीए.अने
एकआचार्यना गच्छोनोसमूहते कुळकहीए.जेमचंद्र आदिककुळछे.तेम अनेकआचार्यजेनो निर्मळाछेपरंपराय सपूरवेगच्छ
कहीए आजकाल चंद्रगच्छ,कुळपणे अंतरमांथवाथी सुदोनथीकहो. अनेकुळनोसमुदाय तेगणकहीए. जेमकोटीकादिगण
चतुर्विधसंघ साधवी,श्रावक श्राविकापचाचार भेदवाळोसंघकहीए. तेनुंवैयावच्चकरवुं तेनुंअतिशेषोहुंफळछे. तेनाक्रमाक-
सूत्रअर्थनेधारणकरनारनुं वैयावच्चनियमाये करवुं.तेनिश्चे प्रतिपातीअनेअप्रतिपाती एमबेभेदवाळुंछे, तेमांवचनमांगुं
छेतेनुंपारिणाम पाविकभवोगणनाकर्मो विनाशुंश्रुतनाश्रयमेछे पणगुणनाउदयनुं करनारवैयावच्चनथीनाश पामतुं. आजगाए
पूर्वभवमां ५०० साधुओनेअन्नपान आपवुंतथाविश्रामण करावधुंपतापभिक गाळाभर्तचक्रवर्तिभने बाहुबलीमनुंदृष्टांत
राज्य.भरतचक्रवर्ती, वैयावच्चकरवाथी अभिग्रहवाळोवसुदेवनो जीवनंदीषेणनाभे महात्मादिकना दृष्टांतजाणवा.एम
पदे.एमप्रकार संपूर्णथयुं.हवेस्वाध्याय कहेछे.तेस्वाध्याय पांचप्रकारनोछे. १. वाचना, २. पृच्छना, ३. परावर्तना, ४. अनुप्रे-
क्षा, ५. धर्मकथा.

साअने ५. धर्मकथाएपांच भेदवाच्योछे.तेमांसूत्रनुं जेभणावबुंतेवाचना कहीए.१.सूत्रनो अथवाअर्थनोजेसंदेह टाळवोअथवा दृढताकरवीतेने अर्थीजाणीने जइनेपूछवुंतेनेप्रच्छना कहीए. २. अनेपूर्वेभणेलुंजेसूत्रादिक तेनुंविस्मरणनथवाने अर्थेशुद्धपणे जेगणवुं,तेनेपरावर्तनाकहीए. ३. अनेसूत्रनोतथा अर्थनोवचनविना केवळमनवडेजजे अभ्यासकरवोतेने अनुप्रेक्षाकहीए. ४ धर्मोपदेशनुंतथा सूत्रार्थनीव्याख्यानुं सांभळवुंतथाकहेवुं तेधर्मकथाकहीए ५. एपांचप्रकारेजेकरवुंते महानीर्जरानुंकारणछे. ते श्रीमहानिशीथ आदिकसूत्रमां कह्युंछेकेबारप्रकारना तपनेविषेएटले आभ्यंतरनेबाहीर तपनेविषेस्वाध्याय समानतपनथीने नहींथाय. मन,वचनने कायतेणेगुप्तथको स्वाध्यायमांवर्ततोजे पुरुषतेसमयसमय मत्येज्ञानावरणकर्मनो क्षयकरेछे. अनेतेने क्षणेक्षणेवैराग्य उत्पन्नथायछे. अनेएकमासक्षमण, बेत्रणमासक्षमणअथवा संवत्सरतपएटले वर्षपर्यंतअनशननो करनारहोय अनेस्वाध्याय अनेध्यानेरहीत होयतोतेपुरुषएक उपवासनाफळनेपण नथीपामीशकतोअने उद्गमअनेउत्पादन एषीएषणावडे शुद्ध दोषवर्जीत नित्यभोजनकरतो होयअनेत्रणप्रकारे एटलेमन,वचन, कायवडेसावधान होयअनेतेनेजेवुंफळ थायछेतेवुंफळ स्वाध्यायनेकरनार पुरुषनेसमेसमेथायछे. तेमाटेहेगौतमएकाग्र मनवाळापुरुषनुं उपमानदेवासमर्थनथी थवातुं.केमके संवत्सर पर्यंतक्षपणकरे तेनाकरतांपणने स्वाध्यायकरनार पुरुषकर्मनीनीर्जरा विशेषकरेछे.आ जगाप्रसिद्धांत वाचनवडेशिथिळपुरुष तो कयोछेआचारजेमणेएवाथीजगत्चंद्रसूरीवर इत्यादिनीमध्ये सुविहीतक्रियानुं समाचरणकरताअने जावज्जीवआंबेलप्रमु खदुस्तपतपनेतपता इत्यादिकनेजोपण प्रतिबोधकरनारछे तोपण चीलातीपुत्रने मुनिपासेतत्त्वप्रच्छावडे उपशम,विवेक, संवर एत्रणपदवडे प्रतिबोधथयोजे अनेसुविहितश्रावके दोषशतमूलजाळ एगाथानोअर्थपूछयावडे शिथिळाचारएवा अनेशताथी एवा श्रीसोमप्रभसूरीनेसुविहित पणानोप्रतिबोध थयोछे.२. अनेमुकअमुकसाधुने दगमाहिएपदमात्रनुं परावर्तनवडेकेवळज्ञा-

मनीसलांगमाछे. मनेडाशियुनीनां छेननेडमतसनोनाम हवो अनेनि वादकाना पगपुत्रनेमार्गाए निवारणकरतां [illegible]
मन,मवन,मारीरांने. भन्नगावचाने कल्हनीनिवृत्तिगाम पुनवांनुंमनेतांवियरी गयेलागाढाथेडना परमांपुत्रलोतार रहेला
हावेवागृनवारवा रहनिमनुत्राणह नमुगगेलगाग कहीनेगपीएउमा हवाअनेपढीकमपु करीनेहाप्पागलुं परावर्तन
[illegible] मुनपुत्रमांरलो निमिगमावछे. सर्वजीवोपोताना करेलाकर्मफळनेज भोगवेछेमाटेमिथ्या परनाउ
स्वाध्यायनेरे जीव! [illegible] पंचमाजीवोभार्यार एवापरनेविषेनीमपगे पूर्णपामेलाछे. तेजीवो जीनवचनना
[illegible] वांदणीअनिवेपुह पंचमाजीवोभारयार [illegible] विकारछेविकारछे. तेमोहनदेवोहणमेला जीवोपुत्रनो तथामित्र-
[illegible] पारंतणार हावमनेविषेपमले. माटेअनागरणाने विकारछेविकारछे. [illegible] स्वाध्यायनेनेसांभळी अतिशेधानंप-
अनागछे.पारंतणार [illegible] पुत्रवलेपुत्रनो कोइनेगणतानथी इत्यादिनेमनोकरेलो स्वाध्यायनेनेसांभळी नेमारापूर्वभव-
नोवडीहारकछे. निर्दयपणामने पुत्रवलेपुत्रनो [illegible] कोणछे ? त्यारेतेदेवपोताना आयरनोहुंस्वामिछुं. नेमारापूर्वभव-
पेढीनिमंतादेव महात्मा[illegible] [illegible] घरनोमारआपीने अनेजेपुत्रनेकांइकथोडुं आपीनेवनेतुदा
मविमारापुत्रनांवी नानोपुत्रमारेभनिछे [illegible] अनेनानोपुत्रनोकांइक राजानाअपराधथी बंधीखानेपड्यो.
[illegible]. आरतजीगेत्रावेला पोतापुत्रमारोनाशकर्यो. अनेनानोपुत्रनेभाइतानेबंधीखानामांज मरणपाम्यो.तेहुंव्यंतरथयेलोछुं. तेविभंगज्ञा-
रणारेवोरतपाइप [illegible] करीनीपुंअनेनानां भाइनोनेबंधीखानामांज अनेअन्यपणजे कांइक आचाराचरमां आवीरहेछे तेनेहुंपाळुंछुं.हाल्मां
नवरंनेमवपणाने आगीनपुत्रवेमारीन लेपोटाभाइनेपेवार्या अनेअन्यपण जे कांइक आचाराचरमां आवीरहेछे तेनेहुंपाळुंछुं.हाल्मां
[illegible] मारापेवागुरुछो एमकहीनिरन्तर सोनानीमहोरोनो नीधीनेशेठने आप्यो. त्यारपछीतेशेठश्रावकनो
पर्वभारावनकरी अनुक्रमेदिक्षाग्रहणकरी एमपरावर्तनानेविषेशेठनुंआख्यानकह्युं. कायोत्सर्गादिकनेविषेअनेसाध्या
पारिकनेविषेपरावर्तनानो अनेगणनअनुप्रेक्षादिकश्रुतनुंस्मरणपुनरावर्तनामाटेपरावर्तनाथीस्मृतिथइअधिकफळछे. परावर्तनावो

गननुंधन्यपणुंगतेपण अभ्यासनावशथीथायछे अनेस्मृतिनोमननुंमात्रथानपणुमनेजथायमाटेमंत्राराधनादिकने विषेपणस्मृतित्वडे गविशेषसिद्धिकहीछेनेकयुंछेकेन्योक्तवहेमंषुळस्थानथीएकांतेगणवुंनेश्रेष्ठछे तेशब्दसहीतगणवाथीमौनपणेगणवुंतेश्रेष्ठछेअनेमौन-पणाथीपणमानसिकजाप वखाणवायोग्यछे. संलेखनाअनेअनशनइत्यादिनडेशपंन्लाक्षीणदेहवाळापुरुषोनेपणपरावर्तनादिक-नेविषेअशक्तपणेपण अनेअनुप्रेक्षानइंजनानिक्रमणादिकनित्य करवायोग्य अनुष्ठाननीसिद्धिकहीछे, तेमाटेजतेपनेघातीकर्मनुंक्षय करवापणुंछे नेनेथीकेवळज्ञाननीउत्पत्तिथायछेनेथीतेमनीसिद्धिथायछेनेमंत्रपासमप्रमृगना अनशनकरनारपांडवादिकमोटाऋषि-ओनेशुकलध्याननो बीजोभेदमतेपण क्षीणमोहनामे गुणस्थानकनाअंत्यक्षण पर्यंतपर्यायपणुंपूर्वगत श्रुतनुंआलंबनपणुं आगममां कयुंछे. तेमाटेअनुप्रेक्षा शुकलध्याननाबीजा भेदपर्यंतपणसंभवेछे. त्यारपछीकेवळज्ञाननी उत्पत्तिथायछे. धर्मकथाथीकृष्णतथा श्रेणीकइत्यादिकने सम्यक्त्वादिकनी प्राप्तिथइछे तथामेघकुमार अनेथावच्चापुत्र इत्यादिकनेचरज्यानी प्राप्तिपणथइछे. ए प्रकारेस्वाध्याय संपूर्णथयो. ५. हवेध्यानएटले अंतर्मुहूर्तकाळ पर्यंतजेएकाग्रचित्त करवुंने शास्त्रमां कयुंछेके अंतर्मुहूर्तमात्रचि-त्तनुंएकाग्रपणुंते छद्मस्थनुंध्यानछे अनेजीनपरमात्मानुंतो योगनोनिरोधकरवो तेरूपध्यानछे. तेध्यानबेप्रकारनुंछे, एकशुभ ध्याननेबीजुंअशुभध्यान. अशुभतोआर्तअने रौद्रएबेप्रकारनुंछे माटेतेनोअहीं अधिकारनथी, माटेशुभध्यानकहेछेके शुभध्या-नना बेभेदछे. एकधर्मध्यानने बीजुंशुकलध्यान, चारप्रकारनांपणए ध्याननाचारचारभेदछे. कांइकत्वविस्तरअने गुरुरूप एवाचारित्राचारना भेदनेविषेमन गुप्तिनाव्याख्यानमां कयुंछेअनेशुभ ध्याननोविस्मय अनेसंचितएवां अनंताजेकर्मपुद्गळ तेनुंतत्काळनाश करवानुंकारणछे. तेमहाभाष्यना करनारेकयुंछेके जेमसंचयकरेला इंधननेवायुसहीत अग्निशीघ्रपणेबाळेछे तेमकर्मरूपइंधनने एध्यानक्षणमात्रमां नाशकरेछेअथवा मेघनासमूहनवायुवडे हणायामनाक्षण मात्रमांविलयपामेछे एमध्यानरूप

थायछे. वळीजिनशासननेविषेदंस एवांजिणागनेदुःखशासनमां अयोग्योगनोवृत्त-
पापुण्यवंतपणाप्रयापण कर्मबंधबंधविच्छपणाथायछे. एमकहुंछेमाटेजीनमतने विषेजोपगनेउत्कृष्टगना प्रकारकह्याछेतेह्लासर्वे पणमुक्तिना
योगथापणवंतनां अनंताकेवळीथयाछे. एमकहुंछेमाटेजीनमतने विषेजोपगरथ थागछोण अन्यागनथशिला. जेमबहुकाळपर्यंत चारित्रनुं
कारणीकळेपरंतुने गवंशुभध्याननेअनुगत होयनोजमुक्तिनाकारण थागछोणअन्यागनथशिला, पन, मयूरसंमारनीआगळना
आराधनकरनार अंगारमर्दक आचार्यनीपेठेमाणवुं, अनेशुभध्यानथयेथकेतो जेतोडमणमी, धन, आश्चर्यकारीछे केजेणेकरीने
कारणछेतेपण मुक्तिनोकारणजथायछे तेशास्त्रमांकहुंछेके शुभध्याननुंमाहात्म्य मांगुआकेटलुंरचुं आश्चर्यकारीछे केजेणेकरीने
एकपूर्वीपणकामीनी स्त्रीअनुरागवडे संसारनुंकारणथायछे तेविरागवडेमोक्षनुं कारणथायछेमाटे ऋषिरत्नमांपणएमकहुंछे
तेजेटलांकारण संसारनांछे तेटलांजकारण मोक्षनांपणछे, गणनादिक कर्मनिर्जरामांएवेपण गुणपूर्णछे. जेटलासिद्ध
सिद्धिनेपाम्याछेअनेपामशेतेमवं पणनानामकारना दृष्टांतपणवेमतेपणशुभ ध्यानथीजमोक्षगयाछे.अनेशुभध्यानवडेतोतपविना
पणभरतेश्वरादिक चक्रवर्तिइत्यादिक सिद्धथयाछे. माटेशुभध्यानजे तेजयथार्थरहीत सकळधर्मनुंमोक्षनुंसाधनछे. अनेबीजांतो
सर्वयुक्ततेनो परंपरावडेतमोक्षनुंसाधनछे. माटेसर्वयुक्तथी पणसंसारेशुभध्याननुंज अतिशेमाहात्म्यछे. तेशास्त्रमांकहुंछे
केनिर्जराकरवाने विशेषतपथी आभ्यंतरतपश्रेष्ठछे तेमांपणध्याननुंतो एकछत्रराज्यपणुं मुनियोएकहुंछे. ध्यानतपकरीपण
कर्मनेसंवरअने निर्जराथीमोक्षनो मार्गछेमाटेमोक्षनुंप्रधान अंगध्यानछे तेनपथीध्याननुं प्रधानपणुंछे. आतमाएकरवाने
भरतचक्रवर्तिइत्यादिकनुं तथाआठराजाए पृथ्वीचंद्र, गुणसागर, इलापुत्र, तेतमगनेविषेशयुंछे केवळज्ञानजेपनेप्राप्तथयुं
पुरुषोएकहेलांवर्णवाहरणछे. एमकारेध्यानकहुं. ६. कायोत्सर्गपटलनोवा करवानेशक्तपणे शरीरनीअपेक्षारहीत उभुरहेवुंते
... अंगतलानुंयथाशक्ति प्रमाणछे तेमांऋषभदेवना तीर्थंकरनेतथाजीनकल्पी आदिकनेतोउभारहे

[illegible] उपस्थानकथु. तेस्थानकीउपारणकोशक [illegible] मिथ्यादिकथापडे. मांभळीपडीए के [illegible] पोताना [illegible] तेपणआगीरात कायोत्सर्गकरे [illegible] तथा [illegible] इत्यादि तथा [illegible] पोतानाभावधीपकने [illegible] [illegible] [illegible] कायोत्सर्गकरे [illegible] तेनेसर्वकार्यसिद्धथया. [illegible] [illegible] एकादशे [illegible] आचारने [illegible] करवी.

[illegible] भावार्थ प्रकरण ४ थो बराबर संपूर्णथयो.

[illegible] दपाज्ञानर-

पंनुं आचरण करवुं, अथवा पोतानुं वीर्य निरुपाय थुंन वीर्याचार करोते, ते आभ्यंतर सामर्थ्य कहे छे. तेना प्रमाण कर्युं छे के ३६ प्रकारना आचारने आश्री अनन्यचित्तवालो सद्ग्रहण करवाना कालमां पंनुं ग्रहण करी पोतानुं पराक्रमने क्रियामां जोडवुं ते आचार अने आ- चारवालो पुरुष एवंनुं अभेदपणुं छे माटे वीर्याचार पण मन, वाणी अने शरीर त्रिविधे छे. अने तेना अतिचार पण मन, वाणी अने का- याने गोपववारूप प्रथम प्रकारना छे. ते कराके २४ श्रावकना अतिचार ते नं कहेनारी गाथाने विषे ते गाथानो अर्थ आम करवानो छे. पांच संलेखनाना अतिचार अने पंदर कर्मबंधनिदानादि अगनानस्येक आठ, अने चारव्रतनाने पण तीर्थनाने पांच समकीतनाने ६० प्रमाणप्रकारे १२४ अतिचार थाय छे. अने आगमने विषे तो पूर्वोक्त ज्ञानादि आचारनारने विषे ३६ भेद कह्या छे सर्वशाकि वेठने मिथ्यात्विक वीर्याचार पण कह्या छे. एम ३६ भेद कह्या छे एकप्रकारे ग्रंथना आदि भागमां देखाड्युं छे. वीर्याचार कोइकने मानसिक थाय छे, कोइने वाचीक थाय छे ते कोइकने कायिक थाय छे ने कोइकने वाणी नियमने ना थाय छे. ते कोइकने वाणीने कायना थाय छे ने कोइने कायने मनना थाय छे. ते कोइने काय, वाणीने मन त्रणना थाय छे एकप्रकारे धर्मकृत्यने आश्री वीर्याचारना सात भेद थाय छे केटलाकने करवुं केटलाकने कराववुं, केटलाकने अनुमोदना करवी अने केटलाकने तेनुं सांनिध्य आपवुं एम एक एक योगने विषे चार चार भेद थाय छे. तेवखतुं तेकरावणपुं द्विसंयोगी भांगाना छ भेद थाय छे त्रिकसंयोगी भांगाना चार भेद थाय छे ने चतुःसंयोगी भांगाना एक भेद थाय छे ए प्रकारे पंदर भेद एणपूर्वे कह्या प्रमाण भेदवडे गणीए त्यारे १०५ भेद थाय छे. ए भांगा केट- लाकने दान आश्री, केटलाकने शील आश्री एम प्रकारे चार प्रकारनुं तप आश्री अने जीवदया, सत्यवाद, अदत्त (चोरी) परीहार, निर्गंथना, निःशीहना (निश्चलता) धनकषायने इन्द्रियनो जयने नियमनो जमने मधीलीपानने गुप्ति वग अने सामायिकने पोषण, सं- इन, पंनिगमन, प्रतिलेखना, पठन, गुणन, वाचन, प्रच्छन, सूत्रार्थनुं चिंतन, सूत्रार्थनुं श्रवण, बारप्रकारनी अनित्यादि भावना,

भावना,तीर्थयात्रा, तीर्थसेवा,चैत्यादि करा,देव,गुरुने साधर्मिकनी भक्ति,पुण्योपदेश, इत्यादिनेआश्री जाणवा.केटलाक-
नोदानशिक्षादि द्विक,चिकअनेचतुष्क इत्यादियोगनेपण आश्रीथायछेतथा वीर्याचारना भेदनीसंख्याने जाणनारपुरुषोए
पणटाल्वानेने दूशवयछे.तेमां तात्पर्यआप्रकारे कहेवानुंछेकेजेपुरुषने जेदानादिधर्मकृत्यने विषेसामर्थ्यहोय तेणेतेधर्मकृत्यने
विषेमर्वशक्तिवडे प्रयत्नकरवो एमकारे वीर्याचारनेलक्षणपणे इहांस्थापनकरेलोछे. आजगाएकोइआशंका करेछेकेआवीर्या-
चारतोषकराने गळेजेमस्तनछे तेनीपेठेआपणमिथ्या वीर्याचारकह्योछे. एनुंकइपणप्रयोजन नथी जेमाटेभव्य जीवोनेभवस्थि-
तिनुंनियतपणुंछे माटेज्यारेजेनुं सिद्धिमांजवापणुं हशेत्यारेतेनाथी वीर्याचारनाप्रयोगविना पणत्यांजवाशे.आ जगाएसमाधा-
नकरेछेकेजेआ भवस्थितिनुंनियतपणुं तमोएकारणपणे स्थाप्युंछे.तेमशक्त नथी.एमांतो अनुक्रपणारुपघणा दोषआवेछेमाटे
भव्यजीवोनीभव स्थितिएकांतपणे नियतनथी.तेम एकांतपणेअनियत पणनथी तोशुंछे केनियतानियतनिश्चे छे एमकेमतोत्यां
कहीएछीएकेजेपुण्य पापादिसामग्रीसते भवस्थितिनीहानी थायछे,अनेथंभछे. तेणेकरीनेजनेनुं अनियतपणुंछेकेजे ज्यारेमोक्ष
जवानोहशेते त्यारेजपुर्वितवडे नियतपणुंपणपामशे. अनेजेज्यारेमोक्षजनार हशेतेत्यारेजमोक्षजशे. एमकारनुंएकांत पणुंअंगी-
कारकरतानथी. नेअंगीकारकरीए तोगोसाळानामतनुं मानवापणुंआवेगोसालो पणएमजकहेतोहतो नेएमकारना नियतीवा-
दनेमानतोहतो. माटेतेनुंमानवुंप्रकट मिथ्यात्वछे. जेमाटेजीनशासनमां काळादिकपणजगतनुं निवर्तनकराववामां कारणपणेम-
ल्येकवस्तुमांअंगीकार करेलुंछेनेनहींथाय. पांचेपणएकठांज कारणपणेथायछे. तेकहुंछेके परपुरुषेपरीकल्पनाकरेलुंकुमतिरुप
घोडकुळने मूककरवामांनिपुण एवावचनसमूह रुपछेकारणजेनाएवाथी सिद्धसेनदीवाकरे कह्युंछेके१. काळ, २. स्वभाव,
३. नियती, ४. पूर्वकृत, ५, पुरुषाकार,एमांनुंएकनुं एकांतपणुंकहेछेने मिथ्यात्वछेनेसर्वनुं समानपणुंकहेवुंने समकीतछे.माटे

जिणवाणिजन एवीत्रवस्त्रिमांपि अंगीकारकरवी. पण एणवणारु जे मोहादिविरचित गुणहरणीदेवाप होदो. तेथीरुकवतु-
अवेदनाद, स्वप, भंगुरवर्ण एतत्प्रवरिपि एवं वेदिणयक गुणिपण मरोविनिर्ज्ञ कोइमकारोनिमयणुंजे अनेकोइमकारे [illegible] पणमोक्षनायदे.
मनिवरपर्नुगमंन. आरुणाएमा नवावर्तुं रदमणे केनुण्यादिरुपव्यवहारे मीसनालिकाने ग्रहीवाकरनामपाकु. पणपुनानमा-
अनेकोजानाद्य मोजादिकवसाणार दरेमपिकरुपाण गंसारमयपीजे ते अंगसाकुमवांपानिर्ज्ञ भनिमनवणुंजे. पणपुनानमा-
नवाणिदवणी, एमनवानुं साणव सिद्धांतनेथी महानिशीथादिकनें विपरीतमजाणवो. सावन्यआचार्यादिकने एकमनमन
गारकोणिनागुण माणणांदिक मंगिकरणमवश्यति करवादिकदेवाणजे भनेजेमनिनिगम मणगनेविरकोइक मोसणमनवंप्य
पुण्यकराणमणं हांपउं एनकाण माजेनपीहोनो. तेमपेसाणुंनिगमवर्णु ते पणजेमणनकरिक माननेपुलेहने बनननांनिनिगम
पूर्वांमपणियालिने कहेंचरणंनेपवानि व्यविचारनीपुरणमा नवीनजीजेपादेकरक मानीकेवळमानना महात्म्यथीआ पुण्यादि
कगांसणकमकरथ मनेमापुत्पादिकनो बवश्रमनहीकर. एमनीवनोउपक्रमादि हरकपनेमाणीनकळना करीकहेले,पणअन्यथा
नयीकहेला अनेतो मवाणिमनिर्तुरकाल निगमवणुं अंगीकारकरणने जीवोनेनेकुन्कर पर्पकुरणकरवाडुं माणानिपानादिकपाप
स्यापारंपरीहार करवुंकर्मनिजरा पणानेणयें मांहेपकाल पणोनेद्यनहेवाय. मांटेमव्यपुरुषोने भवस्थितिनुं निपनानिणम-
पणुनिद्धपुंले निरुपणिनेगनं कवाणनयांसुप्रानने निपेरोनानीकोनर्नु अणोपणपगाहव नीयांनारकहेवानुं मवळपणुंगमुं ते
माणपनीवधुंडे मीर्थकरवाकडानवाळा देवनाकुंकवा अने मिद्धिशयमानुं नेनेनिश्रयद्येनेमण पोतानुंकळनीपं गोपव्याविना
नवंपरकांपमेनो हमपगंड मावनाप बवेमनांगमवंपी जाणपुं अनेनीरनेमन संवंधीजाणवुं. जेवितीर्थकरवकुश संसारसमु-
इकेवंलपापेनोपण तेणेबनावकमा उपमहंड.नाधीना करेमपाळआहरो एमकारवीर्याचारने विषेपहुपासाह द्रष्टांतछे.तेदृष्टां-

तनुंदिशमात्र देखाडीएछीए. तेमांदानआश्रीने प्रथमदृष्टांतकहीए छीए.पाटलीपुत्रनामे नगरनेविषेआर्हत धर्मनाअनुरागवाळुं ठेपितानेबुंएवा सागरदत्तनामेशेठ रहेताहता.तेन्यायथी घणुंधनपेदाकरीश्री जीनचैत्यनेकरावता हता.समकीत दृष्टीओनाचित्त-नेधर्मनेविषेस्थिरकरता हता. तेसागरदत्तशेठनो धनदेवनामापुत्रहतो. तेपिताभरणपामेसते रुपानां,सोनानां, रत्ना-दिकअनेकवस्तुनां भरेलांतेनां५०० वहाणसमुद्रमांबुडीगयां तेवाकीनुंसमग्रधन हतुंतेअतिशेमोटुं चोरनुंधाडुंपड्युं तेणेकरीनेत-थाअग्निआदिक उपद्रवेकरीनेसर्व नाशपाम्युं.थोडादिवसमां तेअतिशेरांकथइगयो. तेकहुंछेकेलक्ष्मीपोताना स्थानरुपकमळने विषेपणस्थिरपणुं करीरहीशक्तीनथी, तोबीजानापरमां स्थिरपणेक्यांथीरहे ? केमकेकमळनीशोभापण संध्याकाळपर्यंतहोय छे.समुद्रअनेमाधव एटलेलक्ष्मीपति तेबेपीतिअनेप्रेम तेणेकरीनेखोळामां धारणकरेछेतोते लक्ष्मीत्यांपण स्थिरपणेरहेतीनथीतो जेलक्ष्मिनोव्ययकरेछे तेवापुरुषोनेघेरक्यांथी स्थिरहोय? त्यारपछीतेधनदेव अतिशेलज्जाथी घरमांरहेवानसमर्थथतो चंपानग-रीमांजइनेइकवेपारकरवा मंडयो.पणकोइजगाएथीकांइपण फळप्राप्तिथइनहीं. त्यारपछी अतिशे उद्वेगपामतो अनेद्रव्यउपार्जन करवानीचिंतामांनिमग्नथतो भार्यानेपूछेछेकेमार्गमां भोजनकरवानेघरमां कंइभाथुंछ? त्यारेतेस्त्रीबोली के थोडोक साथवोछे. तेणेविचार्युंकेएटलुंपण भाथुंलइनेपाटलीपुत्रनगरमां जइनेपिताएकरावेलुं एकचैत्यछेतेनेपितानोमित्रशेठजिनदत्तश्रावकतेनेअहाणे आपीनेतेनीपासेथी रुपियालइधनउपार्जनकरुंएम विचारीतेधनदेव, स्त्रीए आपेलासाथवाने पोतानावस्त्रनेछेडेबांधी पाटलीपुत्र नगरमत्येचाल्यो. चालतांविचारकरेछेकेआजतो आटलासाथवावडेनिर्वाह करीशतेपछीबीजेदिवसे साथाविना नगरमांप्रवेश करीश. एमविचारीते साथवानेएकपांदडाना पडीआमांलेजरीतेमां पाणीनांखीपलाळीलोचोवाळेछेने भोजननोविचारकरेछे एटलामांतेना भाग्ययोगेएकमासखपणकरेला साधुनेतेजपारणा करवानोदिवसहतोतेते वखतेतमदेशमांआव्या. पछीच्यांतेवखत

धनदेवविचारकरेछे के पुणहीनपणावणमारेकोइक पूर्वजन्मनापुण्यनाउदयथी आ जगापणेंपानतयेषा आकोश्यतापुनि-
रामश्रावेछेतेनेआपुं नीने सुपात्रदानआपवाशुंभावीयोफळथशे. येकर्युंछेके आपणुंनियोंतभोमनकरशुंपछेपाणोशे आनशेनेआ-
देवीवस्तुथी अनंतुश्रेयणावछे अनेमरणकरेली वस्तुनीविशाभावछे गाटेगुणावमांआपवुं एनअमूनआहारछेके तेनोरणकोटी
कल्पेपणनाशपामतांनथी. इत्यादिविचारीने तेधनदेवेतत्काळअतिश्रद्धाथी साधुनेनिमंत्रणकरी तेयोगायचोआपी दीघा.
अनेवळीपोतेपणतेदानदाताथापनकरी.उत्कृष्टीअनुमोदना करी. पछीमोदकनमस्यानेदानश्रीपूरपदानयोनीमनदानछेनेयेर
गयो. तेजगाश्रीएनेजिनदत्त शेठनेगामदेवीएस्वमाया आनीभावकारेकर्युंके काल्यगोत्रगामित्रनो पुण्यवंणाभीमहीआवशे ने
अहींनुंचित्यअहाणे मुनीनारीपानेधनमागशे त्यारेतेएवचनतारेएम कहेजेके तेमुनिदानकर्युंछे तेनुंपुण्यआपेतो एककोटी सोनिया
एकनाएमआपुं. एमकहीनेगोत्रदेवी अंतर्धानथइ. त्यारपछीधनदेव तेशेठनेघेरगयो, आदरसहीततेनेशेठेजमाडयो अनेआगानुं
कारणपूछ्युं. त्यारेधनदेवबोल्योके तेसांभळीमुनिदानकर्युंछे तेनुंफळआपेतो एककोटीसोनानीमहोरोआपुं. तेवचन सांभळी
धनदेवनाविचारमां पणोचमत्कारथयो; अनेविचार्युंके पोतानीपणआदानमुं पुण्यनिश्चेपोटुंछे माटेपुण्यआपवुंनहीं. अनेकोटी
धनजेपुणनहीं. एमविचारीबोल्योके तेमयअहाणं गयुंधनआपो पणमुनिदानमुं पुण्यहुंनहींआपुं. तेवाएळीनेशेठेपणकर्युंके
हुंपेयअहाणं गयवानोनथी. पछीधनदेवतो जयांगयोहतो तेवोजपाछोपोतानानगरमांआव्यो. अनेएणेआकीनगाथीएक
गुसनीछायामांसूतो. त्यानेनिद्राआववाथी स्वप्नमांदेवताएकर्युंके अहींथीतुंतेनसमुंग्रहणकरीने तेएणाएकगयाछीवस्तुगने.
एकदीअद्रव्यपणावछी तेजाग्यो अनेविचार्युंके हुंयननीनिनायां मनोहरतामाटेपनेआमकारनुं स्वप्नथयुंछे. तोपण आमगाएथी
कांइकग्रहणकरीनेजउंगांटीक. नहींतोमारीपासेकांइपणवस्तुनथीं स्त्रीनेधीरजरहेशेनहीं. एमविचारी तेआढनळेथी पडेला

पांचकांकराळइपोतानेछेडेबांध्या, अनेघेरगयो. पछीस्त्रीएघाकेलोजाणी. मारीपटेनथराव्यो त्यारेतेशय्यापांसूइगयो. त्यार पछीस्त्रीएविचार्युंके आपुरुषेकांइपणआण्युंछे ? जोकांइआण्युंहोयतो भोजननीसारीसामग्रीकरुं. एमविचारी तेपुरुषनाओढ-वानावस्त्रनेछेडे गांठदीठीतेछोडीजोइ. तेवारतमूर्थनाप्रकाशजेवांपांचअमूल्यरत्नदीठां. स्त्रीएपुरुषनेजगाडीपूछ्युंके आरत्ननुंशुं मूल्यछे ? एमभतिआश्चर्यपामीपूछ्युं. आरत्नतोसवालाख सोनैयाथी उपरांतमूल्यवाळुं एकेकरत्नजणायछे. एमकह्युंसारेतेवि-चारमांपड्योके मेंनिदानेगहीनमानिनेदानआप्युं तेपर्मरूपकल्पवृक्षनुं आफळजणायछे केमकेदानतोस्वर्गअनेमोक्षनी प्राप्तिनुं कारणछे. त्यारपछीतेणेंएकरत्नवेची अतिश्रेष्ठएवीभोजनादि सामग्रीकरावीनथावीजीपणघणी उत्कृष्टसामग्रीओ करावी. अनुक्रमेतेनाघरमांघणीसमृद्धिथवी पछीतोघेरआवतासाधुने विशुद्धआहारआपवानो नियमराख्यो. एकदिवसइन्द्रे पोतानी सभामांधनदेवनांवखाणकर्यां त्यारेकोइकदेवधनदेवनी परीक्षाकरवाआव्यो. तेदिवसप्रथम दिवसनाउपवासनुं पारणुंहतुं ते वखतजमवाबेसेछे एटलामांपोतानेघेरएकसाधु भिक्षालेवाआव्यो. पोतेउठीनिर्दोषआहार तेसाधुनेआपीवंदनाकरी. अनेभो-जनकरवाबेसेछे एटलामांबीजासाधुआव्या. तेनेअतिहर्षपामीभोजनआपीने जमवाबेसेछे एटलामांसंघाथेसोसाधुआव्या. तेने पणअनुक्रमेश्रद्धामानपूर्वक विधिसहीतआपीने घणोप्रसन्नथयो. एमकरतांदिवसनोअस्तथयो माटेतेदिवसपणतेनेउपवासथयो पणभावजराशिथिळथयोनहीं. पोतानाआत्माने धन्यमानतो तेदाननीअनुमोदनाकरतो रात्रेसूइगयो तेवखततेदेवता साक्षात थइनेइंद्रेकरेलांवखाण तेधनदेवनेकही सर्वइष्टनेसाधनकरनारएवुं. सर्वउपद्रवनेनाशकरनारएवुं चिंतामणिरत्नआपीने पोताने स्थानेगयो. त्यारपछीधनदेव जीवनासुधीपोताना नियमनोनिर्वाहकरीमरणपामी अच्युतदेवलोकने विषेदेवथयो. त्यांसुख भोगवीनेपूर्वविदेहमां चक्रवर्तिराजाथयो. तेसुखभोगवीदिक्षालइसिद्धिनेपामशे. एमकारेदानउपर धनदेवनुंदृष्टांतकह्युं, शीळनुं

[illegible] सामान्य मनुष्ये
[illegible] पुढें
[illegible] विशेष [illegible] त्यांचा अंगीकार
[illegible] आल्यास,
[illegible]
[illegible] दिवस. १. [illegible]
[illegible] दिवस [illegible] एक-
[illegible] दिवस [illegible] दि-
[illegible] दिवस [illegible] अधिक
[illegible]
[illegible] ३१ [illegible]
[illegible] १० दिवस [illegible] १३३ दिवस-
[illegible] ३१ दिवस [illegible] १० दिवस [illegible]
[illegible] १४६ दिवस [illegible]
[illegible] १० दिवस [illegible] त्रिभुवनानंदनाचे [illegible]
[illegible]
[illegible] होतात ! [illegible]
[illegible]

आ० १.१६

छोनेपराक्रमवडे जिरपाछेगुमुजेणेएवाछो. तेअहींअरण्यमांपडेली माराउपरकेमअनुकंपाकरतानथी ! १. हा जननी ! आतिसेमोटुंतेमकारनुं उदरदुःखसहनकरीने पणमनेउत्पन्नकर्यापछी आभयथी विव्हळथयेली अनेदुःखितमनवाळी हुंतनेकेमसांभरतीनथी ! २. इत्यादिविलापकरती. त्यारपछी क्षुधातृषाथी पीडातीपोताना कर्मनेनींदती तेकर्मनोक्षय करवामाटे अठम, दशमादिकतपने करतीपारणाना दिवसेएक निर्जिवफळादिकने जमतीहती. एमकारेतेनां त्रणहजार वर्षतपकरतां थयां. दृढवैराग्यथी अंतेचोवीहारनुं पच्चखानकरीने सोहाथजमीनमां स्थितिकरवीएवो अभिग्रहधारणकरीरहीहती तेवखतेछठे दिवसमेरुथीपाछोवळतो एवोएकखेचरेदीठी अनेओळखी, नेपोतानेघेरजवानेबोलावी अनेकहुंकेतारेचिंताशीदकरवीपडेछे?एम कहीतेणीपते खेचरनेनिषेधकर्यो. तेखेचरेजइचक्रवर्तिनाआगळतेवातकही. तेवखत ते खेचरेसहीत तेचक्रवर्ति राजा त्यां आव्यो. त्यारेतोभजगर सर्पग्रासकरवामांडेली पोतानीपुत्रिनेदेखी खेदकरीघणो वैराग्यपाम्योने बत्रीसहजार पुत्रनीसाथेते राजाएदिक्षालीधी. तेकन्याए अजगरथीमुकायानो मंत्रजाणतीहती तोपणतपवडेअजगरनो अपकारनकर्यो. त्यारपछीधर्मध्यानवडेमर्ण पामीदेवलोकमांदेवी थइत्यांथीच्यवीने द्रोणमेघराजानीप्रियंकरानामे स्त्रीनेविषे विशल्यानामनीपुत्रि थइ. अने पुनर्वसुविद्याधरतो दिक्षालइतप करी नियाणुकरीदेवताथइदशरथराजानो पुत्रलक्ष्मणनामेथयोअनेविशल्यातो पूर्वभवमां उपार्जनकरेलातपना माहात्म्यवडेघरमांरही सती, मोटारोगथीआतुरथयेली मातानामोटारोगनीहरनारी थइअनेतेपुत्रिनास्नानना जळवडे पणघणालोक व्रणसंरोहणअनेशल्यापहार अनेव्याधिक्षयइत्यादिकनेपामता हता. नेस्थानेस्थानेअशिवनी उपशांति थतीहती. तेनाहाथना स्पर्शथीलक्ष्मणनाहृदयमां रावणेमूकेली, अमोघविजयनामेधर्णेन्द्रेआपेली, शक्ति, तपतेजनेनसहनकरती सतीएनीमेथ्नीकळीगइ. त्यारपछीलक्ष्मणजि तेकन्यानेपरण्या. एमकारेतपने विषेविशल्यानुं दृष्टांतछे. अनेभावनाने विषे

स्कंदकाचार्यनाशीष्यमां शिष्योरह्यपणेहृता मले. अनेमतिक्रमणनेनेवेणीनिर्यानारकाविपातेविवेकमालेमेतेमकेश्री अणहलिपत्तनने विषेभीमदेवनामेराजानकलसनाने मेनककरीराज्यकरतोहतो. तेनगरमांचातुर्यादिक मोटागुणोनी जाणेकुलदेवीहोय एवी गुर्जरदेवीनाये मनुष्यमनानुं पात्रपणीपकलेजावदेवीहती. तेनीपतियतनाश्रीथी पणअधिकमर्यादाहती. तेयानराजापणामळी. ते नाश्रापरणनी परीसानेमांमनस्यामापृथ्याळी एककटारीपोषानामेश्को लागेतेपदनानुं ग्रहणकरवामाटेमगाव्ी. अनेपोते राजागोरगास्तीम पाविण्याहारपहारकरी माळवादेशनाराजानेजीतवानेअर्थ मस्थानुकर्युंहतुं. त्यारपछीतेराजावेयांगुधी माळवा देशमांयुद्धकरतारह्योअने कुळदेवीतोराजाएआपेल्याग्रहणक द्रव्यनुं ग्रहणकरवाजीतमामपुरुषोनो संगत्यागकरी अनु पमशील पीळानेमपरीपाळनकरती तेवपतेणीए निर्गमनकर्या. पछीश्रीजेवधेतेराजा पाटणमांआव्यो. त्यारेलोकनीपरंपराथी तेनुंशीलवर्णुंजोइ विस्मयपामीमनुष्यपावेश्यपनु तेनुंचारित्रमचिंत्यतेनागुणथीआकर्षाराजीथयेला राजपरोनानाअंतःपुरमांराज्य राणीकरीनेराखी, तेमपंरायबचिनाकरतीहती. त्यांदंडनायकश्रीपाळज्ञातिनो सज्जनएवेनामेश्री जिनधर्मनामर्मनो जाणनार रहेतोहतो. श्रीगीरनारपर्वतथोथी नेमीजिननाविहारनोउध्धार करावनारएवोतेवहुव्यापारनेद्रव्यग्रपणुंमतेपण देवपुजा कर्या विनाजमतोनहतोने ने चतुर्विंधनिरूपण करवानानियमनेकोइदिवस भागतोनहतो. एकदिवसम्लेच्छसैन्यआव्युंत्यारेफुल देवीनामेपट्टराणीनेसज्जननाये दंडनायकनीपासेजसैन्यलइ १८ हाथी, २४०००घोडाअने ३२००० प्यादलइम्लेच्छ रा जानीसंघाथेयुद्धकरवामाकल्यो. त्यांबनासनदीनेतीरे वैरीनुंलशकरसन्मुख आवेसेनेप्रातःकाळेयुद्धकरवानो निर्णयथयेसते फुल देवीपरात्रेदास जागरीकाकरीनेरोपुरुषोने मोटोउत्साह तथावस्त्रअर्पणकरेलाहता. देवीप्रसज्जनने सेनापति पदमां अभि षेककर्यो. रात्रिना पाछलापहोरमांहाथीउपरबेसीचारे दिशेनेपारथपेलावीर पुरुषोप्रवींटेलो सज्जनारचारमा पदयोकं,संग्राम

गारमवी गाराभातकाळना मतिक्रमणनीवेळा न उल्लंघनथाई. केमकेआवुष्पनोएकक्षणपणकरोड रत्नवडेनथीपमातो. ते ममादरूपीरमवडे हुंकमनाशकरुं ? त्यारपछीदाधीनास्कंध उपरजथापनाचार्यनुं स्थापनकरीतेणेविधिसहीत मतिक्रमणकरवानो आरंभकर्यो. तेवपनपागेरहेल्यावीर पुरुषेएविचारकर्योकेआ वाणीओशुंयुद्धकरशे ? एमविचारीरणरसमां उत्सुकथयेलाबेप क्षना वीरपुरुषोए एकठाथइसंग्रामकरवानो आरंभकर्यो. सामायिकसमाप्तिकरी सज्जनदंडनायके पोतेउपाडकर्यो पोताने दशपालागपाछेतोपण तेणेम्लेच्छनुंलश्कर नाशपमाडयुं. त्यारपछीराणीएपोतेज पोतानावस्त्रनाछेडावडेसर्व अंगमांथीनाळतुं रुधिरलुंछीनेशुध्धोदरमां लइगइ. पासेनासेवकोएदंडनायकनी अपुर्ववार्ताकहीके पाछलीरात्रिएएगीन्द्रीपाएमकारनुंकर्युंअने मातःकाळेतोएवुंयुद्धकर्युंकेकोइए पणनाथायनेवुं. त्यारेदेवीएपूछ्युं केआमकेम ? त्यारेतेदंडनायकबोल्याकेहेदेवी ! रात्रिए पोतानुंकार्यकर्युंअने,मातःकाळेतोते तुरुष्कजातिनाम्लेच्छोजीत्या. पछीदेवीउत्सवसहीतपत्तनमांलावी अनेराज्जनदंडनायक सारीपेठसाजोथयो. पछीश्रीभीमदेवे मोटोमसाद्आपी सत्कारकर्यो.एमकारे सामायिक,पोषध, मतिलेखना,स्वाध्याय, जीवदयाइत्यादिआश्रीने दृष्टांतो जेमघटेएमजाणवां. विर्याचारनाविचारमां चालतापुरुषमांश्रेष्ठ अनेसंवेगरंगवने अतिशेष्याने माणिमात्रनाकानने अमृतवृष्टिकरवामां निपुणअनेपुण्य क्रियावडेमकाशथना सूरीश्वरश्री रत्नशेखर गुरुएमकाश करेलाआ शास्त्रमांशोभायमान पांचमोमकाशस्फुट पणेसंपूर्णथयो. ॥५॥

एमकारेश्रीतपागच्छनानायक श्रीसोमसुंदरसूरीतथा श्रीमुनिसुंदरसूरी तेनीपाटेमतिष्ठापामेला श्रीरत्नशेखरसूरीए रचेला श्रीआचारमदीपनामाग्रंथने विषेपांचमोमकाशसमाप्तथयो. ॥५॥

महाशिव जगतमां विख्यातएवुंतपाएमकारनानामने धारणकरता जगतचंद्रसूरीथया. अनेतेनाअनुक्रमथी श्रीदेवसुंदर

[illegible] पाटणकरा कुरगंडनमांवगुमिट बीजाजिण
[illegible] गडूहेकरनाराहता. तेश्रीभुवनसुंद-
[illegible] श्रीसोमसुंदरगुरु हता.तेणीये सकलनी
[illegible] लिखहता.तेमाततेताने पगडमनगोगाडेस-
[illegible] पामेनतेंपनालिख्यहता. पुनःतेण
[illegible] आदिकछन्दरेथी मुनिसुंदरगुरु मानीनभाषा-
[illegible] कागमांसमादरहीनहता, तेवीताजिण्यहता.ते
[illegible] तेनीतिहंडनाश्च सबुद्मानोका
[illegible] लिखहता.नेरिगमपदारिगा तेनीतिरंडनारुप सबुद्मानोका
[illegible] एकादशअंगना पणेलाछेएवाश्रीजीन
[illegible] संवत १५७१नावर्षमां आगम ग्रंथश्रील्ल
[illegible] वपुनीपणेपंु,लगतुं इत्यादिकियानोविशेमसीप
[illegible] श्रीकठंननेमारा सुदिलालाकु-
[illegible] आग्रंथनाकाळ सुधीपंडितोनेजग दायकजगतंनो
[illegible] गुजरातीभापातर नाखेलोहेलंतमाम प्राकृत (मागधी)
[illegible]

आचार प्रदीप नामना ग्रंथनुं भाग वीजो

संवत १९६९ ना श्रावण शुद पंचमीने दिवस

कर्ता शास्त्री रामचंद्र

पोष्टेज विनानुं

पकेआयुष्यनोएकक्षणपणकरोड रत्नवडेनथीपमातो. ते
आपनाचार्यनुं स्थापनकरीतेणेविधिसहित प्रतिक्रमणकरवानो
ओंशुद्धकरेश! एमविचारीरणरसमां उन्मुक्थयेलाछेप
कमप्राप्तकरी सज्जनदंडनायके पोतेउपाडकर्यो पोताने
ओराणांएपोतेज पोतानावस्त्रनाछेडावेदमर्न अंगमांथीवाळवुं
थवानीरहीके पाछलीरात्रिएएगीन्द्रीयाएमकारनुंकर्युअने
कआमकेम! त्यारेतेदंडनायकवोल्याकेहेदेवी! रात्रिए
विजयादेवीउत्सवसहितपत्तनमांलावी अनेसज्जनदंडनायक
एमकारे सामायिक,पोषध, प्रतिलेखना,स्वाध्याय, जी-
मां चालतापुरुषमांश्रेष्ठ अनेसंवेगरंगवते अतिशेष्यात्मने
थना सूरीश्वरश्री रत्नशेखर गुरुएमकाश करेलाआ
तेनीपाटेप्रतिष्ठापामेला श्रीरत्नशेखरसूरीए
जगतचंद्रसूरीथया. अनेतेनाज